هندي



प्रसन्नता का मार्ग

डाक्टर अब्दुल्ला बिन सालिम बा हुमाम

Islam kingdom

प्रथम संस्करण

प्रसन्नता का मार्ग
डाक्टर अब्दुल्ला बिन सालिम बा हुमाम

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness
www.path-2-happiness.com

प्रसन्नता का मार्ग

दृढ़ मार्ग, अर्थात् प्रसन्नता के मार्ग की ओर ले जानेवाले विचार ।

डाक्टर अब्दुल्ला बिन सालिम बा हुमाम

प्रथम संस्करण

بسم الله الرحمن الرحيم

الطريق إلى السعادة

The Path to Happiness

www.path-2-happiness.com

प्रसन्नता का मार्ग

सारी प्रशंसाएँ अल्लाह ही के लिए है जो सारे जगत् का प्रभु, पालनकर्ता है। और दरूद व सलाम हो हमारे रसूल मुहम्मद पर, उनकी तमाम संतान पर और उनके तमाम साथियों पर ।

मै एक ऐसी पुस्तक कि तलाश कर रहा था, जो समकालीन की वास्तविकता के अनुसार सभ्य रूप से इस्लाम का परिचय करती हो, और जो मुस्लिम व नन मुस्लिम दोनों पर एक समान प्रभावित हो। ऐसी पुस्तक जो पूर्व नियमों पर आधारित हो, लेकिन उसमें आधुनिकता की कमी न हो। जो इस्लाम के परिचय को प्रसन्नता की ओर बौद्धिक, वैज्ञानिक, सभ्यतागत यात्रा बना दे। वह यात्रा नियमित नियमों पर आधार हो, और उसमें पूर्वी व पश्चिमी प्रसिद्ध लोगों के इस्लाम के प्रति विचार भी लिखें हों।

पूर्वी व पश्चिमी लोगों के विचारों में बहुत सारी अच्छी बातें हैं। इससे मुझे बहुत लाभ हुआ है । परन्तु मेरी यह इच्छा थी कि पिछली सारे विचारों को एक जगह इकट्ठा करूँ। आपके सामने रखी हुई यह पुस्तक केवल पुस्तक ही नही बल्कि विचारों का समूह है। यह एक टीम कार्य द्वारा अनेक स्त्रोतों से, और विभिन्न शैलियों में लिखे हुए विचारों का समूह है। इसका लक्ष्य सभ्यतागत वा तार्किक रूप में महान धर्म (इस्लाम) का परिचय करवाना है, और इस बात की पुष्टि करना है कि वही प्रसन्नता, सभ्यता, ज्ञान, आदरणीय और माननीय मार्ग है. इस मार्ग और इस धर्म को जानने के लिए अल्लाह की वाणी (जिसके आगे और पीछे से असत्य उस तक नही पहुँच सकता है) और नन मुस्लिम कुछ बुद्धिमान लोगों के विचारों मे स्थिर सबूतों से बड़कर कोई और विषय नही है। ताकि प्रभाव के तत्व अनेक हो और न्याय की निगाहों से पढने वाले पाठकों का मन क्षितिज का विस्तार करे।

हमारी यह इच्छा रही कि हम आपसे नियमों के आधार पर बात करें। आपको मान्सिक तर्क की गहरायी में ले जायें। दार्शिनिक व विचारों कि बातों से आपकी मार्गदर्शनी करें, और प्रसन्नता व उसके मार्ग के खोज कि इस यात्रा में हम आपको प्रसिद्ध, बुद्धिमान और नायकों के अनुभवों कि दृष्टि में लेकर चले।

प्रसन्नता, उसके मार्ग, और उसकी ओर पहुँचने के लिए यह एक भौतिक व सभ्यतागत यात्रा है, जो आंतरिक रूप से मन की गहरायियों तक जाती है। इसी प्रकार इतिहास और पूर्वकाल के पन्ने बारिकी के साथ पलटती है, और भविष्य काल की आकांक्षा रखती है, जब कि विभिन्न और अनेक दृष्टिकोण की भरमार है, जिनमें से प्रत्येक का यह दावा है कि वही प्रसन्नता के मार्ग का मालिक है.. हम प्रसन्नता के मार्ग का परिचय करने के लिए मन की विभिन्न भावनाओं को इकट्ठा करने, व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक मानव का ध्यान रखने, और विभिन्न समुदायों, समूहों और लोगों कि आकांक्षाओं के अनुसार विवरण करने का प्रयास कर रहे हैं।

आप हमारे साथ चलिये, ताकि सीधे मार्ग का चयन करने, उसको जानने, बल्कि जाँचने और उसका मूल्यांकन करने के उपयुक्त मानक का आपको ज्ञान प्राप्त हो..

प्रसन्नता के मार्ग, नैतिकता, ज्ञान, सभ्यता, दयालुता और आदरणीयता के मार्ग कि खोज की यात्रा.

क्या आप इस मार्ग का ज्ञान रखते हैं ? और क्या आप इस मार्ग के प्रति कुछ जानने की इच्छा रखते हैं ?

डाक्टर अब्दुल्ला बिन सालिम बाहुमाम

Dr. Abdullah bin Salim Bahammam,
www.ba-hammam.com
E-mail: abdullah@ba-hammam.com

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



मार्ग कहाँ है?

अनुक्रमणिका

मार्ग कहाँ है?

हर मनुष्य प्रसन्नता की तलाश में है, परन्तु इस का मार्ग कहाँ है?



पृथ्वी पर रहने वाला हर मनुष्य प्रसन्नता को पाने की कोशिश में लगा हुआ है। धर्म, जाति, संप्रदाय और उद्देश्य में मनुष्य के बीच अंतर होने के बावजूद सब के सब एक लक्ष्य को पाने में जुट है, और वह लक्ष्य प्रसन्नता और सुख पाना हैं।

अगर आप किसी मनुष्य से यह प्रश्न करेंगें कि आप यह काम क्यों कर रहे हो? और आप वह काम किस कारण कर रहे हो? तो ज़रुर वह उत्तर देगा कि मै प्रसन्नता की तलाश में हूँ। चाहे वह साफ शब्दों में यह उत्तर दे या अप्रत्यक्ष रुप से उत्तर दे।

प्रसन्नता क्या है? और कैसे हम उस तक पहुँच सकते है?

प्रसन्नता उल्लास, शांति, सुख और खुशी की हमेशा रहनेवाली भावना का नाम हैं, और यह भावना तीन बातों के एहसास के फल के रुप में उपलब्ध होती है, अपने व्यक्तित्व का अच्छा होना, जीवन का अच्छा होना, फल का अच्छा होना।

इन्ही तीन बातों के आस-पास मनुष्य के सारे प्रश्न घूमते हैं, जैसे जैसे मनुष्य की आयु बढ़ती है

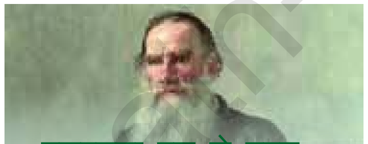


किसी चीज़ के बदले में प्रसन्नता

यह संभावना है कि आपये कोई ऐसा कार्य करें जो आपके लिए प्रसन्नता का कारण न बने। लेकिन प्रसन्नता कोई ऐसी विषय नही जो कुछ किये बिनाही आपको प्राप्त हो जाय।

बिंजामिन डिज़्राइली

पूर्व ब्रिटिश प्रधान मंत्री



प्रसन्नता हम से बहुत ज्यादा निकट है।

अक्सर समय हम लोग प्रसन्नता की खोज मे रहते हैं जब कि वह हम से निकट है। जैसा कि अक्सर समय हम (ऐनक) चश्मा तलाश करते है जब कि वह हमरी आंखों के ऊपर होता है।

टोल्सट्वी

रुसी लेख्क

तो यह प्रश्न भी गम्भीरता अपना लेते हैं, और जब तक वह अपने मन में पैदा होनेवाले इस प्रश्न का उत्तर न दें, उस समय तक उसको प्रसन्नता नहीं मिलती है। इन प्रश्नों में से कुछ प्रश्न यह हैं

- इस ब्रहमाण्ड का मालिक कौन है, और कौन इसमें अभिनय करता है?
- किसने मेरी सृष्टि की है, और किसने मेरे आस पास के ब्रहमाण्ड की सृष्टि की है?
- मै कौन हूँ, मै कहाँ से आया हूँ, मेरी सृष्टि क्यों की गयी है, और परिणाम क्या होनेवाला है?

जब मनुष्य को अपने जीवन के बारें में अधिक जागरुकता प्राप्त हो गयी, तो उसकी बुध्दि, सोंच और जीवन पर इन प्रश्ननों का दबाव बड़ने लगा। और मनुष्य को शांति और प्रसन्नता उसी समय मिल सकती है जब वह ऐसा उत्तर पा ले जिससे मन को सुख मिलता हो

मार्ग अनेक है और ईश्वर एक है

जब आप को ज्ञान ना हो कि आप कहाँ जा रहे है, तो सारे मार्ग आपको उसी ओर ले जयेंगे।

लूईस कारोल

गणितज्ञ



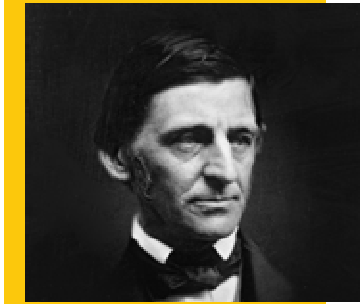
नास्तिकता का मार्ग या आस्तिकता का?

पिछले प्रश्ननों का उत्तर साधारण रुप से लोग दो विधि से देते हैं। नास्तिकता की विधि जिसमें यह विश्वास होता है कि कोई ईश्वर ही नहीं और यह ब्रहमाण्ड एक सामग्री है। और दूसरी विधि में यह विश्वास होता है कि हर चीज़ का प्रजापति ईश्वर है, इस विश्वास के कारण बहुत से प्रश्न उठते है, जिनमें से कुछ यह है

क्या यह संभव है कि दुर्घटना से होननेवाले कुछ सहभाग्य के फल के रुप में अचयनित रूप से इस ब्रहमाण्ड का स्वयं ही निर्माण हो गया?

और क्या यह समझ आने वाली बात है कि स्वयं होनेवाली यह दुर्घटना इस नियमित ब्रहमाण्ड के निर्माण का कारण हो?

जब से मनुष्य की सृष्टि हुई है उस समय से पूरे इतिहास मे जिन ऊँचाइयों तक मनुष्य पहुँचा है, यह सब विकास के रुप में हुआ है या केवल एक दुर्घटना है? और हम केवल वायु में उड़नेवाले पंख के समान है जिसको दुर्घटना और अनियमवान पलटना रहता है?



अपनी दिशा निर्धरण करें।

निश्चय रुप से संसार उस मानव के लिए मार्ग खोल देता है जिसको यह ज्ञान हो कि वह कहाँ जा रहा है ।

रालफ वामर्सोन

अमेरिकी दार्शनिक



क्या मनुष्य ही विधायक ईश्वर है, वही सृजनकर्ता प्रजापति है, वही सब कुछ है, और उससे हटकर कोई चीज़ नहीं है?

प्रकृति से हटकर सारे अदृश्य क्या केवल मृगतृष्णा ही है जो नास्तिकता की लहरों और समग्र विश्व के आगे छुप जाता है?

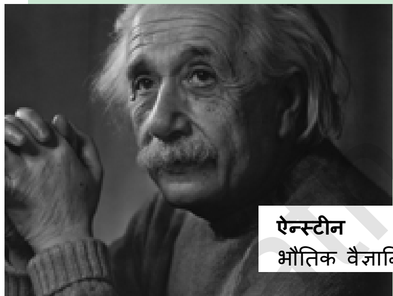
क्या मनुष्य केवल एक सामग्री है जिसका कोई हिसाब नहीं है, या मनुष्य असल में बंदर था जिसका चलते समय के साथ विकास होता गया?

और कैसे यह संभव है कि एक बहरा गूँगा मूल ऐसे मनुष्य की सृष्टि करे जिसमें उच्च गुण, आदर्श व्यक्तित्व और बेहतरीन रुप में शारीरक अंगों कि स्थापना हो? और कैसे यह संभव है कि जो विषय स्वयं अपने पास ही ना हो, वही विषय वह किसी और को दे?

दुनिया ही क्या मनुष्य का लक्ष्य है, और उसकी इच्छाओं का अंत है, और ईश्वरीय धर्मों में उपलब्ध उन बातों का कोई हिसाब नहीं है, जिसमें यह कहा गया हैं कि मनुष्य के अलावा भी दुसरी बहुत सी ताकते हैं, या इस जीवन के अलावा भी दूसरा जीवन है?

इस प्रकार के लोगों के विचार के बारें मे ईश्वर ने कहा। और कहते हैं कि हमारी ज़िंदगी तो सिर्फ दुनिया ही की है कि (यहीं) मरते और जीते है और हमें तो ज़माना मार देता है और उन को इस का कुछ इल्म नहीं, सिर्फ़ अटकल से काम लेते हैं। (अल जासीया, 24)

ईश्वर के होने का इन्कार करनेवालों के बारें में ईश्वर ने यह कहा और बे-इंसाफ़ी और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लो कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (अल नम्ल, 14)



ऐन्स्टीन

भौतिक वैज्ञानिक

ज्ञान और धर्म

मै न्ही समझ्ता हूँ के ज्ञान का धम् के साथ कोई टकजराऊ है। वास्तव में मेरी भवना है कि इन दोनो के बीच मज्बुत सम्बंध है। इसलिये मैं ये कह्ता हुँ, के ज्ञान धर्म के बिना अंधा है। ये दोनौ महत्वपूर्णहै। ये दोनौ एक साथ कार्य करते है। मेरि भावना है के जिस मनुष्य को ज्ञान की ये सच्छई।



न्यूटन

ब्रिटिश दार्शनिक

नास्तिकता मुर्ख़ता का एक रुप है

नास्तिकता मुर्खता का एक रुप है। क्यों कि जब मै सूर्य मंडल कि ओर देखता हूँ तो मुझे यह लगता है कि पृथ्वी सूर्य से उचित दूरी पर है, और यही दूरी पृथ्वी को इस प्रकार सक्षम बनाया कि वह गर्मी और रोशनी की सही शशी प्राप्त करें। निश्चत रूप से यह कोई संयोगवश नही है।

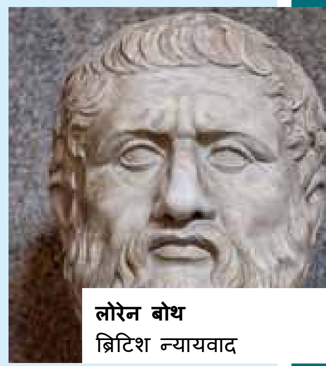
अवश्य रुप से नास्तिकता का विश्वास रखने वाला कोई भी प्राणी (छोटा हो या बडा) जीवन के रहस्य का ज्ञान पूर्ण रुप से प्राप्त नही करता क्यों कि वह अपने आप को मज़बूत समझता है, इसी प्रकार से वह यह मानता है कि जब किसी की आत्मा गले तक पहुँच जाये तो वह लोग इसको दुबारा लौटा नहीं सकते। तो फिर कहाँ है वह मूल जिसके अनुसार यह लोग कहते है वही इस ब्रह्माण्ड के वजूद का कारण है? और जब मनुष्य का शरीर एक बेकार विषय हो गया तो क्यों नहीं यह लोग उसकी आत्मा को लौटाने के लिए उस मूल के आगे विनती करते हैं?

फिर कैसे सारी मानवता धार्मिकता को इस हद तक सम्मान देने पर सहमत होती, अगर नास्तिक लोगों के अनुसार यह बात सही होती कि धार्मिकता केवल कल्पनाएँ है? क्यों इतिहास में अल्लाह के सारे नबी सफ़ल रहे और उनकी कही हयी बाते लोगों के मन में जीवित रही, जब कि किसी भी मनुष्य के विचार खतम हो जाते है और भूला दिये जाते हैं, बल्कि चलते समय के साथ (चाहे उनके विचार कितने ही अच्छी भाषा में हो) लोग इन से निराश हो जाते है?

और भले काम और बुरे काम करने वाले के बीच अंतर करना कैसे संभव है? बल्कि पापी को उसके पाप से कौन-सी चीज़ रोकेगी? धनी के मन में निर्धनी पर दया करने का भाव कौन-सी चीज़ पैदा करेगी? और कौन सी चीज़ चोर, धोखेबाज़, द्रोही, व्यस्नी को रोकेगी... इन जैसे लोगों को अपनी इच्छाएँ पूरी करने से कौन-सी चीज़ रोकेगी?

नास्तिक समाज अपने आप में गुमराही, स्वार्थी, स्वयं इच्छाओं के प्रेम और इस जैसी दूसरी चीज़ों के बीच भेडियों के झुंड की तरह जीवन बिता रहें हैं, इसी कारण नास्तिकता अप्रसन्न्ता, निर्धनता, व्देष, चिंता और दुःख के वृध्दि का सब

सुंन्दरता और प्रणाली



लोरेन बोथ

ब्रिटिश न्यायवाद

निश्चित रूप से यह संसार सुन्दरता और प्रणाली कि निशानी है, और असंभव है कि इस संसार कि इत्तेफाख से सृष्टि हुई हो, परन्तु यह एक बुद्धिमान कि निर्माण किया हुआ है जिसने भलाई की आशा की है और हर विषय को अपनी बुद्धिमत्ता और इरादे से व्यवस्थित की है ।



वास्तविक प्रसन्नता

मैं अब वास्तव में जीरही हूँ। न कि उन उपभोक्त विषयों मे जिसमें कि आजकल हम जी रहे हैं जैसे-नशीली पदार्थ, काम की उपेक्षा और भौतिकवाद संसार के पीछे इस खयाल से भागना की यही चीज़े हमारे लिए सौभाग्य का कारण हैं। लेकिन अब मै एक प्रसन्नता, प्रेम, आशा और शांती से जीवन जी रही हूँ।

लोरेन बोथ

ब्रिटिश न्यायवाद

से बडा कारण है।

ईश्वर ने कहा और जो मेरी नसीहत से मुँह फेरेगा उसकी ज़िंदगी तंग हो जाएगी और क़ियामत को हम उसे अंधा करके उठाएंगे। (ताहा, 124)

नास्तिकता एक ग़लत विचार है, जिसको न बुध्दि न तर्क और न स्वभाव स्वीकार करता है। यह ज्ञान के बिलकुल विरुध्द है, इसी कारण ज्ञानी लोगों के बीच नास्तिकता को अस्वीकार किया गया है। इसी प्रकार से नास्तिकता तर्क के भी विरुध्द है, क्योंकि इस की बुनियाद जीवन मे तर्क न होने पर आधारित है, यह विचित्र ब्रहमाण्ड अनजानी दुर्घटना का फल है और इस में प्राकृति का कोई हस्त क्षेप नही है। जब कि नास्तिकता का दावा करने वाले लोगों के पास भी सच्चा स्वभाव धार्मिकता की ओर बुलाता है। बे इंसाफ़ी और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लो कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (अल नम्ल, 14)

सदा यह प्रश्न उत्तरों पर आधारित होते है।

मनुष्य का यह प्रयत्न व्यर्थ होगा कि वह इन प्रश्नों के उत्तर स्वयं जानने का प्रयास करें । आधुनिक विज्ञान किसी को इन प्रश्नों के उत्तर अब तक नहीं दे सका, इसलिए कि यह सारी बातें धर्म के विभाग के भीतर आती है। इसी कारण विचार अनेक हो गये

और इन बातों के बारे में मिथकों और किंवदंतियाँ अलग-अलग हो गयी, और इस कारण मनुष्य की चिंता और भ्रम बड़ गया।

यह संभव नहीं है कि ईश्वर की ओर से अम्न-आस्ती, सुख और प्रसन्नता की ओर जाने वाले रास्ते की ज्ञानोदय के बिना मनुष्य इन सारी बातों का सही और पर्याप्त उत्तर प्राप्त कर ले।

इन जैसे सारे मुद्यों और प्रश्नों का उत्तर केवल धर्मा ही में उपलब्ध हो सकता है, इसलिए कि यह सब आध्यात्मिक मुद्दें है, और सही धर्म ही सच और दुरुस्त फैसला कर सकता है इसलिए कि ईश्वर की ओर से यही वह एक धर्म है जो नबी और रसूलों के पास भेजा गया। ईश्वर ने कहा कह दो कि खुदा की हिदायत (यानी दीने इस्लाम) ही हिदायत है। (अल बक़रा, 120)

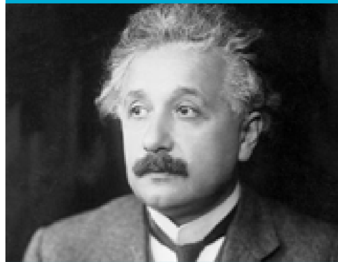
ईश्वर ने कहा कह दो कि हिदायत तो खुदा ही की हिदायत है। (आल इंम्रान, 73)

और इसी कारण मनुष्य के लिए यह अवश्य है कि वह सच्चे धर्म की खोज करें, उसको सीखे और उस पर विश्वास रखे, ताकि भ्रम दूर हो जाये, संदेह अंत हो जाये, सीधे, सुख और प्रसन्नता के रास्ते का ज्ञानोदय हो जाय।

तो फिर उत्तर कैसे प्राप्त हो?

ईश्वर ने कहा और हम ने इन्सान को मिट्टी के खुलासे से पैदा किया है। फिर उस को एक मज़बूत (और महफ़ूज) जगह में नुत्फ़ा बना कर रखा। फिर नुत्फ़े का लोथडा बनाया फिर लोथडे की बोटी बनायी, फिर बोटी की हड्याँ बनायी, फिर हड्डियों पर गोश्त (पोस्त) चढाया, फिर उस को नयी सूरत में बना दिया, तो खुदा जो सब से बेहतर बनाने वाला, बडा बरकत वाला है फिर इस के बाद तुम मर जाते हो। फिर क़ियामत के दिन उठा खड़े। किये । जाओगे। (अल मुमीनून, 12-16)

मालूम यह हुआ कि अंत में दुबारा ज़िंदा किया जाना और ईश्वर की तरफ लौटना है, और यह ब्रहमाण्ड व्यर्थ पैदा नहीं किया गया है, (ईश्वर व्यर्थ कामों से परेह है) बल्कि बडी बडी हिकमतों के कारण इस ब्रहमाण्ड की सृष्टि की गयी है। ईश्वर ने कहा क्या तुम यह ख्याल करते हो कि हमने तुम को बे-फायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ लौट कर नहीं आओगे। (अल मूमिनून, 115)



सौभग्य को अपना लक्ष्य बनाओ

अगर तुम सौभाग्यवान बनना चाहते हो तो सौभाग्य को किसी लक्ष्य से जोडो नकी किसी व्यक्ति या किसी विषय से

ऐन्सटीन

भौतिक वैज्ञानिक



तो मालूम यह हुआ कि ईश्वर ने मानव और भूत प्रेत (जिन) की सृष्टि व्यर्थ नहीं की है, परन्तु एक ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए सृष्टि की है, जिसका कोई साथी नहीं है। यहाँ ईश्वर की प्रार्थना का मतलब आदेशों का पालन करना, नमाज़, ईशवर कि बड़ाई करना, ब्रहमाण्ड का निर्माण करना और मानवता के लाभ के लिए प्रयत्न करना, और इस प्रकार के सारे काम जिसको ईश्वर पसंद करता है और जिससे खुश होता है वह सब काम प्रार्थना का मतलब है।

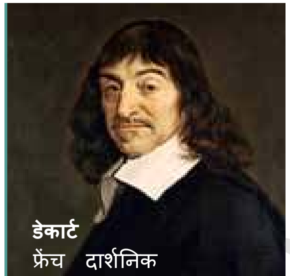
ईश्वर ने कहा। और मैने जिन्नों और इंसानों को इसलिए पैदा किया है कि मेरी इबादत करें। (अल ज़ारीयात, 56)

सारे लोग और सारी मानवता ईश्वर ही की ओर लौट कर जानेवाली है, और ईश्वर ही की ओर उनका अंतिम स्थान है।

ईश्वर ने कहा और खुदा ही की तरफ (तुम को) लौट कर जाना है। (आले इम्रान, 28)

यह विश्वास मानव के जीवन से व्यर्थता समाप्त करता है, उनको अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है, और उनके दिलों में प्रसन्नता पैदा करता है क्या ये किसी के पैदा किए बग़ैर ही पैदा हो गये हैं या ये खुद (अपने आप) पैदा करने वाले है? या उन्होंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? (नहीं) बल्कि ये यक़ीन ही नहीं रखते। (अल तूर 35-36)

निश्चित रुप से इस ब्रहमाण्ड के रहस्य के ज्ञान से जब मनुष्य असमर्थ हो जाता है, और ईश्वर की सृष्टि, धरती, तारे, ग्रह, दिन रात के अनुसरण, जीवन



डेकार्ट
फ्रेंच दार्शनिक

हर चीज का प्रजपति

मैं सजीव हुँ किसने मुझे वुजुद में लाया?और किसने मुझे पैदा किया? वास्ताव रुप से मैंने अपने आप को पैदा न्ही किया, मुझे पैदा करने के लिए एक प्रजापति का होना अवश्य है। इस प्रजापति का सदैव जीवित रहनेवाला और किसी पर आधार न हो जो उसको “वजुद” में लाये या उसके वजूद की सुरक्षा करें। यह भि अवश्य है कि वह प्रजापति सुन्दरता के सारे चरित्र से संपूर्ण हो, और वह प्रजापति “अल्लाह” है जिसने हर विशय की सृष्टि की है

और मृत्यु, और इस ब्रहमाण्ड में ईश्वर की ओर से सृष्टि की हुयी सारी चीज़ों में विचार करता है तो वह स्वयं यह विश्वास कर लेता है कि इस ब्रहमाण्ड की सृष्टि करने वाला कोई तो है जो उससे ज्यादा शक्तिमान है, और जो इस लायक है कि उसकी विनती की जाय, उसकी प्रार्थना की जाय उससे पुण्य की आशा रखी जाय और उसके दण्ड से डरा जाय। इसी प्रकार से इन सारी बातों के बारें में सोच विचार मनुष्य को एक शक्तिमान और बुध्दिवान प्रजापति के वजूद को स्वीकार करने पर मज़बूत करता है और यह विश्वास दिलाता है कि मूल ईश्वर के जीव से एक प्राणी है, जिसका वजूद पहले कुछ न था।

यह शक्तिमान, बुध्दिमान ईश्वर जिसने प्राणी के सामने अपना परिचय किया, और अपनी निशानियों को प्राणी के लिए गवाह और सबूत के रुप में स्थापित किया, (जब कि ईश्वर को इसकी आवश्यकता नही हैं) और ईश्वर ने अपने आप को बेहतरीन गुणों से विवरण किया, इस ईश्वर के वजूद, देवत्व और खुदाई पर दिव्य धर्म मानसिक आवश्यकता और जन्मजात वृत्ति गवाह है, और सारे समाज इसी पर सहमत है।

संतोषजनक उत्तर

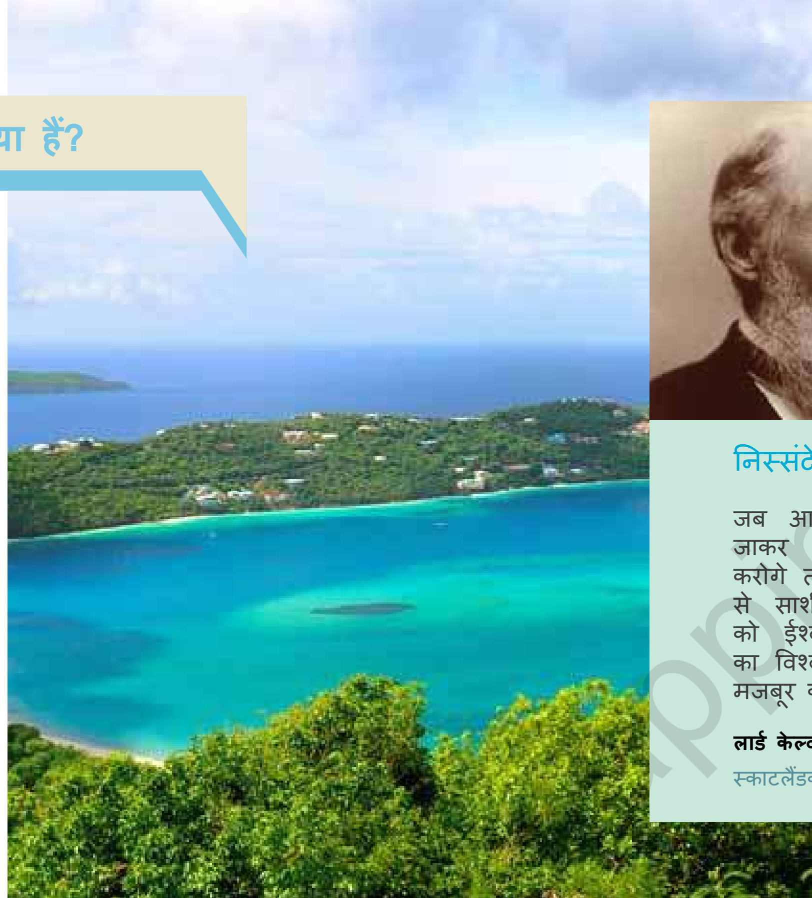
सामन्य रुप से धर्म की और विषय रुप से एकेश्वरवाद का इतिहास हमे यह ज्ञान प्रदान करता हैं कि ब्रहमाण्ड और मानव की वास्तविकता और इन दोनों के वजूद में आने के कारण से संबंधित हर प्रश्न का संतोषजनक उत्तर एक ईशवर पर विश्वास करना है, परंतु ये असंभव है मानवीय जीवन का लक्ष्य ईश्ववर के सिवा कोई और हो। मानव में हर किस्म की धर्मिकता का उद्देश्य (जाने या अंजान में) एक ईश्वर पर विश्वास रखना है।



पोप क्विंग
आष्ट्रिया आर्क बिशप का अध्यक्ष



वह सबूत क्या-क्या हैं?



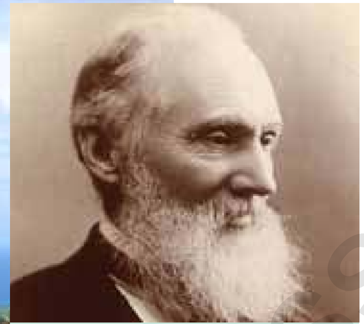
1. हमारी आँखों के सामने ईश्वर का बनाया हुआ यह ब्रहमाण्ड और इसमें उपलब्ध ईश्वर की अजीब अजीब कारीगरी।

- क्या आप इस महान ब्रहमाण्ड को और इसमें मौजूद आकाश और पृथ्वी को नही देखते?
- क्या आपने कभी आकाश की सृष्टि और उसमें उपलब्ध तारे और ग्रहों के बारे में विचार किया?
- क्या आपने इस पृथ्वी इस में बहनेवाली नहरों, समुद्रों और इसमें मौजूद मैदानों और पहाडों के बारे में कभी विचार नहीं किया?
- क्या आपको यह मज़बूत समन्वय और अच्छी रचनात्मकता ने आश्चर्य नहीं किया?

आपके विचार में किसनें इस ब्रहमाण्ड को पैदा किया? किसने इसकी रचनात्मकता की किसने इसको शक्तिमान बनाया, और किसने इस चमत्कारी रुप में इसकी सजावट की इस प्रकार से कि वह सुंदरता का चिह्न हो गया? और किसने किसी पूर्व उध्दारण के बिना इस ब्रहमाण्ड की सृष्टि की है?

क्या आप यह ख्याल करते हैं कि स्वयं उसने ही अपने आप की सृष्टि की है? यह इस ब्रहमाण्ड का कोई शक्तिमान प्रजापति भी है? ईश्वर ने कहा। बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने जाने में अक़लवालों के लिए निशानियां हैं। जो खडे और बैठे और लेटे (हर हाल में) खुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते (और कहते) हैं कि ऐ परवरदिगार! तू ने इस (मख़्लूक़) को बे-फ़ायदा नहीं पैदा किया। तू पाक है, तो (क़ियामत के दिन) हमें दोज़ख के आज़ाब से बचाइये। (आल इमरान, 190-191)

क्या कभी तुम्हारे मन में अपने आप की सृष्टि के बारे में ख्याल पैदा नहीं हुआ? ईश्वर नें कहा और खुद तुम्हारे नफ़सों में, तो क्या तुम देखते नहीं? (अल ज़ारीयात, 21)



निस्संदेह ईश्वर है।

जब आप गहराई में जाकर सोंच विचार करोगे तो निस्रित रुप से साशी ज्ञान आप को ईश्वर के वजूद का विश्वास करने पर मजबूर करेगा।

लार्ड केल्वी
स्काटलैंडका भौतिक वैज्ञानीक

तो फिर मानव की सृष्टि कैसे हुयी? ईश्वर ने कहा क्या ये किसी के पैदा किए बग़ैर ही पैदा हो गये हैं या ये खुंद (अपने आप) पैदा करने वाले हैं? या उन्होंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया हैं? (नहीं) बल्कि ये यक़ीन ही नहीं रखते। (अल तूर, 35-36)

लोगों ने न खुद अपने आप की सृष्टि की है, और न इन्होंने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की है, इन सब बातों से हटकर जब यह खुद "न" से पैदा नहीं हुए हैं, तो ब्रहमाण्ड और इसमें स्थिर सारी चीज़ों की सृष्टि करने वाले के होने में कोई संदेह नहीं है, और वह सृष्टि करनेवाला अल्लाह है। इतने सारे संकेत और सबूत के बाद इस ब्रहमाण्ड का नख्शा बनानेवाले प्रजापति ईश्वर के वजूद का इंकार करने वालों पर आश्चर्य है।

2. वृत्ति

निश्चित रुप से प्राणी प्रजापति ईश्वर को मानने पर बिना किसी संदेह के जन्म जात से सहमत है, जैसा कि प्राणी जन्म जात से अच्छाई से प्रेम और बुराई से व्देष करने पर सहमत है, बल्कि ईश्वर के वजूद को मानना वृत्ति के अनुसार सारी चीज़ों से अधिक गहरा विश्वास है, जिसके लिए किसी गवाह या सबूत की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर ने कहा तो तुम एक तरफ़ होकर दीन (खुदा के रास्ते पर) सीधा मुँह किए चले जाओ (और) खुदा कि फितरत को, जिसपर उसने लोगों को पैदा किया है, (अख्तियार किए रहो) खुदा की बनायी हुई फितरत) में तब्दीली नहीं हो सकती। यही सीधा दीन है लेकिन अक्सर लोग नही जानते हैं। (अल रूम, 30)

और नबी ने कहा हर बच्चा वृती ही पर पैदा होता है। (इस हदीस पर "बुखारी" और "मुस्लिम" सहमत है)

व्यक्तित्व की भावना

वह ईश्वर जिसके वजूद को हम मानते है, वह भोतिकवाद संसार से संबंध नही है, और न हमारी सिमित ज्ञानेंद्रीय उस ईश्वर को महसूस कर सकती हैं। इसीकारण यह विफल प्रयत्न है कि ईश्वर के वजूद के प्रमाण के लिए प्राकृतिक ज्ञान का प्रयोग किया जाय, इसलिए कि ईश्वर के पजूद कि सीमा प्राकृतिक ज्ञान की तंग सीमा से अलग है। निश्चित रुप से ईश्वर के वजूद पर विश्वास करना एक निजी व्यवहार है जो मानव के अंतःकरण व भावनाओं में जन्म लेती है और निजी अनुभवों में बढ़ती है।



रोबट् मोरेस बिग
प्रकृतिवादी

3. सारी मानवता की आम सहमती

प्राचीन काल से ही सारी मानवता इस बात पर सहमत है कि इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि ईश्वर व्दारा हुयी है। परन्तु यहाँ पर बिना किसी साथी, बिना किसी भागीदार एक ईश्वर के इस ब्रह्माण्ड कि सृष्टि करने वाले होने पर बलिष्ठ सहमती है, अवश्य रुप से किसी भी जाति के लोगों ने यह दावा नही किया कि आकाश और पृथ्वी का, प्रजापति या अन्नदाता एक ईश्वर के अलावा कोई और है, बल्कि जब उनसे यह प्रश्न किया जाता है तो वे (ईश्वर के भागीदार होने का विश्वास रखते हुए) एक ईश्वर की देवत्व को मानते हैं, ईश्वर ने कहा और अगर उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चाँद को किस ने (तुम्हारे) हुक्म के ताबेअ किया तो कह देंगे, खुदा ने, तो फिर ये कहा उल्टे जा रहे हैं? खुदा ही अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है और जिस के लिए चाहता है, तंग कर देता है। बेशक खुदा हर चीज़ को जानता है। अगर तुम उन से पूछो कि आसमान से पानी किस ने बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मारने के बाद (किस ने) जिंदा किया. तो कह देंगे कि खुदा ने। कह दो कि खुदा का शुक्र है. लेकिन इन में अक्सर नहीं समझते। (अल अनकबूत, 61-63)

और ईश्वर ने यह भी कहा और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है, तो कह देंगे कि उन को ग़ालिब (और) इल्मवाले (खुदा) ने पैदा किया हैं। (अल ज़ूख़्रुफ़, 9)

नास्तिकता और ईश्वर के वजुद का इंकार (जैसा कि पहले इस का खंडन कर दिया गया) केवल यह कुछ ही लोगों की रुचि है। इस प्रकार की रुचि रखनेवाले बुध्दिमान लोगों के समूह से पीछे रह गये, और निजी जीवन में इस रुचि की असफलता और नाकामी सामने आगयी।



अल्लाह पर ईमान लाना मानवीय तत्व है।

बच्चों के अंदर बढ़नेवाला ज्ञान प्राकृतिक रुप से प्रजापति और ईश्वर की ओर ध्यान दिलाता है। ना कि उस विकास की तरफ जो मानवीय ज्ञान के लिए असामान्य और मुश्किल बूझ है।

जास्टोन बारेट

आँक्सफोडर् विश्वविद्यालय का मानवीय सैध्दांतिक

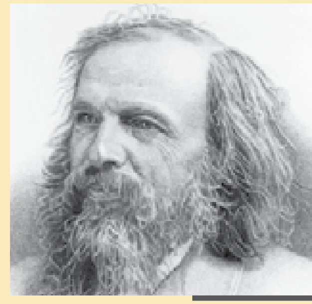


4. मानसिक आवश्यकता

ईश्वर के वजूद और उसके देवत्व होने पर पूर्वगामी सबूतों के अलावा बुध्दि इस बात पर सब से बडा सबूत है कि ब्रह्माण्ड की यह बलिष्ठ रचनात्मकता स्वयं अपने आप ही नहीं हुयी है परन्तु वह एक प्राणी है, जिसको एक दिन ख़तम होना हैं, और इस बात में कोई संदेह नही कि किसी प्राणी के अंत होने में कोई इसका अंत करनेवाला ज़रुर है।

अब यहाँ एक प्रश्न स्वयं यह होता है कि कितनी कठिनायें या कष्ट आप पर आये, तो आपने किसकी ओर आश्रय लिया? और किसके सामने आपने प्रार्थना की? और किससे आपने यह आशा रखी कि वह आपके नष्ट को ख़तम करें, आपके कष्ट को दूर करे, और आपकी परेशानी सुझाये?

ईश्वर ने कहा। और जब इन्सान को तक्लीफ पहुँचती है तो अपने परवरदिगार को पुकारता है (और) उसके तरफ दिल से रुजूअ करता है। फिर जब वह उसको अपनी तरफ से कोई नेमत देता है, तो जिस काम के लिए पहले उसको पुकारता है उसे भूल जाता है और खुदा का शरीक बनाने लगता है ताकि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कहे दो कि (ऐ काफ़िरे नेमत) अपनी ना-शुक्री से थोड़ा-सा फ़ायदा उठा ले, फिर तो तू दोज़खियों में होगा) (अल ज़ूम्र, 8)



बुध्दिमान बनो

क्या कोई बुद्दिमान यह कल्पना करता है या यह विश्वास रखता है कि बुध्दि और बुध्दिमता से खाली एक शक्तती ने उसे अपने-आप संयोग से सृष्टि की है?

जान क्लैव लार्ड को थरान

डोल्य विश्वविद्यालय का प्राकृतिक विज्ञान का प्राध्यापक



धर्म और दर्शन

बहुत से कम दर्शन ऐसे है जो मानव को निस्तकता के निकट लाता है। लेकिन दर्शन की गहराई मनुष्य को धर्म की ओर लाती है।

फ्राँसिस बिकोन

ब्रिटिश दार्शिनिक

ईश्वर ने कहा। वही तो है जो तुम को जंगल और दरिया में चलने-फिरने और सैर करने की तौफ़ीक देता है, यहाँ तक कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और कश्तियों पाकीज़ा हवा (के नर्म-नर्म झोंके) से सवारों को लेकर कर चलने लगती है और वे उनसे खुश होते हैं, तो यकायकी जन्नाते की हवा चल पड़ती है और लहरें हर तरफ से उन पर (जोश मारती हुई) आने लगती है और वे ख्याल करते हैं कि (अब तो) लहरों में घिर गए, तो उस वक्त खालिस खुदा ही की इबादत कर के उससे दुआ माँगने लगते हैं कि (ऐ खुदा!) अगर तू हम को इससे निजात बख्शे तो हम (तेरे) बहुत ही शुक्रगुज़ार हो। (यूनूस, 22-23)

ईश्वर ने कहा। और जब उन पर (दरिया की) लहरें सायबानों की तरह छा जाती है, तो खुदा को पुकारने (और) खालिस उस की इबादत करने लगते है, फिर जब वह उन को निजात दे कर खुश्की पर पहूँचा देता है, तो कुछ ही इंसाफ पर क़ायम रहते हैं और हमारी निशानियों से वही इन्कार करते है, जो वायदा तोडनेवाले (और) ना-शुक्रे हैं) (लुख्मान, 32)



ईश्वर के देवत्व होने के सबूत

जब अच्छी वृत्ति और श्रेष्ठ बुध्दि यह मान चुके है कि इस ब्रह्माण्ड का एक ईश्वर है, और इस प्रकृति का एक प्रजापति है, तो इस ईश्वर के देवत्व होने पर सब के सब सहमत हो गये, और उस एक ईश्वर के देवता होने का स्वीकार कर लिये। यह श्रेष्ठ बुध्दि खुल्लम खुल्ला यह वर्णन करती है कि ईश्वर अपनी देवत्व में एक है, इसमें इसका न कोई साथी है और न कोई भागीदार इसकी बहुत सी खुली खुली निशानियाँ (सबूत) हैं। इनमें से कुछ यह हैं

1. इस ब्रह्माण्ड के लिए दो ईश्वर कैसे हो सकते है?

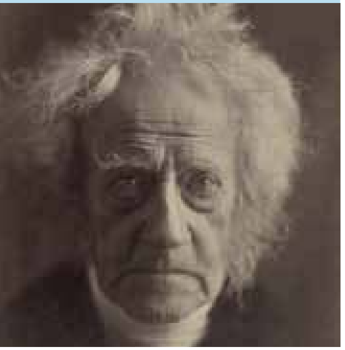
एक ईश्वर का वजूद मानने के अलावा बुध्दि के सामने कोई विकल्प नही है, वरना व्दंव्दात्मक अधिरोपण के अनुसार अगर दो ईश्वर होते, तो यह प्रश्न ज़रुर होता कि जब यह दोनों ईश्वर आपस में झगड़ने लगें, और उन दोनों में से हर एक अपनी इच्छा पूरी करना चाहे तो क्या होगा? इन दोनों में से एक किसी काम के करने का निर्णय ले, और दूसरा इसके विरुध्द निर्णय ले? और अवश्य रुप से इन दोनों में से एक अग्र होगा, तो दूसरा विनम्र ही रहेगा और क्या विनम्र ईश्वर हो सकता है? तो यह फैसला अटल होगा कि ईश्वर एक है। ईश्वर ने कहा । खुदा ने न तो किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उसके साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता है तो हर माबूद अपनी-अपनी मख्लूक़ात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता। ये लोग जो कुछ (खुदा के बारे में) बयान करते है, खुदा उस से पाक है। वह पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है और (मुश्रिक) जो उसके साथ शरीक करते है, (उस की शान) उस से बुलंद है। (अल मूमीनून, 91-92)



अल्लाह के सिवा कोई ईशवर नही है

इस्राईल और फादेह का बादशाह सेना का ईश्वर यही कहता है मै ही प्रथम हूँ, मैं ही अंतिम हूँ, और मेरे अलावा कोई ईश्वर नही है ईशइया (6.44)

अहदे खदीम (तौरात)



हर्शल
बिटिश दर्शनिक और खगोलवादी

ईश्वर का एकत्व

जैसे-जैसे विज्ञान का क्षेत्र व्याप्त होता गया इस बात का प्रमाण मज़बूत और अधिक हो गया कि एक पूर्ण शक्तिमान बुध्दिमत्ता का वज़ूद हैं। भोगोलिक, गणितज्ञ, भौतिक वैज्ञानी, और पर्यावरण वैज्ञानिक अपने प्रयास और खोजों से प्रजापति की सदा को ऊँचा करने के लिए सारे ज्ञान का एक प्रार्थना स्थल स्थापित कर रहे हैं।

2. बड़े आश्चर्य की बात है कि मनुष्य किसी ऐसे कमज़ोर कि प्रार्थना करे, जिसके पास न कोई शक्ति है और न कोई ताक़त, न उसके हाथ में आकाश और पृथ्वि का शासन है, न वह कोई छोटी सी छोटी चीज़ कि सृष्टि करता है, और दूसरों के अलावा स्वयं वह अपने लिए न लाभ और नष्ट का, और न जीवन, मृत्यु और मृत्यु के बाद दुबारा जीवित करने का मालिक है। ईश्वर ने कहा वह (खुदा-ए-अज्ज़ व जल्ल) बहुत ही बरकत वाला है जिस ने अपने बन्दे पर क़ुरआन नाज़िल फरमाया ताकि दुनिया वालों को हिदायत करे। वही कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और जिसने (किसी को) बेटा नही बनाया और जिसका बादशाही में कोई शरीक नही और जिस ने हर चीज़ को पैदा किया, फिर उस का एक अन्दाज़ा ठहराया। और (लोगों ने) उसके सिवा और माबूद बना लिए हैं, जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं कर सकते और खुद पैदा किए गये है और न अपने नुक्सान और नफ़ा का कुछ अख्तियार रखते है और न मरना उन के अख्तियार में है और जीना और न (मर कर) उठ खड़े होना। (अल फ़ूरख़ान, 1-3)

मुषरिकों के अनुसार अगर एक ईश्वर के साथ कोई दूसरे ईश्वर भी होते जिनकी प्रार्थना की जाती और जिन के पास सिफारिश की जाती, तो ज़रुर यह दूसरे ईश्वर भी उसी एक ईश्वर की प्रार्थना करते, उसी की बिनती करते, और उसी की ओर साधना करते। ईश्वर ने कहा कह दो कि अगर खुदा के साथ और माबूद होते, जैसा कि ये कहते है, तो वे ज़रुर (खुदा-ए-मालिके अर्श की तरफ़ (लडने-भिड़ने के लिए) रास्ता निकालते। वह पाक है और जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस से (इसका रुत्बा) बहुत ऊँचा हैं। (अल इस्रा, 42-43)

बल्कि अल्लाह एक और उसको किसी की आवश्यकता नही है, न उसका कोई बेटा है और न वह किसी का बेटा, और न कोई उसके समान है।

यह सब ईश्वर न किसी चीज़ के मालिक है और न वह कुछ कर सकते हैं । ईश्वर ने कहा कह दो कि जिन को तुम खुदा के सिवा (माबूद) ख्याल करते हो, उन को बुलाओ, वह आसमानों और ज़मीन में ज़र्रा भर चीज़ के भी मालिक नहीं हैं और न उन में उन की शिर्कत हैं और न उन में से कोई खुदा का मददगार है, और खुदा के यहाँ (किसी के लिए) सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी. मगर उस के लिए, जिस के बारे में वह इजाज़त बख्शे। (सबा, 22-23)



यानी एक ईश्वर के अलावा लाभ और नष्ट न देनेवाले प्राणियों को ईश्वर का भागीदार मानने वालों से उनकी कमज़ोरी और उनकी प्रार्थना के ग़लत होने का वर्णन करते हुए यह कह दो कि अगर तुम्हारी प्रार्थनाएँ तुम्हारे लिए लाभ का कारण हो, तो तुम ईश्वर के साथ जिस किसी को भागीदार समझते हो उससे प्रार्थना कर लो। जब कि इन के कमज़ोर होने और किसी भी प्रकार से प्रार्थनाएँ पूरी न करने के कारण बडी संख्या में उपलब्ध हैं, क्योंकि इनके हाथ में न्यूनतम राज्य नहीं है, और ये पृथ्वी और आकाश में कण कण के न खुद मालिक हैं और न इसमें भागीदार हैं। और ये तुम्हारे मन घड़त ईश्वरों की आकाश और पृथ्वी में न थोडी भागीदारी है न अधिक, न उनके हाथ में पूरा राज्य है और न इस राज्य में भागीदारी। अब यह बात रह जाती है कि कोई कहे "हो सकता है कि यह लोग ईश्वर के मददगार और मंत्री हो परन्तु इन से प्रार्थना करना लाभ का कारण हो, इसलिए कि (ईश्वर को इनकी आवश्यकता होने के कारण) यह लोग भी अपने चाहने वालों की ज़रुरते पूरी करते हैं"। लेकिन ईश्वर ने इस बात का भी इन्कार किया, और कहा।. "आर उसके लिए नही है" यानी एक शक्तिमान ईश्वर के लिए नही है "इन लोगों में से" यानी इन (मनघड़त) ईश्वरों में से "कोई मददगार" यानी कोई मंत्री या मददगार नही है जो ईश्वर की सहायता करे और उसके राज्य के उपाय मे उसकी मदद करे।

3. इस ब्रहमाण्ड में और इस चमत्कार रचनात्मकता के नियमित रुप से एक ही शैली से चलने मे इस बात का बडा



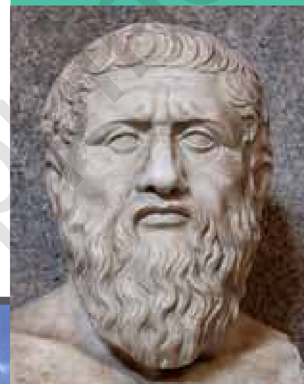
सबूत है कि यह ब्रहमाण्ड एक ही बुध्दिमान और शक्तिमान ईश्वर के उपाय का फल है। ईश्वर ने कहा और (लोगों)! तुम्हारा माबुद खुदा-ए-वाहिद है। उस बडे मेहरबान (और) रहम वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। बेशक आसमानों और ज़मीन के पैदा करने मे और रात और दिन के एक दूसरे के पीछे आनो-जाने में और कश्तियों (और जहाज़ों) मे जो दरिया में लोगों के फायदें की चीज़े लेकर रवां है और मेंह मे जिसको खुद आसमान से बरसाता और उससे ज़मीन को मरने के बाद ज़िंदा (यानी खुश्क हुए पीछे सर सब्ज़) कर देता है और ज़मीन पर हर किस्म के जानवर फैलाने में और हवाओं के चलाने में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान फिरे रहते हैं अक़्लमंदों के लिए (खुदा की खुदरत की) निशानियाँ हैं। (अल बख़ारा, 163-164)

क्या यह नियमित संसार और प्रणाली, जो दिन रात अपना काम कर रहे हैं, और जिसमें एक क्षण के लिए भी कोई रुकावट नहीं होती है जिससे कि संसार का विनाश हो जाय, तो क्या इस नियमित संसार पर एक ईश्वर के सिवा कोई और कंट्रोल रख सकता है? क्या सृष्टी और उपाय करने में इस रचनात्मकता का एक ईश्वर नहीं है, जिसका न कोई विरोधी है और न कोई भागीदार? क्या यह सब बातें हर बुध्दि रखनेवाले के लिए इस बात का खुला सबूत नही है कि दो ईश्वर का वजूद असंभव है? ईश्वर ने कहा अगर आसमान और ज़मीन में खुदा के सिवा और माबूद होते तो ज़मीन व आसमान फ़साद से भर जाते। जो बातें ये लोग बताते हैं, अर्श का मालिक, खुदा उन से पाक है। (अल अंबीया, 22)



ऊँचा लक्ष्य

यह जगत कुछ इस रुप में हमारे सामने आता है कि जिसमें कोई चीज़ संयोग से नही हुई। बल्कि जगत का प्रत्येक अंश एक लक्ष्य की ओर दौड रहा है। और वह लक्ष्य अपने से बडे लक्ष्य की ओर दौड रहा है। इसी प्रकार अंतिम लक्ष्य प्राप्त होता है।



अफउलातून

युनानी दर्शनिक

यानी अगर आकाश और पृथ्वी में एक ईश्वर के अलावा और कई ईश्वर होते, तो इन दोनों में और इनमें स्थिर सारे जीवों का विनाश हो जाता। निश्चित रुप से यह संसार नियमित और एकरुपता की अंतिम हद है, जिसमें न कोई दोष है न कोई बुराई, और जिसमें न किसी के बीच अनिच्छा और विपक्ष का सवाल है, निश्चित रुप से यह सब इस बात का सबूत है इस संसार का योजनाबध्द एक है, इसका ईश्वर एक है, और इसका भगवान एक है। अगर इस संसार के लिए दो योजना बध्द और दो या अधिक ईश्वर होते, तो ज़रुर इसके प्रणाली में बिगाड़ पैदा होता, और इसके आधार टूट जाते, क्योंकि यह दोनों या तो एक दूसरे को मना करते, या एक दूसरे का विरोध करते, और जब इनमें से कोई एक किसी विषय की योजना का निर्णय ले, और दूसरा उसी विषय की योजना न करने का निर्णय ले। और इन दोनों की योजना का एक साथ निर्माण होना असंभव है, इसी प्रकार से इन दोनों में से किसी एक की योजना का निर्माण होना दूसरे के कमज़ोर होने और विनम्र होने का सबूत है। सारी योजनाओं में दोनों का एक ही निर्णय लेना भी असंभव है। तो फिर यह बात अटल होगी कि वह सर्व शक्तिमान जिसका न कोई अनिच्छुक है और न कोई विरोधी, जो अपने निर्णय के प्रकार योजना करनेवाला है, वह एक ईश्वर है जो सर्व शक्तिमान है।

4. नबी आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद (जो सब पवित्र मन, बुध्दिमता, सत्यवादी और ईश्वर के आदेश लोगों तक पहुँचाने में विश्वसनीय हैं) ये सारे नबी और रसूल इस बात पर सहमत हैं कि ईश्वर एक है और उसके अलावा कोई दूसरा ईश्वर नहीं हैं। ईश्वर ने कहा। और जो पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ़ यही वह्य भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो। (अल अंबीया, 25)



अहदे खदीम (तौरात)

ईश्वर एक हैं

ईश्वर वह भगवान है जिसके सिवा कोई दूसरा नही है (तरनीया 4-34) मैं ईश्वर हूँ, कोई दूसरा ईश्वर नहीं, और मेरे सिवा कोई भागवान नही (अशईया 45-5)

और ईश्वर ने नबी नूह के बारे में कहा। हमने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो उन्होने (उस से) कहा, ऐ मेरी बिरादरी के लोगो। खुदा की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का (बहुत ही) डर है। (अल आराफ़, 59)

ईश्वर ने नबी ईसा के बारे में कहा। वे लोग बे-शुबहा काफ़िर हैं, जो कहते है कि मरयम के बेटे (ईसा) मसीह खुदा हैं, हालांकि मसीह यहूद से यह कहा करते थे कि ऐ बनी इस्राईल! खुदा की इबादत करो, जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी, (और जान रखो कि) जो शख्स खुदा के साथ शिर्क करेगा, खुदा उस पर बहिश्त को हराम कर देगा और उसका ठिकाना दोज़ख है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (अल मायीदा, 72)

ईश्वर ने नबी मुहम्मद (स) को यह कहने का आदेश दिया कि कहदो कि मुझ पर (खुदा की तरफ से) यह वह्य आती है कि तुम सब का माबूद एक खुदा है, तो तुम को चाहिए कि फ़रमांबरदार हो जाओ। (अल अंबीया, 108)

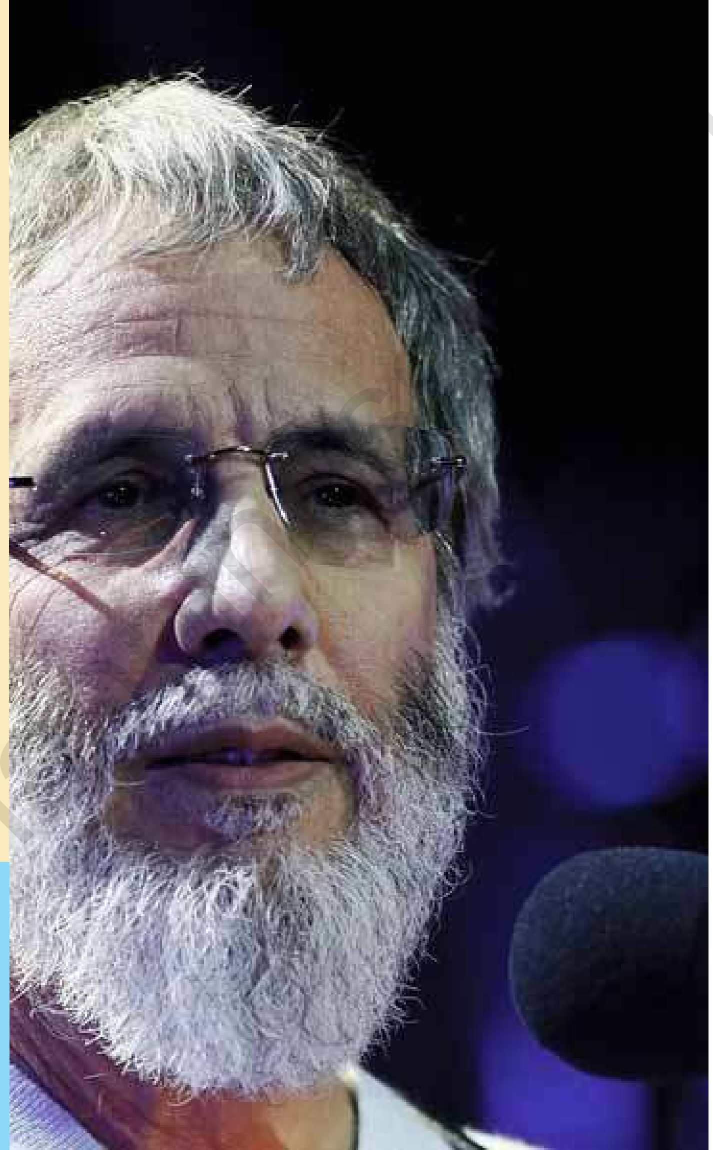
परन्तु श्रेष्ठ बुध्दि रखने वालों के लिए यह मुनासिब है कि वह अपने नबियों का अनुसरण करें, ईश्वर को एक माने और उसी पर प्रभु और देवता होने का विशवास रखे, ताकि जीवन और भविष्य जीवन में प्रसन्नता प्राप्त हो। ईश्वर ने कहा। जो शख्स नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, और वह मोमिन भी होगा, तो हम उस को (दुनिया में) पाक (और आराम की) जिंदगी से जिंदा रखेंगे और (आख़िरत मे) उन के आमाल का निहायत अच्छा बदला देंगे। (अल नहल, 97)

विश्वास (ईमान) के साथ किये जाने वाले अच्छे कार्य का फल इस पृथ्वी में प्रसन्न जीवन है। इस का यह हरगिस मतलब नहीं कि यह जीवन ऐश्वर्य होगा, हो सकता है कभी ऐसा हो, और हो सकता है कभी प्रसन्न जीवन हो, लेकिन मालो-दौलत न हो। जीवन में माल दौलत के अलावा और भी बहुत सी चीज़े है जिससे जीवन प्रसन्न होता है। जीवन में ईश्वर

भगवान एक हैं

तुम अपने भगवान को ही सज्दा करते हो और केवल उसी की पूजा करते ही (मत्ता 4-10) लूखा 4-8), यही हमेशा रहनेवाला जीवन है कि लोग आपको जाने, आपही निश्चित रुप से भगवान है और वह ईसा मसी जिसको आपने भेजा है (योहन्न 17-3)

अहदे जदीद (बैबल)



सौभाग्य का मार्ग

मुझे कभी सौभाग्य का ज्ञान नही था। जबसे में खुरान पढ़ना आरंभ किया तो मैं अपने आप से सवाल करने लगा और विस्मय करने लगा कि क्यों लोग इस संसार में गुमराह हो रहे हैं। जब कि प्रमाण उनके सामने है और प्रकाश उनके पास है।

कास्तिफेन्स

ब्रिटिश गायक

से प्रेम, उस पर विश्वास उसकी सुरक्षा, और उसके संतोष से सुखी रहना है। इसी प्रकार से जीवन में स्वस्थ, सुख, संतोष, लक्ष्मी, घरेलू आराम और लोगों का प्रेम है। जीवन में भले कार्य से संतोष और उसका प्रभाव आत्मा और जीवन में होना है। और माल-दौलत केवल जीवन की सुंदरता का एक तत्व है। माल और बेटे तो दुनिया की ज़िंदगी की (रौनक़ व) ज़ीनत है और नेकियां जो बाक़ी रहने वाली है, वे सवाब । के लिहाज़ से तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ बहुत अच्छी और उम्मीद के लिहाज़ से बहुत बेहतर हैं। (अल कहफ़, 46)

जब ईश्वर के पास स्थित महान, शुध्द और अमर लक्ष्य से मन का लगाव हो जाता है, तो प्रसन्न जीवन और प्रसन्नता का मतलब ही कुछ और हो जाता है।

अगर मनुष्य केवल विरोधी करना चाहे, तो स्वयं उसने ही अपने लिए अप्रसन्नता और कष्ट के रास्ते बना लिया है जिसमें वह लगातार घूमता ही रहेगा, ऐसे कष्ट और दुःखों से वह पीडित होगा जिसके दर्द से दिल टुकडे-टुकडे हो जायेगा। ईश्वर ने कहा। तो जिस शख्स को खुदा चाहता है कि

हिदायत बख्शे उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे चाहता है कि गुमराह करे, उस का सीना तंग और घुटा हुआ कर देता है गोया वह आसमान पर चढ़ रहा है। (अल अनाम, 125)

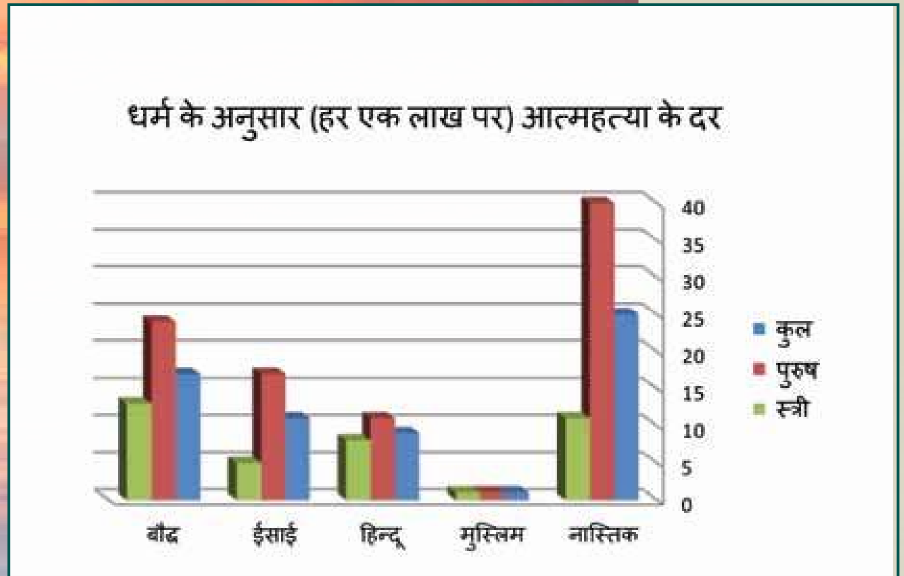
जो मनुष्य एक ईश्वर को मानेगा, उसका कोई भागीदार न जानेगा, तो उसके लिए सुख-चैन और राहत है। और जो मनुष्य इस रास्ते से भटक जाता है, तो उसका मन दुख, रंज और ग़म से पीडित रहता है (ईश्वर हमें इस से दूर रखे) यह उदाहरण है उस मनुष्य का जो ईमान लाये और एक ईश्वर (अल्लाह) को माने, और उस मनुष्य का जो ईश्वर का भागीदार किसी को माने और सीधे रास्ते से भटक जाये। ईश्वर ने इसका एक दूसरा उदाहरण दिया, कहा कि

खुदा एक मिसाल बयान करता है कि एक शख्स है, जिस में कई (आदमी) शरीक है, (अलग-अलग मिज़ाज और बुरी आदतों वाले और एक आदमी खास एक शख्स का (गुलाम है।) भला दोनों की हालत बराबर है? (नहीं) अल्हम्दुलिल्लाह! बल्कि यह अक्सर लोग नहीं जानते। (अल ज़ूम्र, 29)

ईश्वर का भागीदार मानने वाले मनुष्य का उदाहरण उस व्यक्ति के अनुसार है, जिसको कुछ बुरे चरित्र और भयंकर व्यक्तित्व वाले लोग घेर लियें हों, और वे आपस में इस मनुष्य के बारे में झगड़ रहे हों। एक उससे कह रहा हो मेरे पास आ, दूसरा उससे कह रहा हो बैठ जा, और तीसरा कह रहा हो खड़े हो जा। ऐसा मनुष्य अपनी यह समस्या लेकर परेशान रहेगा, न उसको शारीरिक सुख है और न मानसिक राहत। एक ईश्वर को मानने वाले का उदाहरण उस व्यक्ति के अनुसार है जो अपने आप को सौप दे, यानी एक ही व्यक्ति का होकर रह जाये, जिसके आदेश और अनादेश एक ही होंगे, तो क्या ऐसे दो मनुष्य एक ही समान हो सकते है? ईश्वर की प्रशंसा है, उसी के लिए सारी अच्छी तारीफ़ें है और उसी का बडा शुक्र है कि वही एक ईश्वर और एक प्रभु है, उसके सिवा न कोई दूसरा ईश्वर है और न कोई प्रभु। जो लोग इस सत्य से अज्ञानी हैं वे आंतरिक संघर्ष की समस्या में जीवन बिता रहे हैं, और उनके साथ दुख, परेशानी, मुसीबत दुविधा और आत्महत्या की समस्याएँ लगी हुयी है।

आत्महत्या और धर्म

विश्व स्वास्थ्य संगठन के दो निपुण डॉ गोस मानवे और शोध विद्यार्थिनी (अलेसांद्रा) अंल्गजांड्डा फ्लोशमान ने आत्महत्या और धर्म के दरमियान के संबंध को जानने का प्रयास किया। इस प्रयास का प्रतिफल संयुक्त राष्ट्र के विश्वसनीय हवाले के अनुसार ये रहा A global perspective in theepidemiology of suicide



الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



अनुक्रमणिका

ब्रह्माण्ड मानव बुध्दिमत्ता, सम्मान और लक्ष्य का प्रजापति है।

क्या आपने कभी किसी दिन ब्रह्माण्ड की श्रृष्टि के बारे में विचार किया?

ब्रह्माण्ड के श्रृष्टि कि बुध्दिमत्ता।

मानव की सृष्टि करना और उसको सम्मान देना।

पुरुष के समान स्त्री को सम्मान देना।

मनुष्य के सृष्टि की बुध्दिमत्ता।

इन सब के बाद ऐ मनुष्य...

ब्रह्माण्ड मानव बुध्दिमत्ता, सम्मान और लक्ष्य का प्रजापति है।



ब्रह्माण्ड मानव बुध्दिमत्ता, सम्मान और लक्ष्य का प्रजापति है।

क्या आपने कभी किसी दिन ब्रह्माण्ड की श्रृष्टि के बारे में विचार किया?

ईश्वर के श्रृष्टी में विचार करना विश्वास (ईमान) की ओर बुलाने वाला बहुत बडा साधन है। जिससे मानव के अंदर निश्चय बडता है, और प्रजापति उसका ज्ञान और बध्दिमता की महानता का ज्ञान होता है। ईश्वर ने आसमान और धरती को सही बनाया है। ज्ञान दोनो की बेवजह श्रृष्टि नही की और न उसने किसी चीज को बेकार बनाया। ईश्वर ने कहा खुदा ने आसमन और ज़मीन को हिकमत के साथ पैदा किया है। कुछ शक नही कि ईमान वालों के लिए इसमें निशानी है। (अनकबूत, 44)

इस ब्रह्माण्ड में अन-गिनत प्राणी हैं। आपके विचार से इनकी श्रृष्टि करने में क्या हिकमत है?

इस ब्रह्माण्ड में बहुत सी खुली निशानियाँ हैं। जिसमें ईश्वर की क्षमता और उसकी महानता का सुबुत है। आज तक आधुनिक विज्ञान ऐसी-ऐसी निशानियाँ खोज कर निकाल रहा है, जिससे मानव जाति को महा प्रजापति बुध्दिमान की महानता का ज्ञान होता है।

हे मेरे ईश्वर

जब मैं अंतरिक्ष के (नई) अधुनिक चित्र क आलग अलग होते हुए देखता हूँ। तो मेरी सबसे पहली प्रतिक्रियां ये होती है के स्वतः मैं चीखने लगाता हूँ। ऐ मेरे ईश्वर सारी परिश्रम का फल मिलगया। मेरी जिंदगी की खसम ये बहुत अद्भूत विषय है।

पोल मोरडेन

कॉंब्रेज्ड यूनिवरसिटी का खागेल शास्त्रज्ञ

अगर मानव गंभीर रुप से ब्रह्माण्ड में और श्रृष्टि में विचार करेगा तो वो ज़रुर विश्वास करलेगा कि ये ब्रह्माण्ड निश्चित रुप से सही क्रम में बनाया गया है। जिसकी बुध्दिमान, पराक्रमी ईश्वर ने श्रृष्टि की है। इस ब्रह्माण्ड के आसमान, तारे, सौर-मंडल, पृथ्वी और पृथ्वी में प्राप्त होने वाले सागर, नेहर, बगीचे, पहाड, जानवर और पेड-पौधे सबको ईश्वर ने ही श्रृष्टि की है। क्या काफिरों ने नही देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, तो हम ने जुदा-जुदा कर दिया। और तमाम जानदार चीज़ें हमने पानी से बनायी, फिर ये लोग ईमान क्यों नही लाते और हमने ज़मीन में पहाड बनाये ताकि लोगों (के बोज़) से हिलने (और झुकने) न लगे, और उसमें कुशादा रास्ते बनाये ताकि लोग उन पर चले। और आसमान को महफूज़ छत बनाया इस पर भी वे हमारी निशानियों से मुँह फेर रहे हैं। और वही तो है जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद को बनाया (ये) सब (पानी, सूरज और चाँद सितारे) आसमान में (इस तरह चलते है गोया) तैर रहे हैं। (अंबीया, 30-33)

जब बुध्दिमान मानव ईश्वर की श्रृष्टि पर ध्यान देगा तो अवश्य यह ज्ञान प्राप्त होगा कि इस ब्रह्माण्ड में रहनेवाली हर चीज़ ईश्वर की पूजा करती है। इस ब्रह्माण्ड का प्रत्येक अंश ईश्वर की महानता का स्मरण करते हैं,

ईश्वर ने कहा जो चीज़ आसमानों में है, और जो चीज़ ज़मीन में है, सब खुदा की तस्बीह करती है, जो हखीखी बादशाह, पाक ज़ात, जबरदस्त हिकमत वाला है। (अल जुमुआ,1)

इस ब्रह्माण्ड की हर चीज़ ईश्वर के आगे नत-मस्तक होती है। क्या तुमने नही देखा कि जो (मखलूक) आसमानों में हैं और जो ज़मीन में है और सूरज़ और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाये और बहुत से इन्सान खुदा को सजदा करते हैं, और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस आदमी को खुदा ज़लील करे, उसको कोई इज्ज़त देनेवाला नही। बे शक खुदा जो चाहता है करता हैं। (अल हज, 18)

इसी प्रकार से सारा ब्रह्माण्ड ईश्वर कि स्मरण करता है और उसकी पूजा करता है। ईश्वर ने कहाः- क्या तुमने नही देखा कि जो लोग आसमानों और

ज़मीन में है खुदा की तस्बीह करते है और पर फैलाये हुए जानवर भी और सब अपनी नमाज़ और तस्बीह (के तरीखे) जानते हैं, और जो कुछ वे करते हैं (सब) खुदा को मालूम है। (अल नूर, 41)

निष्कर्श ये हुआ कि मोमिन ये देखेगा कि सारा ब्रह्माण्ड एक दल के रुप में एक ईश्वर की ओर चल रहा है। तो वो भह इस धन्य और अच्छे दल के साथ चलने लगेगा। तो फिर उसका जीवन संतोषमय होगा और उसकी भावना को स्थिरता मिलेगी।



देवत्व के प्रमाण

मेरा ग्रह को देखना देवत्व का एक पल था।

इदगार मिचेल खगोल यात्रा

चाँद पर जानेवाला छटा

ये इश्वर की प्राणी है

इस मामले के देखने से ये अवश्य है के ये मनुष्य को बदल दे, और ये भी अवश्य है के ये मामला मनुष्य को ईश्वरीय प्राणी का आपकलण कराता है, और ईश्वर से प्रेम की भावना बडाता है। और वो (ग्रहमण्डल) ब्रहममाण्ड के बारे में बात-चीत कर रहा था।

जेम्स एवैल

खगोलयात्री





ईश्वर का मनुष्य को सम्मान प्रधान

वो इस्लाम जो अल्लाह का बनाया हुआ नियम है। इसको हम शुध्द रुप से महसूस करते हैं। केवल अल्लाही के आदेश से पहाड, समंदर, ग्रह और
सितारे चलाते हैं अपनी कक्षाओं में घूमते हैं। ये सारा ब्रहमाण्ड उसी अल्लाह के आदेश का पालन करता है। इसी प्रकार इस ब्रहमाण्ड का कण-कण यहाँ तक के निर्जीव भी अल्लाह के आदेश का पालन करते हैं। लेकिन मनुष्य इस कानून से अपवर्जित है। क्यों के अल्लाह ने मानव को मनो भावना की स्वतंत्रता देखा है। इसीलिए मानव को ये छूट प्रात्प है वो अल्लाह के आदेश के आगे आत्मसमर्पण करें या स्वयं कोई नियम बनाले और अपने पसंदीदा धर्म पर चलें दुर्भाग्य से मानव ने अधिकाश तोर पर दूसरा मार्ग अपने लिए पसंद किया हैं।

डिबोरा पोटर

अमेरिका पत्रकार



ब्रहमाण्ड के श्रृष्टि कि बुध्दिमत्ता।

1. ईश्वर के एकीकरण का सबूत।

विशाल ब्रहमाण्ड, इसमें स्थिर प्राणी और चमत्कार ईश्वर के पराक्रमी और रचनात्मकता की महानता का सबसे बडा सबूत है। यह बात केवल ईश्वर के एक होने का प्रदर्शन करती है, उसके अलावा कोई भगवान नही है, और न कोई दूसरा ईश्वर है।

ईश्वर ने कहाः- और उसी कि निशानियों (और तसर्रूफात) में से हैं कि उसने तुम्हे मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान होकर जगह-जगह फैल रहे हो। और उसी कि निशानियों (और तसर्रूफात) में से हैं कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स की औरतें पैदा की, ताकि उनकी तरफ (माइल होकर) आराम हासिल करो और तुम में मेहनत और मेहरबानी पैदा कर दी। जो लोग गौर करते हैं उनके लिए इन बातों में (बहुत सी) निशानियाँ है। और उसीकी निशानियों (और तसर्रूफात) में से हैं आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और रंगों का जुदा-जुदा होना, अखलवालों के लिए (बहुत सी) निशानियाँ हैं। और उसीकी निशानियों (ओर तसर्रूफात) में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना और उसके फज़्ल का तलाश करना, जो लोग सुनते है उनके लिए इन (बातों) में (बहुत सी) निशानियाँ हैं। और उसी की निशानियों (और तसरुफात) में से है कि तुमको खौफ और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आसमान से मेंह बरसाना है, फिर ज़मीन को उसके मर-जाने के बाद जिंदा (व हरा-भरा) करदेता है। अखल वालों के लिए इन (बातों) में बहुत सी निशानियाँ है। और उसीकी निशानियों (और तसर्रूफात) में से है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से खाइम है। फिर जब वोह तुम्को ज़मीन में से (निकालने के लिए) आवाज़ देगा तो, तुम झट निकल पडोगे। और आसमानों और ज़मीन में जितने (फरिश्ते और इन्सान वगैरा है उसी के (मख्लूक) हैं, और तमान उसके फर्म बरदार है। (अलरुम, 20-26)



ईश्वर ने कहा कहदो कि सब तारीफ खुदाही को (मुनासिब) है, और उसके बंदों पर सलाम है, जिनको उसने चुनलिया। भला खुदा बेहतर है या वे, जिनको ये (उसका) शरीक बनाते हैं? भला किसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और (किसने) तुम्हारे लिये आसमान से पानी बरसाया? (हमने!)। फिर हमने उससे हरे-भरे बाग उगाये। तुम्हारा काम तो न था कि तुम उनके पेड़ों को उगाते तो क्या खुदा के साथ कोई और भी माबूद है? (हरगिज़ नही।) बल्कि यो लोग रास्ते से अलग हो रहे हैं। भला किसने ज़मीन को करारगाह बनाया और उसके बीच नहरें बनाई और उसके लिए पहाड बनाये और (किसने) दो दरियाओं के बीच ओट बनाये। (ये सब कुछ खुदाने ही बनाया) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हर गिज़ नही) बल्के उनमें अक्सर समझ नही रखते। भला कौन बे करार की इल्तेजा खुबूल करता है, जब वह उससे दुआ करता है। और (कौन उसकी) तकलीफ को दूर करता है, और (कौन) तुमको ज़मीन में (अगलों का) जानशीन बनाता है? (ये सब कुछ खुदा करता है) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हरगिज़ नही, मगर) तुम बहुत कम गौर करते हो? भला कौन तुमको जंगल और दरिया के अंधेरों में रास्ता बताता और (कौन) हवाओं को अपनी रहमत के आगे खुश-खबरी बनाकर भेजता है? (ये सबकुछ खुदा करता है) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हरगिज़ नही) ये लोग जो शिर्कत करते हैं, खुदा (की शान) उससे बुलंद है। भला कौन खिलखत को पहली बार पैदा करता, फिर उसको बार-बार पैदा करता रहता है, और (कौन) तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? (ये सब कुछ खुदा करता है) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हरगिज़ नही) कहदो कि (मुशरिकों) अगर तुम सच्छे हो तो दलील पेश करो। (अल नम्ल, 59-64)

2. ब्रहमाण्ड को मानव के लिए अनुयायी।

ईश्वर ने मानव को वस्तुओं और भौतिक वाद की पूजा करने से मुक्तित दी। इस ब्रहमाण्ड में पृथ्वी, आकाश में स्थिथ हर वस्तु को केवल अपने सदाचार और उदारता से मानव के लिए अनुपाथी बनाया, ताकि पृथ्वी को आबाद करने और इसमे मानव को अपना उत्तराधिकार बनाने का लक्ष्य पूरा हो, और साथ-साथ भक्ति भावना का उद्देश्य संपूर्ण हो। यहाँ अनुयायी के दो तातपर्य हैं 1) ईश्वर की ज़ात, सदाचार, उदारता और उसकी मानता को पहचान ने के लिए। 2) मानव को आदरनीय बनाने और मानव के लिए अनुयायी की हुई वस्तुवों से उसके दर्जे को ऊँचा करने के लिए। ईश्वर ने कहा और जो कुछ आसमानों मे है और जो कुछ ज़मीन में है, सबको अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया। (अल जासिया, 13)

ईश्वर ने कहा खुदा ही तो है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से मेंह बरसाया फिर उससे तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा किये, और कश्तियों (और जहाज़ों) को तुम्हारे फरमान के तहत किया, ताकि दरिया और समंदर में उसके हुक्म से चले, और नहरों को भी तुम्हारे फरमान के तहत किया। और सूरज और चाँद को तुम्हारे लिए काम में लगा दिया, कि दोनों (दिन-रात) एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और रात और दिन को भी तुम्हारे लिए काम में लगा दिया। और जो कुछ तुमने माँगा, सब में से तुमको इनायत किया, और अगर खुदा के एहसान गिनने लगे तो गिन-न-सको, (मगर लोग नेमतों का शुक्र नही करते) कुछ शक नही की इन्सान बडा बे इन्साफ और ना शुक्रा है। (इब्राहीम, 5)

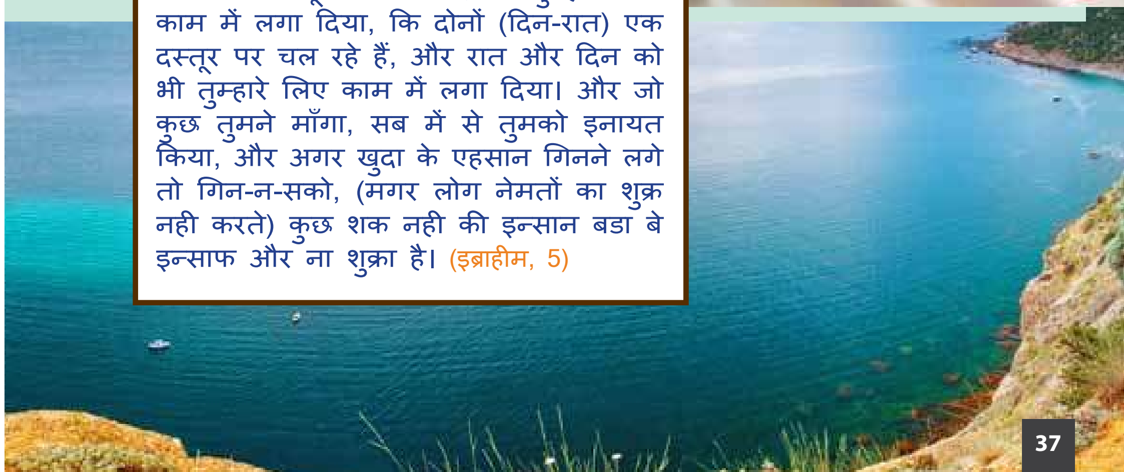
नबुव्वत के प्रमाण

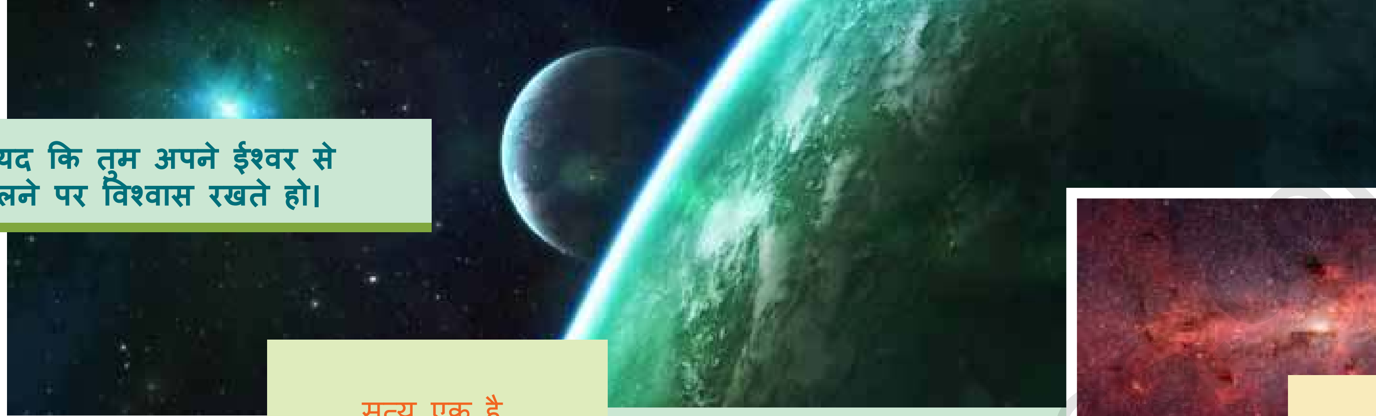
महम्मद (स) अनपढ़ मनुष्य जिनकी अनपढ़ समाज में परवरिश हुई। कैसे उनके अंदर ये शक्ति उत्पन्न हो गई के वो खुराने करीम के बतायेगये चमत्कार समझ गये, और वो ऐसे चमत्कार जिसको आधुन विज्ञान आज-तक खोज कर रहा है। इसी कारण ये बात निश्चय है कि ये कलाम (खुरान) अल्लाह का कलाम है।

डिबोरा पोटर

अमेरिका पत्रकार







3. शायद कि तुम अपने ईश्वर से मिलने पर विश्वास रखते हो।

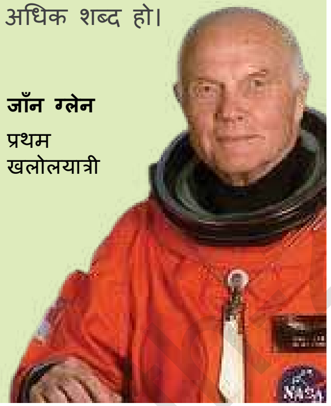
निश्चित रुप से आसमानों और पृथ्वी की सृष्टि करने में (मानव की सृष्टि से हटकर) मृत्यु के बाद दुबारा ज़िंदा किये जाने और इकठ्ठा किये जाने पर खुला सुबूत है, क्या सृष्टि को दुबारा पैदा करना पहली मर्तबा पैदा करने से ज्यादा आसान नहीं है?ईश्वर ने कहा और वही तो है जो खिलक़त को पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दुबारा पैदा करेगा और यह उसको बहुत आसान है। (अल् रुम, 27)

परन्तु मानव की सृष्टि से आकाश और पृथ्वी की सृष्टि बहुत बडी बात है। ईश्वर ने कहा आसमानों और ज़मीन को पैदा करना लोगों के पैदा करने के मुक़ाबले में बडा (काम) है। लेकिन अकसर लोग नहीं जानते। (ग़ाफीर, 57)

और ईश्वर ने कहा खुदा वही तो है, जिसने सुतूनों के बगैर आसमान, जैसा कि तुम देखते हो, (इतने) ऊँचे बनाये, फिर अर्श पर जा ठहरा और सूरज और चांद को काम में लगा दिया। हर एक-एक तै मीयाद तक घूम रहा है। वही (दुनिया के) कामों का इंतिज़ाम करता है। (इस तरह) वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता हैं कि तुम अपने परवरदिगार के रु-ब-रु जाने का यख़ीन करो। (अल राद, 2)

सत्य एक है

आप अल्लाह की इस जैसी प्राणी को देखें और अल्लाह पर विश्वास ना करें ये बात मेरी राय में असंभव है.... इस विषय ने मेरे विश्वास को बहुत अधिक दृंड बना दिया। मैं चाहता हूँ कि यहाँ पर इस दृश्य का विवरण करने के लिए अधिक शब्द हो।



जॉन ग्लेन

प्रथम खलोलयात्री

आप ब्रह्माण्ड से किसे ओर है

ये बहुत से आकाशगंगा का समूह का एक चित्र है। इसमें से एक या इसमें से एक छोटा सा कण वो आकाशगँगा है जिसमें हमारा सोर मंडल है। लेकिन हमारे इस आकाशगंगा में 100000000000सूरज हैं और सूरज पृथ्वी से 1300000दरजे बडा है। और पृथ्वी आप के घर से (जब के आपके घर का क्षेत्र में ग्रहण 1020144000000करे) दर्जे बडी है। और आप का घर आपसे कितने दर्जे बडा है।





समुद्र का एक तिनका

अबतक जो सबसे बडे सिनारे की ख़ोज की गयी है वो है। जो हम से 500 प्रकाश वर्ष की दूरी पर है, और सूर्य से आकार में 9,261,000,000 दर्जें बडा है। यानी 9 बिलियन 261 मिलियन दर्जें बडा है। सूर्य पृथ्वी से 13,00000 दर्जें बडा है।

मानव की सृष्टि करना और उसको सम्मान देना।

ब्रह्माण्ड, आकाश और पृथ्वी महान तो हैं, लेकिन ईश्वर ने हर विषय को मानव के लिये अनुयायी बनाया। और जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया। (अल् जासिया, 13)\

यह सब कुछ मानव के सम्मान और सारी सृष्टि से मानव को महान बनाने के लिये किया गया। और हमने बनी आदम को इज़जत बख्शी और उन को जंगल और दरिया में सवारी दी, और पाकीज़ा रोज़ी अता की, और अपनी बहुत सी मख्लुखात पर फज़ीलत दी। (अल् इसरा, 70)

ईश्वर ने मानव की सृष्टि की और हमें आदम की सृष्टि और उसको सम्मान देने की कहानी सुनायी फिर शैतान के भटकाने के कारण आदम के जन्नत से ज़मीन पर उतरने की कहानी सुनायी।

और हमी ने तुम्को (शुरु में मिट्टी से) पैदा किया, फिर सूरत शकल बनायी फिर फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगो सजदा करो तो (सब ने) सजदा किया, लेकिन इब्लीस, कि वे सज्दा करने वालों में (शामील) न हुआ। (खुदा ने) फरमाया जब मै नें तुझको हुक्म दिया, तो किस चीज़ ने तुझे सज्दा करने से रोका। उसने कहा कि मैं इस से अफ्ज़ल हूँ। मुझे तू ने आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से बनाया है। फरमाया तू (बहिश्त से) उतर जा तुझे मुनासिब नहीं कि यहाँ घमण्ड करे। बस निकल जा, तू ज़लील है। उस ने कहा कि मुझे उस दिन तक मुहलत अता फरमा, जिस दिन लोग (कब्रोंसे) उठाये जायेंगे। फरमाया (अच्छा) तुझ को मुहलत दी जाती है। (फिर) शैतान ने कहा कि मुझे तो तू ने मल्ऊन किया ही है। मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर उन (को गुमराह करने) के लिए बैठूँगा। फिर उनको आगे से और पीछे से और दाएँ से और बाएँ से (ग़रज हर

तरफ से) आऊँगा। (और उनकी राह मारुंगा) और तू उनमें अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा। (खुदा ने) फरमाया, निकल जा यहाँ से पाजी मर्दूद। जो लोग उन में से तेरी पैरवी करेंगे मै (उनको और तुझ को जहन्नम में डालकर) तुम सब से जहन्नम को भर दूँगा। और (हम ने) आदम (से कहा कि तुम और तुम्हारी) बीवी बहिश्त में रहो-सहो और जहाँ से चाहो (और जो चहो) खाओ, मगर इस पेड़ के बास न जाना वरना गुनाहगार हो जाओगे। तो शैतान दोनों को बहकाने लगा ताकि उन के सतर की चीज़े, जो उनसे छुपी थी खोल दे और कहने लगा कि तुम को तुम्हारे परवरदिगार ने पेड से सिर्फ इसिलए मना किया है कि तुम फरिश्ते न बन जाओ, या हमेशा जीते न रहो। और उनसे कसम खा कर कहा कि मै तो तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ। ग़रज (मर्दूद ने) धोखा दे कर उन को (गुनाह की तरफ) खींच ही लिया, जब उन्होने उस पेड़ (के फल) को खा लिया, तो उनके सतर की चीज़ खुल गयी और वह बहिश्त से (पेड़ों के) पत्ते (तोड़-तोड़ कर) अपने ऊपर चिपकाने (और सतर छिपाने) लगे। तब उनके परवरदिगार ने उनको पुकारा कि क्या मैने तुमको इस पेड़ (के पास जाने) से मना नहीं किया था और बता नहीं दिया था कि शैतान तुम्हारा खुल्लम-खुल्ला दुश्मन है। दोनों कहने लगे कि परवरदिगार। हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमें नहीं बख्शेगा और हम पर रहम नही करेगा, तो हम तबाह हो जायेंगे। (खुदा ने) फरमाया, (तुम सब बहिश्त से) उतर जाओ। (अब से) तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो, और तुम्हारे लिये एक (खास) वख्त तक ज़मीन पर ठिकाना और (ज़िदगी का) सामान (कर दिया गया) है। (यानी) फरमाया कि उसी में तुम्हारा जीना होगा। और उसी में मरना, उसी में से (कियामत को जिंदा करके) निकाले जाओगे। (अल आराफ, 11-25)





सब लोग बराबर है

सारे मानव मान और अधिकार का बराबर हख रखते हुए स्वतंत्र जन्म लेते है। उन्हे बुध्दि और अंतःकरण प्राप्त होती है, और उनपर यें जरुरी है कि वह आपस में एक-दूसरे से भाई चारगी के साथ व्यवहार करें।

मानवाधिकार संगठन के अंतर्राष्ट्रीय धोषणा का पहली धाय

निश्चित रुप से ईश्वर ने मनुष्य को अच्छा रुप दिया है, फिर उसमें प्राण डाली, जिससे वह अच्छे रुप वाला मनुष्य बन गया, जो सुनता, देखता, चलता-फिरता और बात करता है। तो खुदा जो सबसे बेहतर बनाने वाला, बडा बर्कत वाला है। (अल मूमीनून, 14)

ईश्वर ने मनुष्य को हर वह बात सिखायी जिसका जानना उसके लिए अवश्य है, और मनुष्य में ऐसे लाभ और गुण रख दिये जो दूसरे किसी प्राणी में नहीं है जैसेः बुध्दि, ज्ञान, बोल चाल, रुप, अच्छी शक्ल, आदरणीय स्थान, उपयुक्त शरीर और सोंच विचार से ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता दी है। ईश्वर ने मनुष्य को नैतिकता और अच्छी आदतों की ओर मार्गदर्शन दिखाया। ईश्वर ने मनुष्य को सारी सृष्टि से ज्यादा सम्मान दिया, इस सम्मान की उपस्थिति स्त्री और पुरुष दोनों के लिए यह है किः ईश्वर ने ब्रहमाण्ड की सृष्टि के प्रारंभ ही से आदम को पैदा करते हुए मनुष्य को अपने ही हाथों से बनाया, अवश्य रुप से ऐसा सम्मान है जिससे बडा और कोई सम्मान नहीं। (खुदा ने) फरमाया कि ऐ इब्लीस जिस शख्स को मैं ने अपने हाथों से बनाया उस के आगे सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने मना किया। क्या तू घमंड में आ गया या ऊँचे दर्जे वालों में था? (स्वाद, 75)

ईश्वर ने मनुष्य को अच्छे रुप में बनाया है, ईश्वर ने कहा कि हमने इंसान को बहुत अच्छी सूरत में पैदा किया है। (अल तीन, 4)

ईश्वर ने यह भी कहा और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायी और सूरतें भी पाकीजा बनायी और उसी की तरफ (तुम्हें) लौट कर जाना है। (अल तग़ाबून, 3)

ईश्वर ने सारे मनुष्य के पिता आदम के सामने फरिश्तों को सजदा करने का आदेश देते हुए मनुष्य को सम्मान अता किया है। और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो, तो सबने सजदा किया मगर इब्लीस ने न किया। (अल इस्रा, 61)

ईश्वर ने मनुष्य को सम्मान दिया और उसको ज्ञान, सोंच-विचार, बुध्दि, कान आँख और दूसरी भावनाएँ अता की। ईश्वर ने कहा और खुदा ने ही तुमको तुम्हारी माँओ के पेट से पैदा किया कि तुम कुछ नही जातने थे और उसने तुम को कान और आँखे और दिल (और उनके अलावा) अंग दिए ताकि तुम शुक्र करो (अल नहल, 78)

ईश्वर ने मनुष्य में अपनी रुह (जान) डाली, जिसके कारण मनुष्य में आध्यात्मिक ऊँचाई पैदा हुई। ईश्वर ने कहा जब उस को दुरुस्त कर लूं और उसमें अपनी रुह फूंक दूं तो उस के आगे सज्दे में गिर पड़ना। (स्वाद, 72)

यह मनुष्य के लिए सबसे बडा सम्मान है, इसी कारण एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य को सम्मान देना ज़रुरी है, कैसे यह संभव है कि मनुष्य किसी ऐसे दूसरे मनुष्य पर ज़ुल्म करे जिसमें ईश्वर की रुह डाली गयीं है? ईश्वर ने फरिश्ते और जिन्न (भूत) को छोडकर मनुष्य को ज़मीन पर अपना उत्तराधिकारी बनाया। ईश्नवर ने कहा और (वह वख्त याद करने के खाबिल है) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से फरमाया कि मै ज़मीन में (अपना) नायब बनाने वाला हूँ। उन्होनें कहा, क्या तू उसमें ऐसे शख्स को नायब बनाना चाहता है, जो खराबियाँ करें और कुश्त व खून करता फिरें और हम तेरी तारीफ के साथ तसबीह व तक़दीस करते रहते हैं। (खुदा ने) फरमाया, मैं वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (अल बक़रा, 30)

यह बहुत बडा सम्मान है जिसको वह फरिश्तें भी प्राप्त न कर सकें जो ईश्वर के आदेशों को कभी तिरस्कार नहीं करते, और जो सदा ईश्वर की बडाई, प्रशंसा और श्रद्दा करते हैं।

ईश्वर ने आकाश, पृथ्वी और इन दोनों के बीच मौजूद चाँद, सूरज, तारे, ग्रह और आकाश गंगाओं को मनुष्य के लिए अनुयायी कर दिया। ईश्वर ने कहा और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन मे है, सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया, जो लोग गौर करते हैं, उनके लिए उसमें (खुदा की खुदरत की) निशानियाँ हैं। (अल जासिया, 10)



हमारा संदेश

अल्लाह ताला ने हमें चुनलिया है कि जिसको अल्लाह चाहे उसको हम बंदो की इबादत से अल्लाह के इबादत की ओर, संसार की तंगी से विशाल संसार के ओर धर्मे के अन्याय से इस्लाम के न्याय की ओर लायें।

रुबई इबने आमीर

सहाबिये रसूल

ईश्वर ने मानव को और सारी मानवता को किसी भी प्राणी को बंधन (बंदगी) से मुक्ति दी है, चाहे उसकी महानता और उदारता कुछ भी हो, और इसमें मनुष्य के लिए स्वतंत्रता की आखरी बुलंदी है, परन्तु मनुष्य को मानव की पूजा और परतंत्रता से एक ईश्वर की पूजा की ओर अग्रसर किया। और एक ईश्वर की पूजा करना ईश्वर के अलावा अन्य की पूजा करने से बहुत बडी स्वतंत्रता है। इसी कारण ईश्वर ने अपने और अपने भक्तों के बीच किसी मध्य वर्ती को स्वीकार नहीं. किया। कुछ लोगों ने ईश्वर और मनुष्य के बीच ऐसे मध्य वर्ती बनालिये जिनको इन लोगों ने दिव्य गुणों से प्रभावित किया। जब कि ईश्वर ने मनुष्य को यह सम्मान दिया कि उसके और ईश्वर के बीच कोई मध्यवर्ती नहीं है। ईश्वर ने कहा इन्होंने अपने उलमा और मशाइख (बुज़ुर्गों) और मसीह इब्ने मरयम को अल्लाह के सिवा खुदा बना लिया, हालांकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि एक खुदा के सिवा किसी की इबादत न करें। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। और वह उन लोगों के शरीक मुक़रर करने से पाक है। (अल तौबा, 31)



सारे साधनों को अपनाते हुए भाग्य और नसीब पर विश्वास (ईमान) रखने का आदेश देते हुए मनुष्य को भविष्य के डर और चिंता, दुःख, परेशानी से मुक्तित दी है। भविष्य और नसीब पर विश्वास रखना मुसलमान मनुष्य को अम्न व आश्ती, इज्ज़त, आदरणीय जीवन का और अतीत मे गुज़री हुयी चीज़ों पर अफसोस या ग़म न करने का एहसास पैदा करता है। इसलिए कि यह सब ईश्वर की ओर से है। ईश्वर ने कहा कोई मुसीबत मुल्क पर और खुद तुम पर

नहीं पडती, मगर इस से पहले की हम उसको पैदा करे, एक किताब में (लिखी हुई है), (और) यह (काम) खुदा को आसान है। (अल हदीद, 22)

यह विश्वास (ईमान) मनुष्य के अन्दर स्वयं संतुलन, स्थिरता और बहुत बडा संतोष पैदा करता है इस प्रकार के न उस पर कठिनाइयाँ प्रभाव डालती है और न उसके अंदर डर पैदा करती है, और इसी तरह खुशियाँ और नेमतें मनुष्य को घमंडी नहीं बनाती।





कोई साधन

यहाँ एक मुख्य विषय वह यह है कि भक्त और ईश्वर के अंतरगत कोई साधन नही है, और यही वह बात है जिसको ज्ञानी लोगों ने माना है।

ए थेन दिनेह

फ्रेंच चित्रिकार और बिचारक

मनुष्य की बुध्दी का सम्मान ईश्वर ने अवश्य रुप से मनुष्य की बुध्दि और सोंच विचार की ताक़त को महान मूल्य दिया है, मनुष्य को विचार करने और दूसरों से सबक सीखने का ईश्वर ने आदेश दिया है आकाश और पृथ्वी की सृष्टि में विचार करने, और ज्ञान, बुद्‌दिमत्ता से सबूत इकट्‌ठा करने को आवश्यक माना है। ईश्वर ने कहा

(इन काफिरों से) कहो कि देखो तो आसमानों और ज़मीन में क्या-क्या कुछ है, मगर जो लोग ईमान नहीं रखते, उनके निशानियाँ और डरावे कुछ काम नही आते। (यूनूस, 101)

ईश्वर ने बुध्दि को सम्मान देने, उसका ख्याल रखने, उसको काम में लाने, परंपराएँ, भेद-भाव और असहिष्णुता के माध्यम से बुध्दि को स्थिरान करने का आदेश दिया है। इसी प्रकार से बुध्दि

को ईश्वर की उपस्थिति और उसके एक होने का सुबूत माना है। परन्तु ईश्वर ने आपसी संप्रदाय दूर करने के लिए बुध्दि को ओर अग्रसर होने का आदेश दिया। ईश्वर ने कहा

(ऐ पैगंबर! इन से) कह दो कि अगर सच्चे होते दलील पेश करो (अल बक़रा, 111)

ईश्वर ने मिथक, धोखा, जादू, जिन्न (भूत प्रेत) से मदद लेने और इस प्रकार के दूसरे कामों से बुध्दि को दूर रखा है।

हर एक मनुष्य अपने आप का जिम्मेदार है, उसके कार्य का उससे हिसाब लिया जायेगा और दूसरे के कार्य से उसका कोई संबंध नहीं होगा। इसी बात की पुष्टि ईश्वर का यह आदेश करता है। और कोई उठानेवाला दूसरे का बोज न उठायेगा (फातीर, 18)

इस सम्मान से "खुरआन ए करीम" गलत विचारों को नज़र अंदाज़ करता है और मानवता को इन ग़लत विचारों के भारी परिणाम से मुक्ति देता है।





पुरुष के समान स्त्री को सम्मान देना।

मानवता का सम्मान किसी एक लिंग के लिए विशेष नहीं है, लेकिन नियम यह है कि हर तरह के सम्मान और आदर में स्त्री पुरुष के समान है। और औरतों का हक़ (मर्दों पर) वैसे ही है जैसे दस्तूर के मुताबिक (मर्दों का) हक़ औरतों पर हैं। (अल बखरा, 228)

ईश्वर ने कहा और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं। (अल तौबा, 71)

भविष्य जीवन में अपनी करतूतों का फल लेने में किसी भी प्रकार से स्त्री, पुरुष से अलग नहीं है। ईश्वर ने कहा तो उनके परवरदिगार ने उनकी दुआ खुबूल कर ली। (और फरमाया) कि मै किसी अमल करने वाले के अमल को, मर्द हो या औरत ज़ाया नहीं करता। तुम एक दूसरे की जिन्स हो (आल-इम्रान, 195)

और ईश्वर ने कहा और जो नेक काम करेगे, मरुद हो औरत, और वो इमानवाला भी होगा, तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे, और उनका तिल बाराबर भी हख़ ना मारा जाएगा। (अल निसा, 124)

ईश्वर ने स्त्री को मानवता कि रुप में सम्मान दिया, इस प्रकार के उसको पुरुष के समान ज़िम्मेदार, आदेशों का पालन करनेवाली और इनाम और रज़ा का योग्यवान बनाया है। परन्तु मानवता के लिए लागू किया जाने वाला सबसे पहला आदेश पुरुष और स्त्री दोनों पर एक सा लागू था। इस प्रकार से कि ईश्वर ने सबसे पहले मानव आदम और उनकी बीवी से कहा और हम ने कहा कि ऐ आदम। तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो, बे रोक-टोक खाओ (पिओ), लेकिन उस पेड के पास न जाना, नहीं तो ज़ालिमों में (दाखिल) हो जाओगे।(अल बख़रा, 35)

इसी प्रकार से ईश्वर ने स्वर्ग से आदम के निकाले जाने, और आदम के बाद उनकी औलाद की दुर्भाग्य का जिम्मेदार स्त्री को नही ठहाराया, जैसा कि कुछ धर्मों में यह बात मानी जाती है परन्तु ईश्वर ने यह कहा कि आदम ही पहला जिम्मेदार है। और हमने पहले आदाम से वायदा लिया था, मगर वे (उसे) भूल गये और हमने उनमें सब्र व सबात न देखा (सूरः ताहा)

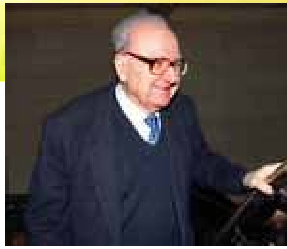
और आदम ने अपने परवरदिगार के (हुक्म के) खिलाफ किया तो, (वे अपनी मंज़ील से) बे-राह हो गये। फिर उनके परवरदिगार ने उनको नवाजा तो उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फरमायी और सीधी राह बतायी। (ताहा, 121-122)

इसी प्रकार से स्त्री और पुरुष मानवता में बराबर हैं। ईश्वर ने कहा लोगो! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और तुम्हारी क़ौमें और

समानता

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने छात्र संघ और क्लब के अधिकार छात्र और छात्राओं के बीच कोई समानता नही किया मगर 26 जुलाई 1964 में लियेगये निर्णय के बाद समानता का आदेश दिया गया।





असली चमत्कार

जब हम ख़ुराने करीम के नियमो की पूर्व समुदायों से तुलना करें तो ख़ुरानी नियम का पल्ला विशेष रूप में एथैन्स और रोम के समुदायों से निश्चित रुप से भारी रहेगा। क्यों कि यहाँ पर औरत की छवी असंपूर्ण थी।

रोजोह जारुदी
फ्रेंच दार्शनिक

सारे संसार के धर्मों में औरत का स्थान

रोम में एक बहत बडा समावेश रखा गया, इसमें औरतों के समस्याओं पर तर्क की गई। फिर यह निर्णय लिया गया कि औरत एक प्राणी है। जिसमें प्राण नही है, और इसी कारण वह परलोक जीवन की वारिस नही होती है। वह एक गंदगी है। इसी कारण वह माँस खाये, न हसे, बल्कि बात तक ना करें। औरत पर यह अवश्य है कि वह अपना समय पूजा-पाठ और सेवा में व्यतीत कर दें। इन लोगोने औरत को इन सारे विषयें से मना करने के कारण उसके मुँह पर एक लोहे का ताला डालदिया था। जिसके कारण औरत चाहे उच्छ परिवार से हो या तुच्छ परिवार से। छोटी-छोटी गलियों में चला करती थी। अपने ही घर में दिन-रात व्यतीत करती थी और उसके मुँह पर ताला हुआ करता था। इससे हटकर औरतों पर शारीरिक दण्ड लागू किये जाते थे। इस खयाल से कि औरत गुमराही का एक कारण है जिसका शैतान लोगों के दिलों को भटकाने के लिए उपयोग करता है।

उनके पास औरत का स्थान

भारत के प्राचीन धर्मे में (यह था) कष्ट, मृत्यु, नर्क, विष, साँप, और आग औरत से भले हैं, औरत को जीवित रहने का अधिकार उसके मालिक और सरदार पतिदेव के जीवन तक ही है। जब वह अपने पतिदेव का शरीर (मृत्योपरान्त) जलते देखे तो अपने-आप को उस आग में डाल दें। वरना सदा उस पर फटकार होती है।

क़बीले बनायें, ताकि एक-दूसरे की पहचान करो (और) खुदा के नज़दीक तुम में ज्यादा इज्जत वाला वह है, जो ज्यादा परहेजगार है। बेशक खुदा सब कुछ जाननेवाला (और) सब से खबरदार है। (अल हूजूरात, 13)

इसी प्रकार से पुरुष और स्त्री निम्न लिखित बातों में संयुक्त और बराबर हैं

विशेष अधिकार में नागरिक होने के नाते ज़िम्मेदारीः- परन्तु स्त्री का नैतिक व्यक्तितत्व सम्मानजनक है, निश्चित रुप से ईश्वर ने स्त्री को फर्ज़ और पालन करने की योग्य में पुरुष के समान माना है, और स्त्री को खरीदने, बेचने और इस प्रकार के दूसरे तमामा व्यवहार करने और स्वभाव का अधिकार दिया है। यह तमाम व्यक्तित्व अधिकार, बिना किसी ऐसी पाबंदी के जो स्त्री की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करें, अनुसरणीय है लेकिन वह पाबंदी जिससे स्वयं मनुष्य अपने आप को प्रतिबंधित करे। ईश्वर ने कहा मर्दों को उन कामों का सवाब है, जो उन्होंने किया, औरतों को उन कामों का सवाब है जो उन्होंने किया (अल निसा, 32)

ईश्वर ने स्त्री को विरासत का अधिकार दिया है। ईश्वर ने कहा

जो माल माँ-बाप और रिश्तेदार छोड़ मरे, थोडा-हो या बहुत, उसमें मर्दों का भी हिस्सा है और औरतों का भी। ये हिस्से (खुदा के) मुकरर किये हुए हैं। (अल निसा, 7)

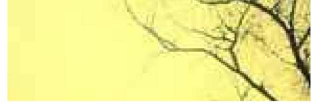
स्त्री जब अच्छा करे या बुरा, उसकी स्थिति बिलकुल पुरुष के समान है। ईश्वर ने कहा और जो चोरी करे, मर्द हो या औरत, उनके हाथ काट डालो । ये उनके फलों की सजा और खुदा की तरफ से सीख है और खुदा जबरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (अल माइदा, 38)

भविष्य जीवन में मिलनेवाला बदला। ईश्वर ने कहा जो शख्स नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत और वह मोमिन भी होगा, तो हम उसको (दुनिया में) पाक (और आराम की) जिंदगी से जिंदा रखेंगे और (आखिरत में) उन के आमाल का निहायत अच्छा बदला देंगे। (अल नहल 97)

आपसी बंधन और हमदर्दी। ईश्वर ने कहा

मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं कि अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातो से मना करते, और नमाज़ पढ़ते, और ज़कात देते और खुदा और उसके पैगंबर की इताअत करते हैं। यही लोग हैं, जिन पर खुदा रहम करेगा बेश्क खुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (अल तौबा 71)

निश्चित रुप से स्त्रयों के साथ सहानुभूति और हमदर्दी करने का आदेश है। ईश्वर ने युध्दों में स्त्री की हत्या करने से मना किया, अस्वस्थ स्त्री के साथ खाना खाने और व्यवहार करने का आदोश दिया है। जब के यहूद स्त्री के साथ व्यवहार करने से रोकते थे उसको नीच समझते थे, उससे दूर रहा करते थे और उसके स्वस्थ होने तक उसके साथ खाना नहीं खाया करते थे। अल्लाह के रसूल (मुहम्मद) की ओर से सत्री को बहुत बडा सम्मान प्राप्त हुआ है, आप ने कहा कि "तुम में से सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो अपने परिवार के साथ अच्छा हो, और मै अपने परिवार वालों के साथ अच्छा व्यवहार करता हूँ"। (इस हदीस को इमाम तिर्मिजि ने वर्णन किया है, और कहा कि यह हदीस "हसन" और "सहीह" है)।

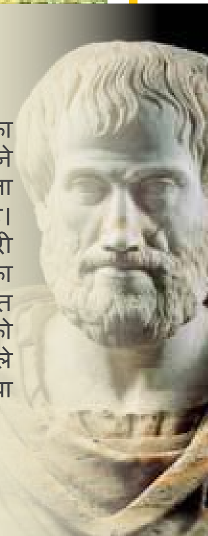


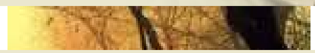
यह क्या (हत्याचार) शोषण है ?

पुरुष के सामने औरत का स्थान मालिक के सामने सेवक की तरह। बुध्दिमता के सामने कारिगरी की तरह। और युनानी के सामने बरबरी (एक हत्याचारी लोक का नाम) की तरह है। औरत एक असंपूर्ण प्राणी है, जिसको उन्नती की सीढी के निचले स्थर पर खडा छोड दिया गया है।

अरस्तु

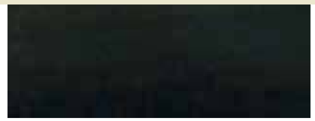
युनानी दार्शनिक





फ्रेंच स्त्री

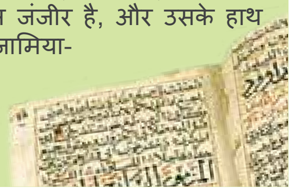
सन् 586 में फ्रेंच के एक राज्य में समावेश का आयोजन किया गया। जिसमें स्त्री के बारेमें यह विचार किया गया कि, क्या इसको (स्त्री को) इन्सान समझा जाये या नही और इस समावेश में उपस्थित महा जनों का अंतिम निर्णय यह था कि स्त्री इन्सान है। परंतु स्त्री को पुरुष की सेवा के लिये ही पैदा कियागया है। फरवरी 1938 में एक ऐसा शासन लागू किया गया जो उन सारे नियमों को शुद्ध करता है जो फ्रेंच स्त्री को वित्तीय लेन-देन से मना करते थे, और फिर फ्रांस के इतिहास में स्त्री को यह अधिकार मिला कि वह अपने नाम से ब्यांक में चालू खाता खोले ।



अन्याय से पीडित महिला

में और मेरा दिल बध्दिमत्ता और ज्ञान को खोजने, ढूँढने, और जानने के लिए निकले, और यह ज्ञान प्रदान करने के लिए कि बुराई अज्ञान है, और मूर्खता पागलपन हैं, मेरी यह भावना है कि मृत्यु से अधिक कडवी वह औरत है जो जाल है, उसका दिल जंजीर है, और उसके हाथ बेडियाँ है)7(जामिया-

दिव्य पुस्तक (बाइबिल)





समानता

इस्लाम के छाया में महिला को उसकी स्वतंत्रता प्राप्त हुई, और अच्छी ख्याति मिलि। इस्लाम ने महिलाओं को पुरुषो के समान साजेदार माना है और इनमें से हर एक को दूसरे के बिना असंपूर्ण समझा है। इस्लाम ने महिला कों शिक्षा की ओर प्रेरेपित किया। ज्ञान और आचार प्राप्त करने का अधिकार दिया, महिला को अपनी संपती का मालिक बनने और व्यवहार का अधिकार दिया। इसी प्रकार विवाह करने का और विचार अभिव्यक्तित की स्वतंत्रता का अधिकार दिया।

मुना मार्कलोस्की

जर्मन डिप्लोमेट

जब आप के युग में स्त्री को मारा गया तो आप बहुत नाराज़ हुए, और कहा कि “तुम में से कोई अपनी बीवी को नौकरानी की तरह मारता है, और फिर रात में उसको अपने गले लगाता है” (इस हदीस को इमाम बुखारी ने वर्णन किया है)

और जब कुछ स्त्रियाँ अपनी पतियों की शिकायत लेकर अल्लाह के रसूल के पास पहुँची तो आपने कहा” निश्चित रुप से बहुत सी स्त्रियाँ अपने-अपने पति की शिकायत लेकर मुहम्मद के घर वालों के पास आयी हैं। ऐसे पुरुष तुम में से अच्छे लोग नहीं है। (इस हदीस को अबू दावूद ने वर्णन किया है)

अवश्य रुप से स्त्री को वह अधिकार दिये गये है, जो पुरुष को नहीं दिये गये। ईश्वर ने पिता से ज्यादा माता का सम्मान करने का आदेश दिया है। एक बार एक व्यक्तित अल्लाह के नबी के पास आया और कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल लोगों में कौन सब से अधिक मेरे अच्छे व्यवहार का हक़दार है? (और एक दूसरे वर्णन में आया है कि लोगों में कौन मेरी अच्छाइयों का अधिक हक़! रखता है?) तो आपने कहा तुम्हारी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर इसके बाद कौन ज्यादा हक़दार! है? तो आपने कहा तुम्हारी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर कौन? तो आपने कहा तुम्हारी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर कौन? तो आपने कहा तुम्हारे पिता (इस हदीस से “बुखारी” और “मुस्लिम” सहमत हैं)।



अनुचित सकारात्मक कानून

राजा जी ने यह कानून लागु किया कि औरत के लिए बैबल पढ़ना प्रतिबंध है। इसी प्रकार से (ब्रिटिश सार्वजनिक कानून के अनुसार) लग-भग सन् 1850 ई.में औरतों का शुमार नागरिकों में नही हुआ करता था ना उन्हें निजि अधिकार थे, ना उन्हे अपने वस्त्र के और ना अपने माथे के पसीने से कमाये हुए दौलत के मालिक बनने का अधिकार था।

राजा हेन्ड्र आष्टम

ईश्वर ने लड़कों के पालन-पोषण से ज्यादा लड़कियों के पालन-पोषण पर अधिक पुण्य रखा है। अल्लाह के रसूल ने कहा जिस व्यक्ति को लड़कियों के पालन-पोषण में कोई कष्ट हुआ हो, और वह इन लड़कियों के साथ अच्छा व्यवहार किया हो, तो ये लड़कियाँ उस व्यक्ति के लिए नरक की आग से मुक्ति का कारण होगी। (इस हदीस से “बुखारी” और “मुस्लिम” सहमत है)। अल्लाह के रसूल ने कहा ऐ अल्लाह मै दो कमज़ोर अनाथ और स्त्री के अधिकारों से आलोचनात्मक हूँ। (यह हदीस हसन है। इस को “निसाई” ने अच्छी सनद के साथ वर्णन किया है)





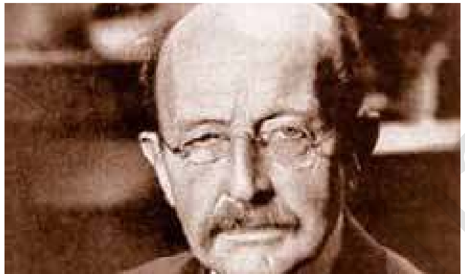
मनुष्य के सृष्टि की बुध्दिमत्ता।

यह मनुष्य जिसके लिए ईश्वर ने इस ब्रहमाण्ड में स्थिर हर विषय को आधीन बनाया है, और सारी प्रकृतियों से इस को अधिक सम्मान दिया है। ईश्वर ने इस की बहुत अच्छे कारणों की वजह से सृष्टि की है। क्यों कि ईश्वर बेकार खेल-कूद से दूर है। ईश्वर ने कहा बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने जाने में अक्ल वालों के लिए निशानियाँ है। जो खडे और बैठे और लेटे (हर हाल में) खुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते (और कहते) हैं कि ऐ परवरदिगार। तू ने इस (मख्लूक) को बे-फ़ायदा नही पैदा किया। तू पाक है, तो (क़ियमत के दिन) हमें दोज़ख के अज़ाब से बचाइयो। (आल-इंम्रान 191-192)

ईश्वर ने काफिरों के बुरे अनुमान के संबंधित कहा हमने आसमान और ज़मीन को और जो (कायनात) उन में है, उस को मस्लहत से खाली नहीं पैदा किया। यह उनका गुमान है, जो काफिर हैं, सो काफिरों के लिए दोज़ख का अज़ाब है। (स्वाद, 27)

ईश्वर ने मनुष्य की खाने-पीने और धन इकट्ठा करने के लिए सृष्टि नहीं कि है, इस प्रकार से तो मनुष्य जानवरों के समान होगा। लेकिन ईश्वर ने मनुष्य को सम्मान दिया और सारी प्रकृति में महान बनाया लेकिन बहुत सारे लोग कृतघ्न है, जो अज्ञानी है या अपनी सृष्टि की सच्ची ज्ञान का तिरस्कार करते है, और

उनकी इच्छा केवल दुनिया की चीज़ों से आनंद लेना है, इस प्रकार के लोगों का जीवन जानवरों के जीवन के समान है, बल्के ये लोग जानवरों से गये बीते हैं। ईश्वर ने कहा और जो काफिर है, वे फायदे उठाते है और (इस तरह) खाते है जैसे हैवान खाते है और उनका ठिकाना दोज़ख है। (महम्मद, 12)



ईश्वर की ओर

निश्चित रुप से धर्म और प्राकृतिक विज्ञान दोनें शंका कृतध्नता और मिथक के खिलाफ एक लडाई लड रहे हैं। इस लडाई में सदा एक ही आवाज़ रही है और रहेगी और वो आवाज़ ईश्वर की ओर।

मार्कस ब्लॉंक

क्वॉंटम सिध्दॉंत के व्यवस्थापक

ईश्वर ने कहा (ऐ मुहम्मद (स)!) उन को उन के हाल पर रहने दो कि खा लें और फ़ायदे उठा ले और (लम्बी उम्मीद उन को (दुनिया में) फ़साए रहे। बहुत जल्द उन को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (अल हिज़्र, 3)

ईश्वर ने कहा और हम ने बहुत से जिन्न और इंसान दोज़ख के लिए पैदा किये हैं, उन के दिल हैं, लेकिन उनसे समझते नही और उन की आँखे है, मगर उन से देखते नहीं। और उन के कान हैं, पर उनसे सुनते नहीं। ये लोग (बिल्कुल) चारपायों की तरह हैं, बल्कि उन से भी भटके हुए, यही वे हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए है। (अल आराफ़, 179)

सारे लोग यह विश्वास रखते हैं कि उनके शरीर का हर-हर अंग की किसी अच्छे कारण के लिए ही सृष्टि की गयी है। यह आँख देखने के लिए और यह कान सुनने के लिए इसी प्रकार से दूसरे अंग। तो क्या यह संभव है कि मनुष्य के शरीर के अंग अंग की तो किसी अच्छे कारण के लिए ही तो सृष्टि की गयी हो, और स्वयं मनुष्य की बिना किसी कारण (बेकार) सृष्टि की गयी हो? या फिर मनुष्य को यह ना पसंद है कि जब प्रजापित (खालिख) उसको अपनी सृष्टि का कारण बताये और वह उसको न माने?

तो फिर ईश्वर ने क्यों हमारी सृष्टि की? क्यों हमें सम्मान अता किया? और क्यों हमारे लिए हर विषय को आज्ञा पालन बनाया? परन्तु इसी बात की ख़बर देते हुए ईश्वर ने कहा और मैंने जिन्नों और इंसानों को इसलिए पैदा किया है कि मेरी इबादत करें। (अल ज़ारीयात, 56)

ईश्वर ने कहा वह (खुदा) जिस के हाथ में बादशाही है, बडी बरकत वाला है, और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। उसी ने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन अच्छे काम करता है, और वह ज़बरदस्त (और) बख्शने वाला है। (अल मूल्क, 1-2)



निर्णायक प्रमाण

मनुष्य के लिए यह असंभव है कि वह अपने जीवन की शुरुआत या उसके सिलसिले को किसी प्रमुख शक्ति के निर्माण के बिना कल्पना कर सके मेरा यह विश्वास है कि सब दार्शनिक अपने-अपने जीवन संबंधी अनुसंधान में इस ब्रहमाण्ड के प्रणाली में स्थित निर्णायक प्रमाण से अपनी आँखे बंद रखली।

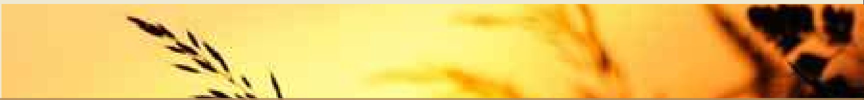
माजिन्स माक लियास

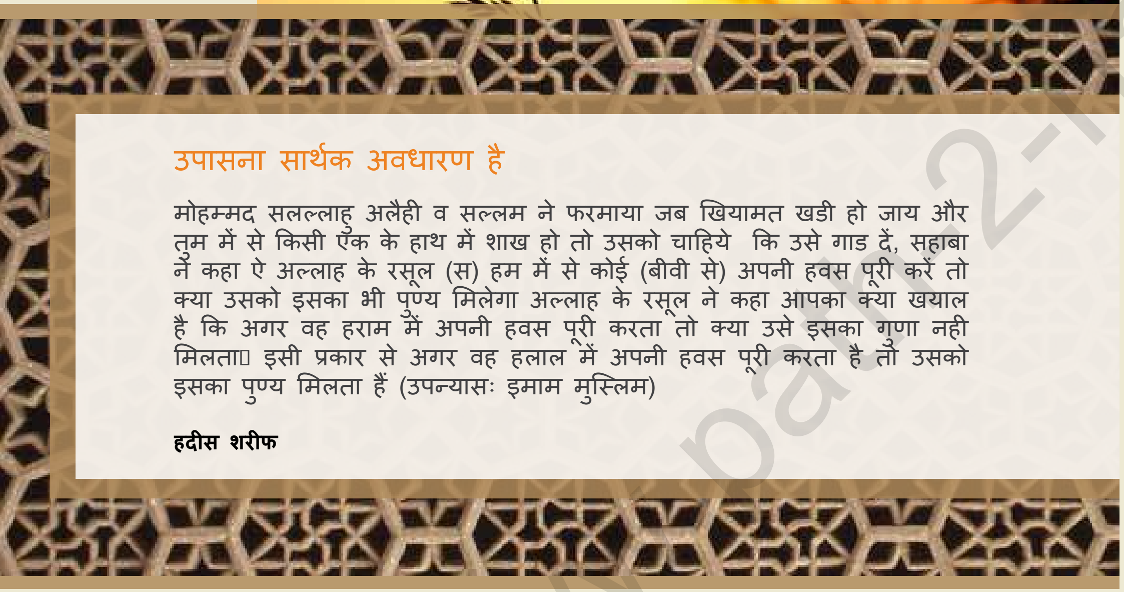
ब्रिटिश विज्ञान संगठन के सदस्य



सारे बुध्दिमान यह मानते है कि जो व्यक्ति किसी चीज़ का निर्माण करता है, वही उसके निर्माण के कारण का दूसरों से अधिक ज्ञान रखता है। और ईश्वर के तो बडे अच्छे अच्छे आदर्श है। उसी ने मनुष्य की सृष्टि की है, और वही मनुष्य की सृष्टि के कारण का सब से ज्यादा ज्ञान रखता है। यहाँ पर इबादत (प्रार्थना) का मतलब केवल नमाज़ और रोज़े (उपवास) से कहीं ज्यादा है, परन्तु यहाँ प्रार्थना में सारे ब्रह्माण्ड का निर्माण करना भी शामिल है। ईश्वर ने कहा उसी ने तुम को ज़मीन से पैदा किया और उसमें आबाद किया, तो उस से मग्फ़िरत मांगो और उसके आगे तौबा करो। (हूद, 61)

मनुष्य के सारे जीवन का निर्माण भी प्रार्थना में शामिल है। ईश्वर ने कहा। (यह भी) कह दो कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। जिस का कोई शरीक नहीं और मुझ को इसी बात का हुक्म मिला है और मैं सबसे अव्वल फ़रमांबरदार हूँ। (अल अनआम, 162-163)





उपासना सार्थक अवधारण है

मोहम्मद सलल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया जब खियामत खडी हो जाय और तुम में से किसी ऍक के हाथ में शाख हो तो उसको चाहिये कि उसे गाड दें, सहाबा ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (स) हम में से कोई (बीवी से) अपनी हवस पूरी करें तो क्या उसको इसका भी पुण्य मिलेगा अल्लाह के रसूल ने कहा आपका क्या खयाल है कि अगर वह हराम में अपनी हवस पूरी करता तो क्या उसे इसका गुणा नही मिलता इसी प्रकार से अगर वह हलाल में अपनी हवस पूरी करता है तो उसको इसका पुण्य मिलता हैं (उपन्यासः इमाम मुस्लिम)

हदीस शरीफ



इन सब के बाद ऐ मनुष्य...

जब यह सारा ब्रहमाण्ड आप के लिए आज्ञा पालन कर दिया गया है, और जब इस ब्रहमण्ड की सारे चिहन आपकी आँखों के सामने यह गवाही दे रहे हो कि एक अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नही, उसका कोई दूसरा नहीं। और जब आपको यह मालूम हो गया कि मृत्यु के बाद दुबारा ज़िंदा करना आकाश और पृथ्वी की सृष्टि से ज्यादा आसान हैं। ईश्वर ने आपको बडे अच्छे रुप में पैदा किया है, आपको बहुत ज्यादा सम्मान दिया है, और आपके लिए ब्रहमाण्ड को आज्ञापालन बना दिया है, तो फिर किस कारण से आप अपने इश्वर के बारे में धोखे में पड़े हुए हैं ? ईश्वर ने कहा ऐ इंसान! तुझ को अपने परवरदिगारे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोखा दिया (वही तो है) जिस ने तुझे बनाया और (तेरे अंगों को) ठीक किया और (तेरी कामत को) एतदाल में रखा और जिस सूरत में चाहा, तुझे जोड़ दिया। (अल इनफितार, 6-8)

अवश्य रुप से आप अंत में अपने ईश्वर से मिलने ही वाले हो। ईश्वर ने कहा। ऐ इंसान! तू अपने परवरदिगार की तरफ (पहुँचने में) खूब कोशिश करता है, सो उस से जा मिलेगा। तू जिसका नामा (ए आमाल) उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा उस से आसान हिसाब लिया जाएगा, और वह अपने घर वालों में खुश-खुश आएगा, और जिस का नामा-ए-आमाल) उस की पीठ के पीछे से दिया जाएगा, वह मौत को पुकारेगा, और दोज़ख में दाखिल होगा। (अल इनशीक़ाक़, 6-12)

ऐ मनुष्य अपनी सृष्टि के सही कारण के लिए जीवन बिताते हुए इस जीवन और भविष्य जीवन की प्रसन्नता के रास्ते पर चलता रह, तब तू अपने जीवन में सुखी रहेगा और मृत्यु के बाद अपने ईश्वर से मिलने के समय तू आनंदित होगा।

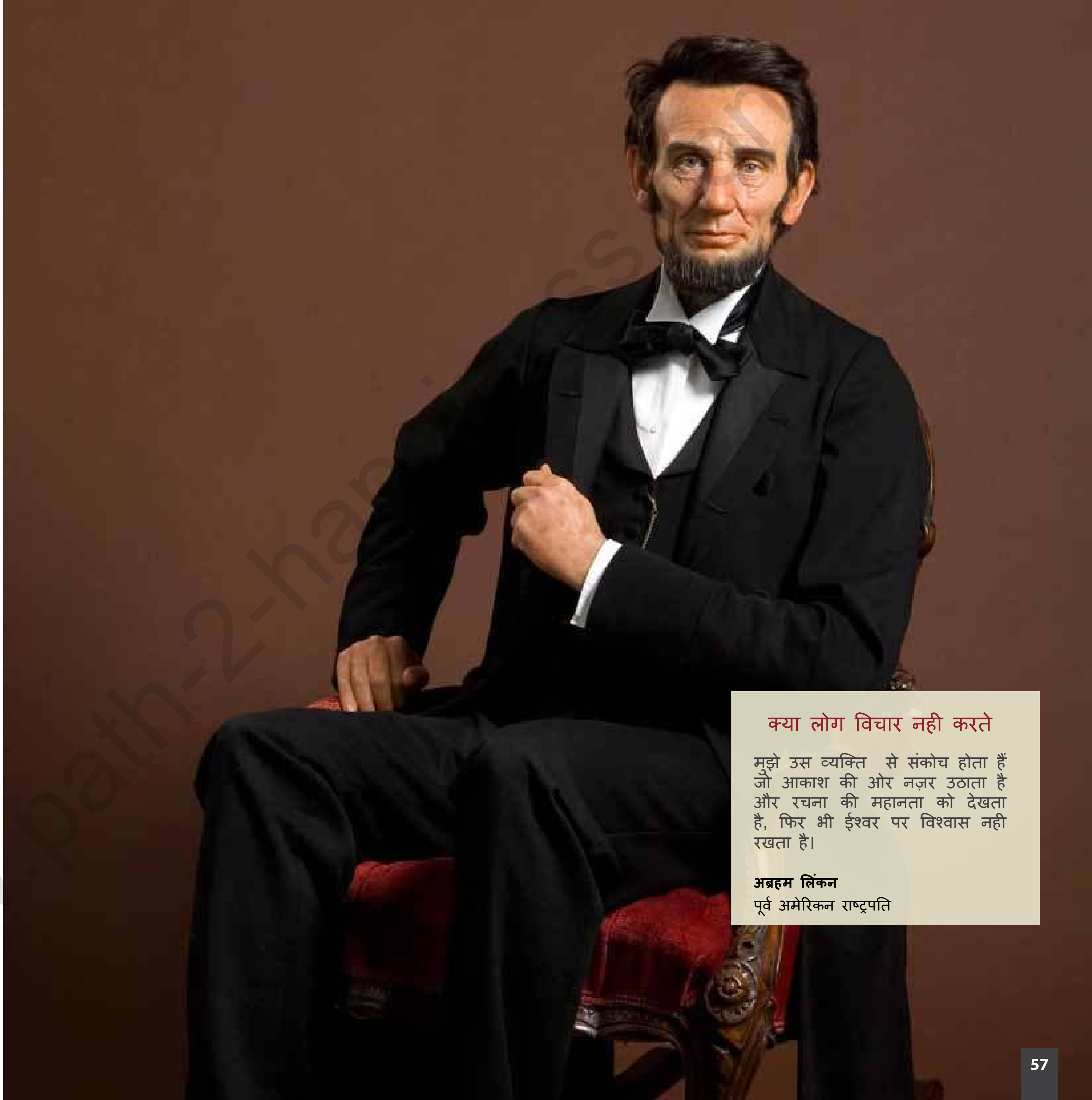
यह सारा ब्रह्माण्ड अपने ईश्वर की प्रार्थना करने वाला है, इस ब्रह्माण्ड का हर प्राणी अपने ईश्वर की महत्ता प्रकट करता है। ईश्वर ने कहा। जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है सब खुदा की तस्बीह करती है। (अल जूमूआह, 1)

और उसकी महानता के सामने सिर झुकाता है। ईश्वर ने कहा क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख्लूक) आसमानों में है और जो ज़मीन में है और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाए और बहुत से इंसान खुदा को सज्दा करते हैं और बहुत से ऐसे हैं, जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है। (अल हज, 18)

बल्कि हर-हर जीव अपनी-अपनी समानता के प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करता है। ईश्वर ने कहा। क्या तुम नहीं देखा कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में है, खुदा की तस्बीह करते रहते हैं और पर फैलाए हुए जानवर भी और सब अपनी नमाज़ और तरबीह (के तरीक़े) जानते है और जो कुछ वे करते हैं (सब) खुदा को मालूम है। (अल नूर, 41)

क्या आपके लिए मनासिब है कि आप ब्रह्माण्ड के इस महत्वपूर्ण दृश्य से असावधान रहें? तो अवश्य रुप से आप बेइज्जत व्यक्ति हो जाओगे। ईश्वर ने सच कहा।

क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख्लूक) आसमानों में है और ज़मीन में है और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाए और बहुत से इंसान खुदा को सज्दा करते हैं और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस आदमी को खुदा ज़लील करे, उस को कोई इज्जत देने वाला नहीं। बेश्क खुदा जो चाहता है, करता है। (अल हज, 18)

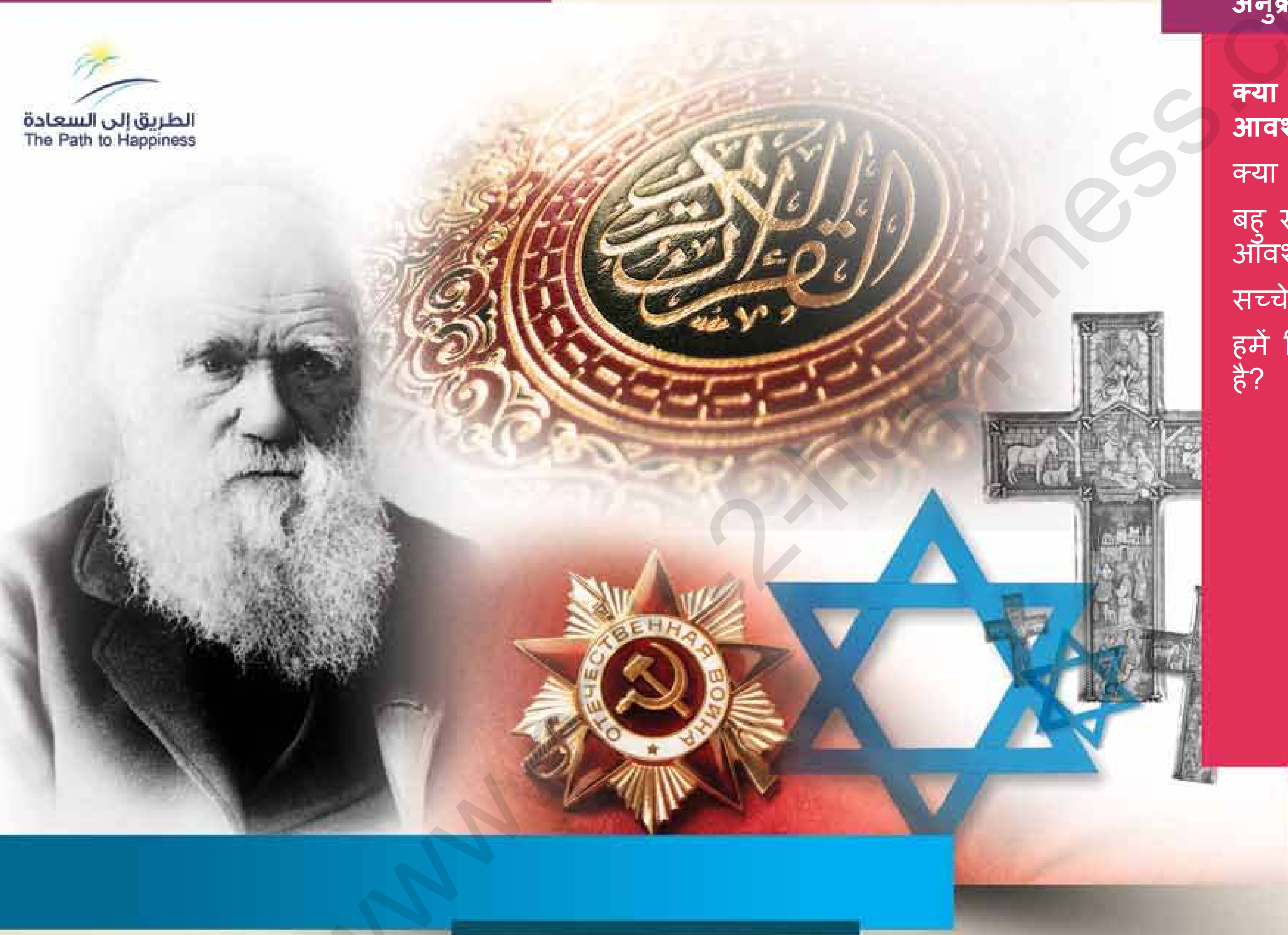


क्या लोग विचार नही करते

मुझे उस व्यक्ति से संकोच होता हैं जो आकाश की ओर नज़र उठाता है और रचना की महानता को देखता है, फिर भी ईश्वर पर विश्वास नही रखता है।

अब्रहम लिंकन
पूर्व अमेरिकन राष्ट्रपति

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



अनुक्रमणिका

क्या मनुष्य को धर्म की आवश्यकता है?

क्या धर्म आवश्यक है?

मनुष्य किसी भी स्थिति में धर्म के बिना जीवित नही रह सकता है।

जैसा कि मनुष्य एक सामाजिक है जो समाज से दूर रहकर अकेला जीवित नही रह सकता है, इसी प्रकार से वह अपने स्वभाव के अनुसार धार्मिक है, जो धर्म के बिना अच्छा जीवन बिता नही सकता है परन्तु धर्म मनुष्य के लिए स्वभाविक वृत्ति है।

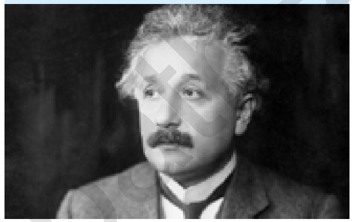
इसका सबसे बडा सबूत यह है कि मुसीबत और कष्ट के समय मनुष्य ईश्वर की ओर शरण लेता है, ईश्वर ने कहा फिर जब ये कश्ती में सवार होते हैं तो खुदा को पुकारते (और) ख़ालिस उसी की इबादत करते हैं लेकिन जब वह उन वो निजात देकर खुश्की पर पहुंचा देता है, तो झट शिर्क करने लग जाते हैं। (अल अंनक्बुत, 65)

सबसें ताकतवर परिणाम

विज्ञान के खोज के अनुसार सबसे तखतवर और स्वच्छ परिणाम ईमान है।

ऐन्सटीन

भौतिक वैज्ञानिक

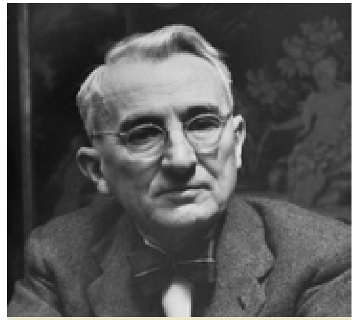


जिस तरह से कि किसी पदार्थ का बनाने वाला उसके बारे में अधिक मालुमात रखता है, इसी प्रकार से प्रजापित ईश्वर अपनी प्रजा और उनकी आवश्यकताओं का ज्यादा ज्ञान रखता है। भला जिसने पैदा किया, वह बे-ख़बर है? वह तो छिपी बातों का जाननेवाला और (हर चीज़ से) आगाह है। (अल मुल्क, 14)

और इसलिए कि प्रजापति ईश्वर करुणावान और दाता है, उसने मानवता के लिए धार्मिक नियम लागू किये है ताकि वे सुखी रहें और उनका जीवन समायोजित हो ईश्वर ने कहा मोमिनों! खुदा और उसके रसूल का हुक्म कूबूल करो, जब कि खुदा के रसूल तुम्हें ऐसे काम के लिए बुलाते है, जो तुम को जिंदगी (हमेशा की) बख्शता है और जान रखो कि खुदा आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल हो जाता है और यह भी कि तुम सब उसके रु-ब-रु जमा किये जाओगे। (अल अन्फाल, 24)

और इसी कारण जो लोग वृत्ति का विरोध करते हैं और ईश्वर के वजूद के इंकार का दावा करते हैं वे स्वयं अपने झूठ और ग़लत को जानते है, ईश्वर ने कहा और बे-इंसाफ़ी और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लों कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ।(अल न्म्ल, 14)

कष्ट और मुसीबत के समय वे इसका ज्यादा खुल कर अनुभव करते है, ईश्वर ने कहा। कहो, (काफिरे!) भला देखो तो अगर तुम पर खुदा का अज़ाब आ जाए या कियामत आ मौजूद हो, तो क्या तुम (ऐसी हालत में) खुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर सच्चे हो (तो बताओ) (नहीं) बल्कि (मुसीबत के वक़्त तुम) उसी को पुकारते हो, तो जिस दुख के लिए उसे पुकारते हो, वह अगर चाहता है, तो उसको दूर कर देता है और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक्त) उन्हें भूल जाते हो। (अल अनआम, 41- 42)



धार्मिक और रोगी

मुझे वह समय अच्छी तरह याद ज्ञान है जिसमें लोगों के अंतर्गत शिक्षा और धर्म के बीच आपसी प्रतिकर्षण के अलावा कोई बात-चीत ना होती थी। लेकिन यह झगडा अपरिवर्तनीय ढंग से निष्कर्ष रहा। जब कि विज्ञान मनोरोग की नई खोज धर्म के सिध्दातों का संकेत देती हैं। क्यों और कैसे इसलिए मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मज़बूत धर्म, नामाज़ और धर्म की स्थिर रुप से अनुकरण करना, चिंता, आशंका और तनाव को दूर करता है और जिन बीमरियों से हम पीडित हो रहे हैं असमे से आधे से ज्यादा बिमारियों के लिए मुक्ति है यहाँ तक कि डाँ ए.ए. प्रेल ने कहा कि धार्मिक (मनुष्य) व्यक्ति वास्तव में कभी भी मानसिक रोगों से पीडित नही होता है

डेल कार्नेज

अमेरिकी लेखक



डल कार्नेज
अमेरिकी लेखक

शोधी बनो

दार्शनिक फ्रँसेस बेकोन ने शत-प्रतिशत सही कहा कि बहुत ही कम दर्शन मनुष्य को नास्तिकता के ओर ले जाता है। जब के दर्शन में गहराई तक पहुँचने से मनुष्य धर्म से निकट हो जाता है।

और ईश्वर ने कहा और जब इंसान को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो अपने परवरदिगार को पुकारता है (और) उस की तरफ़ दिल से रुजूअ करता है। फिर जब वह उसको अपनी तरफ़ से कोई नेमत देता है, तो जिस काम के लिए पहले उस को पुकारता है, उसे भूल जाता है और खुदा का शरीक बनाने लगता है, ताकि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कह दी कि (ऐ काफ़िरे नेमत) अपनी ना-शुक्री से थोडा-सा फायदा उठा ले, फिर तो तू दोज़ख़ियों में होगा।(अल ज़ुमृ, 8)

सारी मानवता ईश्वर की ओर से सृष्टि की हुई अपनी वृत्ति के अनुसार एक ऐसे ईश्वर की पूजा करने पर सहमत है, जिसके हाथ में लाभ और नष्ट हो, वह जो चाहे करता हो और जिसका चाहे निर्णय लेता हो, ईश्वर ने कहा और अगर खुदा तुम को कोई सख्ती पहुंचाए, तो इस के सिवा उस को कोई दूर करने वाला नहीं और अगर नेमत (व राहत) अता करे तो (कोई उसको वाला नहीं) वह हर चीज़ पर क़ादिर है।(अल अनआम, 17)

और ईश्वर ने कहा खुदा जो अपनी रहमत (का दरवाज़ा) खोल दे तो कोई उसको बन्द करने वाला नही और जो बंद कर दे तो उस के बाद कोई उस को खोलने वाला नहीं। (फतिर, 2)

मनुष्य में निहित दो शक्तियाँ है, ज्ञान की शक्ति और संकल्प की शक्ति, मनुष्य इन दोनों शक्तियों को प्राप्त करने में अपने प्रयत्न के अनुसार अपना लक्ष्य पा-लेता है और इसी प्रकार से मनुष्य की प्रसन्नता की भी यही स्थिति है। पहली शक्ति यानी ज्ञान की शक्ति है, मनुष्य के ईश्वर का, उसके नामों और उसके गुण का ज्ञान रखने, ईश्वर के आदेश और अनादेश के पालन करने, अच्छे चरित्र अपनाने, संतों के मार्ग पर चलने और स्वामियों के स्थान को पाने का तरीका,



और इस मार्ग में चलने के लिए जिस ज्ञान की ज़रुरत है, यानी मानवता के मानसिक गहराइयों, बीमारियों, गंदगियों, और दुश्मनों पर ग़ालिब आने, अपने और अपने ईश्वर के बीच धर्मान्तरित विषय पर काबू पाने का ज्ञान (देवत्व नैतिकता में मानसिक बुलंदी और शुद्दता, जो मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ धैर्यवान बनाते है और हवस, संदेह और लौकिकता की बकवास से दूर करते है, ऊँचा लक्ष्य है) मनुष्य इस ज्ञान के प्राप्त करने में जिस प्रकार से प्रयत्न करेगा उसी के अनुसार उसका ईश्वर के पास स्थान और सम्मान होगा, बल्कि उसी के अनुसार जीवन में उसको प्रसन्नता प्राप्त होगी और भविष्य जीवन की बात ही और है।

बल्कि ज्ञान की यह शक्ति वास्तव में संकल्प की शक्ति का हत्यार है, जिससे ज्ञान की शक्ति में परिपक्व और स्थिरता उपलब्ध होती हैं।

मोमिनो! खुदा और उसके रसूल का हुक्म कुबूल करो जब कि खुदा के रसूल तुम्हें ऐसे काम के लिए बूलाते हैं, जो तुम को ज़िंदगी (हमेशा की) बख्शता है।(अल अन्फल, 24)

यही वह नास्तिकता के सिध्दांत हैं. जो आत्मा तो क्या शरीर को सुख देने से अपने दिवालिया का खुल्लम खुल्ला प्रकट करते हैं। और निश्चित रुप से चाहे ये लोग आपस मे मीठी मीठी बातें कर ले फिर भी मनुष्य को सच्ची प्रसन्नता देने से असहाय हैं।

बडी बडी मुसीबत और आपदाएँ के समय मनुष्य किसकी ओर शरण लेता है? निश्चित रुप से वह किसी बलिष्ठ छाया की तलाश करता है, वह ईश्वर की ओर शरण लेता है, जहाँ उसके लिए शक्ति, आशा, उम्मीद, सब्र, विश्वास और अपनी स्थिति को ईश्वर की ओर सौपने की शक्ति मिलती है। ईश्वर ने कहा (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिन के दिल खुदा की याद से आराम पाते हैं. (उन को) और सुन रखो-कि-खुदा की याद से दिल आराम पाते हैं।(अल राद, 28)



स्पष्ट सच्चाई

मेरा डाँ डिग्री के लिए शोध शिक्षा और मानव जाती कि उन्नती के आधार पर था, और मुझे ज्ञान हुआ कि इसलाम धर्म के बुनियादी स्थंभ मानव जाति की सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक पुनर्निर्माण करते है।

डाँ. डोग्लास
रिजीना मेयर

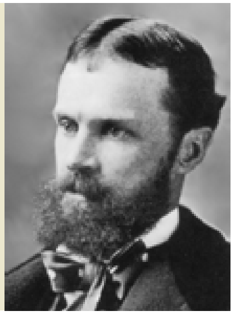
जब मनुष्य अन्याय की आग में जलता है, और उसका कडवापन महसूस करता है, तो वह यह विश्ववास रखता है कि इस ब्रह्माण्ड का एक ईश्वर है जो कुछ समय बाद ही सही पीडित की सहायता करता है, और यह कि भविष्य जीवन है जिसमें हर मनुष्य को अपने किये का पूरा-पूरा बदला मिलेगा, जिस दिन अच्छे को अच्छा बुरे को बुरा फल मिलेगा। इस

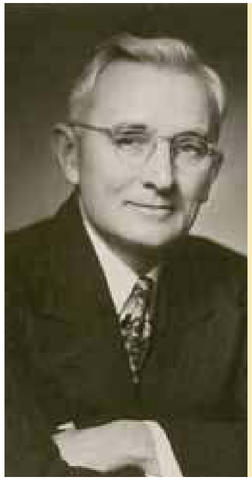
अपने आप को समझो

मानसिक तनाव का सबसे बडा उपचार अल्लाह पर विश्वास रखना है।

विलियम जेम्स

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक



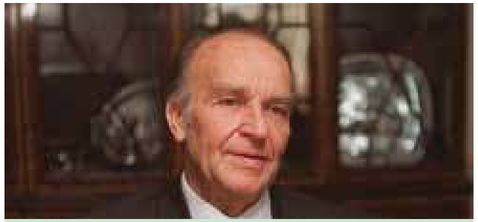


धार्मिकता रोगों से मुक्ति देता है

मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मज़बूत धर्म और धर्म की स्थाई रुप से अनुकरण करना, चिंता, आशंका और तनाव को दूर करता है। और इन बीमरियों से मुक्तित प्राप्त कराता है।

डेल कार्नेज

अमेरिकन लेखक



दोनों के बीच बडा अंतर

भौतिकता सदैव मनुष्य और पशु के बीच संयुक्ता की पुष्टी करती है। जब कि धर्म मनुष्य और पशु के बीच की अंतर को समझता है।

अलि इज्जत बेगोफिच

पूर्व बोसनिया राष्ट्रपति हर्जिगाविनिया

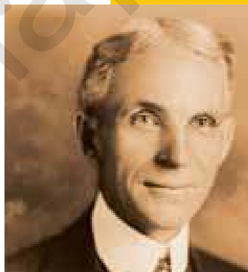
विश्वास से मनुष्य का मन ईश्वर पर अधिक विश्वास और निर्भरता से भर जाता है। ईश्वर ने कहा भला जो शख्य खुदा की खुश्नूदी का ताबेअ हो, वह उस शख्स की तरह खियानत कर सकता है, जो खुदा की ना-खुशी में गिरफ़्तार हो और जिसका ठिखाना दोज़ख है और वह बुरा ठिकाना है।(आल इमरान, 162)

उपर युक्त बातों के विपरीत जो मनुष्य ईश्वर के ज्ञान और उस पर विश्वास खो दिया हो, अवश्य रुप से वह हर प्रकार की शक्ति, सुख राहत और प्रसन्नता खो बैठा है, वह दुख और नष्ट के लपेट में जीवित है, उसको मानसिक सुख या शारीरिक आनंद नही है, उसका लक्ष्य हवस को पूरा करना और धन इकट्ठा करना है, वह न अपने वजूद का कोई लक्ष्य जानता है और न अपने जीवन का कोई कारण, बल्कि वह प्रसन्नता की खोज और हवस के पीछे अपना जीवन दुखों में बिताता है, यहाँ तक कि वह पशु-पक्षी, बल्कि उससे भी नीच हो जाता है, ईश्वर ने कहा या तुम यह ख्याल करते हो कि इन में अक्सर सुनते या समझते हैं? (नहीं ये तो चौपायों की तरह के हैं बल्कि उन से भी ज्यादा गुमराह हैं (अल फुरखान, 44)

एक बडे कष्ट ने इस मनुष्य पर आक्रमण किया है, जिसका शिकार बनकर यह आंतरिक दुख और मानसिक कलेश से पीडित हो गया है और जो मेरी नसीहत से मुंह फेरेगा, जिसकी ज़िंदगी तंग हो जाएगी और कियामत को हम उसे अंधा कर के उठाएंगे। (ताहा,124)



अच्छे सलाह देनेवाले डाक्टर



मनोचिकित्स्तक भी एक नई शैली में प्रचारक ही है, क्यों कि यह लोग मरणोपरांत में नरक के दण्ड से सुरक्षित रहने के लिए धर्म को मज़बुती से अनुकरण करने कि सलाह नही देते. लेकिन इस दुनियावी जीवन में रखे हुए नर्क से बचने के लिए धर्म पर चलने की सलाह देते हैं। और वह नर्क मेदे की बीमारी, पागल पन नसों का तनाव है।

हेनड़्री फोर्ड

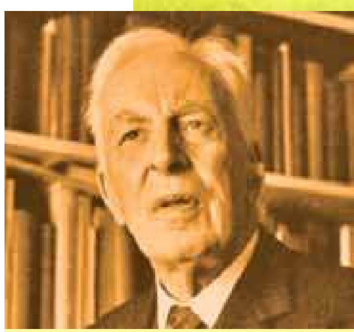
अमेरिकी फोर्ड कंपनी का संस्थापक

कितना ही बडा अंतर है उस मनुष्य के बीच जो अपने ईश्वर को जाने, उसकी महानता का ज्ञान प्राप्त करे, उसके आदेशों का पालन करें, उसकी ईच्छाओं के प्रकार उपयोग करे, ईश्वर के नियमों को अपनाये. जिस काम के न करने का आदेश है उसका पालन करे, और जिस काम के न करने का आदेश है उससे दूर रहे, मनुष्य यह ज्ञान रखता हो कि हर छोटी बडी और हर समय हर लमह उसको अपने ईश्वर की आवश्यकता है। ईश्वर ने कहा

लोगों! तुम (सब) खुदा के मुहताज हो और खुदा बे-परवा, हम्द (व सना) के लायक़ है।(फातिर,15)



और उस मनुष्य के बीच जिसको संदेह और कल्पनाओं ने अप्रसन्नता और कष्टों के अंधेरे मे ढकेल दिया है, वह अंधे की तरह इधर-उधर भटकता रहेगा, उसका मन शक और भ्रम से भर जायेगा, और जब भी प्रसन्नता की खोज की कोशिश करेगा, तो एक के बाद दूसरा मृगतृष्णा ही उसके भाग्य मे होगा, अगर ये वह दुनिया की लज़्ज़तें प्राप्त कर ले, चाहे वह संसार के ऊँचे ऊँचे स्थान पर ही क्यों न आसन हो जाये। क्योंकि जो ईश्वर को खो दे वह क्या प्राप्त करेगा? और जो ईश्वर को प्राप्त कर ले वह क्या खोयेगा ?



धर्म ही जीवन है

मनुष्य के लिए धर्म एक प्राकृतिक आवश्यक मानव वैधता है। और हमारे लिए ये बताना पर्याप्त होगा कि मानव को धर्म की आवश्यकता आध्यात्मिक निराशा कि ओर ले जाता है। जिसके कारण मनुष्य ऐसी जगह धार्मिक सुकून प्राप्त करने का प्रयास करता है। जहाँ से उसे कुछ भी प्राप्त नही होता।

आरनाल्ड ट्वेन बी

ब्रिटिश इतिहासकार



चिंता का युग

हम चिंता के युग में जीवन यापन कर रहे हैं। और इस बात में कोई शंका नही कि सैन्सी और टेकनाँलजी के उपलब्दीयाँ मनुष्य के लिए कल्याण और आराम में अधिकता का कारण है। लेकिन बदले में मनुष्य के लिए प्रसन्नता, ख़ुशी और संतोष में वृध्दि का कारण नही है। बल्कि इसके अन्यथा मनुष्य के लिए चिंता, निराशा और मानसिक रोगों में वृध्दि हो रही है। जिसके कारण मनुष्य इस जीवन की सुंदर अर्थ खो बैठा।

रेनिह डोलो

नोबल पुरस्कृत लेखक





बहु समाज के लिए धर्म की आवश्यकता।

जब मनुष्य के लिए धर्म एक आवश्यकता है, तो बहु समाज के लिए धर्म की आवश्यकता अधिक हो जायेगी, क्योंकि धर्म समाज के लिए रक्षक है, इसलिए कि मानव जीवन आपस में उसके सदस्यों के बीच भले कार्यों में सहयोग के बिना पूरा नही हो सकता है।

और (देखो) नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करों और गुनाह और ज़ुल्म की बातों में मदद न किया करो। (अल माइदा, 2)

और आपसी यह मदद केवल उसी प्रणाली संभव है जो संबंधों को नियन्त्रित करे, कर्तव्यों को परिभाषित करे और अधिकारों को सुनिश्चत रखे।

और इस प्रकार के प्रणाली का किसी ऐसे विशेषज्ञ की ओर से होना ज़रुरी है जो मानवता की आवश्यकताओं का ज्ञान रखता हो

भला जिस ने पैदा किया, वह बे-ख़बर है? वह तो छिपी बातों का जानने वाला और (हर चीज़ से) आगाह है। (अल मुल्क, 14)

जैसे जैसे मानवता, धर्म, धार्मिक नियम और उसके वुसूलों से दूर होते गए, उसी प्रकार से वह शक, गुमराही, अप्रसन्नता, भ्रम और नष्ट में डूबते गए।

और पृथ्वी के चारों ओर कोई शक्ति नही है जो

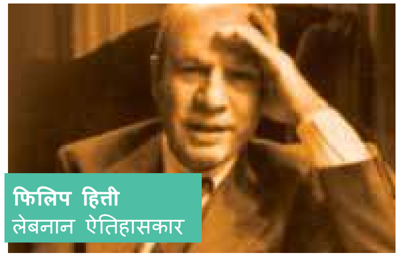


वो सुबूत जो स्वयं बताये

इसबात की संभावना है कि हर वह अंश जिस से हम प्रेम करते हैं, वह नष्ट हो जाय, और यह भी संभावना कि बुध्दि, विज्ञान, और उद्योग के उपयोग की स्वतंत्रता समाप्त हो जाय। लेकिन यह असंभव है कि धार्मिकता मिठ जाय बल्कि यह ऐसे भैतिकवाद के गलत होने पर स्वयं सुबूत है जो मानव को स्थलीय जीवन के अमूल्य मार्ग के अंतर्गत बाँध रखे

अनैष्ट रेनान

फ्रेंच ऐतिहासकार



फिलिप हिती

लेबनान ऐतिहासकार

सच्ची शरियत

इसलामी शरियत धार्मिक और संसारिक के बीच कोई अंतर नही रखती। बल्कि वह तो अल्लाह के साथ मनुष्यके रिश्ते को, और अल्लाह के ओर मनुष्य के कर्तव्य को बताती है, और इन रिश्तों को व्यवस्थित करती है, जैसा कि इसलामी शरियत मनुष्यों का दूसरे मनुष्यं से रिश्ता जोडती है। अल्लाह के सारे आदेश और रोक जो धार्मिक, सामाजिक और इसके अलावा जिस किसी भी चीज़ से संबंधित हो वह सबके सब क़ुरआन में मौजूद हैं। जिस मे से लग भग 6000 या इससे कुछ अधिक आयतें हैं। जिसमे से लगभग 1000 आयतें विधान से संबंधित हैं।

धर्म में व्यक्तिगत इच्छा का कोई स्थान नही

मदीना मुनव्वरा में मोहम्मद सल्ललाहु अलैही व सल्लम का जो गरमं जोशी से स्वगत किया गया, इसके कारणों में से एक कारण हमारे मत यह है कि मदीना मुनव्वरा के ज्ञानीवानों के लिए इसलाम में प्रवेश होना अपने समाज कि अराजकता का उपचार था। क्यों कि, इन ज्ञानी लोगों ने ये देखा कि इसलाम ने एक मज़बूत संगठन, और मनुष्य के बोलगाम इच्छाओं को ऐसें दृढ़ शासनों के आगे नत मस्तक करदिया, जो कि एसे प्रमुख शक्तित वाली शरियत के ओर से लागु किये गये है जो व्यक्तिक इच्छाओं पर अतिक्रमण है।

थामस अरनाल्ड

ब्रिटिश प्राच्य विद्या विशारद

आप लोगों की बुध्दि कहाँ चले गयीं

आप लोग अल्लाह की उपस्थिती में शंका क्यों करते हो। अन्यथा अल्लाह ना होता तो मेरी बीवी मेरे साथ विश्वासघात करती। और मेरा सेवक मुझे चुरालेजाता।

फोल्टेर

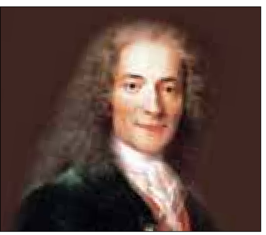
फ्रेंच दार्शनिक



प्रणाली के सम्मान को सुनिश्चित रखने, सामुदायिक सामंजस्य और उसके नियमों की स्थिरता बाकी रखने और सामाजिक सुख और आराम के कारण प्रावधान करने मे धार्मिकता की शक्ति के समान हो। और इसका रहस्य यह है कि मनुष्य सारे प्राणियों में अपने गतिविधियाँ और कार्यों मे वैकल्पिक है, जिसका कंट्रोल ऐसी उध्दश्य शक्ति करती है जिसको न कान सुन सकते है और न आँख देख सकते है, वह शक्ति विश्वास (ईमान) है, जो आत्मा को साफ करती है, शारीरिक अंगों को नियमित बनाती है और मनुष्य को अपने बाह्य के समान अपने आंतरिक के भी ध्यान रखने पर मजबूर करती है और अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह तो छिपे भेद और बहुत छिपी बात तक को जानता है। (ताहा, 7)

परन्तु मनुष्य सदा सही सिध्दांत या ग़लत सिध्दांत से जुडा होता है, जब उसका सिध्दांत सही हो, तो उसकी हर चीज़ सही हो जाती है, और जब सिध्दांत ही ग़लत हो तो हर चीज़ उसकी ग़लत हो जाती है।

इसी कारण न्याय और इंसाफ के नियमों के अनुसार लोगों के बीच व्यवहार को फैलाने मे धर्म ही सब से अधिक सुनिश्चित है, और इसी कारण धर्म एक सामाजिक आवश्यकता है। परन्तु अगर धर्म बहु समाज के अंदर मानसिक शरीर में दिल के समान हो जाये तो कोई हैरत की बात नही।



और जब साधारण रुप से धर्म का यह स्थान है, और आज कल हमारे इस संसार मे कई धर्म और जात हैं, इसी प्रकार से हम यह देखते हैं कि हर जात को अपने धर्म से प्रेम है और वह उससे खुश भी हैं। तो वह कौन-सा सही धर्म है जो मानवता के लिए सही चीज़ों का उपदेश देता है? और सही धर्म के नियम क्या हैं?



सच्चे धर्म के नियम

सदैव हर धार्मिक अपने धर्म ही को सब से ज्यादा सही होने, और दूसरे धर्मो के ग़लत होने का दृढ़ विश्वास रखता है। और हर धार्मिक अपने धर्म की सफाई करने मे दूसरों से अलग होता है। परन्तु विकृत या भ्रष्ट धर्मवाले यह दावा करते है कि उन्होने अपने वंशजो को इसी के अनुसार पाया है और वे उन्ही का अनुसरण कर रहे है। और इसी तरह हम ने तुम से पहले किसी बस्ती में कोई हिदायत करने वाला नहीं भेजा, मगर वहाँ के खुशहाल लोगों ने कहा कि हम ने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया है और हम कदम-ब-क़दम उन ही के पीछे चलते है। पैग़म्बर ने कहा, अगरचे मै तुम्हारे पास ऐसा (दीन) लाऊं कि जिस (रास्ते) पर तुम ने अपने बाप-दादा को पाया, वह उससे कही सीधा रास्ता दिखता हो, कहने लगे कि जो (दीन) तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नही मानते। (अल ज़ुख्रूफ 23- 24)

और ईश्वर ने कहा और जब उन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाज़िल फरमायी है, उसकी पैरवी करेंगे जिस पर हमने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे उनके बाप-दादा न कुछ समझते हो और न सीधे रास्ते पर हों (तब भी वे उन्ही की पैरवी-किए जाएंगे) जो लोग कफ़िर हैं. उनकी मिसाल उस शख्स की है जो किसी किसी ऐसी चीज़ को आवाज़ दे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ सुन न सके। (ये) बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे है कि (कुछ) समझ ही नही सकते।(अल ब्क़्रा, 170- 171)

और यह लोग अपनी स्थिति को बिना सोंच विचार या बुध्दिमत्ता के केवल अंधी परंपरा पर आधारित होते हैं, या ग़लत, झूठी और विरोधाभासी बातों पर आधारित होते है जिनके सच्चे होने का न कोई समर्थन होता है और न कोई सबूत। निश्चित रुप से धर्म और सिध्दांत के बारे में इस जैसी बातों पर आधारित होना और इनको सबूत बनाना सही नही होता है।

और इसलिए कि सही बात एक से अधिक नही हो सकती, परन्तु यह असंभव है कि यह सब धर्म सही हो, और यह भी असंभव है कि यह सब धर्म एक ही समय में सच्चे हो, वरना सच विरोधभासी हो जायेगा, और इस प्रकार के विचार को श्रेष्ठ बुध्दि स्वीकार नही करती है। अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख्तिलाफ़ पाते। (अल निसा, 82)

तो फिर सच्चा धर्म क्या है? और वह कौन से नियम है जिसके अनुसार हम इन सिध्दंतों में से किसी एक के सच होने का (जिसमें यह नियम उपलब्ध हो) और इसके अलावा दूसरे सिध्दांतों के ग़लत होने का निर्णय लें?

वह नियम यह हैं

प्रथमः यह कि उस धर्म का स्त्रोत देवत्व हो, यानी ईश्वर की ओर से हो, इस प्रकार से कि इस धर्म को ईश्वर ने भक्तों तक पहूँचाने के लिए अपने किसी एंजिल्स के व्दारा रसूलों पर सराय हो। इसलिए कि सच्चा धर्म वह इस ब्रहमाण्ड के प्रजापति ईश्वर का धर्म है, और ईश्वर ही वह पवित्र महात्मा है जो सारे जीव से अपनी ओर से भेजे हुए धर्म के बारे में भविष्य जीवन में प्रश्न करेगा, ईश्वर ने कहा (ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी तरफ़ उसी तरह वह्य भेजी है, जिस तरह नूह और उन से पिछले पैग़म्बरों की तरफ़ भेजी थी और इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारुन और सुलेमान की तरफ़ भी हम ने वह्य भेजी थी और दाऊद को हम ने ज़बूर भी इनायत की थी। और बहुत से पैग़म्बर हैं, जिनके हालत हम तुम से पहले बयान कर चुके है, और बहुत से पैग़म्बर हैं जिनके हालत तुमसे बयान नही किये। और मूसा से तो खुदा ने बातें भी की। (सब) पैग़म्बरों को (खुदाने) खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले (बना कर भेजा था), ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों को खुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और खुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (अल निसा, 163 - 165)

इस फल स्वरुप से जो भी धर्म कोई व्यक्ति लाये और उसको अपने ही ओर श्रेय करे, न कि ईश्वर की ओर, तो निश्चित रुप से वह धर्म ग़लत होगा, और जो धर्म भी मानव सृजन करे, उसको बढावा दे, और उसको

अच्छा समझे, ज़रुर वह धर्म भी गलत होगा, क्यों कि मानवता की भलाई बुध्दिमान प्रजापति ईश्वर से अधिक वह व्यक्ति जान नही सकता जो केवल धार्मिकता में परिवर्तन लाये या विकास करे।

भला जिस ने पैदा किया, वह बे-ख़बर है? वह तो छिपी बातों का जानने वाला और (हर चीज़ से) आगाह है। (अल मुल्क, 14)

एकता (एक ईश्वर को मानना)



इसलाम में बुनियादी सत्य एकता है। अल्लाह एक है और मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल है। शिर्क को एक ओर रखदिया गया है। इस कारण (अल्लाह को) ना बाप है न बेटा और न पवित्र व संसारिक में अंतर है। न पूर्वी और पश्चिमी के दर्मियान भेद है। यहाँ तो केवल एक दुनिया और एक दीन है।

मिखाईल हेम्झ

ब्रिटिश लेखक

वरना तो विकास लानेवाला या परिवर्तन करने वाला ही वह प्रभु और ईश्वर होगा जो मानवता की भलाई का अधिक ज्ञान रखता है (ईश्वर इन बातों से बहुत ही परेह है) क्या ये (काफ़िर) खुदा के दीन के सिवा किसी और दीन के तालिब हैं, हालाकि सब आसमानों और ज़मीन वाले, खुशी या ज़बरदस्ती से खुदा के फ़रमाबरदार हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले है। (आल इम्रान, 83)

ईश्वर ने कहा

तुम्हारे परवरदिगार की क़सम! ये लोग जब तक अपने झगड़ों में तुम्हे मुनसिफ़ न बनायें और जो फ़ैसला तुम कर दो उस से अपने दिल में तंग न हों। (अल निसा, 65)

व्दितीयः धर्म एक ईश्वर की प्रार्थना करने का आदेश दे, और किसी को उसका बागीदार मानने को पाप समझे। एक ईश्वर को मानना सारे नबी और रसूलों के धर्म का आधार है, ईश्वर का भागीदार समझना और मूर्ति पूजा करना श्रेष्ठ बुध्दि और सामान्य वृत्ति के विरोध है। ईश्वर ने कहा और जो पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ़ यही वह्य भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नही, तो मेरी ही इबादत करो। (अल अंबिया, 25)

हर नबी ने अपनी क़ौम से यही कहा खुदा की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का (बहुत ही) डर है। (अल आरफ, 59)

इस आधार से जो भी धर्म ईश्वर के साथ किसी और की भागीदारी को स्वीकार करें या नबी या एंजिल या साधू, सन्त या मानव या पत्थर वग़ैरह को ईश्वर का भागीदार माने वह धर्म ग़लत है, क्यों कि प्रार्थना सिर्फ उस एक ईश्वर के लिए है जिसका कोई भागीदार नही, मूर्ति पूजा और ईश्वर का भागीदार मानना खुली त्रुटि है। और हर वह धर्म (चाहे वह ईश्वर की ओर से क्यों न आया हो) जिसमें ईश्वर की भागीदारी का सिध्दांत हो, वह धर्म ग़लत है। और ईश्वर ने हमारे लिए उसका उदाहरण देते हुए यह कहा। लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे ग़ौर से सुनो कि जिन लोगों को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे उसके लिए सब जमा हो जाए और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन ली जाए तो उसे उस से छुडा नहीं सकते। तालिब और मत्लूब (यानी आबिद और माबूद दोनों) गये-गुज़रे हैं। इन लोगों ने खुदा की क़द्र जैसी करनी चाहिए थी, नही की, कुछ शक नहीं कि खुदा ज़बरदस्त (और) ग़ालिब है। (अल हज, 73 - 74)

तृतीयः यह है कि धर्म सामान्य वृति के मुनासिब हो। ईश्वर ने कहा तो तुम एक तरफ़ के हो कर दीन (खुदा के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चले जाओ (और) खुदा की फ़ितरत को, जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, (अख्तियार किए रहो) खुदा की बनायी हुई (फ़ितरत) में तब्दीली नहीं हो सकती। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (अल रोम, 30)

वृत्ति वह चीज़ है जिस पर प्रजापति ने अपनी प्रजा की सृष्टि की है, और यह वृत्ति प्रजा की स्थापना का एक अंग हो गया है, इसी कारण यह असंभव है कि धर्म मानवता के लिए उपयुक्त न हो, वरना प्रजापति धर्म के नियम बनानेवाला न होता, यह बात असंभव और ईश्वर के साथ भागीदार मानने के समान है।

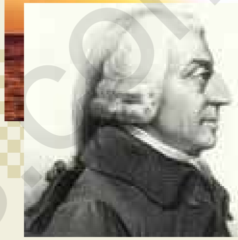


अल्लाह की प्रकृति

छोटे बच्चों में स्थाई रुप से एक अल्लाह पर ईमान रखने की वैधता पाई जाती है। इसलिए कि बच्चों का यह विचार होता है कि विश्व में सारी चीज़े किसी कारण ही पैदा की गयी हैं। बल्कि जब हम बच्चों को तनहा किसी व्दीप में छोड दें, और वे वहीं शिक्षा प्राप्त करें तो ज़रूर वो अल्लाह पर ईमान ले आयेंगे।

गास्टोन बारेट

ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटी का मानवीय सैध्दांतिक



अंधविश्वास का रोग

अंधविश्वास जैसे ज़हर का इलाज शिक्षा ही है।

आदम स्मित

स्काटलैंड का दार्शनिक

चौथाः यह है कि धर्म श्रेष्ट बुध्दि के मुनासिब हो, इसलिए कि सच्चा धर्म ईश्वर का बनाया हुआ नियम है, श्रेष्ठ बुध्दि ईश्वर की बनायी हुयी जीव है, यह असंभव है कि ईश्वर के नियम और उसके जीव के बीच टकराऊ हो। ईश्वर ने कहा क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि उनके दिल ऐसे होते कि उन से समझ सकते और कान (ऐसे) होते कि उन से सुन सकते। बात यह है कि आंख अंधी होती, बल्कि दिल जो सीनों में हैं (वे) अंधे होते हैं।(अल हज, 46)

ईश्वर ने कहा बेशक आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए (खुदा की खुदरत की) निशानियां हैं। और तुम्हारी पैदाइश में भी और जानवरों में भी, जिन को वह फैलाता है, यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। और रात और दिन के आगे-पीछे आने-जाने में और वा जो खुदा ने आसमान से रोज़ी (का ज़रिया) नाज़िल फ़रमाया, फिर इस से ज़मीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा किया, उस में और हवाओं के बदलने में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। ये खुदा की आयतें हैं, जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते है, तो यह खुदा और उसकी आयतों के बाद किस बात पर ईमान लाएंगे? (अल जासिया, 6)

परन्तु यह ग़लत है कि सच्चा धर्म मिथकों, मनोरंजक कहानियाँ या विरोधाबास हो। इस प्रकार से कि हम इस जैसे धर्म कि कुछ बातों और सी धर्म की दूसरी बातों के बीच टकराऊ पाते है, जो श्रेष्ठ बुध्दि के विरोध है, क्योंकि श्रेष्ठ बुध्दि कोई आदेश दे फिर उसी आदेश के विरोध में दूसरा आदेश दे, और इसी प्रकार से एक समूह के लिए किसी काम को अधिकृत करे, और वही काम दूसरे समूह के लिए वंचित करे, या एक ही प्रकार की बातों के बीच अंतर करे, या विरोधभासी बातों को एक साथ ज़ोडते।



अपना प्रमाण प्रस्तुत करो

बुध्दिमान वह है जो प्रमाण पर अपनी ईमान की नीव रखता हैं।

डेविड हयोम
स्काटलैंड का दार्शनिक

मनुष्य की पहचान उसके चरित्र है

नैतिकता के बिना मनुष्य एक क्रूर है जिसे इस संसार में खुला छोडदिया गया है।



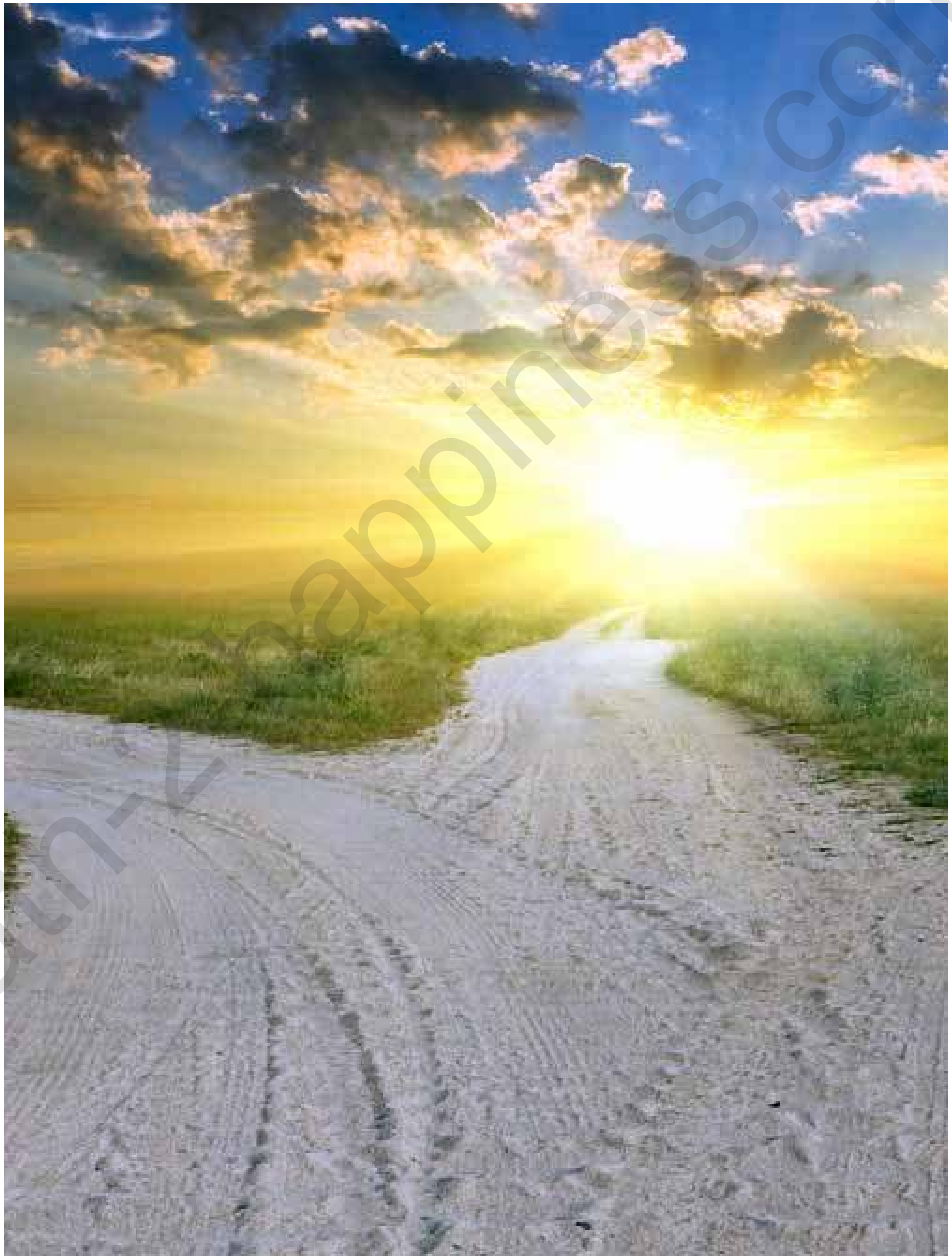
अल्बेर कामो
फ्रेंच दार्शनिक

ईश्वर ने कहा भला ये क़ुरआन में ग़ौर क्यों नहीं करते? अगर यह खुदा के सिव किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख़्तिलाफ़ पाते।(अल निसा, 82)

बल्कि धर्म का स्पष्ट सबूतों पर आधारित होना ज़रुरी है। ईश्वर ने कहा

(ऐ पौग्म्बर) कह दो कि अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो (अल बखरः, 111)

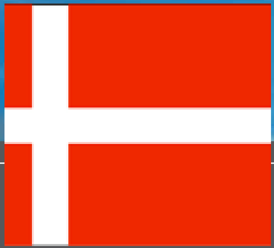
पँचवा : यह है कि धर्म अच्छे चरित्र और अच्छे कार्य का संदेश दे। ईश्वर ने कहा कहो कि (लोगो!) आओ मैं तुम्हें वे चीज़े पढ़ कर सुनाऊ जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हराम कर दी हं. (उन के बारे में उस ने इस तरह इर्शाद फ़रमाया है) कि किसी चीज़ को खुदा का शरीक न बनाना और मां-बाप से (बद-सुलूकी न करना, बल्कि) सुलूक करते रहना और नादारी (के ख़तरे) से अपनी औलाद को क़त्ल न करना, क्योंकि तुम को और उन को हमी रोज़ी देते है और बे-हयाई के काम ज़ाहिर हो या छिपे हुए, उन के पास न फटकना। और किसी जान (वाले) को जिस के क़त्ल को खुदा ने हराम कर दिया है, क़त्ल न करना, मगर जायज़ तौर पर (यानी) जिस का शरीअत हुक्म दे। इन बातों



की वह तुम्हें ताकीद फ़रमाता है, ताकि तुम समझो। और यतीम के माल के पास भी न जाना, मगर ऐसे तरीक़े से कि बहुत पसंदीदा हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरी-पूरी किया करो। हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते, मगर उस की ताक़त के मुताबिक और जब (किसी के बारे में) कोई बात कहो, तो इंसाफ से कहो, वह (तुम्हारा) रिश्तेदार ही हो और खुदा के अह्द को पूरा करो। इन बातों का खुदा तुम्हें हुक्म देता है, ताकि तुम नसीहत करो। और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम उसी पर चलना और रास्तों पर न चलना कि (उन पर चल कर) खुदा के रास्ते से अलग हो जाओगे। इन बातों का खुदा तुम्हें हुक्म देता है, ताकि तुम परहेज़गार बनो। (अल अनआम, 151- 153)

ईश्वर ने कहा खुदा तुम को इंसाफ और एहसान करने और रिश्तेदारों को (खर्च से मदद) देने का हुक्म देता है और बे-हयाई और ना-माक़ूल कामों से और सर-कशी से मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम याद रखो।(अल न्हल, 90)

निश्चिच रुप से यह बात ग़लत है कि कोई धर्म झूठ या हत्या या अन्याय या

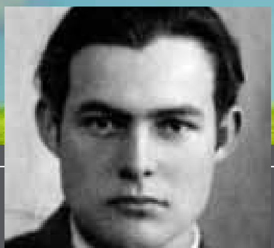


वास्तविक बनो

जीवन में यथार्थवादी दृष्टिकोण रखना, सच्ची सलाह देना अच्छे व्यवहार और दया की ओर जनता को बुलाना, और अच्छे और गहरे मानवतावाद का प्रचार करना। यह चीज़े और इसके अतिरिक्त बहुतसी वह चीज़े हैं जो मेरी दृष्टी में इसलाम धरम के सच्चे होने का सबसे बडा प्रमाण है।

थोल

डेन मार्क प्राच्य विद्या विशारद



चरित्र सुकून है

मेरी जानकारी के अनुसार नैतिक अधिनियम वह है जिसके संपन्न होने के बाद आंतरिक सुकून प्राप्त हो। और अनैतिक अधिनियम वह है जिसके संपन्न होने के बाद आंतरिक बेचैनी प्राप्त हो।

एरनिस्थ मंगवाई

अमेरिकन लेखक

बलात्कार या माता-पिता के प्रति दुव्यवहार करने या इस जैसी दूसरी बातों का संदेश दे।

छठवाः यह है कि धर्म मनुष्य का ईश्वर के साथ, और मनुष्य का अपने दूसरे भाइयों के साथ संबंध विनियमन करे। ईश्वर ने कहा जिन चीज़ों को तुम खुदा के सिवा पूजते हो, वे सिर्फ नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। खुदा ने उन की कोई सनद नाज़िल नहीं की। (सुन रखो कि) खुदा के सिवा किसी की हुकूमत नहीं है। उस ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।(युसुफ, 40)

परन्तु धर्म का प्रजापति की ओर मनुष्य के कर्तव्य, और इसी प्रकार से मनुष्य के आपसी संबंधों को विनियमन करना आवश्यक है। ईश्वर ने कहा और खुदा ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ और माँ-बाप क़राबत वालों और यतीमों और मुँहताज़ों और (रश्तेदार पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों और पहलू के साथियों (यानी पास बैठने वालों) और मुसाफ़िरों और जो लोग तुम्हारे क़ब्जे में हों सब के साथ एहसान करो। (अल निसा, 36)

सातवाः यह है कि वह धर्म मनुष्य को सम्मान दे, और अपने भक्तों के बीच जाति या रंग या जन जाति के कारण अंतर न करे। परन्तु मानवता में श्रेष्ठवान होने का महत्वपूर्ण मानक मनुष्य के अपने कार्य और उसके अंतर्गत ईश्वर के प्रति भय होना है। ईश्वर ने कहा और हम ने बनी आदम को इज्ज़त बख्शी और उन को जंगल और दरिया में सवारी दी।(अल इसरा, 36)

ईश्वर ने यह भी कहा लोगों! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौम और क़बीलें बनाये, ताकि एक-दूसरे की पहचान करो (और) खुदा के नज़दीक तुम मे ज्यादा इज्ज़त वाला वह है, जो ज्यादा परहेज़गार है। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) सब से ख़बरदार है।(अल हुजुरात, 36)

आठवाः यह है कि वह धर्म किसि ऐसे सीधे पथ की ओर राह दिखाये जिसमे ताने-बाने न हो, वह मानवता के लिए चिकित्सा का कारण हो, और उनके लिए पथ निर्देशक और प्रकाशवान हो। ईश्वर ने जिन्न (भूत-प्रेत) के बारे मे यह ख़बर दी कि जब वे ख़ुरआन सुने तो आपस में एक दूसरे से कहने लगे। कहने लगे कि ऐ क़ौम! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है, जो (किताबे) इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक करती है (और) सच्चा (दीन) और सीधा रास्ता बताती है।(अल अह्खाफ, 30)

ईश्वर ने कहा और हम क़ुरआन (के ज़रिए) से वह चीज़ नाज़िल करते हैं, जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है और ज़ालिमों के हक़ में तो इस से नुक्सान ही बढ़ता है। (अल इसरा, 82)

ख़ुरआन एक आकाश और पथ निर्देशक है, जो मानवता को अज्ञान और त्रटि के अंधकारी से निकाल कर जीवन और भविष्य जीवन में प्रसन्नता और आज्ञाकारिता के प्रकाशवान की ओर ले जाता है। ईश्वर ने कहा ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे (आख़िरी) पैग़म्बर आ गये हैं कि जो कुछ तुम (खुदा की) किताब में छिपाते थे, वह इस में से बहुत कुछ तुम्हें खोल-खोल कर बता देते हैं और तुम्हारे बहुत-से क़ुसुर माफ़ कर देते हैं। बेशक तुम्हारे पास



अदभुत विरासत

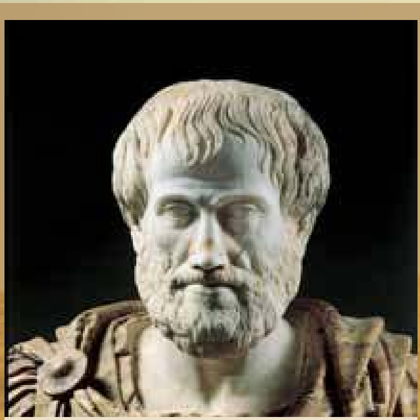
इसलाम धर्म ने जो सबसे महत्वपूर्ण चीज इस सभ्य समाज को दी है, वह इसलाम के धार्मिक नियम है जिसका नाम शरियत है। वास्तविकता से इसलामी शरियत अपने-आपमे एक अनमोल चीज़ है और वह ऐसे ईश्वरीय आदेशों का विवरण है, जो मुसलमान के जीवन के हर पहलू को सवारता है। यह शरियत धार्मिक प्रार्थनायें, और धार्मिक संस्कार से संबंधित आदेश पर निहित है। इसी प्रकार राजनैतिक और न्याय संबंधित आदेशों को शामिल हैं।

जोसेफ शाखत

जर्मनी प्राच्य विद्या विशारद

खुदा की तरफ़ से नूर और रोशन किताब आ चुकी है।(अल माइदा, 36)

ईश्वर ने कहा दीने इस्लाम में ज़बरदस्ती नहीं है। हिदायत (साफ़ तौर पर ज़ाहिर और) गुमराही से अलग हो चुकी है, तो जो शख्स बातों से एतक़ाद न रखे और खुदा पर ईमान लाये. उस ने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ में पकड़ ली है जो कभी टूटने वाली नहीं और खुदा (सबकुछ) सुनता और (सब कुछ) जानता है। जो लोग ईमान लाये हैं, उनका दोस्त खुदा है कि उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाता है और जो काफ़िर है उन के दोस्त शैतान हैं कि उन को रोशनी से निकाल कर अंधेरे में ले जाते हैं। यही लोग दोज़खी हैं कि उस में हमेशा रहेंगे।(अल-बख़रा, 36)



असमानता

असमानता के ना होने का सबसे तुच्छ सुबूत असमानित चीज़ों में समानता के लिए प्रयास करना

अरस्तू
यूनानी दार्शनिक



अल्लाह से सहायता अनुरोध करो

इस बात का संदेह है कि मानसिक बीमारियों से पीढ़ित हो रहे हज़ारों लोगों को सुरक्षित रखा जा सकता है जब कि वह लोग अल्लाह कि कृपा से सहायता प्राप्त करें। बजाय इसके कि वह लोग बगैर किसी समर्थन और बैगैर किसी सहायकार के जीवन की लडाई लडें।

डेल कार्नेजी
अमेरिकन लेखक

हमें किस धर्म की आवश्यकता है?

वह कौन-सा धर्म है जिस पर उपर युक्त लिखे हुए सच्चे धर्म के मानक लागू होते है?

सारे धर्मों को संदर्भ के अनुसार दो भागों मे विभजन करना संभव हैः मानवीय धर्म जो आकाशीय न हो, जिसकी उन्नति मानव व्दारा हो, और वह ईश्वर की ओर से स्थापित न किया गया हो, जैसे बौध्द धर्म, हिंदू धर्म, पारसी धर्म और निर्गुण धर्म। ये सब धर्म सच्चे धर्म होने से बहुत दूर हैं, क्योंकि ये मानव के हवस के अनुसार स्थापित होते हैं। भला तुम ने उस शख्स को देखा, जिस ने अपनी ख्वाहिश को माबूद बना रखा है और बावजूद जानने-बूझने के (गुमराह हो रहा है तो) खुदा ने (भी) उस को गुमराह कर दिया और उस के कानों और दिल पर मुहर लगा दी और उस की आंखों पर पर्दा डाल दिया। अब खुदा के सिवा उस को कौन राह पर ला सकता है, तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? (अल जासिया, 23)

वह देवत्व धर्म नही है, बल्कि मानवीय हवस का धर्म है, इसी कारण आप इस जैसे धर्मो में मिथक, झगड़े, विरोधा बासी और जातिवाद पायेंगे। ईश्वर ने कहा अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख्तिलाफ पाते। (अल निसा, 82)

वह आकाशीय धर्म जो ईश्वर की ओर से हो, जैसे यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म। इन धर्मो को मानने वालों के लिए ईश्वर ने एक विशेष धर्म स्थापित किया और वही धर्म उनके लिए पसंद किया।



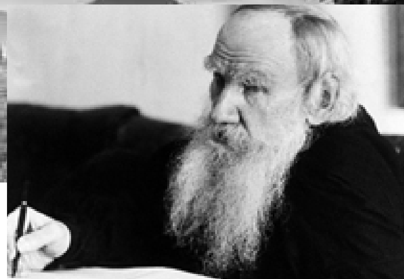
लेकिन अल्लाह एक है।

संपूर्ण जगत में पाये जानेवाले कुल धर्मों के भगवानों की गिनती करते-करते अनुसंधानकर्ता थक गये। प्राचीन इजिफशन्स के भगवानं की संख्या 800 से अधिक थी और हिन्दुओं के पास 10 हज़ार से अधिक है। इसी प्रकार का शिर्क इस जगत में पाये जाने वाले और लोग जैसे यूनानी, और बौद्ध धर्मों में है।



ईश्वर ने कहा उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुक़र्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी तरफ़ वहय बेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को क़ायम रखना और उस में फूट न डालना। जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुश्रिकों को बुलाते हो, वह उन को मुश्किल गुज़रती है। अल्लाह जिसको चाहता है, अपनी बारगाह का चुना हुआ कर लेता है और जो उस की तरफ़ रुजूअ करे, उसे अपनी तरफ़ रास्ता दिखा देता है।(अल शूरा, 13)

इस बात में कोई संदेह नही है कि सारे संसारिक धर्म कुछ विचारों और कुछ लोगों के बडे संगठन का नाम है जो इन धर्मे के स्थापित करनेवालों की हवस के अनुसार विवरण करते हैं, फिर थोडे समय बाद लोग यह जान लेते है कि यह धर्म सही नही है, और फिर उसके विकास का प्रयत्न करने लगते हैं, गुमराही और भ्रम में सदा रहते हैं। ये संसारिक धर्म अपने अन्दर कुछ विशेषता रखते हैं, जिनमें से कुछ निम्न लिखे जा रहे हैं।



सच्ची शरियत

मुझे यह समझ में आगया.... मैं यह अनुभुति प्राप्त किया... मानवता को आसमानी शरियत की ज़रुरत है जो सच को प्रस्तुत करे और गलत को मिटादे।

टोल्स ट्रिव

रूसी साहित्यिकार

ईश्वर के भागीदार होने का संदर्भः

हर दिन यह लोग अपने लिए एक नया ईश्वर बना लेते हैं, परन्तु उनके ये ईश्वर उनकी अपनी कारीगरी है, यह लोग एक ईश्वर के सिवा कई और ईश्वर के वजूद की असंभवता, और कई ईश्वर होने की स्थिति में उनके बीच झगड़ा होने के बारे में यह लोग सोंच-विचार नहीं करते हैं। ईश्वर ने कहा खुदा ने न तो किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उसके साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता तो हर माबूद अपनी-अपनी मख्लूक़ात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता। ये लोग जो कुछ (खुदा के बारे में) बयान करते हैं, खुदा उस से पाक है। वह पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है और (मुश्रिक) जो उस के साथ शरीक करते हैं, (उस की शान) उस से बुलंद है।(अल मुमिनून, 36)

जातिवादः मानवीय संसारिक धर्म जातिवाद और दूसरों को अछूत (नीच) समझने पर आधारित होते हैं, इसलिए कि इन धर्मों को स्थापित करने वाले अपने लिए, अपनी ज़ात के लिए और अपने भक्तों में से जिन को चाहे उनके लिए कुछ ऐसी विशेषता रख लेते है जो दूसरों के लिए नहीं होती है, ताकि उनका लक्ष्य पूरा हो और दूसरों को अपना गुलाम बना लें। ईश्वर ने कहा लोगों! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाये, ताकि एक दूसरे को पहचान करो (और खुदा के नज़दीक तुम में ज्यादा इज्ज़त वाला वह है, जो ज़्यादा परहेज़गार है। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) सब से खबरदार है।(अल हुजुरात, 13)

ईश्वर ने किसी भी मानव को नीच निगाहों से देखने या उसका उपहास करने से मना किया है। कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक न उडाये। मुम्किन है कि वे लोग उन से बेहतर हों।(अल हुजुरात, 11)

इसी कारण ईशवर के पास किसी गोरे को काले पर, किसी जात को दूसरे जात पर और किसी जन जाति को दूसरी जन जाति पर महत्व नही है। जब कि यह सारे मानवीय धर्म अंधी जातिवाद पर आधारित हैं।

वृति का उल्लंघनः इस प्रकार से कि यह सारे मानवीय धर्म वृति का उल्लंघन करते हैं, मानव कि क्षमता से अधिक उस पर बोझ लादते हैं। श्रेष्ठ बुध्दि और मानवता के उल्लंघन पर आधारित होते हैं, परन्तु इन धर्मों के भक्त पथ से बहुत दूर हैं और इन्होंने अपने धर्मों में बहुत सा परिवर्तन किया है। ईश्वर ने कहा तो तुम एक तरफ़ के हो कर दीन (खुदा के रास्ते) पर सीधा मुँह किए चले जाओ (और) खुदा की फ़ितरत को, जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, (अख्तियार किए रहो) खुदा की बनायी हुई (फ़ितरत) में तब्दीली नही हो सकती। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।(अल रूम, 30)

मिथकः ऐसा विश्वास या विचार हैं जो किसी वैज्ञानिक, तार्किक या मानसिक सबूत के बिना केवल कल्पनाओं पर आधारित हो। सारे मानवीय धर्मों में केवल मिथक ही हैं, जिसका कोई सबूत नहीं है। और मिथक पर



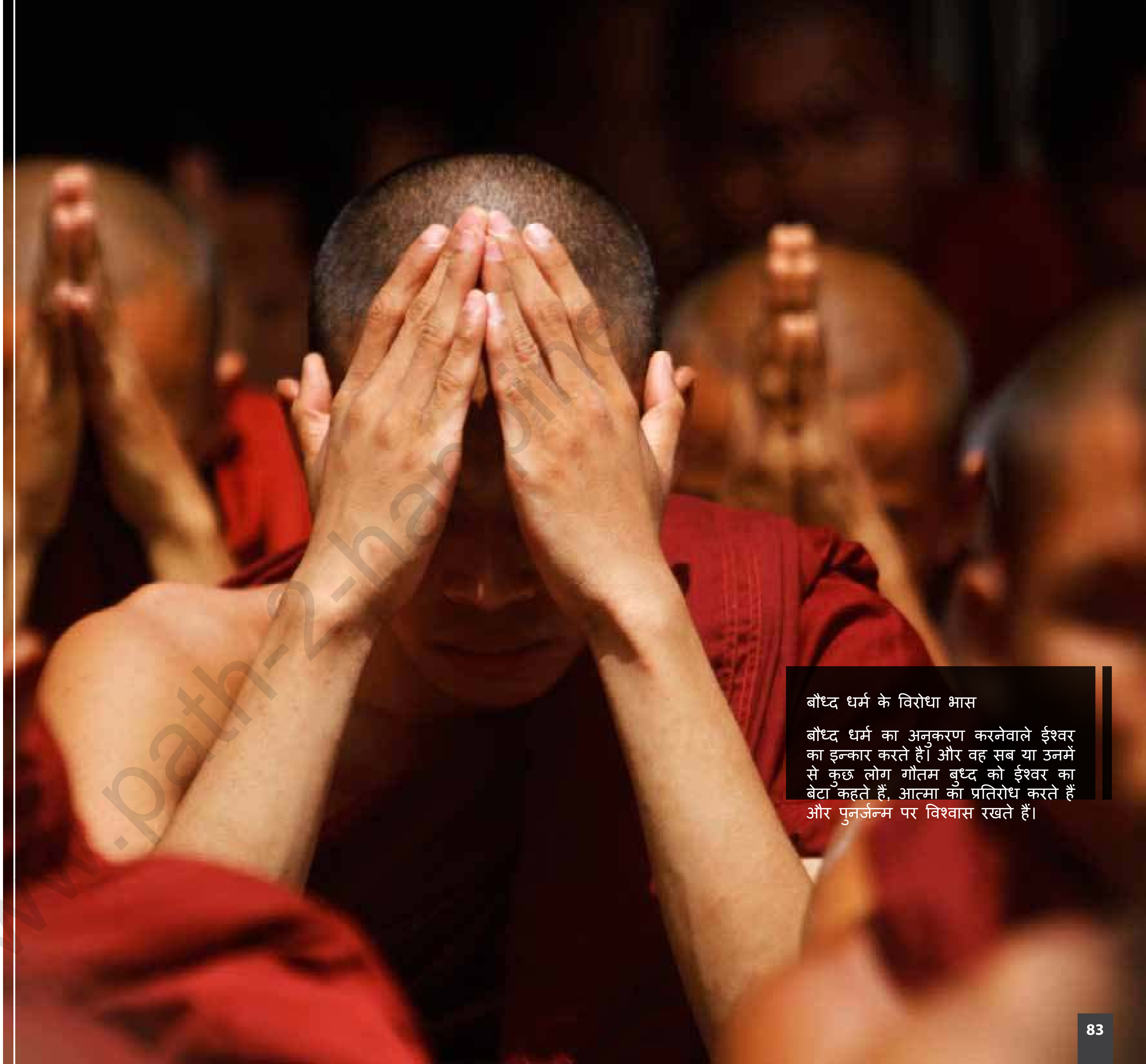
गलत स्तरीकृत

हिन्दू धर्म का स्तर का विभाजन कुछ इस प्रकार वितरित है... सफेद जातिः यह वह जात है जिससे पुरोहित और विद्यावान संबंधित होते है। लाल जातिः जो धानवान और शूरवींरं से संबंधित होते हैं। पीली जातिः जिसमें किसान और व्यापारी होते हैं। काला जातिः जिसमें उद्योगी और कारीगर होते है। जहाँ तक पाँचवे स्तर का सवाल है या वह स्तर जो अशुध्द स्तर के नाम से जाना जाता है। इस स्तर से कम चरित्र के लोग संबंधित होते है। उच्च जाति के लग निम्न जाति के लोगों का बहिष्करण करते हैं।

केवल मिथक ही का आधार हो सकता है। ईश्वर ने सच कहा कह दो कि (मुश्रिकों!) अगर तुम सच्चे हो, तो दलील पेश करो।(अल नम्ल, 64)

विरोधा भासीः यह सारे धर्म विरोधा भासी से भरे हुये हैं। हर समूह दूसरे समूह का विरोध करता है, और इसी विरोध पर अपने धर्म की उन्नति करता है। ईश्वर ने सच कहा है। अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख्तिलाफ़ पाते।(अल निसा, 82)

जहाँ तक आकाशीय धर्मे का सवाल है, तो वह सब के सब ईश्वर की ओर से अनुग्रह है, जिसके व्दारा ईश्वर ने मानवता पर परोपकार किया है, ताकि मानवता को सीधे पथ की ओर निर्देश करे, उसके मार्ग को प्रकाशवान बनाये, उनके विरोध में सबूत इकट्ठा करे और अपने आदेशों को पहुँचाने के लिए रसूल भेजने के व्दारा मानवता को मिथक, वृति और बुध्दि के उल्लंघन और ईश्वर के भागीदार मानने की अंधकार से दूर करे। (सब) पैग़म्बरों को (खुदा ने) खुशख़बरी सुनानेवाले और डरानेवाले (बना कर भेजा था), ताकि पैगंम्बरों के आने के बाद लोगों को खुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और खुदा गालिब हिक्मत वाला है।(अल निसा, 165)



बौध्द धर्म के विरोधा भास

बौध्द धर्म का अनुकरण करनेवाले ईश्वर का इन्कार करते है। और वह सब या उनमें से कुछ लोग गौतम बुध्द को ईश्वर का बेटा कहते हैं, आत्मा का प्रतिरोध करते हैं और पुनर्जन्म पर विश्वास रखते हैं।

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



रसूल और नबी

अनुक्रमणिका



रसूल और नबी

क्या मानवता को रसूलों की आवश्यकता है ?

ईश्वर ने मानव की सृष्टि श्रेष्ठ वृत्ति के आधार पर किया है, सही और ग़लत के बीच अंतर करने के लिए मानव में बुद्धि पैदा कर दी। जब मानवीय बुद्धि विफलता, असमर्थता, हवस और स्वार्थी का, बल्कि विरोधाभासी और इख्तेलाफ का शिकार होती है, परन्तु कुछ लोग किसी बात को अच्छा समझते हैं, उसी बात को दूसरे लोग बुरा समझते हैं, बल्कि एक ही मानव समय और स्थान के बदलने पर अपनी सोंच बदल देता है, तो जब मानवीय बुद्धि गुप्त घटनाओं अज्ञान बातों के ज्ञान और मानव के अंदर छिपी हुई चोज़ों के एहसास से शक्तिहीन है, तो यह प्रजापति ईशवर, उसका लक्ष्य, उसके करने या ना करने के आदेश के ज्ञान से बहुत ही ज्यादा शक्तिहीन होगी, और यह बात तो दूर की है कि कोई मानव सीधे ईशवर (अल्लाह) से मिले। ईशवर ने कहा और किसी आदमी के लिए मुम्किन नहीं कि खुदा उस से बात करे, मगर इल्हाम (के ज़रिए) से या पर्दे से या कोई फ़रिशता भेज दे, तो वह खुदा के हुक्म से जो खुदा चाहे इल्क़ा करे। बेशक वह बुलंद मर्तबा (और) हिक्मत वाला है। (अल-शुअरा, 51)

इसी कारण ईशवर ने अपनी अपनी प्राणियों में से पवित्र लोगों को अपना रसूल और नबी बना दिया, ताके यह पवित्र लोग ईशवर और उसके भक्तों के बीच सर्वश्रेष्ठ राजदूत का काम करें। ईशवर ने कहा खुदा फ़रिशतों में से पैग़ाम पहुंचाने वाले चुन लेता है और इन्सानों में से भी, बेशक खुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (अल हज, 75)

जो मानवता को अपने ईशवर के पथ की ओर निर्देश करें, और उन्हें अंधकारी से निकाल कर प्रकाशवान की ओर लायें, और फिर रसूलों के आजाने के बाद मानवता के पास ईशवर के ख़िलाफ कोई सबूत न रहे। ईशवर ने कहा (सब) पैग़म्बरों को (खुदाने) खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले (बना कर भेजा था), ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों को ख़ुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और खुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (अल-निसा, 165)

परन्तु मानव ही में से कुछ को रसूल बनाकर भेजना ईशवर का मानवता पर बहुत बडा अनुग्रह है, ताकि यह रसूल उनको फ़ायदे की बातें बतायें और पवित्र बनायें। ईशवर ने कहा ख़ुदा ने मोमिनों पर बड़ा एहसान किया है कि उन में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजे, जो उन को ख़ुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उन को पाक करने और (ख़ुदा की) किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (आले इम्रान, 164)

अवश्य रूप से ईशवर का यह बहुत बडा अनुग्रह है कि उसने मानवता के लिए अपना रसूल भेजा, और यह भी अनुग्रह है कि वह रसूल उन्हीं में से है । ईशवर की ओर से आनेवाले रसूलों का यह अनुग्रह इस रूप में व्यक्त होता है कि वे ईशवर की पवित्र वाणी मानवता के सामने रखते हैं, ताकि वे उन्हें ईशवर की महत्वकांक्षा और उसके गुण बतायें, उन्हें देवत्व की सत्यता और विशेषता का वर्णन करें, फिर इसके बाद मानव को स्वयं अपने व्यक्तित्व, जीवन और संचलन के बारे में निर्देश करें। ये रसूल मानव को उस मार्ग की ओर बुलाते हैं जो उसको जीवित रखता है, उस राह की ओर निर्देश करते हैं, जिससे उसके मन और स्थिति में सुधार पैदा हो जाती है। ये रसूल उस स्वर्ग की ओर मानव को बुलाते है जिसकी चौड़ाई आकाश और पृथ्वी के समान है। यह सब इस अनुग्रह और उपहार के द्वारा मिलने वाला बहुत बडा सदाचार ही तो है। बल्कि ये रसूल मानवता को पवित्र बनाते हैं, उनके दर्जे बुलंद करते हैं। उनके मन, धारणा और भावनाओं को पवित्र बनाते हैं। उनके घर, मान मर्यादा और उनकी प्रार्थनाओं को पवित्र बनाते हैं। उनके जीवन, समाज और उनके

सरलता अपनाओ

मुहम्मद सल्ल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने अपनीं महिमा की ऊँचाई में भी अपने जीवन को सरलता बनाथे रखा, इसी कारण जब आप किसी के पास पहुँचते तो आपको यह पसंद नही थाँ कि लोग खडे हों या आप के स्वागत में अतिशयोक्ति करें

वाशिंगटन एरफेंग

अमेरिकन डिप्लोमेट और लेखक



प्रणाली को पवित्र बनाते हैं। और उन्हें मूर्ति पूजा, मिथक, किवदंती और ईश्वर के साथ किसी को भागीदार मानने के सिद्धांत से पवित्र बनाते हैं। उनके जीवन में प्रोत्साहक ऐसे संस्कार, समारोह, आदतें और परंपरा से उन्हें पवित्र बनाते हैं जो स्वयं मानव और मानवता के हक़ में एक अपमान है। मानवता को नीच जीवन और जीवन को गंदा करने वाले संस्कार, परंपरा, चरित्र और अवधारणाओं से पवित्र बनाते हैं। अवश्य रूप से नीचता नीचता ही है, और हर नीचता अपने आप में अपवित्र और गंदी है, उसके लिए समय या स्थान की कोई आवश्यकता नही है। परन्तु जहाँ कहीं मानवीय मन देवत्व सिद्धांत से रिक्त होगा, तो उस मन पर धारणाएँ अपना शासन चलायेंगी। जहाँ कहीं देवत्व सिद्धांत से मिलने वाले धर्म से मन रिक्त होंगे, (जो उनके जीवन को नियमित करे) तो जीवन नीचता की अवश्य रूप से एक शक्ल ही होगा। परन्तु नीचता (चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक) से मानवता को सुरक्षित रखने की आवश्यकता है, क्यों कि नीचता चाहे प्राचीन हो या आधुनिक अपने अंदर प्राचीन नीचता की सारी चारित्रिक और सामाजिक दुर्गुण रखती है, और इसी प्रकार से मानवीय जीवन के लक्ष्य का उदाहरण करती है, हालांकि भौतिक विज्ञान, औद्योगिक उत्पादन और संस्कृतिक विकास की अनगिनत सफलताएँ हुई हैं। और इससे पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (अल्-जुमुअह, 2)

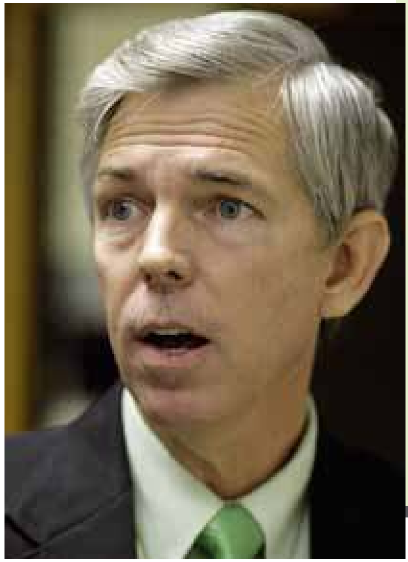


सिद्धांत और धारणाओं की गुमराही, जीवन के उदाहरणों की गुमराही, लक्ष्य और दिशा की गुमराही आदत व व्यवहार की गुमराही, प्रणाली, स्थिति की गुमराही, चरित्र और समाज की गुमराही...

मानव के रुप में ऐसे दानव जिन के लिए धर्म रुकावट बनता नही

अमेरिका के एक विश्वविद्यालय के साख्यिकीय अध्ययन और डेविड पार्टून की एक किताब (पुस्तक) अमेरिका नमाज़ पढ़ता है या नही में आया है कि 80 प्रतिशत अमेरिका महिलायें अपने जीवन में कम से कम एक पर्याय बलात्कार से पीढ़ित होते हैं। हर दिन बलात्कार से पीढ़ित होनेवाली नव-युवती लडकियों की संख्या 1900 से अधिक है। इसीकारण 30 प्रतिशत अमेरिकन लडकियाँ वर्ष की आयु में गर्भपात या गर्भावस्था या नवजात शिशु को जन्म देती है। 61 प्रतिशत बलात्कार 18 वर्ष से कम आयू के लडकियों पर किया जाता हैं। 29 प्रतिशत बलात्कार 11 वर्ष से कम आयू के बच्चों पर होता हैं।

डेविड पार्टून
अमेरिका लेखक



नबूव्वत व रिसालत (ईशदूतत्व) की सत्यता

ईश्वर की यह बुद्धिमत्ता ही है कि उसने हर लोक के पास उनही में से एक मानव को रसूल बनाकर भेजा। ईश्वर ने कहा और हम ने तुम से पहले मर्दों ही को पैग़म्बर बनाकर भेजा था। (अल-नहल, 43)

यह भी ईश्वर की बुद्धिमत्ता है कि उसने हर लोक के रसूल को उनही की भाषा जानने वाला बनाकर भेजा, ताकि वे उसकी भाषा और भावनाओं को समझें। ईश्वर ने कहा और हम ने कोई पैग़म्बर नही भेजा, मगर क़ौम की ज़ुबान बोलता था ताकि उन्हें (खुदा के हुक्म) खोल-खोल कर बता दे, फिर खुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (इब्राहीम, 4)



नबी और रसूल श्रेष्ठ बुद्धि, पवित्र वृत्ति, सत्यता, विश्वसनीय, और शारीरिक रूप से हर उस दोष से सुरक्षित है, जिसको देखना पसंद नही किया जाता है और जिससे मनोदशाएँ द्वेष करती हैं। ईशवर ने उन्हें मानसिक और चारित्रिक रूप से पवित्र बनाया है, परन्तु ये सब रसूल सारी मानवता में सब से अच्छे चिरत्र, सब से पवित्र व्यक्तित्व और सब से ज़्यादा दानी हैं। ईशवर ने उन में अच्छे चरित्र और अच्छी आदतें इकट्ठा करदी है, और इसी प्रकार से उनमे ज्ञान, दान बहादुरी, न्याय और अच्छे अच्छे गुण रखदिये है, ताकि वे अपनी लोक के बीच इन गुणों से पहचाने जायें। परन्तु रसूल ईशवर की बनायी हुई सब से श्रेष्ठ सृष्टि है, ईशवर ने उन्हें अपने संदेश को मानवता तक पहुँचाने के लिए चुनलिया है। ईशवर ने कहा इसको खुदा ही खूब जानता है कि (रिसालत का कौन-सा महल है और) वह अपनी पैग़म्बरी किसे इनायत फरमाए (अल्-अन्आम, 124)

और ईशवर ने कहा खुदा ने आदम और नूह और इब्राहीम के खानदान और इम्रान के खानदान को तमाम दुनिया के लोगों में चुन लिया था। (आले-इम्रान, 33)

और ईशवर ने ईसा अलैह सलाम के बारे में कहा (वह वक़्त भी याद करने के लायक है) जब फरिश्तों ने (मरयम से कहा) कि मरयम, खुदा तुमको अपनी तरफ़ से एक फ़ैज़ की खुशखबरी देता है, जिसका नाम मसीह (और मशहूर) ईसा बिन मरयम होगा (और जो) दुनिया और आख़िरत में बा-आबरू और (खुदा के) खासों में से होगा। और माँ की गोद में और बड़ी उम्र का होकर (दोनों) हालतों में लोगों से (एक ही तरह बातें करेगा और नेकों में होगा । (आले- इम्रान, 45-46)

निशचित रूप से मुहम्मद (सल्लेल्लाहु अलैहि वसल्लम) ईश दूतत्व (रिसालत या पैग़म्बरी) के आने से पहले अपने लोक में सत्यवादी और विश्वसनीय के नाम से मशहूर थे, और ईशवर ने आपके गुण वर्णन करते हुए यह कहा । और तुम्हारे अख्लाक़ बड़े (बुलंद) है। (अल्-खलम, 4)

यह सब रसूल और नबी हालांकि अच्छे-अच्छे गुण अपने अन्दर रखते हैं, लेकिन यह भी मानव हैं, इनको भूख लगती है, ये बिमार होते हैं, इनको नींद आती है, ये खाते हैं, शादी ब्याह करते हैं, और इनको मौत भी आती है। ईशवर ने कहा और (ए मुहम्मद ।) हम ने तुम से पहले भी पैग़म्बर भेजे थे और उनको बीवियाँ और औलाद भी दी थी। (अल्-राद, 38)

ईशवर ने कहा (ए पैग़म्बर ।) तुम भी मर जाओगे और ये भी मर जाएँगे । (अल्-ज़ुम्र, 30)

ईशवर ने अपने नबी और रसूल मुहम्मद के बारे में यह कहा और तुम अपने दिल में वह बात छिपाते ते जिसको खुदा ज़ाहिर करने वाला था। (अल्-अहज़ाब, 37)

इसी कारण कभी-कभी रसूलों को परेशान किया गया, या उनकी हत्या की गयी, या उन्हें अपने देश से बहिष्कार किया गया। ईशवर ने कहा और (ए मुहम्मद । उस वक़्त को याद करो) जब काफिर लोक तुम्हारे बारे में चाल चल रहे थे कि तुम को क़ैद कर दें, या जान से मार डालें ! या (वतन से) निकाल दें तो (इधर से) वे चाल चल रहे थे और (उधर) खुदा चाल चल रहा था और खुदा सब से बेहतर चाल चलने वाला है। (अल्-अनफ़ाल, 30)

लेकिन परिणाम, विजेता औऱ सक्षम इस जीवन और भविष्य जीवन में इनही रसूलों के लिए है।



ईश दूतत्व के सबूत

निशचित रूप से ईशवर की ओर से मानवता के पास आने वाले रसूल और नबी के अपने दावे में सच्चे होने का सबूत ज़रूर ईशवर प्रबंध करेगा, जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि वे अल्लाह के रसूल हैं, ताकि मानवता के विरोध में सबूत इकट्ठे हो जायें, और ताकि रसूलों के आज्ञापालन और उनको सच्चा न मानने का कोई बहाना न रहे। ईशवर ने कहा हमने अपने पैग़म्बरों को खुली निशानियाँ दे कर भेजा । (अल् हदीद, 25)

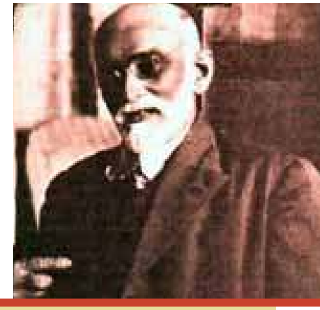
रसूलों की पुष्टी करने वाले सबूत कई हैं, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण निम्न लिखे जा रहे हैं ।

1. ईशवर ने रसूलों और नबियों को चमत्कारों और निशानियों से समर्थन किया है। ये चमत्कार ईशवर अपने रसूलों के द्वारा इस रूप में दिखाता है, जो ब्रहमाण्ड के सामान्य विधि से अलग होते हैं, और कोई मानव इस प्रकार के चमत्कार दिखा नहीं सकता है। इन चमत्कारों में से मूसा (अलैहिस्सलाम)



की लकडी है जो साँप का रूप चयन कर ली। ईशवर ने कहा और मूसा यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है। उन्होंने कहा यह मेरी लाठी है इस पर मैं सहारा लगाता हूँ और इस से अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और इस में मेरे और भी कई फ़ायदे हैं। फ़रमाया कि मूसा। इसे डाल दे। तो उन्होंने उस को डाल दिया और वह यकायक साँप बनकर दौड़ने लगा । खुदा ने फ़रमाया कि उसे पकड़ लो और डरना मत हम उस को अभी उस की पहली हालत पर लौटा देंगे। और अपना हाथ अपनी बग़ल से लगा लो, वह किसी ऐब (व बिमारी) के बग़ैर सफ़ेद (चमकता-दमकता) निकलेगा। (यह) दूसरी निशानी (है), ताकि हम तुम्हें अपनी बडी निशानियाँ दिखाएं । (ताहा, 17-23)

ईसा (अलैहिस्सलाम) का चमत्कार यह है कि वह जन्मांध और सफ़ेद दाग़ वाले को ईशवर के आदेश से स्वस्थ करदेते थे । ईशवर ने पवित्र मरयम को ईसा का शुभ संदेश देते समय खुद मरयम की ज़बानी यह कहा मरयम ने कहा, परवर दिगार । मेरे यहाँ बच्चा कैसे होगा कि किसी इन्सान ने मुझे हाथ तक तो लगाया नहीं। फ़रमाया कि खुदा इसी तरह जो चाहता है, पैदा करता है। जब कोई काम करना चाहता है, तो इर्शाद फ़रमा देता है कि होजा, तो वह हो जाता है। और वह उन्हें लिखना (पढना) और दानाई और तौरात औऱ इंजील सिखाएगा । और (ईसा) बनी इस्राईल की तरफ़ पैग़म्बर (होकर जाएँगे और कहेंगे) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ वह यह कि तुम्हारे सामने मिट्टी की मूर्ति, परिंदे कि शक्ल की बनाता हूँ, फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वह खुदा के हुक्म से (सचमुच) जानवर हो जाता है। और अबरस (सफ़ेद दाग़ी) को तंदुरुस्त कर देता हूँ और खुदा के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूँ। और जो कुछ तुम खाकर आते हो और जो कुछ अपने घरों में जमा कर रखते हो, सब तुम को बता देता हूँ। अगर तुम ईमान वाले हो, तो इन बातों में तुम्हारे लिए (खुदा की खुदरत कि) निशानी है। और मुझ से पहले जो तौरात (नाज़िल हुई) थी, उसकी तस्दीक़ भी करता हूँ और (मैं) इसिलए भी (आया हूँ) कि कुछ चीज़ें जो तुमपर हराम थीं, उनको तुम्हारे लिए हलाल कर दूँ और मैं तो तुम्हारे परवरदिगार कि तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ, तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो । कुछ शक नहीं कि खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी कि इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। (अले-इम्रान, 47-51)



मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सब से बड़ा चमत्कार पवित्र खुरआन है, हालांकि आप निरक्षर हैं, न आप पढना जानते थे और न लिखना । ईशवर ने कहा कह दो कि अगर इन्सान और जिन्न इस बात पर जमा हों कि इस खुरआन जैसा बना लाएँ तो इस जैसा न ला सकें, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हो । और हम ने इस खुरआन में सब बातें तरह-तरह से बयान कर दी हैं, मगर अक्सर लोगों ने इन्कार करने के सिवा खुबूल न किया । (अल-इस्रा, 88, 89)

इसके अलावा नबी और रसूलों के बहुत से चमत्कार हैं । ईशवर कि ओर से नबी और रसूलों को प्राप्त इन चमत्कारों के प्रेरणा से हमें यह ज्ञान प्राप्त होता है कि सब चमत्कार तीन भागों में विभाजित होते हैः ज्ञान, शक्ति और स्वयं आधारित होना । परन्तु पूर्व और आधुनिक काल कि गुप्त बातें बताना, जैसे ईसा (अलैहिस्सलाम) का

अनन्त चमत्कार

निश्चित रुप से मोहम्मद सल्ललाह अलैही व सल्लम से पूर्व प्रवक्ता के चमत्कार अस्थाथी थे। जब कि हम खुराने करीम को अनन्त चमत्कार का नाम दे सकते है। इसलिये कि खुरान का प्रभाव हमेशा, और सदा रहने वाला है। एक मूसलमान के लिए हर वक्त और जगह यह अनुकूल है कि वह केवल खुरान को पढ़कर इस चमत्कार को देखें। इस चमत्कार में हमे इस्लाम के फैलाव का सही कारण मिलता है। यह ऐसा फैलाव है जिसका कारण यूरोपियन नही जान सके इसलिए कि वह लोग खुरान से सुपरिचित नही है, या इसलिए कि वह लोग खुरान को केवल उस अनुवाद से जानते हैं जो वास्तविकता से दूर हैं, इसके अलावा यह अनुवाद शत प्रतिशत सही नही होते।

इथेन दिनेह

फ्रेंच चित्रकार और विचारक





अपने लोक को उनके घरों में इकट्ठा की हुई पूंजी और उन्होंने जो खाया उसके बारे में बताना । और हमारे रसूल (मुहम्मद) का पूर्व काल की कई लोक के बारे में, और भविष्य मे आनेवाली ख़ियामत की निशानियों और बुराइयों के बारे में बताना । ये सब बातों का संबन्ध ज्ञान से है । लकडी का साँप बन जाना, जन्मांध और सफ़ेद दाग़ वाला स्वस्थ हो जाना, मुर्दे का ज़िन्दा हो जाना और ईशवर का अपने रसूल मुहम्मद को लोगों से सुरक्षित रखना, शक्ति से संबंधित है, और आप कि हर उस व्यक्ति के विरोध में सहायता करना है, जो आपका बूरा चाहे। ईश्वर ने कहा ऐ पैग़म्बर । जो इर्शाद खुदा कि तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए हैं, सब लोगों को पहुँचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम ने ख़ुदा के पैग़ाम पहुँचाने में कोताही की (यानी पैग़म्बरी का फर्ज़ अदा न किया । और खुदा तुम को लोगों से बचाए रखेगा । बेशक खुदा मुन्किरों को हिदायत नही देता । (अल्-माइदा, 67)

यह तीनों विषयः ज्ञान, शक्ति और स्वयं आधारित होना (जो चमत्कार के लिए जड़ हैं) केवल ईशवर ही के लिए संपूर्ण रूप से उपयुक्त है ।

2. पूर्व नबियों का भविष्य में आने वाले नबियों का शुभ संदेश देना ।

ईश देवत्व की सत्यता का सबूत पूर्व नबियों का भविष्य मे आने वाले नबी का शुभ संदेश देना है। और निशचित रूप से ईशवर ने हर नबी से यह प्रतिज्ञा ली हैं कि अगर उनके जीवन मे मुहम्मद भेजे जायें तो वह ज़रूर उन पर ईमान लाये। ईशवर ने कहा और जब ख़ुदा ने पैग़म्बरों से अहद लिया कि जब मैं तुमको किताब और दानाई अता करूँ, फिर तुम्हारे पास कोई पैग़म्बर आये जो तुम्हारी किताब कि तस्दीक करे तो तुम्हें ज़रूर उस पर ईमान लाना होगा । और ज़रूर उस कि मदद करनी होगी । और (अहद लेने के बाद) पूछा कि भला तुम ने इक़रार किया और इस इक़रार पर मेरा ज़िम्मा लिया (या मुझे ज़ामिन ठहराया) उन्होंने, कहा (हां) हमने इक़रार किया । (खुदा ने) फ़रमाया कि तुम (इस अहद व पैमान के) गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ । (अले-इम्रान, 81)

3. नबी और रसूलों की परिस्थितियों में ग़ौर करना

नबी औस रसूल अपने-अपने लोक के साथ मिलते-झुलते थे और व्यवहार भी करते थे, इस द्वारा उनकी लोक को अपने अपने रसूलों के चरित्र जानने और उनकी सत्यता मानने का अवसर मिला। परन्तु जब पवित्र मरयम और अल्लाह के नबी ईसा पर लोगों ने कलंक लगाया, तो ईशवर ने इन दोनों की सत्यता का वर्णन किया । ईशवर ने कहा



फिर वह उस (बच्चे) को उठा कर अपनी क़ौम के लोगों के पास ले आयी । वे कहने लगे कि मरयम । यह तो तूने बुरा काम किया । ऐ हारून की बहन । न तो तेरा बाप बुरी आदतों वाला था और न तेरी माँ ही बदकार थी । तो मरयम ने उस लड़के की तरफ इशारा किया । वह बोले कि हम (उस से जो की गोद का बच्चा है) किस तरह बात करें। (बच्चे ने) कहा कि मै खुदा का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है । और मै जहाँ हूँ (और जिस हाल में हूँ) मुझे बरकत वाला बनाया है और जब तक जिंदा हूँ मुझ को नमाज़ और ज़कात का हुक्म इर्शाद फरमाया है। और (मुझे) अपनी माँ के साथ नेक सुलूक करने वाला (बनाया है) और सरकश व बद-बख्त नहीं बनाया और जिस दिन मैं पैदा हुआ, जिस दिन मै मरुँगा और जिस दिन ज़िंदा करके उठाया जाऊँगा, मुझ पर सलाम (व रहमत) है। (मरयम, 27-33)

इस प्रकार से ईसा ने गोदी में बात की । और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईशदूतत्व से पहले उनके क़बीले वाले (ख़ुरैश) सत्य और अमानतदार कहकर पुकारते थे, क्यों कि आपके पास सत्यता और अमातन दारी थी। ख़ुरआन ने इसी ओर ध्यान दिलाया, ताकि रसूल की सत्यता पर सबूत प्रबंध किया जाय, इसलिए कि आप का व्यक्तित्व, आप का जीवन और आपके चरित्र सब से बडा सबूत हैं । ईशवर ने कहा (यह भी) कह दो कि अगर खुदा चाहता तो (न तो) मैं ही यह (किताब) तुम को पढ़कर सुनाता और न वही तुम्हें इस के बारे में बताता । मैं इस से पहले तुम में एक उम्र रहा हूँ (और कभी एक कलिमा भी इस तरह का नहीं कहा) भला तुम समझते नही । (यूनुस, 16)



सच्चा ईसाई धर्म

ईसाई धर्म को मोहम्मद (स) ने ईसा मसी के अनुसार उसके नियमों तक पहूँचाने का निश्चय किया था, वह धर्म बॉलिस की ओर से फैलाई हुई गुप्त उपदेश, और ईसाई समुदयों की ओर से मिलाई हुई भयानक तृटियों से बिलकुल विपरीत है। निश्चित रुप से मोहम्मद सल्ललाह व सल्लम की आशा और तमन्ना ये भी के इब्राहीम के धर्म की बरकत सिर्फ अपनी लोक के लिए आवंटन ना करें, बल्कि सारे लोगों को यह बरकत घेर ले। निश्चित रुप से आपका धर्म लाखों मनुष्यों के हिदायत और शिक्षा का साधन बना। अगर यह धर्म ना होता तो लोग दरिद्रंगी और अन्याय में डूबे हुए होते, और न उनके पास इस्लाम धर्म की दी हुई भाई चारगी होती।

लैटनर

ब्रिटिश प्राच्य विद्या विशारद

4. रसूलों के संदेश में ग़ौर करना ।

ईश दूतत्व की एक दलील यह भी है कि रसूल का संदेश मुख्य नियम मे दूसरे नबी और रसूलों के संदेश के मुख्य नियम के समान हो । परन्तु रसूल ईशवर के एकतत्व का संदेश दे, इसलिए कि यही वह लक्ष्य है जिसके लिए ईशवर ने प्राणी की सृष्टि की है, और इसी लक्ष्य के लिए रसूलों को भेजा है । ईशवर ने कहा और जो पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे उन की तरफ़ यही "वहयी" भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नही, तो मेरी ही इबादत करो । (अल्-अम्बियाइ, 25)

और ईशवर ने कहा और (ऐ मुहम्मद ।) जो अपने पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे हैं, उनके हाल मालूम कर लो । क्या हम ने (ख़ुदा-ए-) रहमान के सिवा और माबूद बनाए थे कि उनकी इबादत की जाए । (अल् ज़ुख़्रूफ़, 45)

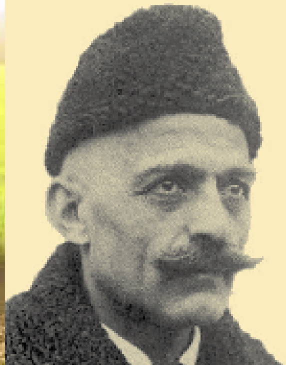
और ईशवर ने कहा

और हमने हर जमात में पैग़म्बर भेजा कि ख़ुदा ही की इबादत करो और बुतों (की पूजा करने) से बचो, तो उन में कुछ ऐसे हैं, जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी और कुछ ऐसे हैं, जिन पर गुमराही साबित हुई, सो ज़मीन पर चल-फिर कर देखलो कि झुटलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (अल-नहल, 36)

इसी बात का मुहम्मद ने भी संदेश दिया । परन्तु रसूल सामान्य मानव की तरह एक मानव ही हैं, जिन का "वही" के कारण सम्मान बढ गया । ईशवर ने कहा कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक बशर हूँ, अलबत्ता मेरी तरफ़ वही आती है कि तुम्हारा माबूद (वही) एक माबूद है, तो जो शख़्स अपने परवरदिगार से मिलने कि उम्मीद रखे, चाहिए कि नेख अमल करे

सच की गवाही

मोहम्मद सल्ललाहु अलैही व सल्लम ने किसी भी दिन अपने-आपको देवत्व चरित्र और अदभुत शक्तियों से परिचित नही किया। इसके विपरीत आप पाठ के उल्लेख करने पर उत्सुक थे। इस कारण से कि आप केवल अल्लाह के प्रवक्ता है जिसको अल्लाह ने लोगों तक (देवत्व संदेश) वही पहुँचाने के लिए चयन किया है।



रोम लाँडो

ब्रिटिश मर्तिकार वं आलोचक

और अपने परवरदिगार के इबादत में किसी को शरीक न बनाए । (अल-कहफ़, 110)

रसूल अपने आप को राजा या राष्ट्रपति मानने का संदेश नहीं देता है । ईशवर ने कहा कह दो कि मैं तुम से यह नही कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के ख़ज़ाने हैं और न (यह कि) मै ग़ैब जानता हूँ और न तुम से यह कहता हूँ कि मै फरिशता हूँ । मै तो सिर्फ उस हुक्म पर चलता हूँ जो मुझे (ख़ुदा की तरफ से) आता है, कह दो कि भला अंधा और आंख वाले बराबर होते हैं, तो फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते । (अल्-अनआम, 50)

और न ये रसूल अपने संदेश के बदले किसी से कुछ उजरत मांगते हैं। ईशवर ने अपने नबी नूह, हूद, सालेह, लूत और शोयेब के बारे में यह ख़बर दी कि उन्होंने अपने लोक से कहा और मैं इस काम का तुमसे बदला नहीं मांगता । मेरा बदला तो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही पर है। (अल् शुअरा, 109, 127, 145, 164, 180)

ईश्वर के लिए निष्पक्षता

हालांकि मोहम्मद सल्ललाहु अलैही व सल्लम अरब प्रायद्वीप के सरदार थे, लेकिन अपने कभी टैटल के बारे में विचार नही किया, और न इनके पीछे अपनी मेहनत लगाई। बल्कि अपनी जगह आप केवल इस बात पर संतोष किया कि आप अल्लाह के रसूल है और मुसलमानों के सेवक हैं। स्वयं आप अपने घर की सफाई करते थे, अपना चप्पल स्वयं सीलेते थे। आप (स) नेक और दानी थे। इस प्रकार के आप (स) चलनेवाली कोमल हवा थे, कोई भिक्षुक, और पीडित जब भी आपके पास आता तो पने पास जो भी है उसे दे देते थे, और जो आपके पास होता था वह अधिक समयों में स्वयं आपके लिए ही पर्याप्त नही होता था।

एफलिंकोबोल्ड

ब्रिटिश महान स्त्री

मुहम्मद ने अपने लोक से कहा (ऐ पैग़म्बर ।) कह दो कि मैं तुम से इस का बदला नहीं मांगता और न मैं बनावट करने वालों में हूँ । (साद, 86)

5. रसूलों को ईश्वर की सहायता और समथर्न मिलना ।

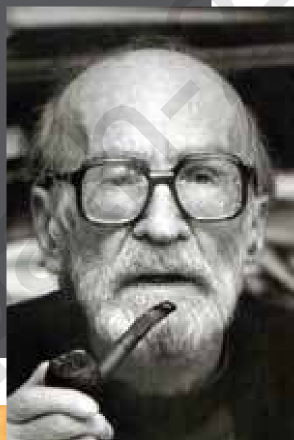
नबी और रसूलों की सत्यता का एक सबूत यह भी है कि ईश्वर की सहायता और सुरक्षा उनके साथ है, इसलिए कि यह बात बिलकुल समझ से बाहर है कि कोई व्यक्ति नबी या रसूल होने का दावा करे और वह अपने दावे में झूठा हो, फिर भी ईश्वर की सहायता, सुरक्षा और समर्थन उसके साथ हो, और उसका संदेश लोगों में फैल गया हो, बल्कि ईश्वर का दण्ड उसपर न आया हो ? ईश्वर ने कहा और यों ही झूठ, जो तुम्हारी ज़ुबान पर आ जाए, मत कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधने लगो । जो लोग खुदा पर झूठ बूहतान बांधते हैं, उन का भला नहीं होगा । (अल् नहल, 116)

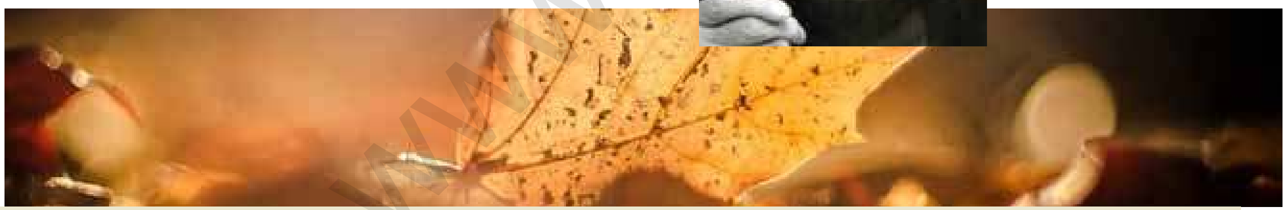
और ईश्वर ने कहा फिर उन की गर्दन की रग काट डालते फिर तुम में से कोई (हमें) इस से रोकने वाला न होता । (अल् हाक़्क़ः 44-46)

मैं आपही की तरह इन्सान हूँ।

मोहम्मद सल्ललाहु अलैही व सल्लम निश्चित रुप से ऐतिहासिक व्यक्ति है। अगर आप न होते इस्लाम धर्म न बढ़ता ना फैलता। आपने यह कहने में कभी झिजक महसूस नही की कि वह दूसरों की तरह एक मनुष्य है। जिनको मृत्यु आती है, और न यह कहने में हिच किचाया कि आप अल्लाह से माफी और क्षमा माँगते हैं। आपने अपनी मृत्यु से पहले स्वयं से हुई गलतियों से अपने आप को साफ करने का निश्चय किया फिर आप मेंमबर पर धर्मपदेश के लिए खडे हो गये और यह कहा-ऐ मुसलमानं अगर मैं किसी को चोंट पहुँचाई होतो यह मेरी पीठ है वह अपना बदला ले लें, या अगर मैं किसी का माल छीना हो तो मेरा माल उसकी संपत्ति है।

हेन्ड्री सीरोया
फ्रेंच प्राच्य विद्या विशारद







रसूलों के संदेश के मुख्य नियम

सारे नबी और रसूलों का संदेश एक ही महत्वपूर्ण बुनियाद पर आधारित है, परन्तु सारे रसूलों का संदेश एक ही है । उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुक़र्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद ।) हम ने तुम्हारी तरफ़ वहयी भेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को क़ायम रखना और उस में फूट न डालना । जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुश्रिकों को बुलाते हो, वह उनको मुश्किल गुज़रती है । अल्लाह जिसको चाहता है, अपनी बारगाह का चुना हुआ कर लेता है और जो उसकी तरफ रुजूअ करे, उसे अपनी तरफ़ रास्ता दिखा देता है। (अल् शुअरा, 31)

इसी कारण सारे नबी और रसूलों का धर्म एक था, जैसा कि ईश्वर ने कहा ऐ पैग़म्बरों । पाकीज़ा चीज़े खाओ और नेक अमल करो । जो अमल तुम करते हो, मैं उनको जानता हूँ । और यह तुम्हारी जमात (हक़ीकत में) एक ही जमाअत है और मै तुम्हारा परवरदिगार हूँ तो मुझ से डरो । (अल् मुमिनून, 51,52)

अगर चे इन रसूलों के धर्मो के गौण नियम अलग-अलग हो । ईश्वर ने कहा हम ने तुम में से हर एक (फिर्क़े) के लिए एक दस्तूर और एक तरीक़ा मुक़र्रर किया है। (अल् माइदह, 48)

अगर गौण नियम मुख्य नियम के विरोध मे हों, तो यह नियम बुद्धिमत्ता, लाभ और दया से ख़ाली होंगें, बल्कि असंभव है कि यह नियम अपनी छवि के अलावा किसी और छवि में आते । ईश्वर ने कहा और अगर (ख़ुदा-ए-बर) हक़ उनकी ख्वाहिशों पर चलें तो आसमान और ज़मीन और जो उन में हैं, सब टूट-फूट जाए । (अल् मुमिनून, 71)

रसूलों और ईशतत्व में जिन मुद्दों पर सब सहमत हैं, उन में से कुछ ये हैं ईश्वर उसके एंजिल, उसकी पुस्तकों और रसूलों पर, भविष्य जीवन और अच्छे और बुरे भाग्य पर ईमान लाना हैं। ईश्वर ने कहा (ख़ुदा के) रसूल उस किताब पर जो उनके परवरदिगार की तरफ़ से उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और मोमिन भी सब खुदा पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं कि) हम उस के पैग़म्बरों से किसी मे कुछ फ़र्क नहीं करते । और वे (खुदा से) अर्ज़ करते हैं कि हम ने (तेरा हुक्म) सुना और क़ुबूल

किया । ऐ परवरदिगार । हम तेरी बख्शिश मांगते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है। (अल्-बक़रा, 285)

एक ईशवर की प्रार्थना का आदेश जिसका कोई भागीदार नही, उस ईशवर को पत्नी, संतान, भागीदार और समानता से श्रेष्ठता का आदेश, और मूर्ति पूजा से दूर रहने का आदेश। ईशवर ने कहा । और जो पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ यही वहयी भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो । (अल् अम्बिया, 25)

इसी प्रकार से ईशवर के पथ पर चलने, और इसके विरोधी हर पथ से दूर रहने का आदेश, लेन-देन और नाप-तोल पूरा करने का आदेश, माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश, लोगों के बीच न्याय करने का आदेश, बात-चीत और काम-काज में सच बोलने का आदेश, गुप्त और प्रकट, अश्लिलताएँ, पाप, अन्याय से किसी पर जुल्म करने पर, अपने संतान की हत्या और अन्याय से किसी मनुष्य की हत्या करने पर प्रतिबंध लगाने का आदेश, ब्याज, अनाथ का धन उपयोग न करने का आदेश और घमण्ड, फिज़ूल खर्चे और अन्याय से लोगों का धन उपयोग न करने का आदेश देना ।

भविष्य जीवन पर विश्वास रखना । हर मनुष्य वास्तविक रूप से यह ज्ञान रखता है कि एक न एक दिन वह मरने वाला है। लेकिन मृत्यु के बाद उसका भाग्य क्या होगा । क्या वह भाग्यवान होगा या दुर्भाग्यवान? और सारे नबी और रसूल अपने-अपने भक्तों को यह संदेश दे चुके हैं कि वे सब मृत्यु के बाद दुबारा जीवित होंगें और उन्हें अपने कार्यों का फल मिलेगा, अगर कार्य अच्छे हों तो अच्छा, और अगर बुरे हों तो बुरा फल मिलेगा । इस आदेश (मृत्यु के बाद जीवित होने और अपने कार्य के फल मिलने का आदेश) को श्रेष्ठ बुद्धि भी स्वीकार करती है और देवत्व धर्म भी इससे सहमत हैं। निशचित रूप से वह ईशवर जो ज्ञानी, बुद्धिमान और शक्तिवान है, इस बात से श्रेष्ठ है कि वह अपनी प्रजा की सृष्टि बिना किसी लक्ष्य के करे और उन्हें बेकार छोड़ दे। ईशवर ने कहा और हम ने आसमान और जमीन को और जो (कायनात) उन में है, उस को मस्लहत से खाली नहीं पैदा किया। यह उन का गुमान है, जो काफ़िर हैं, सो काफ़िरों के लिए दोज़ख का अज़ाब है। (साद, 27)

बल्कि ईशवर ने एक महत्वपूर्ण लक्ष्य और एक महान बुद्धिमत्ता के कारण अपने प्रजा की सृष्टि की है, ईशवर ने कहा । और मैंने जिन्नों और इंसानों को इसलिए पैदा किया है कि मेरी इबादत करें । (अल् ज़ारयात, 56)

परन्तु इस जैसे बुद्धिमान ईशवर को यह शोभा नहीं देता कि आज्ञाकारी और अनाज्ञाकारी दोनों इस ईशवर की नज़र में एक समान हों । ईशवर ने कहा । जो लोग ईमान लाए और अमल करते रहे, क्या उन को हम उन की तरह कर देंगें, जो मुल्क में फसाद करते हैं या परहेज़गारों को बद-कारों की तरह कर देंगे । (स्वाद, 28)

इसी कारण की अदभुत शक्ति और महान बुद्धिमत्ता यह है कि वह भविष्य जीवन में हर मनुष्य को अपने कार्य का फल देने के लिए दुबारा जीवित करे, ताकि अच्छे कार्य करने वाले को अच्छा फल दें और बुरे कार्य करने वाले को दण्ड दे। ईशवर ने कहा । ताकि ईमान वालो और नेक काम करने वालों को इंसाफ़ के साथ बदला दे । औस जो काफ़िर है उनके लिए पीने को बहुत गर्म पानी और दर्द देने वाला अज़ाब होगा, क्योंकि (खुदा से) इंकार करते थे। (यूनुस, 4)

और इसी कारण मृत्यु के बाद मनुष्य को हिसाब-किताब के लिए दुबारा जीवित करना कितान ही आसान है। क्या यह वही तो पवित्र ईशवर है जिसने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की है। जब ईशवर ने प्रजा को बिना किसी पिछले नमूने के सृष्टि कि, तो क्या वह ईशवर दुबारा अपने प्रजा की सृष्टि करने की शक्ति नहीं रखता है। ईशवर ने कहा । क्या उन्होंने नहीं समझा कि जिस खुदा ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उन के पैदा करने से थका नहीं, वह इस (बात) पर भी क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को जिंदा कर दे हाँ, (हाँ) वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है । (अल् अह् ख़ाफ, 33)

और ईशवर ने कहा । भला जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ुदरत नहीं रखता कि (उन को फिर) वैसे ही पैदा करदें क्यों नही, और वह तो बडा पैदा करने वाला (और) इल्म वाला है। (यासीन, 81)

परन्तु जो ईशवर प्रथम सृष्टि की शक्ति रखता है, वह निशचित रूप से दुबारा सृष्टि करने पर अधिक शक्तिवान होगा। ईशवर ने कहा । और वही तो है जो खल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दोबारा पैदा करेगा और यह उसको बहुत आसान है और आसमानों और ज़मीन में उस की शान बहुत बुलंद है और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (अल् रूम, 27)

पाक-साफ जड

इस्लाम मुहम्मद (स) की ओर से कोई नया मज़हब नही है। परन्तु ईसा के आसमान पर उठाये जाने के 600 साल बाद पृथ्वी में दुबारा उसी वही का व्याप्त हुआ जो पूर्व आसमानी मज़हब की असल थी और इस वही ने सारे मज़हब को उनकी मूल जड़ की ओर लौटा दिया। सब नबी जिन्को ईश्वर ने भेजा है वे सब के सब मुसलमान थे और सब का संदेश हमेशा एक ही था।

डिपोरा पोटर

अमेरिका के पत्रकार



बल्कि इस संसारिक जीवन में भी ईशवर के आदेश से इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने मुर्दे को ज़िंदा किया गया । ईशवर ने कहा । और जब इब्राहीम ने ख़ुदा से कहा कि ऎ परवरदिगार मुझे दिखा कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेगा । ख़ुदा ने फरमाया कि क्या तुम ने (इस बात को) बावर नहीं किया (यानी माना नहीं) उन्हों ने कहा, क्यों नहीं, लेकिन (मै देखना) इसलिए (चाहता हूँ) कि मेरा दिल कामिल इत्मीनान हासिल कर ले। ख़ुदा ने फरमाया कि चार जानवर पकड़ कर अपने पास मंगालो (और टुकड़े-टुकड़े कर दो) फिर उनका एक-एक टुक्डा हर एक पहाड़ पर रखवा दो। फिर उनको बुलाओ तो वे तुम्हारे पास दौड़ते चले आएँगे और जान रखो कि ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (अल् बक़रः 260)

और इसी प्रकार से ईसा (अलैहिस्सलाम) के दवारा भी ईशवर के आदेश से मुर्दे को ज़िंदा किया गया। ईशवर ने कहा ।

जब ख़ुदा (ईसा से) फरमाएगा कि ऎ ईसा बिन मरयम । मेरे उन एहसानों को याद करो, जो मैंने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किए जब मैंने रूहुल क़ुदुस (यानी जिब्रील) से तुम्हारी मदद की । तुम झूले में और जवान होकर एक ही नस्क़ पर लोगों से बातें करते थे और जब मैंने तुम को किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी का जानवर बनाकर उस में फूंक मार देते थे, तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगता था और पैदाइश अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले मेरे हुक्म से चंगा कर देते थे और मुर्दे को मेरे हुक्म से (ज़िंदा करके क़ब्र से) निकाल खडा करते थे और जब मैंने बनी इस्राईल (के हाथों) को तुम से रोक दिया, जब तुम उनके पास खुले निशान लेकर आए, तो जो उन में से काफ़िर थें, कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (अल् माइदः 100)

सच्ची एकीकरण (तौहीद)

अरबी रसूल मुहम्मद (स) ने प्रेरणादायक आवाज़ से अपने ईश्वर के साथ गहरा संबंध रखने की ओर बुलाया। मूर्ती पूजा करनेवालं, ईसाइयत और यहूदियन के मानने वालों क सच्छी एकीकरण सिध्दांत की ओर बुलाया। आप इस बात पर सहमत थे के व मानव प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियाँ जो मानव को प्रजापति ईश्वर के साथ और अन्य ईश्वर पर विश्वास रखने को बुलाते हैं। ऐसे प्रवृत्तियों के साथ खुला संघर्ष करने पर आप सहमत थे।



व्लोरावीशा फाग्लेरी
प्राच्य विद्या विशारद





धैर्यवान रसूलों के इतिहास के कुछ भाग

सारे लोग सीधे रास्ते पर चल रहे थे, फिर उनके बीच आपसी फूट पड़गयी, तो ईशवर ने अपने रसूलों को भेजा, ताकि ये रसूल लोगों को ज्ञान दें और उन्हें डरायें । वही तो है, जिस ने अ-पढ़ों में उन्ही में से (मुहम्मद को) पैग़म्बर (बनाकर) भेजा, जो उसके सामने उस की आयतें पढ़तें और उनको पाक करते और (ख़ुदा की) किताब और हिक्मत सिखाते हैं और इस से पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (अल् जुमुअः 2)

लेकिन लोग रसूलों के संदेश को लेकर दो समूह में बँट गये, एक समूह ने रसूलों को सच्चा माना और उन पर विश्वास किया, दूसरे समूह ने रसूलों को झुठलाया, उनको और उनके लाये हुए संदेश का इंकार किया और ज़िद में आकर उनको सच न माना । (पहले तो सब) लोगों का एक ही मज़हब था। (लेकिन वे आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगे) तो ख़ुदा ने (उनकी तरफ़) बशारत देने वाले और डर सुनाने वाले पैग़म्बर भेजे और उनपर सच्चाई के साथ किताबें नाज़िल की, ताकि जिन मामलों में लोग इख़्तिलाफ करते थे, उनका उनमें फ़ैसला कर दे। और इसमें इख़्तिलाफ़ भी उन्हीं लोगों ने किया जिनको किताब दी गयी थी, बावजूद कि उनके पास खुले हुए हुक्म आचुके थे और यह इख़्तिलाफ उन्होंने (सिर्फ़) आपस की ज़िद से (किया) तो जिस हक़ बात में इख़्तिलाफ करते थे, ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी से मोमिनों को उस की राह दिखा दी और ख़ुदा जिसको चाहता है, सीधा रास्ता दिखा देता है। (अल् बक़रः 213)

इन लोगों ने अपनी हवस के पीछे चलते हुए और घमंड करते हुए रसूलों का इंकार किया । तो जब कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास ऎसी बातें लेकर आयें जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता था, तो तुम सरकश हो जाते रहे और (नबियों के) एक गिरोह को तो झुठलाते रहे और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे। (अल् बक़रः 87)

ईशवर ने सारे रसूलों पर विश्वास (ईमान) रखने का आदेश दिया है। (मुसलमानों ।) कहो कि हम ख़ुदा पर ईमान लाए और जो (किताब) हम पर उतरी, उस पर और जो (सहीफ़े) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर नाज़िल हुए, उन पर और जो (किताबें) मूसा और ईसा को अता हुई उन पर और जो और पैग़म्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ से मिली, उन पर (सब पर ईमान लाये) हम उन पैग़म्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क़



नहीं करते और हम उसी (खुदा-ए-वाहिद) के फरमाबरदार हैं। (अल् बक़रः 136)

ईश्वर ने रसूलों पर विश्वास रखने वालों से इस जीवन और भविष्य जीवन में प्रसन्नता और सफलता का वादा किया है। इसी प्रकार से रसूलों का इंकार करने वालों से भविष्य जीवन से पहले पहले इसी जीवन में घाटे और अप्रसन्नता की धमकी दी है। परन्तु विश्वास रखने वालों के बारे में ईश्वर ने यह कहा। और जो शख्स खुदा और उसके पैग़म्बर और मोमिनों से दोस्ती करेगा तो (वह खुदा की जमाअत में दाखिल होगा और) खुदा की जमाअत ही ग़लबा पाने वाली है। (अल् माइदः 56)

और ईश्वर ने यह भी कहा (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिन के दिल खुदा की याद से आराम पाते हैं (उन को) और सुन रखो कि खुदा की याद से दिल आराम पाते हैं। जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए खुशहाली और उम्दा ठिकाना है। (अल् राद, 28-29)

ईश्वर ने रसूलों के इंकार करने वालों के बारे में कहा (और) ऐसा ख्याल न करना कि काफ़िर लोग (हम को) ज़मीन में मग़लूब कर देंगें, (ये जा ही कहां सकते हैं) इन का ठिकाना दोज़ख है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (अल् नूर, 57)

हर रसूल और हर नबी के दुश्मन हुआ करते थे। ईश्वर ने कहा । और इसी तरह हमने शैतान-इंसानों और जिन्नों-को हर पैग़म्बर का दुश्मन बनादिया था। वे धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल में मुलम्मा की बातें डालते रहते थे और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो वे ऐसा न करते, तो उन को और जो कुछ ये गढ़ते हैं, उसे छोड़ दो। (अल् अनआम, 112)

फिर ईश्वर के रसूलों का इन्कार करने वालों ने इनके साथ दुर्वयवहार किया, इन पर ज़ुल्म किया, इनके साथ उपहास किया और इनका मज़ाक उड़ाया। ईश्वर ने कहा । और उन के पास कोई पैग़म्बर नहीं आता था, मगर वे उसका मज़ाक़ उड़ाते थे। (अल् हिज्र, 11)

ईश्वर ने कहा और कोई पैग़म्बर उन के पास नहीं आता था, मगर वे उसका मज़ाक़ उड़ते थे। (अल् ज़ुखरूफ, 7)

और ईश्वर ने कहा और तुम से पहले भी पैग़म्बरों के साथ मज़ाक होता रहा है, सो जो लोग उन में से मज़ाक किया करते थे, उन को मज़ाक की सज़ा ने आ घेरा। (अल् अनआम, 10)

इसी प्रकार से इन लोगों ने अपने रसूलों को बहिष्कार करने की धमकी दी, या फिर उन्हें अपने धर्म को छोडने का विकल्प दिया। ईश्वर ने कहा और जो काफ़िर थे उन्होंने अपने पैग़म्बरों से कहा कि (या तो) हम तुम को अपने मुल्क से बाहर निकाल देंगे या हमारे मज़हब में दाखिल हो जाओ। तो परवरदिगार ने उन की तरफ वह्य भेजी कि हम ज़ालिमों को हलाक कर देंगे । (इब्राहीम, 13)

यहाँ तक कि यह धमकियाँ हत्या के प्रयास तक पहुँच गयी । और हर उम्मत ने अपने पैग़म्बर के बारे में यही इरादा किया कि उसको पकड़ लें (ग़ाफ़िर, 5)

यानी उसकी हत्या करें, यहाँ तक कि उनमें से कुछ लोगों ने तो अपने रसूलों की हत्या भी की है। तो जब कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास ऐसी बातें लेकर आये जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता था, तो तुम सरकश हो जाते रहे और (नबियों के) एक गिरोह को तो झुठलाते रहे और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे। (अल् बक़रः 87)

फिर इसके बाद ईश्वर ने इनकार करने वालों को तबाह व बरबाद कर दिया, और रसूलों के धर्मों का बोल-बाला करदिया, ईश्वर ने कहा । ख़ुदा का हुक्म नातिक़ है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे, बेशक खुदा ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है। (अल् मुजादलः 21)

और ईश्वर ने कहा और अपने पैग़ाम पहुँचाने वाले बन्दों से हमारा वायदा हो चुका है, कि वही (ग़ालिब व) मंसूर (मदद किए हुए) हैं। (अल् साफ़्फ़ात, 171-172)

ईश्वर ने अपने नबी और रसूलों को सुरक्षित रख लिया । और जो लोग ईमान लाये और डरते थे, उनको हम ने निजात दी। (अल् नम्ल, 53)

और ईश्वर ने यह भी कहा और जो ईमान लाये और परहेज़गारी करते रहे, उनको हमने बचा लिया। (फुस्सिलत, 18)

हर नबी अपनी क़ौम और अपने समय के उपयुक्त वह संदेश लेकर आये जो उनके जीवन को सुधारे और उन्हें पवित्र बनाये। परन्तु जो किसी भी रसूल का इंकार करेगा, वह सब रसूलों का इन्कार



मारसेल ब्वोदर
फ्रेंच विचारक

एक ही मशाल से

मुहम्मद (स) के संदेश के अंतर्गत यह नही था के आप से पूर्व की जो धार्मिक किताबें हैं उनको गलत ठहराये। परन्तु उसको सच्छ मानना और उन आसमानी किताबों में जो परिवर्तन और उल्लंघन हुआ है उसका खंडन करना है। आप को पूर्व रसोलों की शिक्षा को हर प्रकार की उल्लंघन से साफ करने की, इनको विस्तार करने और इनको संपूर्ण करने की जिम्मेदारी दी गयी। ताकि ये शिक्षा सारे विश्व में रहने वाले मानवों के लिए हर युग और समय में स्वीकृत हो

करने वाले व्यक्ति के समान है। जो ईसा (अलैहिसलाम) पर विश्वास नहीं रखेगा, निशचित रूप से वह मूसा (अलैहिसलाम) पर भी विश्वास नहीं रखने वाला होगा । और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ईसा के संदेश को ही दोहराया। ईशवर ने कहा और (ऐ पैग़म्बर ।) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और उन (सब) पर शामिल है, तो जो हुक्म खुदा ने नाज़िल फरमाया है, उस के मुताबिक़ उनका फैसला करना और हक़, जो तुम्हारे पास आचुका है, उस को छोड़कर उनकी ख्वाहिशों की पैरवी न करना। (अल् माइदः 48)

जो व्यक्ति मुहम्मद पर विश्वास नही रखता है निशचित रूप से वह ईसा पर भी विश्वास रखने वाला नहीं होगा। हर समय और सारी क़ौमों के लिए नबी और रसूलों में से किसी एक पर ईश देवत्व का अंत होना ज़रूरी था न कि किसी विशेष समय और विशेष क़ौम के लिये, वरना आकाश और पृथ्वी के प्रजापति और ईशवर की वही (रहस्योद्घाटन) की मदद के बिना मानवता नष्ट हो जाती। परन्तु मुहम्मद नबी और रसूलों के अंत में आने वाले रसूल हैं। ईशवर ने कहा । मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के वालिद नहीं है, बल्कि खुदा के पैग़म्बर और नबियों (की नबूवत) की मुहर (यानी उस को खत्म कर देने वाले हैं) और खुदा हर चीज़ को जानता है। (अल् अह्ज़ाब, 40)





तो मानवता का इतिहास समझा जाने वाला नबी और रसूलों का इतिहास क्या है ।

हम उन (रसूलोंके) बीच कोई अंतर नही रखते।

ख़ुराने करीम ही वह एक दिव्य किताब है जो दूसरे आसमानी किताबों को मान्यता देती है। जब कि हम यह देखते हैं कि दूसरी सारी किताबें एक दूसरे को स्वीकार नही करती है।



बशीर शाद

भरतीय ईसाई धार्मिक कार्यकर्ता

हम यहाँ पर ईशवर के मानव की सृष्टि का इरादा करने से लेकर आदम (अलैहिसलाम) के स्वर्ग से निकल कर पृथ्वी पर आने तक का इतिहास का वर्णन करेंगे । और (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में (अपना) नायब बनाने वाला हूँ। उन्होंने कहा, क्या तू उसमें ऐसे शख्स को नायब बनाना चाहता है, जो ख़राबियाँ करें और कुश्त व खून करता फिर और हम तेरी तारीफ के साथ तस्बीह व तक़्दीस करते रहते हैं। (खुदा ने) फ़रमाया, मै वह बातें जानता हूँ जो तुम नही जानते। और उसने आदम को सब (चीज़ों के) नाम सिखाये, फिर उनको फ़रिश्तों के सामने किया और फरमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। उन्होंने कहा, तू पाक़ है जितना इल्म तूने हमें बख्शा है, उसके सिवा हमें कुछ मालूम नहीं। बेशक तू दाना (सर्व ज्ञाता) (और) हिक्मत वाला है। (तब) ख़ुदा ने (आदम को) हुक्म दिया कि आदम। तुम इन को उन (चीज़ों) के नाम बताओ । जब उन्होंने उनको उनके नाम बताये तो (फ़रिश्तों से) फ़रमाया, क्यों, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन की (सब) पोशीदा बातें जानता हूँ और जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो पोशीदा करते हो (सब) मुझको मालूम है। और जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो तो वे सब सज्दे में गिर पड़े, मगर शैतान ने इंकार किया और गुरूर (घमण्ड) में आकर काफ़िर बनगया । और हमने कहा कि ऐ आदम। तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत मे रहो और जहां से चाहो,

बे-रोक-टोक खाओ (पीयो), लेकिन उस पेड़ के पास न जाना, नहीं तो ज़ालिमों में (दाख़िल) हो जाओगे। फिर शैतान ने दोनों को वहाँ से फिसला दिया और जिस (ऐश व निशात) में थे, उससे उनको निकल वा दिया। तब हमने हुक्म दिया कि (जन्नत से) चले जाओ, तुम एक-दुसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त तक ठिकाना और मआश (रोज़ी) मुक़र्रर कर दिया गया है। फिर आदम ने अपने परवरदिगार से कुछ कलिमात (बोल) सीखे (और माफी मांगी) तो उसने उनका क़ुसूर माफ कर दिया। बेशक वह माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है। हमने फ़रमाया कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ। जब तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत पहुँचे तो (उसकी पैरवी करना कि) जिन्होंने मेरी हिदायत की पैरवी की, उनको न कुछ ख़ौफ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। और जिन्होंने (उसको) क़ुबूल न किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे दोज़ख में जाने वाले हैं (और) वे हमेशा उसमें रहेंगे। (अल् बक़रः 30-39)



फिर जब लोगों में आपसी वैर हो गया, और वे सीधे पथ और सच्चे संदेश से दूर हो गये, तो ईश्वर ने अपने रसूलों को भेजा, फिर लगातार रसूल अपने अपने संदेश लेकर आते रहे। उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुक़र्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद।) हम ने तुम्हारी तरफ़ वह्य भेजी है और जिसका इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को क़ायम रखना और उस में फूट न डालना। (अल् शूरा, 13)

ईश्वर के नबी और रसूल इद्रीस (अलैहिसलाम) से लेकर नूह (अलैहिसलाम) तक, फिर इब्राहीम, इस्माईल, मूसा, ईसा और मूहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक लगातार आते रहे। ईश्वर ने इन सारे नबी और रसूलों के बारे में, और उनके क़िस्से वर्णन किया। हम यहाँ पर इन में से कुछ रसूलों के कुछ भाग लिखेंगे, इसलिए कि इन किस्सो में बुद्धिमान लोगों के लिए नसीहत हैं। ईश्वर ने कहा उनके क़िस्से में अक़्लमंदों के लिए सबक़ है। यह (ख़ुरआन) ऐसी बात नही है जो (अपने दिल से) बनाली गयी हो, बल्कि जो किताबें इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक (करने वाला) है और हर चीज़ की तफ्सील (करने वाला) और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (सूरे यूसुफ, 111)

इन रसूलों में से एकः

1-नूह (अलैहि सलाम)-

आप की क़ौम पहले तो एक ईशवर पर विश्वास रखती थी, उसकी प्रार्थना करती थी, भविष्य जीवन का यक़ीन रखती थी और अच्छे कार्य करती थी। फिर इस क़ौम के लोगों का देहांत हो गया, ये लोग चरित्रवान और पवित्र थे, इसलिए लोगों को इनके देहांत पर बहुत दुख हुआ, तो लोगों ने इनकी मूर्तियाँ बनाली, जिनको वे यह नाम दिया करते थेः वूद, सुवा, यगूस, यऊख़ और नस्र। फिर लोगों को इन मूर्तियों से प्रेम हो गया, और लोगों ने इन मूर्तियों को अपने मृत चरित्रवान लोगों का चिह्न बना लिया। शहर वाले इन मूर्तियों को अधिकतम स्थान देने लगे, उनका लक्ष्य उन मृत चरित्रवान लोगों को सम्मान देना था। इसी प्रकार से कई वर्ष बीत गये, यहाँ तक कि बड़ों का देहांत हो गया और छोटे बडे हो गये, फिर छोटों ने इन मूर्तियों की समानता को और बढाया, उनके सामने झुकने लगे, और फिर ये मूर्तियाँ इस ख़ौम के दिलों में एक बडा स्थान बनाने लगी। जब दूसरा वंशज शुरू हुआ तो ये लोग इन मूर्तियों की प्रार्थना करने लगे, और कहने लगे कि ये ईशवर हैं। जिनके सामने झुकना और सज्दा करना ज़रूरी है, परन्तु वे इन मूर्तियों की प्रार्थना करने लगे, और बहुत से लोग भटकने लगे।

इस जैसे समय में ईशवर ने इस ख़ौम के पास नूह को भेजा, ताकि वह उन्हें सीधे पथ की ओर निर्देश करे, मूर्ति पूजा से उन्हें रोके और एक ईशवर की प्रार्थना की ओर उन्हें बुलाये, परन्तु नूह अपने ख़ौम के पास आये उन्हों ने उन से कहा कि ऐ ख़ौम। ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। (अल् मुमिनून, 23)

लेकिन इन लोगों ने नूह का इंकार किया, और उनकी एक बात भी स्वीकार नही की, तो नूह ने उन्हें डराया और ईशवर के दण्ड से चेतावनी दी, और कहा मुझ को तुम्हारे बारे में बड़े (सख्त) दिन के अज़ाब का डर है। (अल् शुअरा, 135)

तो इन लोगों ने कहा तो जो उन की क़ौम में सरदार थे, वे कहने लगे कि हम तुम्हें खुली गुमराही में (पड़े) देखते हैं। (अल् आराफ़, 60)

नूह ने उन्हें यह जवाब दिया उन्हों ने कहा, ऐ क़ौम। मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं है, बल्कि मैं दुनिया के परवरदिगार का पैग़म्बर हूँ। तुम्हें अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारी ख़ैर-ख्वाही करता हूँ और मुझ को ख़ुदा की तरफ़ से ऐसी बातें मालूम हैं, जिन से तुम बे-ख़बर हो। (अल् आराफ़, 61-62)

तो नूह की बातों से उन की क़ौम ताज्जुब में पड़गयी और कहने लगीः आप तो हमारी तरह ही एक मानव है, तो आप ईशवर के रसूल कैसे हो सकते हैं? और जिन लोगों ने आपकी बातों का पालन किया है, वे सब दुर्जन हैं। फिर यह

कि तुम्हें हम से ज्यादा इज़्ज़त नही है, परन्तु तुम लोग हम से अधिक न उच्च स्थिति वाले हैं और न धनी, और हमारा यह ख्याल है कि तुम लोग अपनी इन बातों में झूठे हो। और इस क़ौम के लोगों ने आपस में एक दूसरे से यह कहने लगे। कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, तुम पर बडाई हासिल करना चाहता है और खुदा चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता । हम ने अपने अगले बाप-दादा में तो यह बात कभी सुनी नहीं। इस आदमी को जो दीवानगी (का मरज़) है। (अल मुमिनून, 24-25)

इस क़ौम ने आपस में एक दूसरे को मूर्ति पूजा पर प्रोत्साहन किया । और कहने लगे कि अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और वद्द और सुवाअ और यग़ूस और यऊक़ और नस्र को कभी न छोडना । (नूह, 23)

तो नूह ने उनसे कहा । क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में से एक शख्स के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास नसीहत आयी ताकि वह तुमको डराये। (अल् आराफ, 63)

और नूह दयालुता और कोमल पक्ष अपनाते रहे, लेकिन उनकी क़ौम और जिद्दी (जिद्धी) बनती गयी, और नूह उन्हें हर समय बुलाते रहे, यहाँ तक कि उन्होंने कहा । जब लोगों ने माना, तो (नूह ने) खुदा से अर्ज की कि परवरदिगार । मै अपनी क़ौम को रात-दिन बुलाता रहा, लेकिन मेरे बुलाने से वे और ज्यादा भागते रहे। जब-जब मैं ने उनको बुलाया कि (तौबा करें और) तू उन को माफ़ फ़रमाए, तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ देली और कपड़े ओढ़ लिए और अड़गये और अकड़ बैठे। (नूह, 5-7)

नूह ने उन्हें हर प्रकार से बुलाया। फिर मैं उनको खुले तौर पर भी बुलाता रहा, और खुले और छिपे हर तरह समझाता रहा और कहा कि अपने परवरदिगार से माफी माँगो कि वह बडा माफ करने वाला है। (नूह, 9-10)

इन में से कुछ लोगों ने मामूली-मामूली बहाने बना लिया और कहने लगे वे बोले कि क्या हम तुम को मानलें और तुम्हारी पैरवी करने वाले तो नीच लोग हुए हैं । (अल शुअरा, 111)

तो नूह ने उन्हें दयालुता और उपदेशा के स्वर में यह जवाब दिया (नूह ने) कहा कि मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते हैं। (अल् शुअरा, 112)





निष्कर्ष संदेश

मुहम्मद (स) वो रसूल है जो इस्लाम लेकर आये। इस प्रकार से आप उन सारे रसूलों की आखिरी कडी है जो महत्वपूर्ण संदेश लेकर आये है।

वोल्फ बारुन अहर नज़ीर

आस्ट्रिया विश्व विद्यालय का प्रोफेसर

नूह ने उन्से यह कहा उनका हिसाबे (आमाल) मेरे परवरदिगार के जिम्मे है, काश । तुम समझो । (अल् शुअरा, 113)

नूह ने उन्से यह भी कहा और मैं मोमिनों को निकाल देने वाला नही हूँ । (अल् शुअरा, 114) और जो लोग ईमान लाए हैं, मैं उन को निकालने वाला भी नही हूँ। (हूद, 29)

कैसे मैं उस समूह को अपने आप से दूर करदूँ, जो मुझ पर विश्वास रखते हैं, मेरी मदद करते हैं और मेरे संदेश को फैलाने में मेरी सहायता करते हैं? फिर उनसे कहा । और ऐ मेरी क़ौम के लोगों । अगर मै उनको निकाल दूँ तो खुदा (के अज़ाब) से (बचाने के लिए) कैन मेरी मदद कर सकता है ? भला तुम ग़ौर क्यों नही करते ? (हूद, 30) मैं तो सिर्फ खोल-खोल कर नसीहत करने वाला हूँ। (अल् शुअरा, 115)

गोरे-काले, छोटे-बडे, धनी-निर्धन और इज़्ज़तदार-बेइज्जतदार के बीच कोई अंतर किये बिना सारे लोगों को चेतावनी देते रहे, और जब लोगों के पास कोई सबूत न रहा, वे नूह की बातों का जवाब न दे सकें, तो लोगों ने नूह को पत्थरों से मार कर हत्या कर देने की धमकी दी । उन्होंने कहा कि नूह अगर तुम मानोगे नहीं तो पत्थर मार-मार कर हलाक़ कर दिये जाओगे । (अल् शुअरा, 116)

जब नूह को यह विश्वास गो गया कि यह लोग न बात सुनेंगे और न सीधे पथ पर चलेंगे, तो नूह ने ईशवर से यह प्रार्थना की कि वे उसको इस जिद्दी क़ौम से सुरक्षित रखे । (नूह ने) कहा कि परवरदिगार मेरी क़ौम ने तो मुझ को झुठला दिया। सो तू मेरे और उन के दर्मियान एक खुला फैसला करदे और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं, उन को बचाले । (अल् शुअरा, 117-118)

नूह अपनी क़ौम को इस बात से डराते थे कि अगर वे बेईमानी (कुफ़्र) पर डटे रहे तो उनको ईशवर की ओर से दण्ड दिया जायेगा, तो इनकी क़ौम के कुछ लोगों ने परिहास करते हुए यह कहा लेकिन अगर सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, वह हम पर ला नाज़िल करो । (हूद, 32)

तो नूह ने कहा कि यह मेरे वश की बात नहीं नूह ने कहा कि इस को तो खुदा ही चाहेगा, तो नाज़िल करेगा । (हूद 33) और अगर मैं यह चाहूँ कि तुम्हारी ख़ैरख्वाही करूँ और खुदा यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, तो मेरी ख़ैरख्वाही तुम को कुछ फ़ायदा नही दे सकती । (हूद, 34)

तो ईशवर ने नूह से यह कहा तुम्हारी क़ौम में जो लोग ईमान ला चुके, उनके सिवा और कोई ईमान नही लाएगा, तो जो काम ये कर रहे हैं, उन की वजह से ग़म न खाओ। (हूद, 36)

इस प्रकार से सबूत पूरे हो गये, बहानों का रास्ता बंद हो गया, और लगभग एक हजार वर्ष तक संदेश का सिलसिला चलता रहा, यहाँ तक कि नूह अपनी क़ौम से निराश होगये, और ईशवर से प्रार्थना करते हुए यह कहा । और (फिर) नूह ने (यह) दुआ की कि मेरे परवरदिगार किसी काफ़िर को धरती पर बसता न रहने दे। अगर तू उनको रहने देगा, तो मेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और उनसे जो औलाद होगी वह भी बद-कार और ना-शुक्रगुज़ार होगी । (नूह, 26-27)

घमंड और इतिहास का विरुपण

मध्य युग में ईसाई अपनी किताबों के अंदर सफर तक्वीन के अनुसार मानव स्थर की जाति वितरण पर संतुष्ट किया। फिर इस वितरण में एक और कडी जोड दी। ये विश्वास लोक प्रिय हो गया के धर्मिक और संत साम की वंश से हैं। शूरवीर याफस की वंश से हैं। और गरीब और निर्धनीय हाम की वंश से हैं (जो नूह की संतान है) 1964 में पश्चिम वर्जीनिया के अमेरिकन सेनेटर रोबर्ट बर्ड ने नूह की जीवन चरित्र क अमेरिका के अंदर जाति-भेद की निति बाखी रहने का कारण माना है।



तो अल्लाह ने नूह को कश्ती बनाने का आदेश दिया हम ने उन की तरफ़ वह्य भेजी है कि हमारे सामने और हमारे हुक्म से एक कश्ती बनाओ। (नूह, 27)

नूह ने कश्ती बनाना प्रारंभ कर दिया । तो नूह ने कश्ती बनानी शुरू कर दी और जब उनकी क़ौम के सरदार उनके पास से गुज़रते तो उनका मज़ाक़ उड़ाते। (हूद, 38)

तो नूह उन्हें बडे प्यार और नर्मी से यह जवाब देते ।

तो जिस तरह तुम हमारा मज़ाक उड़ाते हो, उसी तरह (एक वक़्त) हम भी तुम्हारा मज़ाक उड़ाएँगे । (हूद, 38)

फिर नूह ने उन्हें धमकाया और ईशवर से डराया और तुमको जल्द मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब आता है, जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है ? (हूद, 39)

नूह बडी मेहनत के साथ काम करने लगे, यहाँ तक कि कश्ती पूरी बनगयी। फिर ईशवर ने नूह को यह आदेश दिया कि वह ईमान वालों को और हर प्राणी में से एक एक जोडे को अपने साथ कश्ती में बिठाले यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आजाय और तंदूर उबल पड़े तो हम कहेंगे, हर जाति में से दो-दो के जोड़े उसमें चढालो और अपने घरवालों को भी

सिवाय ऐसे व्यक्ति के जिसके बारे में बात तय पा-चुकी है और जो ईमान लाया हो उसे भी । किन्तु उसके साथ जो ईमान लाये थे, वे बहुत थोड़े थे। (हूद, 40)

तो नूह ने ईमान वालों को और हर प्राणी में से एक-एक जोडे को अपने साथ कश्ती में सवार कर लिया । उसने कहा, उसमें सवार हो जाओ। अल्लाह के नाम से इसका चलना भी है और इसका ठहरना भी निस्संदेह मेरा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है। (हूद, 41)

जब नूह ईमान वालों और जानवरों को लेकर कश्ती में सवार हो गये, और हर एक अपनी-अपनी जगह बैठ गया, तो ज़ोरदार बारिश होने लगी, और ज़मीन के अंदर से बहुत ज्यादा पानी निकलने लगा । तब हमने मूसलाधार बरसाते हुए पानी से आकाश के द्वार खोल दिए और धरती को प्रवाहित स्त्रोतों में परिवर्तित कर दिया और सारा पानी उस काम के लिए मिलगया जो नियत हो चुका था। और हमने उसे एक तख़्तों और कीलोंवाली (नौका) पर सवार किया जो हमारी निगाहों के सामने चल रही थी। यह बदला था उस व्यक्ति के लिए जिसकी क़द्र नही की गई। (अल क़मर, 11-14)

नूह अपने उस पुत्र को देखते रहे जो उन पर ईमान नहीं लाया, और डूब जाने के डर से भागने का प्रयास कर रहा था, तो नूह ने उसको आवाज़ दी नूह ने अपने बेटे को जो उससे अलग था, पुकारा, ऐ मेरे बेटे । हमारे साथ सवार हो जा। तू इनकार करनेवालों के साथ न रह । (हूद, 42)

लेकिन पुत्र ने ईमान लाने से और अपने पिता की नसीहत सुनने से इंकार किया । और अपने पिता नूह से यह कहा उसने कहा मैं किसी पहाड़ से जा लगूँगा जो मुझे पानी से बचालेगा। (हूद, 43)

नूह अपने पुत्र की ओर प्रेम से देख रहे थे और यह कह रहे थे। आज अल्लाह के आदेश (फ़ैसले) से कोई बचाने वाला नहीं है (अतः कोई बच नही सकता) सिवाय उसके जिसपर वह दया करे। (हूद, 43)

बस कुछ ही क्षण बीते थे कि इतने में दोनों के बीच लहर आ पड़ी और डूबनेवालों के साथ वह भी डूब गया। (हूद, 43)

नूह को अपने पुत्र पर तरस आया, तो वह उसकी मुक्ति के लिए ईशवर से प्रार्थना करने लगे, क्योंकि ईशवर ने नूह से उनके परिवार वालों को मुक्ति देने का वादा किया था, परन्तु नूह ने कहा नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा मेरे रब ! मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है और निस्संदेह तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बड़ा हाकिम भी है। (हूद, 45)

तो ईशवर ने जो कि नूह के सदाचरण परिवार वालों को मुक्ति देने का वादा किया था, यह कहते हुए उत्तर दिया ऐ नूह । वह तेरे घरवालों में से नहीं। व तो सर्वथा एक बिगड़ा काम है। (हूद, 46)

धर्म में कोई दलाली नहीं है, परन्तु वह आपके परिवार का सदस्य नहीं है, और जब तक वह एक ईश्वर पर ईमान नही लायेगा, तो केवल आपका पुत्र होना ही उसके लिए कोई लाभ की बात नही होगी। जब पानी से सारी पृथ्वी डूब गयी और सारे काफ़िर विनाश हो गये। और कहा गया, ऐ धरती । अपना पानी निगल जा । (हूद, 44)

परन्तु ज़मीन से निकलने वाला पानी बंद हो गया, और आकाश को यह आदेश दिया गया और ऐ आकाश । तू थम जा । (हूद, 44)

परन्तु आकाश बरसने से रुक गया, और बारिश थम गयी । और वह (नाव) जूदी पर्वत पर टिक गई । (हूद, 44)

यह वह पहाड़ है जिस पर नाव टिकी थी । नूह को यह आदेश दिया गया । कहा गया, ऐ नूह । हमारी ओर से सलामती और उन बरकतों के साथ उतर, जो तुझपर और उन गिरोहों पर होगी, जो तेरे साथ वालों में से होंगे । (हूद, 48)

नूह और उनके साथी ईमान वाले कश्ती से उतर गये, इन लोगों ने एक नगर बसाया, पौधे लगाये, अपने साथ लाये हुए जानवरों को छोड़ दिया, इस प्रकार से पृथ्वी में विकास होने लगा और लोग पीढ़ी-पीढ़ी के बाद बडते गये ।

नबियों कि शान में अल्पिकरण

नूह (अलैहीसलाम) ने खेति-बाडी की और आपने कुछ पौधे बोये जिससे अंगूर पैदा हुआ, आपने उससे नशेली चीज बनाई, उसको पी लिया और नशे में आगये। आपका छोटा पुत्र हाम ने भी इस नशे का प्रयोग किया और अपने कपडे निकाल दिये। परन्तु हाम के दो भायं ने अपने पिता पर चादर डाली। जब नूह को होश आया और हाम की प्रतिक्रिया का आप को ज्ञान हुआ तो अपने कनान इब्ने हाम को बुरा-भला कहा और ये कहा के ये अपने भायों का सेवक रहेगा, साम और याफिस को भलाई का अशिर्वाद दिया। (सफर तक्वीन 10 व पाठ) इस अनुध्चेद के विवरण में (सन्ह द्रेन पेज नं 70) तलमूद बाब्ली ने ये लिखा है के कनान या हाम ने नूह का बधियाकरण किया और उनके साथ बुरा व्यवहार किया। इन सब बातों से अल्लाह के नबी पाक है।



2. इब्राहीम (अलैहिसलाम)

इब्राहीम एकीकरण के रसूल है, जो उनकी जीवन शैली से मालूम होता है, इसी कारण ईश्वर ने उनके बारे में यह कहा । निश्चय ही इब्राहीम की स्थिति एक समुदाय की थी । वह अल्लाह का आज्ञाकारी और उसकी ओर एकाग्र था। (अल-नहल, 120)

इब्राहीम (अलैहिसलाम) का पालन-पोषण ईश्वर का भागीदार माननेवालों के बीच में हुआ, बल्कि आप के पिता भी मूर्ति पूजा, मूर्ति बनाने वाले और उसकी सेवा करने वाले थे, तो इब्राहीम ने अपने पिता और क़ौम से बहस किया । और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा था, क्या तुम मूर्तियों को पूज्य बनाते हो । मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पड़ा देख रहा हूँ । (अल-अनआम, 74)

इब्राहीम ने अपने क़ौम के सामने मज़बूत सबूतों के साथ ईश्वर के भागीदार मानने का इंकार किया, और वह अल्लाह की निशानियों में विचार किया करते हैं । अतएव जब रात उस पर छा गई तो उसने एक तारा देखा । उसने कहा, इसे मेरा रब ठहराते हो । फिर जब वह छिप गया । (अल-अनआम, 76)

यानी तारा डूब गया । तो बोला, छिप जानेवालों से मैं प्रेम नहीं करता, फिर जब उसने चाँद को चमकता हुआ देखा (अल-अनआम, 76-77)

यानी आसमान में निकलता हुआ देखा, और यह भी देखा कि कुछ लोग इसकी पूजा करते हैं । तो कहा, इसको मेरा रब ठहराते हो । (अल-अनआम, 77)

उनके इस कार्य का इंकार करते हुए उनकी प्रार्थना को आश्चर्य करते हुए और समय का फाइदा उठाते हुए । फिर जब वह छिप गया । (अल-अनआम, 77)

यानी जब चाँद बादलों में छिप गया, तो उन्हों ने अपनी क़ौम से यह कहा तो कहा यदि मेरा रब मुझे मार्ग न दिखता तो मैं भी पथभ्रष्ट लोगों में सम्मिलित हो जाता फिर जब उसने सूर्य को चमकता हुआ देखा । (अल- अनआम, 77-78)

और यह देखा कि उनकी क़ौम सूरज के सामने झुकती है । तो कहा इसे मेरा रब ठहराते हो। यह तो बहुत बडा है। (अल-अनआम, 78)



उनके कार्य का इंकार करते हुए और इस बात से आश्चर्य होते हुए कि कैसे यह लोग सूर्य की प्रार्थना करते हैं ? फिर जब वह भी छिप गया (अल-अनआम, 78)

और निगाहों से दूर हो गया, तो इब्राहीम ने सूर्य की प्रार्थना करने वालों की ओर मुड़कर यह कहा । ऐ मेरी क़ौम के लोगों । मैं विरक्त हूँ उनसे जिनको तुम साझी ठहराते हो । मैंने तो एकाग्र होकर अपना मुख उसकी ओर करलिया है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया । और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं । (अल-अनआम, 78-79)

इब्राहीम अपने बाप को बहुत ही ज्यादा समझाते थे, नर्मी, प्रेम और विनम्र के साथ उनको ईशवर का साझी ठहराने से रोकते थे । ऐ मेरे बाप । आप उस चीज़ को क्यों पूजते हैं जो न सुने, न देखे और न आप को कुछ काम आए ? ऐ मेरे बाप। मेरे पास ऐसा ज्ञान आगया है जो आप के पास नहीं आया । अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आपको सीधा मार्ग दिखाऊँगा । ऐ मेरे बाप । शैतान की बन्दगी न कीजिए । शैतान तो रहमान (करूणामय प्रभु) का अवज्ञाकारी है। ऐ मेरे बाप । मै डरता हूँ कि कहीं आपको रहमान की कोई यातना न आ पकड़े। (मरयम, 42-45)

अफसोस आप के बाप का उत्तर कठिन था । उसने कहा ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे उपास्यों से फिर गया है ? यदि तू बाज़ ना आया तो मैं तुझपर पथराव करदूँगा । तू अलग होजा मुझसे एक लम्बी मुद्दत के लिए। (मरयम, 46)

तो इब्राहीम ने प्रेम और विनम्र से यह जवाब दिया । (इब्राहीम ने) कहा, सलाम है आपको । मैं आपके लिए अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करूँगा । वह मुझ पर बहुत मेहरबान है। मैं आप लोगों को छोड़ता हूँ और उनको भी जिन्हें अल्लाह से हटकर आप लोग पुकारा करते हैं। मैं तो अपने रब ही को पुकारूँगा । आशा है कि मैं अपने रब को पुकार कर बेनसीब नहीं रहूँगा । (मरयम, 47-48)

इब्राहीम लगातार अपने बाप और क़ौम को ईशवर के एकीकरण और उसके साझीदार न मानने की ओर बुलाते रहे, लेकिन क़ौम ने उनके संदेश को नही माना और ईशवर के साथ किसी और को साझीदार मानने पर डटे रहे । उसकी क़ौम के लोग उससे झगड़ने लगे। उसने कहा, क्या तुम मुझसे अल्लाह के विषय में झगडते हो ? जब कि उसने मुझे मार्ग दिखा दिया है। मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम उसका सहभागी ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वही पूरा होकर रहता है। प्रत्येक वस्तु मेरे रब की ज्ञान-परिधि के भीतर है। फिर क्या तुम चेतोगे नहीं ? और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों से कैसे डरूँ, जब कि तुम इस बात से नही डरते कि तुमने अल्लाह का सहभागी उस चीज़ को ठहराया है जिसका उसने तुम पर कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया ? (अल-अनआम, 80-81)

फिर एक बार इब्राहीम (अलैहिसलाम) ने अपने क़ौम से यह कहा । जब कि उसने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, तुम क्या पूजते हो ? (अल-शुअरा, 70)

तो उनकी क़ौम ने यह जवाब दिया उन्हों ने कहा हम बुतों की पूजा करते है, हम तो उन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे। उसने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो ? या ये तुम्हें कुछ लाभ या हानि पहुँचाते हैं ? (अल-शुअरा, 72-73)

तो बुद्धि और तर्क से हटकर केवल संप्रदायों के अनुसरण पर आधारित उनका न समझ उत्तर यह था । उन्होंने कहा, नहीं बल्कि हम ने तो अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है। (अल-शुअरा, 74)

तो इब्राहीम ने बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, ढुढ सबूत के द्वारा ईशवर के एकीकरण के सिद्धांत के साथ यह जवाब दिया । उसने कहा, क्या तुमने उनपर विचार भी किया जिन्हें तुम पूजते हो, तुम और तुम्हारे पहले के बाप-दादा भी ? वे सब तो मेरे शत्रु हैं सिवाय सारे संसार के रब के जिसने मुझे पैदा किया और फिर वही मेरा मार्गदर्शन करता है। और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है। और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे अच्छा करता है। और वही है जो मुझे मारेगा, फिर मुझे जीवित करेगा। और वही है जिससे मुझे इसकी आशा है कि बदला दिए जाने के दिन वह मेरी ख़ता माफ़ करदेगा । ऐ मेरे रब। मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान कर और मुझे नेक (भले) लोगों के साथ मिला। और बाद के आनेवालों में मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर । और मुझे नेमतों भरी जन्नत के वारिसों में सम्मिलित कर । और मेरे बाप को क्षमा कर दे। निश्चय ही वह पथभ्रष्ट लोगों में से है। (अल-शुअरा, 75-86)

जब क़ौम के पर्व का समय था, तो राजा और प्रजा पर्व के समारोह के लिए जंगल की ओर निकले लेकिन इब्राहीम उनके साथ नही गये । अतएव वे उसे छोड़कर चलेगए, पीठ फेरकर । फिर वह आँख बचाकर उनके देवताओं की ओर गया और कहा, क्या तुम खाते नहीं ? तुम्हें क्या हुआ है कि तुम बोलते नही फिर वह भरपूर हाथ मारते हुए उन पर पिल पड़ा । (अल-साफ़्फात, 90-93)



जब वे वापस लौटे और अपनी मूर्तियों को टुकडे-टुकडे पाया । यह कैसे संभव है कि ये मूर्तियाँ ईशवर हों और वे अपने आप की रक्षा न कर सकते हो ? यह लोग दौड़ते हुए आए ।

वे कहने लगे, किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है ? निश्चय ही वह कोई ज़ालिम है। (कुछ लोग) बोले, हमने एक नवयुवक को, जिसे इब्राहीम कहते हैं, उनके विषय में कुछ कहते सुना हैं। उन्होंने कहा, तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने कि वे भी गवाह रहें। उन्होंने कहा क्या तूने हमारे देवों के साथ यह हरकत की है, ऐ इब्राहीम । (अल अम्बिया, 59-62)

तो इब्राहीम ने उनको मुँह तोड़ जवाब दिया ।

उसने कहा, नहीं बल्कि उनके इस बड़े-ने की होगी उन्हीं से पूछ लो, यदि वे बोलते हों । (अल-अम्बिया, 63)

इस जवाब के सामने वे अपने आप को निम्न समझने लगे । तब वे अपनी ओर पलटे और कहने लगे, वास्तव में ज़ालिम तो तुम्हीं लोग हो । किन्तु फिर वे बिलकुल औंधे हो रहे। (फिर बोले) तुझे तो मालूम है कि ये बोलते नहीं । (अल-अंबिया, 64-65)

तो इब्राहीम ने उन्हें एक और मुँह तोड़ जवाब दिया । उसने कहा फिर क्या तुम अल्लाह से हटकर उसे पूजते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सके और न तुम्हें कोई हानि पहुँचा सके? धिक्कार है तुम पर, और उनपर भी जिनको तुम

अल्लाह को छोड़कर पूजते हो। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? (अल-अंबिया, 66-67)

जब वे बुद्धिमता, सबूत और तर्क खो बैठे, तो इब्राहीम से बदला लेना चाहा । उन्होंने कहा, जला दो उसे और सहायक हो अपने देवताओं के यदि तुम्हें कुछ करना है। (अल-अंबिया,68)

परन्तु ईशवर ने इब्राहीम को बचा लिया।

हमने कहा, ऐ आग ठंडी होजा और सलामती बन जा इब्राहीम पर। उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही किन्तु हमने उन्ही को घाटे में डाल दिया । (अल-अंबिया, 69-70)

जब ईशवर ने इब्राहीम को बचा लिया, तो इब्राहीम फिर से अपने क़ौम के राजा से बहस करने पहुँच गये । क्या तुमने उसको नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के सिलसिले में झगड़ा किया था, इस कारण कि अल्लाह ने उसे राज्य दे रखा था? जब इब्राहीम ने कहा, मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है। (अल-बक़रा, 258)

इस सीधे मुँह-तोड़ जवाब के सामने उन्हें यह न समझ जवाब मिला । उसने कहा, मैं भी तो जिलाता और मारता हूँ । (अल-बक़रा, 258)

इब्राहीम ने इस बेकार जवाब और परस्पर संवाद से निकलते हुए यह बहस नहीं की, वह भी किसी व्यक्ति को मार सकते हैं या छोड़ सकते हैं । इब्राहीम ने कहा, अच्छा तो अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है, तो तू उसे पश्चिम से ले आ। इस पर वह विधर्मी चकित रह गया । अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा मार्ग नही दिखाता । (अल-बक़रा, 258)

इस प्रकार से उनके सबूत और तर्क की कमज़ोरी सामने आयी । फिर परस्पर संवाद के बाद इब्राहीम अपने आँखों से ईशवर के जिलाने और मारने की शक्ति को देखे । और याद करो जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब । मुझे दिखा दे, तू

मुर्दों को कैसे जीवित करेगा? (रब ने) कहा, क्या तुझे विश्वास नहीं ? उसने कहा, क्यों नहीं, किन्तु यह निवेदन इसलिए है कि मेरा दिल संतुष्ट हो जाए। (रब ने) कहा, अच्छा, तो चार पक्षी ले, फिर उन्हें अपने साथ भली-भाँति हिला-मिला ले, फिर उनमें से प्रत्येक को एक-एक पर्वत पर रखदे, फिर उनको पुकार, वे तेरे पास लपक्कर आएँगे। और जानले कि अल्लाह अत्यंत प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है। (अल-बक़रा, 260)

ईशवर ने इब्राहीम और उनके पुत्र इसमाईल को मक्का मुकर्रमः में अपने घर से मूर्तियों को निकालकर पवित्र बनाने का आदेश दिया । और याद करो जब हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और शान्ति स्थल बनाया और, इब्राहीम के स्थन में से किसी जगह को नमाज़ की जगह बना लो। और इब्राहीम और इसमाईल को जिम्मेदार बनाया कि तुम मेरे इस घर को तवाफ़ करनेवालों और एतिकाफ़ करनेवालों के लिए और रुकूअ और सजदा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखो । और याद करो जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब। इसे शान्तिमय भू-भाग बनादे और इसके उन निवासियों को फलों की रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए । (रब ने) कहा और जो इनकार करेगा थोडा फ़ायदा तो उसे भी दूँगा, फिर उसे घसीटकर आग की यातना की ओर पहुँचा दूँगा, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है । और याद करो जब इब्राहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे (तो उन्हों ने प्रार्थना की), ऐ हमारे रब । हमारी ओर से इसे स्वीकार करले, निस्संदेह तू सुनता-जानता है। ऐ हमारे रब । हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय बना और हमें हमारी इबादत के तरीक़े बता और हमारी तौबा क़बूल कर । निस्संदेह तू तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। (अल बक़रः 125-128)



फिलस्थीन के शहर खलील में इब्राहीम की मसजिद इब्राहीम



3. मूसा अलैहिसलाम

बनी इस्राईल आपस में इब्राहीम अलैहि सलाम से चली आयी हुई बातों की चर्चा किया करते थे कि उनके संतान मे एक लड़का पैदा होगा, जिसके हाथों पर इजीप्ट के राजा का विनाश होगा । यह ख़बर बनी इस्राईल के बीच प्रसिद्ध थी । इजीप्ट के राजा के सामने उसके कुछ मंत्रियों ने इसका चर्चा किया, तो उसी समय इस लड़के के पैदा होने के डर से राजा (फिरऔन) ने बनी इस्राईल के सारे नवजात लड़कों की हत्या करने का आदेश दिया । राजा के ज़ुल्म और अन्याय से बनी इस्राईल का जीवन गुज़र रहा था । निस्संदेह फ़िरऔन ने धरती में सकरशी की और उसके निवासियों को विभिन्न गिरोहों में विभक्त करदिया । उनमें से एक गिरोह को कमज़ोर कर रखा था। वह उनके बेटों की हत्या करता और चाहता था कि उनकी स्त्रियाँ जीवित रहें । निश्चय ही वह बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था। (अल-क़सस, 4)

तो ईशवर ने बनी इस्राईल के कमज़ोरों पर उपकार करने का निर्णय लिया और हम यह चाहते थे कि उन लोगों पर उपकार करें जो धरती में कमज़ोर पड़े थे और उन्हें नायक बनाएँ और उन्हीं को वारिस बनाएँ । और धरती में उन्हें सत्ताधिकार प्रदान करें और उनकी ओर से फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को वह कुछ दिखाएँ जिसकी उन्हें आशंका थी। (अल-क़सस, 5-6)

हालांकि फ़िरऔन ने मूसा का जन्म न होने के लिए पूरी तरह एहतियात किया था, परन्तु उसने गर्भवती महिलाओं पर सुरक्षा कर्मियों को तैनात कर दिया था, जो उनके गर्भकाल के समय का ज्ञान रखते थे, और जो भी महिला लडके को जन्म देती थी, तो ये दरिंदे उसी समय लडके की हत्या कर देते थे, लेकिन ईशवर ने फ़िरऔन, हामान और उसकी सेना को उसी विषय से पीडित करना चाहा जिससे वह लोग डरते थे। जब मूसा की माँ ने जन्म दिया हमने मूसा की माँ को संकेत किया, उसे दूध पिला। फिर जब तुझे उसके विषय में भय हो तो उसे दरिया में डाल दे और न तुझे कोई भय हो और न तू शोकाकुल हो। हम उसे तेरे पास लौटा लाएँगे और उसे रसूल बनाएँगे। (अल-क़सस,7)

मूसा की माँ अपने बच्चे के बारे में सोंच सोंच कर भयभीत हो गयी, परन्तु उसने बच्चे को डिब्बे में रख दिया और समुद्र में फेंक दिया ।

अन्ततः फ़िरऔन के लोगों ने उसे उठा लिया ताकि परिणाम स्वरूप वह उनका शत्रु और उनके लिए दुख का कारण बने । निश्चय ही फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं से बड़ी चूक हुई । (अल-क़सस, 8)

फ़िरऔन की पत्नी के मन में मूसा के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ फ़िरऔन की स्त्री ने कहा कि यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठण्डक है। इसकी हत्या न करो, कदाचित यह हमें लाभ पहुँचाए या हम इसे अपना बेटा ही बनालें । और वे (परिणाम से) बेख़बर थे। (अल-क़सस, 9)

जहाँ तक मूसा की माँ की स्थिति का सवाल था, तो

और मूसा की माँ का हृदय परिशून्य हो गया । निकट था कि वह उसको प्रकट करदेती, यदि हम उसके दिल को इस ध्येय से न संभालते कि वह मोमिनों में से हो। उसने उसकी बहन से कहा कि तू उसके पीछे-पीछे जा। अतएव वह उसे दूर ही दूर से देखती रही, और वे महसूस नहीं कर रहे थे। हमने पहले ही से दूध पिलानेवालियों को उसपर हराम कर दिया। अतः उसने (मूसा की बहन ने) कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इसके पालन-पोषण का ज़िम्मा लें और इसके शुभ-चिंतक हों । इस प्रकार हम उसे उसकी माँ के पास लौट लाए, ताकि उसकी आँख ठण्डी हो और वह शोकाकुल न हो, और ताकि वह जानले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं। (अल-क़सस, 10-13)



मूसा का पालन-पोषण तानाशाह फ़िरऔन के घर में हुआ और जब वह अपनी जवानी को पहुँचा और भरपूर हो गया तो हमने उसे निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया । और सुकर्मी लोगों को हम इसी प्रकार बदला देते हैं । उसने नगर में ऐसे समय प्रवेश किया जबकि वहाँ के लोग बेख़बर थे। उसने कहा दो आदमियों को लड़ते पाया । यह उसके अपने गिरोह का था और यह उसके शत्रुओं में से था । जो उसके गिरोह में से था उसने उसके मुक़ाबिले में, जो उसके शत्रुओं में से था, सहायता के लिए उसे पुकारा। मूसा ने उसे घूँसा मारा और उसका काम तमाम करदिया । कहा, यह शैतान की कार्रवाई है। निश्चय ही वह खुला पथभ्रष्ट करनेवाला शत्रु है। उसने कहा, ऐ मेरे रब, मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया । अतः तू मुझे क्षमा कर दे । अतएव उसने उसे क्षमा कर दिया। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है। उसने कहा, ऐ मेरे रब। जैसे तूने मुझ पर अनुकम्पा दर्शाई है, अब मैं भी कभी अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा। (अल-क़सस, 14-17)

लेकिन जब मूसा ने अपने और इस्राईली के दुशमन की हत्या कर दी फिर दूसरे दिन वह नगर में डरता, टोह लेता हुआ प्रविष्ट हुआ । इतने में अचानक क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिसने कल उससे सहायता चाही थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, तू तो प्रत्यक्ष बहका हुआ व्यक्ति है। फिर जब उसने इरादा किया कि उस व्यक्ति को पकड़े, जो उन दोनों का शत्रु था, तो वह बोल उठा, ऐ मूसा, क्या तू चाहता है कि मुझे मारडाले, जिस प्रकार तूने कल एक व्यक्ति को मार डाला? धरती में बस तू निर्दय अत्याचारी बनकर रहना चाहता है और यह नहीं चाहता कि सुधार करने वाला हो। इसके बाद एक आदमी नगर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया । उसने कहा, ऐ मूसा, सरदार तेरे विषय में परामर्श कर रहे हैं कि तुझे मार डालें। अतः तू निकल जा। मैं तेरा हितैषी हूँ। फिर वह वहाँ से डरता और ख़तरा भाँपता हुआ निकल खड़ा हुआ । उसने कहा, ऐ मेरे रब। मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे। (अल-क़सस, 18-21)

मूसा “ईजिप्ट” से निकल कर “मदयन” की ओर निकल पडे । जब उसने “मदयन” का रुख़ किया तो कहा, आशा है, मेरा रब मुझे ठीक रास्ते पर डाल देगा । और जब वह मदयन के पानी (कुएँ) पर पहुँचा तो उसने उसपर पानी पिलाते लोगों का एक गिरोह पाया । और उनसे हटाकर एक ओर दो स्त्रियों को पाया जो अपने जानवरों को रोक रही थी। उसने कहा, तुम्हारा क्या मामला है ? उन्होंने कहा, हम उस समय तक पानी नहीं पिला सकते जब तक ये चरवाहे अपने जानवर निकाल न ले जाएँ, और हमारे बाप बहुत ही बूढ़े हैं। तब उसने उन दोनों के लिए पानी पिला दिया। फिर छाया की ओर पलट गया और कहा, ऐ मेरे रब, जो भलाई भी तू मेरी ओर उतार दे, मैं उसका ज़रूरतमंद हूँ। (अल-क़सस, 22-24)



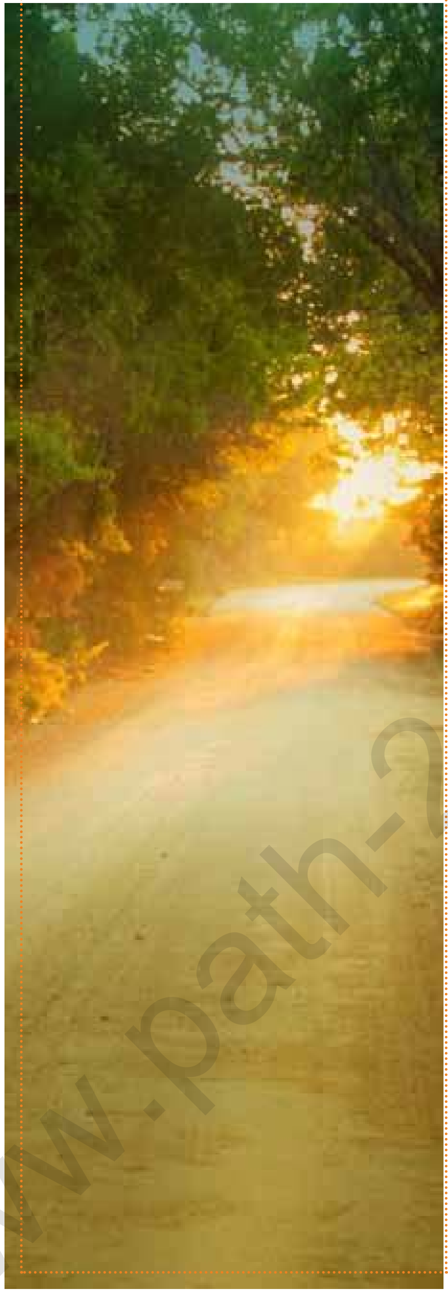
इन दो स्त्रियों ने अपने पिता (ईशवर के नबी) शुऐब को मूसा के बारे में बताया, तो शुऐब ने अपनी एक लड़की को मूसा के पास भेजा । फिर उन दोनों में से एक लजाती हुई उसके पास आई । उसने कहा, मेरे बाप आपको बुला रहे हैं, ताकि आपने हमारे लिए (जानवरों को) जो पानी पिलाया है, उसका बदला आपको दें। (अल-क़सस, 25)

मूसा शुऐब के पास पहुँचे । फिर जब वह उसके पास पहुँचा और उसे अपने सारे हालात सुनाए तो उसने कहा, कुछ भय न करो। तुम ज़ालिम लोगों से छुटकारा पागए हो। (अल-क़सस, 25)

जब शुऐब की लड़की ने मूसा की अमानतदारी देखी तो । उन दोनों स्त्रियों में से एक ने कहा, ऐ मेरे बाप। इसको मज़दूरी पर रख लीजिए। अच्छा व्यक्ति, जिसे आप मज़दूरी पर रखें, वही है जो बलवान, अमानतदार हो। (अल-क़सस, 26)

शुऐब ने मूसा से यह कहा । उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का विवाह तुम्हारे साथ इस शर्त पर करदूँ कि तुम आठ वर्ष तक मेरे यहाँ नौकरी करो। और यदि तुम दस वर्ष पूरे कर दो तो यह तुम्हारी ओर से होगा । मैं तुम्हें कठिनाई में डालना नहीं चाहता। यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक पाओगे। कहा, यह बात मेरे और आपके बीच तय हो चुकी है। इन दोनों अवधियों में से जो भी मैं पूरी करदूँ तो मुझ पर कोई ज़्यादती नहीं होगी। और जो कुछ हम कह रहे हैं उसके विषय में अल्लाह पर भरोसा काफ़ी है। (अल-क़सस, 27-28)

जब मूसा ने आपसी संझौते के अनुसार अपनी नौकरी की अवधि (8



वर्ष) पूरी करली, तो अपनी पत्नी को लेकर यात्रा प्रारंभ की ।

फिर जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी और अपने घरवालों को लेकर चला तो तूर की ओर उसने एक आग-सी देखी। उसने अपने घरवालों से कहा, ठहरो, मुझे एक आग नज़र आई है। कदाचित मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर ले आऊँ या उस आग से कोई अंगारा ही, ताकि, तुम ताप सको। (अल-क़सस, 29)

इस समय में मूसा को ईशवर की ओर से यह आदेश दिया गया । फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो दाहिनी घाटी के किनारे से शुभ क्षेत्र में वृक्ष से आवाज़ आई, ऐ मूसा, मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब। और यह कि डाल दे अपनी लाठी। फिर जब उसने उसे देखा कि वह बलखा रही है, जैसे कोई साँप हो, तो वह पीट फेरकर भागा और पीछे मुड़कर भी न देखा। ऐ मूसा । आगे आ और भय न कर। निस्संदेह तेरे लिए कोई भय की बात नहीं। अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल। बिना किसी ख़राबी के चमकता हुआ निकलेगा । और भय के समय अपनी भुजा को अपने से मिलाए रख। ये दो निशानियाँ हैं तेरे रब की ओर से फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास लेकर जाने के लिए। निश्चय ही वे बड़े अवज्ञाकारी लोग हैं। (अल-क़सस, 30-32)

लेकिन मूसा ने कुछ समय पहले अपने दुशमन की हत्या की थी, और उनकी जिट्ठा में दोश भी था, इन्हीं दो कारणों से मूसा को फ़िरऔन से डर होने लगा था । उसने कहा, ऐ मेरे रब। मुझसे उनके एक आदमी की जान गई है। इसलिए मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे। मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे बढकर धारा प्रवाह है। अतः उसे मेरे साथ सहायक के रूप में भेज कि वह मेरी पुष्टि करे। मुझे भय है कि वे मुझे झुठलाएँगे । (अल-क़सस, 33-34)

मूसा ने अपने भाई हारून को अपने लिए मददगार बनाने की ईशवर से प्रार्थना की । और मेरे लिए मेरे अपने घरवालों में से एक सहायक नियुक्त कर दे, हारून को, जो मेरा भाई है। उसके द्वारा मेरी कमर मज़बूत कर। और उसे मेरे काम में शरीक कर दे, कि हम अधिक से अधिक तेरी तसबीह करें, और तुझे ख़ूब याद करें। निश्चय ही तू हमे ख़ूब देख रहा है। कहा, दिया गया तुझे जो तूने माँगा, ऐ मूसा। (ता-हा, 29-36)



जब मूसा और उनके भाई फ़िरऔन के पास पहुँचे, तो अपने पास आया हुआ देवत्व संदेश को सामने रखते हुए एक ईशवर की प्रार्थना करने की ओर उसको बुलाया, जिसका कोई साझी नहीं है। उसको अपने ज़ुल्म, अन्याय से बनी इस्राईल के क़ैदियों को आज़ाद करने, उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार अपने रब की प्रार्थना करने, उन्हें अपने ईशवर के एकीकरण और उसकी विनती करने के लिए छोड़ दे। तो फ़िरऔन घमण्ड करने लगा, सरकशी पर उतर आया और मूसा की ओर अल्पीकरण और नीच निगाहों से देखते हुए यह कहा। (फ़िरऔन ने) कहा, क्या हमने तुझे, जब कि तू बच्चा था, अपने यहाँ पाला नहीं था ? और तू अपनी अवस्था के कई वर्षों तक हम में रहा, और तू ने अपना वह काम किया, जो किया। तू बडा ही कृतघ्न है। (अल-शुअरा, 18-19)

तो मूसा ने उन्हें यह जवाब दिया (मूसा ने) कहा, ऐसा तो मुझसे उस समय हुआ जब कि मैं चूक गया था। (अल-शुअरा, 20)

यानी देवत्व संदेश और धार्मिक नियम मेरे पास आने से पहले-पहले फिर जब मुझे तुम्हारा भय हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया। फिर मेरे रब ने मुझे निर्णय शक्ति प्रदान की और मुझे रसूलों में सम्मिलित किया । (अल-शुअरा, 21)

फिर मूसा ने पालन-पोषण के कारण फ़िरऔन के एहसान जताने पर यह उत्तर दिया यही वह उदार अनुग्रह है जिसका एहसान तू मुझपर जताता है कि तू ने इस्राईल की संतान को ग़ुलाम बना रखा है। (अल-शुअरा, 22)

यानी यह अनुग्रह जिसके अनुसार तू मुझ पर एहसान जता रहा है, जब कि मैं भी बनी इस्राईल का एक सदस्य हूँ, यह अनुग्रह तू ने बनी इस्राईल को जो ग़ुलाम बनाया है और अपनी सेवा, रक्षा के लिए उपयोग किया है, उसके बदले के समान है। फिर फ़िरऔन ने मूसा से उस ईशवर के बारे में प्रश्न किया, जिसकी ओर वह निर्देश करते हैं । फ़िरऔन ने कहा, और यह सारे संसार का रब क्या होता है?(अल-शुअरा, 23)



तो फ़िरऔन को यह संदेह रहित उत्तर मिला । (मूसा ने) कहा, आकाशों और धरती का रब और जो कुछ इन दोनों के मध्य है उसका भी, यदि तुम्हें यक़ीन हो। (अल-शुअरा, 24)

फ़िरऔन मज़ाक उड़ाने लगा । उसने (फ़िरऔन ने) आस-पास वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो ? (अल- शुअरा, 25)

मूसा किसी की परवाह किये बिना अपना संदेश देते रहे । (मूसा ने) कहा, तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब। (अल-शुअरा, 26)

फ़िरऔन अपनी सरकशी में बड़ने लगा । (फ़िरऔन) बोला, निश्चय ही तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिल्कुल ही पागल है। (अल-शुअरा, 27)

लेकिन ईशवर के रसूल मूसा अपने मुद्दे से नहीं हटे । (मूसा ने) कहा, पूर्व और पश्चिम का रब और जो कुछ उनके बीच है उसका भी, यदि तुम कुछ बुद्धि रखते हो। (अल-शुअरा, 28)

बुद्धिमत्ता, सबूत और तर्क से खाली घमण्डी और तानाशाह फ़िरऔन ने धमकी देना प्रारंभ कर दिया । (फ़िरऔन) बोला, तुम ने यदि मेरे सिवा किसी और को हाकिम बनाया तो मैं तुम्हें बन्दी बना कर रहूँगा । (अल- शुअरा, 29)

जिस प्रकार से मूसा को मज़ाक और परिहास अपना संदेश पहुँचाने से रोक न सका, उसी प्रकार से धमकियाँ भी उन्हें रोक न सकी, परन्तु यह उत्तर दिया । (मूसा ने) कहा, क्या यदि मैं तेरे पास एक स्पष्ट चीज़ ले आऊँ तब भी ? (फ़िरऔन) बोला, अच्छा, वह ले आ, यदि तू सच्चा है । फिर उसने (मूसा ने) अपनी लाठी डाल दी, तो अचानक क्या देखते हैं कि वह एक प्रत्यक्ष अजगर है। और उसने (मूसा ने) अपना हाथ बाहर खींचा, तो फिर क्या देखते हैं कि वह देखनेवालों के सामने चमक रहा है। (अल-शुअरा, 30-33)



फ़िरऔन को यह भय होने लगा कि कहीं लोग मूसा पर विश्वास करने लगे। उसने (फ़िरऔन ने) अपने आस-पास के सरदारों से कहा, निश्चय ही यह एक बडा जादूगर है। चाहता है कि अपने जादु से तुम्हें तुम्हारी अपनी भूमि से निकाल बाहर करे, तो अब तुम क्या कहते हो ? उन्होंने कहा, इसे और इसके भाई को अभी टाले रखिए, और जमा करनेवालों को नगरों में भेज दीजिए कि वे हर एक माहिर जादूगर को आपके पास ले आएँ। (अल-शुअरा, 34-37)

फिर जब फ़िरऔन ने मूसा द्वारा सारे सबूत देख लिया, तो वह घमण्ड करते हुए इनको झुठलाया और इनका तिरस्कार किया । और हमने फ़िरऔन को अपनी सब निशानियाँ दिखाई, किन्तु उसने झुठलाया और इन्कार किया । उसने कहा, ऐ मूसा । क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादु से हमको हमारे अपने भू-भाग से निकाल दे? अच्छा, हम भी तेरे पास ऐसा ही जादू लाते हैं। अब हमारे और अपने बीच एक निश्चित स्थान ठहराले, कोई बीच की जगह, न हम इसके विरुद्ध जाएँ और न तू। कहा, उत्सव का दिन तुम्हारे वादे का है, और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठे हो जाएँ। तब फ़िरऔन ने पलटकर अपने सारे हथकण्डे जुटाए। और (मुक़ाबले में) आ गया। (ता-हा, 56-60)

मूसा को अपनी क़ौम पर दण्ड का भय हुआ । मूसा ने उन लोगों से कहा, तबाही है तुम्हारी, झूठ गढकर अल्लाह पर नथोपो कि वह तुम्हें एक यातना से विनष्ट कर दे, और झूठ जिस किसी ने भी गढकर थोपा वह असफल रहा। (ता-हा, 61)

यह लोग आपस में अंतर करनेलगे, और इनमें से एक ने यह कहा, यह किसी जादूगर की वाणी नहीं है। इसपर अपने मामले में उन्होंने परस्पर विचार विनिमय किया और चुपके-चुपके कानाफूसी की। (ता-हा, 62)

लेकिन वह लोग पुनरावृत्ति करने लगे, और उन्में से अधिक लोग यह कहने लगे

कहने लगे, ये दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादु से तुम्हें तुम्हारे भू-भाग से निकाल बाहर करें, और तुम्हारी उत्तम और उच्च प्रणाली को तहस-नहस करके रख दें। अतः तुम सब मिलकर अपना उपाय जुटा लो, फिर पंक्तिबद्ध होकर आओ। आज जो प्रभावी रहा, वही सफल है। वे बोले, ऐ मूसा। या तो तुम फेंको या फिर हम पहले फेंकते हैं। कहा, नहीं, बल्कि तुम्ही फेंको। फिर अचानक क्या देखते हैं कि उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ उनके जादु से उसके ख्याल में दौड़ती हुई प्रतीत हुई। (ता-हा, 63-66)

मूसा को यह भय हुआ कि कहीं जादुगर लोगों को धोखे में न डाल दें । और मूसा अपने जी में डरा। (ता-हा, 67)

और ईशवर की ओर से मूसा के पास यह संदेश आया। हमने कहा, मत डर। निस्संदेह तू ही प्रभावी रहेगा । और डाल दे जो तेरे दाहिने हाथ में है। जो कुछ उन्होंने रचा है वह उसे निगल जाएगा। जो कुछ उन्होंने रचा है, वह तो बस जादुगर का स्वांग है और जादुगर सफल नही होता, चाहे वह जैसे भी आए । (ता-हा, 68-69) हमने मूसा की ओर प्रकाश ना की कि अपनी लाठी डाल दे। फिर क्या देखते हैं कि वह उनके रचे हुए स्वांग को निग़लती जा रही है। इस प्रकार सत्य प्रकट हो गया और जो कुछ वे कर रहे थे, मिथ्या होकर रहा। (अल-आराफ़, 117-118)

और आश्चर्यक परिणाम यह रहा । अतः वे हार गए और अपमानित होकर रहे। और जादुगर सहसा सजदे में गिर पड़े। बोले, हम सारे संसार के रब पर ईमान ले आए, मूसा और हारून के रब पर। (अल-आराफ़, 119-122) अन्ततः जादुगर सजदे में गिर पडे। बोले, हम हारून और मूसा के रब पर ईमान ले आए । (ताहा, 70)

तो फ़िरऔन का उत्तर मूर्खता पर आधारित था । उसने कहा, तुमने मान लिया उसको, इससे पहले कि मैं तुम्हें इसकी अवज्ञा देता ? निश्चय ही यह तुम सबका प्रमुख है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। अच्छा, अब मैं तुम्हारे हाथ और

पाँव विपरीत दिशाओं से कटवादूँगा और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली देदूँगा । (ताहा, 71)

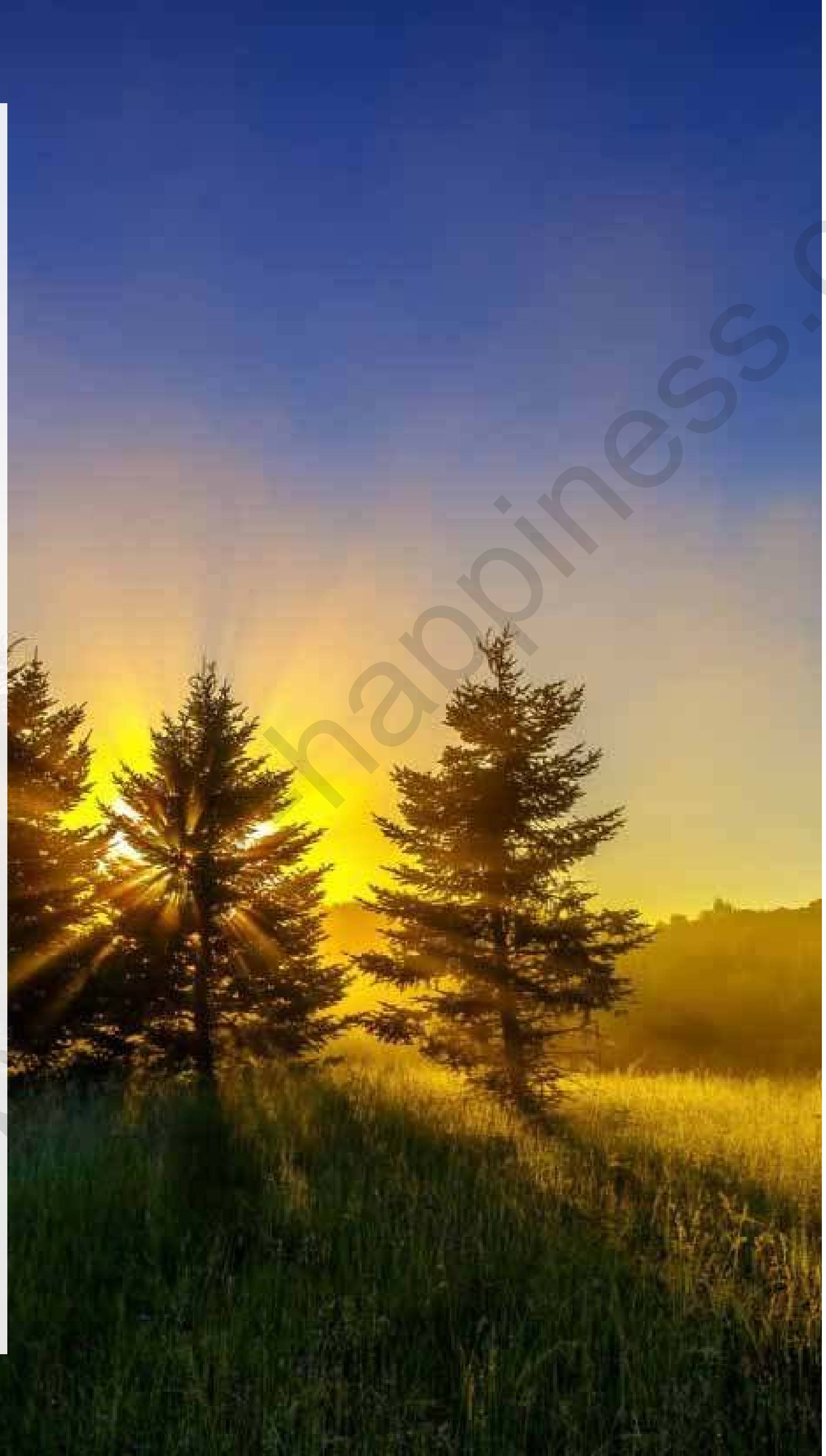
जादुगरों का जवाब फ़िरऔन के लिए आश्चर्य था, जो इस बात का वर्णन कर रहा था कि ईमान अपने भक्तों पर कैसे प्रभावित होता है? उन्होंने कहा, कुछ हरज नही, हम तो अपने रब ही की ओर पलटकर जानेवाले हैं। हमें तो इसी की लालसा है कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को क्षमा कर दे, क्योंकि हम सबसे पहले ईमान लाए। (अल-शुअरा, 50-51)

फ़िरऔन ईमान वालों को सदा तकलीफ देता रहा, तो ईशवर ने उसको और उसके साथियों को दण्ड दिया और हमने फ़िरऔनियों को कई वर्ष तक अकाल और पैदावर की कमी में ग्रस्त रखा कि वे चेतें । फिर जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती है तो कहते हैं, यह तो है ही हमारे लिए। और जब उन्हें कोई बुरी हालत पेश आए तो वे उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत (अपशकुन) ठहराएँ। सुन लो, उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के पास है, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं। (अल-आराफ़, 130-131)

लेकिन वे न ईमान लाए और न तौबा की वे बोले, तू हम पर जादू करने के लिए चाहे कोई भी निशानी हमारे पास ले आए, हम तुझपर ईमान लानेवाले नही। अन्ततः हमने उनपर तूफ़ान और टिड्डियाँ और छोटे कीडे मेंढक और रक्त कितनी ही निशानियाँ अलग-अलग भेजी, किन्तु वे घमण्ड ही करते रहे। वे थे ही अपराधी लोग। (अल-आराफ़, 132-133)

जब वे हिम्मत हार गए जब कभी उनपर यातना आ पड़ती, कहते, ऐ मूसा हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो, उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उसने तुमसे कर रखी है। तुमने यदि हम पर से यह यातना हटा दी तो हम अवश्य ही तुमपर ईमान ले आएँगे और इस्राईल की संतान को तुम्हारे साथ जाने देंगें। किन्तु जब हम उनपर से यातना को एक नियत समय के लिए, जिस तक वे पहुँचनेवाले ही थे, हटा लेते तो क्या देखते कि वे वचन भंग करने लग गए। (अल-आराफ़, 134-135)

जब वे अपने वचन को पूरा नहीं किया बल्कि उसको भंग कर दिया । फिर हमने उनसे बदला लिया और उन्हें गहरे पानी में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों



को ग़लत समझा और उनसे ग़ाफिल हो गए। (अल-आराफ़, 136)

जब ईजिप्ट के वासी अपने राजा फ़िरऔन के पालन में अपनी ज़िद हठधर्मी में और अल्लाह के नबी मूसा इब्ने इम्रान के विरोध में हद से ज्यादा आगे बड़ गये। जब कि ईशवर ने इनके सामने महत्वपूर्ण सबूत रख दिये, बुद्धि को आश्चर्य करने और निगाहों को चौंका देनेवाले चमत्कार भी दिखलाये, फिर भी वे न पुनरावृत्ति करे और न सुधरे। फ़िरऔन की क़ौम में से बहुत कम लोग ईमान लाये। सारे जादूगर और बनी इस्राईल के सारे लोग फ़िरऔन के ज़ुल्म और उसके दण्ड के भय से अपने ईमान को गुप्त रखा करते थे । ईशवर ने मूसा और उनके भाई हारून को यह आदेश दिया कि वे अपने भक्तों के लिये फ़िरऔनियों के घरों से हटकर अलग घरों का चयन करें ताकि जब भी उन्हें आदेश मिले तो वे प्रस्थान करने के लिए तैयार रहें, आपस में एक दूसरे को पहचान सकें और इन घरों में ईशवर की प्रार्थना करें। हमने मूसा और उसके भाई की ओर प्रकाशना की कि, तुम दोनों अपने लोगों के लिए मिस्त्र में कुछ घर निश्चित करलो और अपने घरों को क़िबला बना लो। और नमाज़ क़ायम करो और ईमानवालों को शुभ-सूचना दे दो। (यूनुस, 87)

फिर ईशवर ने अपने बन्दे मूसा को यह आदेश दिया । हमने मूसा की ओर प्रकाशना की, मेरे बन्दों को लेकर रातों-रात निकल जा। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा (अल-शुअरा, 52)

तो फ़िरऔन का उत्तर यह रहा । इस पर फ़िरऔन ने जमा करनेवालों को नगरों में भेजा कि यह गिरे-पड़े लोगों का एक गिरोह है, और ये हमें क्रुद्ध कर रहे हैं। और हम चौकन्ना रहनेवाले लोग हैं। (अल-शुअरा, 53-56)

ईशवर की इच्छा यह थी। इस प्रकार हम उन्हें बाग़ों और स्त्रोतो और ख़ज़ानों और अच्छे स्थान से निकाल लाए। ऐसा ही हम करते हैं, और इनका वारिस हमने इस्राईल की संतान को बनादिया। (अल-शुअरा, 57-59)

वे बनी इस्राईल से जा मिले । सुबह-तड़के उन्होंने उनका पीछा किया। (अल-शुअरा, 60)

जब वे बनी इस्राईल तक पहुँच गये। फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो पकड़े गए। (अल-शुअरा, 61)

लेकिन ईशवर ने रसूल मूसा का जवाब अपने ईशवर पर भरोसा और यक़ीन से भरा था । उसने कहा, कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा । (अल-शुअरा, 62)

तो ईशवर की कृपा और मार्गदर्शन इस रूप में आ गयी । तब हमने मूसा की ओर प्रकाशना की, अपनी लाठी सागर पर मार। तो वह फट गया और (उसका) प्रत्येक टकुड़ा एक बडे पहाड़ की भाँति हो गया। और हम दूसरों को भी निकट ले आए। हमने मूसा को और उन सब को जो उसके साथ थे, बचा लिया। और दूसरों को डुबो दिया। निस्संदेह इस में एक बडी निशानी है। इस पर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है। (अल- शुअहा, 63-68)

इस गंभीर घड़ी में और हमने इस्राईलियों को सागर से पार करा दिया। फिर फ़िरऔन और उसकी सेनाओं ने सरकशी और ज्यादती के साथ उनका पीछा किया। (यूनुस, 90)

इस समय फ़िरऔन को अपनी मृत्यु और डूबने का पूरा विश्वास हो गया । यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो पुकार उठा, मैं ईमान ले आया कि उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं जिसपर इस्राईल की संतान ईमान लाई। अब मैं आज्ञाकारी हूँ। (यूनुस, 90)

लेकिन उससे देर हो चुकी थी, परन्तु मौत ने उसको आ पकड़ा (अल्लाह ने कहा) क्या अब ? हालाँकि इससे पहले तू ने अवज्ञा की और बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था । (यूनुस, 91)





ईशवर ने इस्राईलों के दुश्मन को डुबाते हुए उन पर अपनी अनुग्रह पूरी कर दी । परन्तु जब वे समुद्र पार किये । और इस्राईल की संतान को हमने सागर से पार करा दिया, फिर वे ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपनी कुछ मूर्तियों से लगे बैठे थे। कहने लगे, ऐ मूसा। हमारे लिए भी कोई ऐसा उपास्य ठहरा दे, जैसे इनके उपास्य हैं। (अल-आराफ़, 138)

यानी फ़िरऔन और उसकी सेना से ईशवर द्वारा मुक्ति की अनुग्रह के बाद इस्राईलों ने मूर्खता पर आधारित विनती की । उसने कहा, निश्चय ही तुम बड़े ही अज्ञानी लोग हो। निश्चय ही वह सब कुछ जिस में ये लोग लगे हुए हैं, बरबाद होकर रहेगा और जो कुछ ये कर रहे हैं सर्वथा व्यर्थ है। (अल-आराफ़, 138-139)

फिर मूसा अपने ईशवर की ओर से रखी हुई अवधी पूरा करने चले गये । हमने मूसा से तीस रातों का वादा ठहराया, फिर हमने दस और बढ़ाकर उसे पूरा किया। इस प्रकार उसके रब की ठहराई हुई अवधि चालीस रातों में पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे पीछे तुम मेरी क़ौम में मेरा प्रतिनिधित्व करना और सुधारना-संवारना और बिगाड़ पैदा करने वालों के मार्ग पर न चलना। (अल-आराफ़, 142)

ईशवर ने मूसा को अपने संदेश और वाणी से नवाज़ा (उपकृत किया) । उसने कहा, ऐ मूसा। मैंने दूसरे लोगों के मुक़ाबले में तुझे चुनकर अपने संदेशों और अपनी वाणी से तुझे नवाज़ा (उपकृत किया) अतः जो कुछ मैं तुझे दूँ उसे ले और कृतज्ञता दिखा। (अल-आराफ़, 144)

ईश्वर ने मूसा को उपदेश और देवत्व आदेश से भरी हुई पुस्तक तौरात के द्वारा अनुग्रह किया । और हमने उसके लिए तख्तियों पर उपदेश के रूप में हर चीज़ और हर चीज़ का विस्तृत वर्णन लिख दिया। अतः उनको मज़बूती से पकडा उनमें उत्तम बातें हैं। अपने क़ौम के लोगों को हुक्म दे कि वे उनको अपनाएँ । मैं शीघ्र ही तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊँगा । (अल-आराफ़, 145)

जब मूसा ने अपनी अवधि पूरी कर ली और ईश्वर ने उन्हें तौरात से नवाज़ा (उपकृत किया) तो मूसा अपनी क़ौम के पास लौटे और यह देखा । और मूसा के पीछे उसकी क़ौम ने अपने ज़ेवरों से अपने लिए एक बछडा बनालिया जिस में से बैल की-सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्होंने देखा नहीं कि वह न तो उनसे बातें करता है और न उन्हें कोई राह दिखाता है। उन्होंने उसे अपना उपास्य बनालिया और वे बडे अत्याचारी थे। और जब (चेतावनी से) उन्हें पश्चात्ताप हुआ और उन्होंने देखलिया कि वास्तव में वे भटक गए हैं तो कहने लगे, यदि हमारे रब ने हमपर दया न की और उसने हमें क्षमा न किया तो हम घाटे में पड़ जाएँगे । (अल-आराफ़, 148-149)

इस घटना का असर मूसा पर बहुत बुरा हुआ । और जब मूसा क्रोध और दुख से भरा हुआ अपनी क़ौम की ओर लौटा तो उसने कहा, तुम लोगों ने मेरे पीछे मेरी जगह बुरा किया। क्या तुम अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे ? फिर उसने तख्तियाँ डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़कर उसे अपनी ओर खींचने लगा । वह बोला, ऐ मेरी माँ के बेटे । लोगों ने मुझे कमज़ोर समझ लिया और निकट था कि मुझे मार डालते। अतः शत्रुओं को मुझपर हँसने का अवसर न दे और अत्याचारी लोगों में मुझे सम्मिलित न कर । (अल-आराफ़, 150-151)

फिर मूसा ने बछडा बनाने वाले सामरी से यह कहा । ऐ सामरी । तेरा क्या मामला है ? (ता-हा, 95)

तो सामरी ने यह जवाब दिया उसने कहा, मुझे उसकी सूझ प्राप्त हुई जिसकी सूझ उन्हें प्राप्त न हुई। फिर मैंने रसूल के पद-चिह्न से एक मुट्ठी (मिट्टी) उठा ली। फिर उसे डाल दिया और मेरे जी ने मुझे कुछ ऐसा ही सुझाया। (ता-हा, 96)

तो मूसा का जवाब निर्णायक और ईश्वर का साझी ठहराने के सिद्धांत को ग़लत बताने वाला था । कहा, अच्छा, तो जा। अब इस जीवन में तेरे लिए यही है कि कहता रहे, कोई छुए नहीं। और निश्चय ही तेरे लिए एक निशचित वादा है जो तुझ पर से कदापि न टलेगा। और देख अपने इष्ट-पूज्य को जिस पर तू रीझा-जमा बैठा था। हम उसे जला डालेंगे, फिर उसे चूर्ण-विचूर्ण करके दरिया में बिखेर देंगे। तुम्हारा पूज्य-प्रभु तो बस वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। वह अपने ज्ञान से हर चीज़ पर हावी है। (ता-हा, 97, 98)

तख्तियाँ लेने के बाद फिर मूसा अपनी क़ौम को लेकर पवित्र धरती की ओर निकल पड़े । और जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो उसने तख्तियों को उठा लिया। उनके लेख में उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता थी जो अपने रब से डरते हैं। (अल-आराफ़, 154)

कुछ इस्राईली तौरात के आदेशों को स्वीकार करना नहीं चाहते थे, तो ईश्वर ने उनके सरों पर पर्वत को उठा दिया । और याद करो जब हमने पर्वत को हिलाया जो उनके ऊपर था। मानों वह कोई छत्र हो और वे समझे कि बस वह उनपर गिरा ही चाहता है, थामों मज़बूती से जो कुछ हमने तुम्हें दिया है और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम बच सको। (अल-आराफ़, 171)

हालाँकि तौरात उनके लिए मार्गदर्शन और दया का कारण था, फिर भी इन लोगों ने केवल पर्वत उन पर गिरने के भय से इसको स्वीकार करलिया । इसी प्रकार से ईश्वर के नबी मूसा के साथ इस्राईलियों कि कट्टरपंथी चलती रही, परन्तु वे एक समय किसी व्यक्ति की हत्या कर दिये। इस्राईलियों का एक धनी व्यक्ति था, तो एक रात उसका भतीजा उसके पास आया और उसकी हत्या कर दी, लोग आपस में झगड़ने लगे, एक दूसरे पर आरोप लगाने लगे और हर एक अपने आपसे इस आरोप का इन्कार करने लगे। वे इस समस्या को लेकर ईश्वर के रसूल मूसा के पास पहुँचे, कट्टरपंथी और दुर्व्यवहार में यह कहने लगे ऐ मूसा अगर तुम ईश्वर के नबी हो, तो अपने ईश्वर से पूछ लो तो ईश्वर ने मूसा को यह आदेश दिया ऐ मूसा इस्राईलों को आदेश दो कि वे एक गाय लेकर ज़िबाह करें, फिर इस गाय का एक टुकडा मृत शव पर मारें, तो मै अपनी इच्छा से उसको जीवित करदूँगा, और वह स्वयं अपनी ज़बान से अपने हत्यारे के बारे में बतलायेगा । ईश्वर ने कहा और याद करो जब तुमने एक व्यक्ति की हत्य कर दी, फिर उस सिल-सिले में तुमने टाल-मटोल से कामलिया - जब कि जिसको तुम छिपा रहे थे, अल्लाह उसे खोल देनेवाला था। तो हम ने कहा, उसे उसके एक हिस्से से मारो। इस प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो । (अल-बक़रा, 72-73)

मूसा ने उनसे कहा कि गाय को ज़िबा करो । अगर यह लोग किसी भी गाय को लेकर ज़िब्ह कर देते यह उनके लिए काफी हो जाता, लेकिन इन लोगों ने कट्टरपंथी की । ईश्वर ने अपने नबी मूसा की ज़बानी यह कहा । निश्चय ही अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि एक गाय ज़िबाह करो। कहने लगे, क्या तुम हमसे परिहास करते हो ? उसने कहा, मैं इससे अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि जाहिल बनूँ। (अल-बक़रा, 67)

तो क़ौम ने यह कहा । बोले, हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हम पर स्पष्ट करदे कि वह (गाय) कैसी हो? (अल-बक़रा, 68)

वे अपने आप पर सख्ती करने लगे तो ईश्वर ने भी उनके साथ सख्ती का मामला किया । उसने कहा, वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो न बूढ़ी हो, न बछिया (अल-बक़रा, 68)



यानी बडी उम्र वाली भी न हो और न बहुत ही छोटी हो इनके बीच की रास हो तो, जो तुम्हें हुक्म दिया जारहा है, करो । (अल-बक़रा, 68)

इन लोगों ने अपने आप पर परिधि सीमित कर ली। कहने लगे, हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा हो? (अल-बक़रा, 69)

जब कि ईशवर ने उनसे किसी रंग की (गाय का) प्रश्न नहीं किया और न ही किसी विशेष रंग की शर्त लगायी । कहा, वह कहता है कि वह गाय सुनहरी हो, गहरे चटकीले रंग की कि देखनेवालों को प्रसन्न करदेती हो। (अल-बक़रा, 69)

बंद कमरे मे बोर्ड के सदस्यों के साथ बैठक किये, फिर मूसा के पास आये। बोले, हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि वह कैसी हो, गायों का निर्धारण हमारे लिए संदिग्ध हो रहा है। यदि अल्लाह ने चाहा तो हम अवश्य पता लगा लेंगे। (अल-बक़रा, 70)

तो मूसा ने उन्हें यह जवाब दिया । उसने कहा, वह कहता है कि वह ऐसी गाय है जो सधाई हुई नहीं है कि भूमि जोतती हो और न वह खेत को पानी देती है, ठीक-ठाक है, उसमें किसी दूसरे रंग की मिलावट नहीं है। बोले, अब तुमने ठीक बात बताई है। फिर उन्होंने उसे ज़िबह किया, जबकि वे करना नहीं चाहते थे। (अल-बक़रा, 71)



बछडे को बनाने वाला सामिरी

ये संभव नही है के अल्लाह के नबी हारुण बछडे को बनाने वाले और शिर्क की ओर बुलाने वाले हो। क्यों कि अल्लाह के सारे रसूल और नबी एकीकरण का संदेश देते हैं। जो भी इसके अलावा जो अलग बात कहता है। वो अवश्य रुप से विरुपण करने वाला है। इस प्रकार की बातों में से एक बात नकल की गई है, हारुण ने उनसे कहा अपनी औरतों लडकों और अपनी लडकियों के कानों की बालियाँ निकालो और मेरे पास ले आओ। तो सारे लोग अपने बच्चों की बालिया निकाल कर हारुण के पास ले आये। हारुण ने उनसे ये ले लिया और इस सोने से औज़ार का उपयोग करके एक बछडा बना दिया। और कहा ए इस्राईल ये तुम्हारा भगवान है जो मिश्र के सर ज़मीन से तुम्हारे पास आया। (खुरुज 32/2-4)

वे इस्राईलियों के शहर-शहर, गाँव-गाँव घूमे, फिर बडे कष्ट और उच्च लागत (क़ीमत) से यह गाय प्राप्त किये। उसको ज़िबह किया और ज़िबह करना नहीं चाहते थे। वे गाय का एक टुकडा लेकर उस मृत शव पर मारा जिसके हत्यारे के बारे में वे झगड़ रहे थे, तो वह मृत शव ईशवर के आदेश से अपनी समाधि से ज़िंदा खडा हो गया, तो मूसा ने उससे प्रश्न किया तुम्हारी हत्या किसने की ? तो वह बोला इसने। उसे उसके एक हिस्से से मारो। इस प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो। (अल-बक़रा, 73)

जब वे पवित्र धरती कि ओर पहुँचे, तो देखा कि इसके वासी बडे शक्तिशाली लोग हैं और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा था, ऐ मेरे लोगों । अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो उसने तुम्हें प्रदान की है। उसने तुम में नबी पैदा किए और तुम्हें शासक बनाया और तुमको वह कुछ दिया जो संसार में किसी को नहीं दिया था। ऐ मेरे लोगों । इस पवित्र भूमि में प्रवेश करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और पीछे न हटो, अन्यथा घाटे में पड़ जाओगे। उन्होंने कहा, ऐ मूसा। उसमें तो बड़े शक्तिशाली लोग रहते हैं। हम तो वहाँ कदापि नहीं जा सकते, जब तक कि वे वहाँ से निकल नहीं जाते। हाँ, यदि वे वहाँ से निकल जाएँ तो हम अवश्य प्रविष्ट हो जाएँगे। उन डरनेवालों में से ही

दो व्यक्ति ऐसे भी थे जिनपर अल्लाह का अनुग्रह था। उन्होंने कहा, उन लोगों के मुक़ाबले में दरवाज़े से प्रविष्ट हो जाओ। जब तुम उसमें प्रविष्ट हो जाओगे तो तुम ही प्रभावी होगे। अल्लाह पर भरोसा रखो, यदि तुम ईमानवाले हो। उन्होंने कहा, ऐ मूसा। जब तक वे लोग वहाँ हैं, हम तो कदापि वहाँ नहीं जाएँगे। ऐसा ही है तो जाओ तुम और तुम्हारा रब, और दोनों लड़ो। हम तो यहीं बैठे रहेंगे। (अल-माइदा, 20-24)

आदेश के पालन करने में, अड़चने पैदा करने के कारण ईशवर ने उन्हें दोषी ठहराया । सोंच-विचार से काम न लेने और ईशवर के रसूल की अवज्ञा करने के कारण रास्ता भटकने का दण्ड दिया । उसने कहा, मेरे रब। मेरा अपने और अपने भाई के अतिरिक्त किसी पर अधिकार नहीं है। अतः तू हमारे और इन अवज्ञाकारी लोगों के बीच अलगाव पैदा कर दे। (अल-माइदा, 25)

ईशवर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर लिया ।

कहा, अच्छा तो अब यह भूमि चालीस वर्ष तक इनके लिए वर्जित है। ये धरती में मारे-मारे फिरेंगे, तो तुम इन अवज्ञाकारी लोगों के प्रति दुखी न हो। (अल-माइदा, 26)

वे सुबह-शाम, रात-दिन बिना किसी लक्ष्य के ज़मीन में घूमते रहे।





4. ईसा इबने मरियम (अलैहिसलाम)

निश्चय मरियम के पिता बनी इस्राईल के एक नेक आदमी थे। जो अल्लाह के नबी दाऊद की नस्ल के पवित्र इम्रान घराने से थे। मरियम की माँ को गर्भ नही ठहरता था, उन्हें बच्चों की इच्छा थी, तो वह यह व्रत रखी कि अगर वह गर्भवती बने तो उनका बच्चा ईशवर के लिये कुर्बान है, यानी ईशवर के घर की सेवा के लिए भेंट कर दिया। याद करो जब इमरान की स्त्री ने कहा, मेरे रब। जो बच्चा मेरे पेट में है उसे मैंने हर चीज़ से छुड़ाकर भेंट स्वरूप तुझे अर्पित किया । अतः तू उसे मेरी ओर से स्वीकार कर । निस्संदेह तू सब कुछ सुनता, जानता है। फिर जब उसके यहाँ बच्ची पैदा हुई तो उसने कहा, मेरे रब। मेरे यहाँ तो लड़की पैदा हुई है अल्लाह तो जानता ही था जो कुछ उसके यहाँ पैदा हुआ था। और लडका उस लडकी की तरह नहीं हो सकता- और मैंने उसका नाम मरयम रखा है। और मैं उसे और उसकी संतान को तिरस्कृत शैतान (के उपद्रव) से सुरक्षित रखने के लिए तेरी शरण में देती हूँ। (अले-इमरान, 35-36)

ईशवर ने मरयम के माँ की भेंट को स्वीकार कर लिया। अतः उसके रब ने उसका अच्छी स्वीकृति के साथ स्वागत किया और उत्तम रूप में उसे परवान चढाया। (आले-इमरान, 37)

यानी अच्छा रूप, खूबसूरती और नेक लोगों के मार्ग पर उन्हें चलाया, इसी कारण ईशवर ने यह कहा । और ज़करिय्या को उसका संरक्षक बनाया । (आले-इमरान, 37)

परन्तु ईशवर ने मरियम पर यह कृपा कि, उनका संरक्षक भी नबी था। कुछ लोगों का ख्याल है कि वह मरियम की मौसी या उनकी बहन के पति थे। जब कभी ज़करिय्या उसके पास मेहराब (इबादतगाह) में जाता तो उसके पास कुछ रोज़ी पाता। उसने कहा, ऐ मरियम। ये चीज़ें तुझे कहाँ से मिलती है? उसने कहा, यह अल्लाह के पास से है। निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है, बे-हिसाब रोज़ी देता है। (आले-इमरान, 37)

यह ईश्वर की ओर से मरयम के लिए सम्मान था। ईश्वर ने मरयम को सम्मान, पवित्रता प्रदान की और उन्हें ईश्वर की प्रार्थना करने का आदेश दिया। और जब फ़रिशतों ने कहा, ऐ मरयम। अल्लाह ने तुझे चुन लिया और तुझे पवित्रता प्रदान की और तुझे संसार की स्त्रियों के मुक़ाबले में चुन लिया। ऐ मरयम। पूरी निष्ठा के साथ अपने रब की आज्ञा का पालन करती रह, और सजदा कर और झुकनेवालों के साथ तू भी झुकती रह। (आले-इमरान, 42,43)

फिर जब ईश्वर ईसा को पैदा करना चाहा, तो मरयम अपने परिवार से अलग हो गई । और इस किताब में मरयम की चर्चा करो, जब कि वह अपने घरवालों से अलग होकर एक पूर्वी स्थान पर चली गई। फिर उसने उनसे (लोगों से) परदा कर लिया। तब हमने उसके पास अपनी रूह (फ़रिश्ते) को भेजा और वह उसके सामने एक पूर्ण मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ। (मरयम, 16-17)

मरयम डर गयी और यह अनुमान लगाया कि वह उनके साथ कुछ ग़लत करने की इच्छा रखता है। वह बोल उठी, मैं तुझसे बचने के लिए रहमान (करुणामय प्रभु) की पनाह माँगती हूँ, यदी तू (अल्लाह का) डर रखनेवाला है (तो यहाँ से हट जाएगा)। उसने कहा, मैं तो केवल तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे नेकी और भलाई में बढ़ा हुआ लड़का दूँ। (मरयम, 18-19)

कुंआरी मरयम बडी आश्चर्य हुई । वह बोली, मेरे कहाँ से लड़का होगा जब कि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं और न मैं कोई बदचलन हूँ ? (मरयम, 20)

उसने कहा ईशवर का यही निर्णय है वह लड़के को अपनी निशानी बनाना चाहता है। यह काम ईशवर के लिए बहुत आसान है। उसने कहा, ऐसा ही होगा। तेरे रब ने कहा है कि यह मेरे लिए आसान है। और इसलिए देगा । (ताकि हम तुझे) और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ और अपनी ओर से एक दयालुता। यह तो एक ऐसी बात है जिसका निर्णय हो चुका है। (मरयम, 21)

ईसा को उस पवित्र माँ से पैदा करना, जो बदचलन नहीं थी, और बिना बाप के पैदा करना, यह ईशवर की ओर से एक दया और अपने निर्णय को लागू करना है। ईसा की पैदाइश एक चमत्कार और निशानी है। ईसा की मिसाल बिना बाप के आदम की सृष्टि जैसी है। निस्संदेह अल्लाह की द्रुष्टि में ईसा की मिसाल आदम जैसी है कि उसे मिट्टी से बनाया, फिर उससे कहा, होजा, तो वह हो जाता है। यह हक़ तुम्हारे रब की ओर से है, तो तुम संदेह में न पड़ना। अब इसके पश्चात कि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है। (आले-इमरान, 59-60)

जब मरयम गर्भवती बन गई, तो वह अपने क़ौम से दूर हो गई । फिर उसे (मरयम को) उस (बच्चे) का गर्भ रह गया और वह उसे लिए हुए एक दूर के स्थान पर अलग चली गई। (मरयम, 22)

मरयम को प्रसव पीडा का समय आ गया। अन्ततः प्रसव-पीड़ा उसे एक खजूर के तने के पास ले आई। वह कहने लगी, क्या ही अच्छा होता कि मैं इससे पहले ही मर जाती और भूली-बिसरी हो गई होती। (मरयम, 23)

इस समय अल्लाह के नबी ईसा के लिए एक दूसरा चमत्कार प्रकट हुआ । उस समय उसे उस (वृक्ष) के नीचे से (फ़रिश्ते ने) पुकारा, ग़म न कर। तेरे रब ने तेरे नीचे एक स्त्रोत प्रवाहित कर रखा है। तू खजूर के उस पेड के तने को पकड़कर अपनी ओर हिला। तेरे ऊपर ताज़ा पकी-पकी खजूरें टपक पडेंगी। अतः तू खा और पी और आँखें ठंडी कर। फिर यदि तू किसी आदमी को देखे तो कहदेना, मैंने तो रहमान (करुणामय प्रभु) के लिए रोज़े की मन्नत मानी है। इसलिए मै आज किसी मनुष्य से न बोलूँगी। (मरयम, 24-26)

मानवता के सब से अच्छे लोग अल्लाह के नबी है

अल्लाह के नबी और उसके रसूल के विरुध्द में कुछ गलत बातें कही गयी हैं, जिनमें यह है कि वह लोग शराब पिया करते थे, या उन लोगों से बलात्कार हुआ था या वह लोग लोगों की हत्या करने का आदेश देते थे.... यह सब बातें आदर्शवाणी मानव के बिलकुल मुनासिब नहीं है, और नबी तो लोगों में सब से ज्यादा अच्छे चरित्र वाले होते है... वह सब अल्लाह के नबी हैं। इसी बारे में तैरात में नबी दाऊद के बारें मे (समवयल (2) 11/2-26). नबी यशूबिन नून के बारें में (यशू 6/24). नबी मूसा के बारें में (अदद 31/14-18) और उसके अलावा बहुत सी बातें कही गयी है जो अल्लाह के रसूलों के स्थान को शोभा नही देता।



जब वह अपनी क़ौम के पास वापस आयी, तो यह समय पवित्र मरयम के लिए बडा कठोर था। फिर वह उस बच्चे को लिए हुए अपनी क़ौम के लोगों के पास आई। वे बोले, ऐ मरयम, तू ने तो बड़ा ही आश्चर्य का काम कर डाला। ऐ हारून की बहन। न तो तेरा बाप ही कोई बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही बदचलन थी। (मरयम, 27-28)

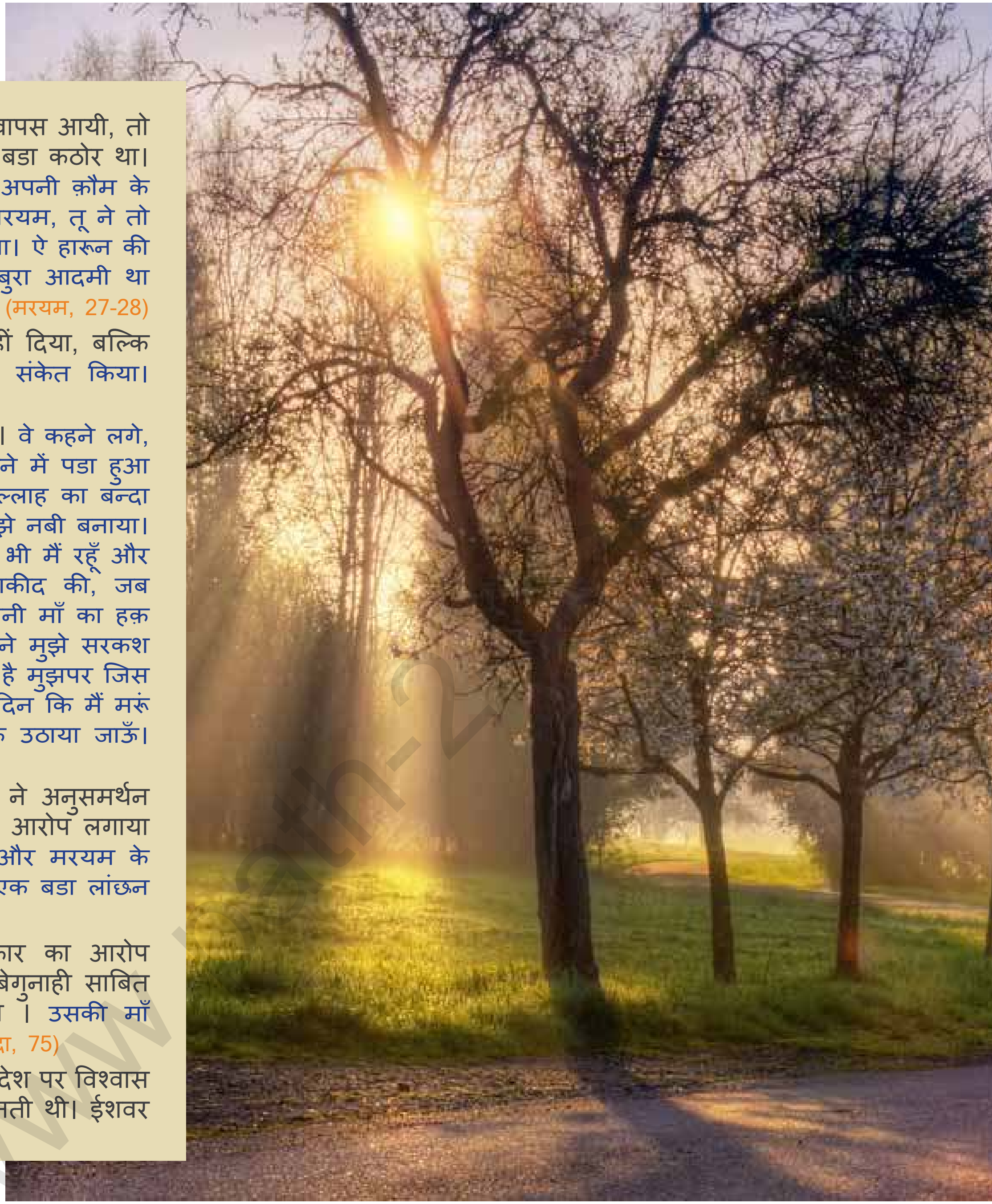
मरयम ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि तब उसने उस (बच्चे) की ओर संकेत किया। (मरयम, 29)

वे इन्कार करते हुए यह कहा । वे कहने लगे, हम इससे कैसे बात करें जो पालने में पडा हुआ एक बच्चा है? उसने कहा, मै अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया। और मुझे बरकतवाला किया जहाँ भी मैं रहूँ और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं जीवित रहूँ। और अपनी माँ का हक़ अदा करनेवाला बनाया। और उसने मुझे सरकश और बेनसीब नहीं बनाया। सलाम है मुझपर जिस दिन कि मैं पैदा हुआ और जिस दिन कि मैं मरूं और जिस दिन कि जीवित करके उठाया जाऊँ। (मरयम, 30-33)

लेकिन यहूद के एक संप्रदाय ने अनुसमर्थन किया और पवित्र मरयम पर बडा आरोप लगाया । और उनके इन्कार के कारण और मरयम के ख़िलाफ़ ऐसी बात कहने पर जो एक बडा लांछन था। (अन-निसा, 156)

वे पवित्र मरयम पर बलात्कार का आरोप लगाया लेकिन ईश्वर ने उनकी बेगुनाही साबित कर दी, उनके बारे में यह कहा । उसकी माँ अत्यन्त सत्यवती थी । (अल-माइदा, 75)

वह ईसा के ईश देवत्व और सन्देश पर विश्वास रखती थी और ईसा को सत्य मानती थी। ईश्वर



ने अपने रसूल ईसा और उनकी माँ पर अनुग्रह किया । जब अल्लाह कहेगा, ऐ मरयम के बेटे ईसा। मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो तुमपर और तुम्हारी माँ पर हुआ है। जब मैंने पवित्र आत्मा से तुम्हें शक्ति प्रदान की, तुम पालने में भी लोगों से बात करते थे और बडी अवस्था को पहुँच कर भी। और याद करो जबकि मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील की शिक्ष दी थी। (अल-माइदा, 110)

ईश्वर चमत्कार और अपनी निशानियों से ईसा का समर्थन किया । और याद करो जब तुम मेरे आदेश से मिट्टी से पक्षी का प्रारूपण करते थे: फिर उसमें फूंक मारते थे तो वह मेरे आदेश से उड़नेवाली बन जाती थी। और तुम मेरे आदेश से अन्धे और कोढी को अच्छा कर देते थे और जबकि तुम मेरे आदेश से मुर्दों को जीवित निकाल खड़ा करते थे। और याद करो जब कि मैंने तुमसे इस्राईलियों को रोके रखा, जब कि तुम उनके पास खुली-खुली निशानियाँ लेकर पहुँचे थे, तो उनमें से जो इन्कार करनेवाले थे, उन्होंने कहा, यह तो बस खुला जादू है। और याद करो जब मैंने हवारियों (साथियों और शागिर्दों) के दिल में डाला कि मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ, तो उन्होंने कहा, हम ईमान लाए और तुम गवाह रहो कि हम मुस्लिम (फ़रमाँबरदार) हैं। (अल-माइदा, 110-111)

फिर साथियों ने ईसा को अपने ईशवर से यह प्रार्थना करने को कहा कि वह आसमान से उनके लिए खाने से भरा थाल उतारे । और याद करो जब हवारियों ने कहा, ऐ मरयम के बेटे ईसा । क्या तुम्हारा रब आकाश से खाने से भरा थाल हमपर उतार सकता है ? (अल-माइदा, 112)

ईसा को अपने क़ौम के कृतघ्न करने के कारण उन पर ईशवर के दण्ड का डर हुआ । कहा, अल्लाह से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।

वे बोले, हम चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे हृदय संतुष्ट हों और हमें मालूम हो जाए कि तुमने हमसे सच कहा और हम उस पर गवाह रहें। (अल-माइदा, 112-113)

ईसा ने अपने रब से प्रार्थना की । मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ऐ अल्लाह, हमारे रब। हमपर आकाश से खाने से भरा थाल उतार, जो हमारे लिए और हमारे अगलों और हमारे पिछलों के लिए ख़ुशी का कारण बने और तेरी ओर से एक निशानी हो, और हमें आहार प्रदान कर, और तू सब से अच्छा राज़िक़ है। अल्लाह ने कहा, मैं उसे तुमपर उतारूँगा, फिर उसके बाद तुममें से जो कोई इन्कार करेगा तो मैं अवश्य उसे ऐसी यातना दूँगा जो संपूर्ण संसार में किसी को न दी होगी। (अल-माइदा, 114-115)

वे ईश्वर की ओर से आयी हुई कुछ चीज़ों का तिरस्कार किया ।

नबी ईसा ने बैबिल में कहा कि ईश्वर एक है

आपके पास एक लेखक आया, जो लोगों को झगडा करते हुए सुन चुका था, और उसने यँह देखा था कि आपने उनको सही जवाब दिया था, इस ने आप से पूछा कैन सी सलाह सब से ज्यादा अच्छी है, तो यसू ने कहा सब से अच्छी सलाह यह है सुन ऐ इस्राइल हमारा भगवान एक ईश्वर है, परन्तु आप अपने ईश्वर से अपने पन, अपनी जान अपने विचार और अपनी शक्ति से प्रेम करो, यही सबसे अच्छी सलाह है (मुरखुस 12/28-35)

जहाँ तक बनी इस्राईल के यहूद का संबंध है जो ईश्वर के नबी ईसा को झुठलाया, वे अपने इन्कार और हठ धर्मी पर ईसा के दुबारा आने तक बाक़ी रहेगी । और वे गुप्त चाल चले तो अल्लाह ने भी उसका तोड़ किया, और अल्लाह उत्तम तोड़ करनेवाला है। (आले-इमरान, 54)

ईसा को उनके रब ने यहूदियों की चाल से और ईश्वर द्वारा अपने शत्रुओं से सुरक्षित रहने का रास्ता बताया । जब अल्लाह ने कहा, ऐ ईसा। मै तुझे अपने क़ब्ज़े में ले लूँगा और तुझे अपनी ओर उठा लूँगा और अविश्वासियों (की कुचेष्टाओं) से तुझे पार करदूँगा । और तेरे अनुपासियों को क़ियामत के दिन तक उन लोगों के ऊपर रखुँगा जिन्होंने इन्कार किया । फिर मेरी ओर तुम्हें लौटना है। फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों का फ़ैसला करदूँगा जिनके विषय में तुम विभेद करते रहे हो। (आले-इमरान, 55)

जब वे वादे तोड़ते रहे, चाल चलने, इन्कार करने, ईश्वर के रसूलों की हत्या करने और पवित्र मरयम पर बलात्कार का आरोप लगाने का सदा प्रयास करते रहे, तो ईश्वर ने कहा फिर उनके अपने वचन भंग करने और अल्लाह की आयतों का इन्कार करने के कारण और नबियों को नाहक़ क़त्ल करने के दरपे होने और उनके यह कहने के कारण कि हमारे हृदय आवरणों में सुरक्षित हैं - नहीं बल्कि वास्तव में उनके इन्कार के कारण अल्लाह ने उनके दिलों पर ठप्पा लगा दिया है। तो ये ईमान थोड़े ही लाते हैं। और उनके इन्कार के कारण और मरयम के ख़िलाफ ऐसी बात कहने पर जो एक बडा लांछन था और उनके इस कथन के कारण कि हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह, अल्लाह के रसूल, को क़त्ल कर डाला। (अल-निसा, 155-157)

लेकिन ईश्वर ने ईसा को उनके दुश्मनों से मुक्ति दी । हालाँकि न तो इन्होंने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढाया। (अन-निसा, 157)

बल्कि वे ईसा के समान एक दूसरे व्यक्ति की हत्या कर दिये। बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध हो गया । और जो लोग इसमें विभेद कर रहे हैं, निश्चय ही वे इस मामले में संदेह में पड़े हुए थे। अटकल पर चलने के अतिरिक्त उनके पास कोई ज्ञान न था । निश्चय ही उन्होंने उसे (ईसा को) क़त्ल नहीं किया, बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी ओर उठालिया । और अल्लाह अत्यंत प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है। (अन-निसा, 157-158)

ईश्वर ने अपने रसूल ईसा को सुरक्षित रखा और उन्हें अपने पास बुला लिया।

किताब वालों में से कोई ऐसा न होगा, जो उसकी मृत्यु से पहले उसपर ईमान न ले आए। और वह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगा । (अन-निसा, 159)





नबी ईसा इस्लाम की नज़र में

जब मै इस्लाम को पढ़ा, तो ईसमसीह का एक नया रुप मेरे सामने आया, जिसका मेरे मन पर बहुत गहरा असर हुआ

फरद्रेक दुलामार्क
जोहान्सबर्ग का प्रधान पादरी

ईसा इब्ने मरियम की यही सत्य कहानी है। सच्ची और पक्की बात की दृष्टि से यह है मरयम का बेटा ईसा, जिसके विषय में वे संदेह में पड़े हुए हैं। अल्लाह ऐसा नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए। महान और उच्च है वह। जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है तो बस उसे कह देता है, “हो जा” । तो वह हो जाती है। (मरयम, 34-35)

ईश्वर ने यह वर्णन किया कि उसको औलाद का होना शोभा नहीं देता क्योंकि हर चीज़ का प्रजापति मालिक वही है, हर चीज़ उसी पर आधारित है और उसीकी मोहताज़ है, आकाश और धरती में जो कुछ है सब उसी के आदेश का पालन करते हैं, वह उनका ईश्वर है, उसके अतिरिक्त न कोई ईश्वर है और न दूसरा प्रभु ।

बैबिल फाँसी का इंकार करती है और आकाश पर उठाये जाने की पुष्टि करती हैं

लोगों ने उनको मारने के लिए पत्थर उठाये, लेकिन यसू छुप गये थे और उनके बीच ही संरचना से निकल गये थे, और इसी प्रकार से वह चले गये (युहन्ना 8.59) लोगों ने उनको पकड़ना भी चाहा परन्तु वह उनके हाथों से निकल गये (युहन्ना 10.93) और यह सब इसलिए हुआ ताकि पवित्र पुस्तक में लिखी हुयी बात पूरी हो उनकी कोई हड्डी किसी तरह नहीं टूटेगी (युहन्ना 36.19) यह यसू वही है जिनको तुम्हारे बीच से आकाश पर उठा लिया गया (सफर आमाल ए रसूल 1.11)





5. मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहिवसल्लम

नबी मुहम्मद नबी और रसूलों के अन्तिम कडी है। बनी इस्राईल के रसूलों के अंत में आनेवाले ईसा ने आपके बारे में उपदेश दिया है। ईशवर ने कहा । और याद करो जबकि मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ऐ इस्राईल की सन्तान। मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ। मैं तौरात की (उस भविष्यवाणी की) पुष्टि करता हूँ जो पहले से मौजूद है और एक रसूल की शुभ सूचना देता हूँ जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। किन्तु वह जब उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला जादू है। (अस-सफ़्फ, 6)

तौरात और बाईबल में मुहम्मद के बारे में उपदेश है। ईशवर ने कहा । (तो आज इस दयालुता के अधिकारी वे लोग हैं) जो उस रसूल, उम्मी नबी, का अनुसरण करते हैं जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इन्ज़ील में लिखा पाते हैं। और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता और बुराई से उन्हें रोकता है, उनके लिए अच्छी-स्वच्छ चीज़ों को हलाल और बुरी-अस्वच्छ चीज़ों को उनके लिए हराम ठहराता है और उनपर से उनके वे बोझ उतारता है, जो अब तक उनपर लदे हुए थे और उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उसपर ईमान लाए, उसका सम्मान किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-आराफ़, 157)

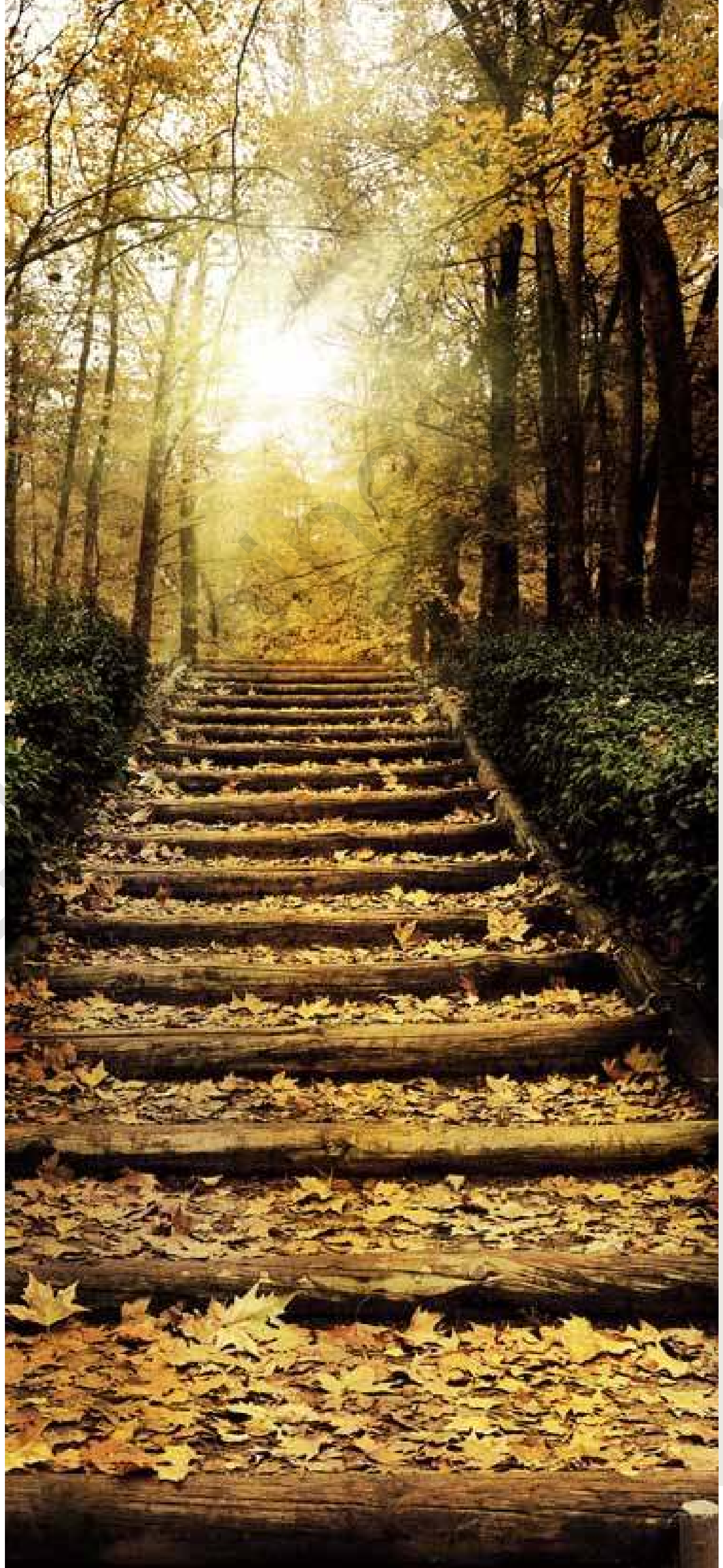
बल्कि ईशवर ने सारे नबियों से यह वचन लिया कि वे मुहम्मद पर ईमान लायें, और अगर उनके जीवन में ही मुहम्मद आजाये तो वे उनकी सहायता करें, अपनी-अपनी क़ौम को इस बारे में बतलायें, ताकि सारी क़ौमों में यह बात फैल जाये। ईशवर ने कहा और याद करो जब अल्लाह ने नबियों के संबन्ध में वचन लिया कि मैंने



तुम्हें जो कुछ किताब और हिक्मत प्रदान की, इसके पश्चात् तुम्हारे पास कोई रसूल उसकी पुष्टि करता हुआ आए जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम अवश्य उसपर ईमान लाओगे और निश्चय ही उसकी सहायता करोगे। कहा क्या तुमने इक़रार किया ? और इसपर मेरी ओर से डाली हुई ज़िम्मेदारी का बोझ उठाया ? उन्होंने कहा, हमने इक़रार किया । कहा, अच्छा तो गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ। (अले-इमरान, 81)

पवित्र ख़ुरआन ने इन उपदेशों का संकेत किया और इनको मुहम्मद की सत्यता का सबूत बनाया। ईशवर ने कहा। जिन लोगों ने इन्कार की नीति अपनाई वे कहते हैं, तुम कोई रसूल नहीं हो। कह दो, मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह की और जिस किसी के पास किताब का ज्ञान है उसकी गवाही काफ़ी है। (अल-रअद, 43)

ईशवर ने कहा । और निस्संदेह यह पिछले लोगों कि किताबों में भी मौजूद है। क्या यह उनके लिए कोई निशानी नहीं है कि इसे बनी-



इस्राईल के विद्वान जानते हैं (अल-शुअरा, 196-197)

ईशवर ने किताब वालों की स्थिति बताते हुए (जो अपनी औलाद की तरह मुहम्मद को जानने के कारण सब से पहले उन पर ईमान लाना चाहिए था) यह कहा । जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उसे पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं और उनमें से कुछ सत्य को जान-बूझकर छिपा रहे हैं। (अल-बक़रा, 146)

ईशवर ने कहा और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल आया, जिससे उस (भविष्यवाणी) की पुष्टि हो रही है जो उनके पास थी, तो उनके एक गिरोह ने, जिन्हें किताब मिली थी, अल्लाह की किताब को अपने पीठ पीछे डाल दिया, मानों वे कुछ जानते ही नहीं । (अल-बक़रा, 101)

मुहम्मद की ईश देवत्व पर सारे उपदेश लागू होते हैं। वही वह रसूल है ईशवर ने जिनके आने की सूचना दी। लेकिन कुछ लोग जानते हुए भी इस सत्य को छुपाते हैं, और अपनी पवित्र पुस्तकों में लिखित बातों को पीठ पीछी डालते हैं इस प्रकार से कि वे जानते ही नहीं ।

मुहम्मद ईशवर के एकीकरण का संदेश लेकर आये जिसका कोई साझी नहीं है जिस प्रकार से कि सारे नबी और रसूल आये

थे। ईशवर ने कहा । हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा उसकी ओर यही प्रकाशना की, मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बन्दगी करो। (अल-अंबिया, 25)

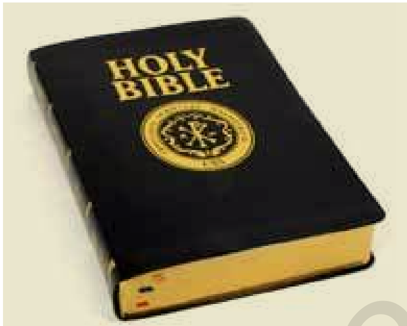
इसी प्रकार से मुहम्मद को सारे नबी और रसूलों के बीच कोई अंतर किये बिना उनपर विश्वास करनेवाला बना कर भेजा गया । हम उनमें से किसी के बीच अंतर नहीं करते । (अल-बक़रा, 136)

बल्कि जो व्यक्ति मुहम्मद पर विश्वास रखता हो और ख़ुरआन में मौजूद किसी नबी व रसूल पर विश्वास न रखता हो, तो वह मुहम्मद पर भी विश्वास रखने वाला नहीं है । उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी । और वह (जीवन्द आदेश) जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है और वह जिसकी ताकीद हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को की थी, यह है कि धर्म को क़ायम करो और उसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ । (अल-शूरा, 13)

मुहम्मद ने इस बात की पुष्टि की है कि वह ईशवर का बन्दा है । कह दो, मैं तो केवल तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है। अतः जो कोई अपने रब से मिलन की आशा रखता हो उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को साझी न बनाए। (अल-कहफ़, 110)

मुहम्मद अज्ञानी थे। लिखना-पढना नहीं जानते थे जैसा कि पिछली पवित्र किताबों में यह बात लिखी जा चुकी है, ताकि किताब वाले अपनी किताबों में लिखित गुणों से मुहम्मद को पहचान





मुहम्मद अंतिम रसूल है

इसलिए कि बहुत जल्द ईश्वर मुझे इस पृथ्वी से उठालेगा, और द्रोही का दृश्य बदल देगा, यहाँ तक कि वह हर विषय में मुझे ही गुमान करने लगेगा, इसके बावजूद जब वह बहुत बुरी मौत मरेगा तो मै इसी कलंक में लंबे समय तक संसार में रहूँगा, लेकिन जब ईश्वर के महान रसूल मुहम्मद आयेंगे, तो वह मुझ से यह कलंक दूर करेंगे।

बैबिल बरनाबा

लें, जैसा कि ईशवर ने कहा । (तो आज इस दयालुता के अधिकारी वे लोग हैं) जो उस रसूल, उम्मी नबी, का अनुसरण करते हैं जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इन्ज़ील में लिखा पाते हैं। और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता और बुराई से उन्हें रोकता है, उनके लिए अच्छी-स्वच्छ चीज़ों को हलाल और बुरी-अस्वच्छ चीज़ों को उनके लिए हराम ठहराता है और उनपर से उनके वे बोझ उतारता है जो अब तक उनपर लदे हुए थे और उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उसपर ईमान लाए, उसका सम्मान किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-आराफ़, 157)

पिछले रसूलों के समान ईशवर ने मुहम्मद के दवारा भी बहुत से चमत्कार दिखाये। आप का सबसे बडा चमत्कार पवित्र ख़ुरआन है, जिसमें अगले-पिछले लोगों के बारे में सूचना है। जो दया, मार्गदर्शनी और शुभ-सूचनाओं को शामिल है । हमने तुम पर किताब अवतरित की हर चीज़ को खोलकर बयान करने के लिए और मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना के रूप में। (अल-नहल, 89)

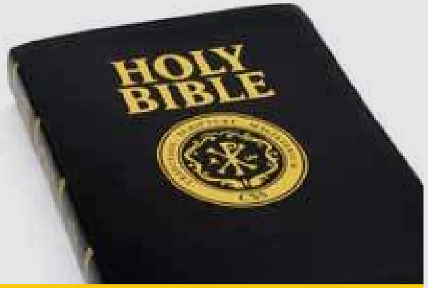
जो विश्वास रखने वालों के लिए दूरदर्शिता का कारण है । यह लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पूंज है, और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें। (आल-जासिया, 20)

अनपढ़ नबी ने ख़ुरआन द्वारा लोगों को उनके सारे विभेद दूर किया । हमने यह किताब तुमपर इसी लिए अवतरित की है कि जिसमें वे विभेद कर रहे हैं उसे तुम उनपर स्पष्ट कर दो। (अल-नहल, 64)

हालांकि ख़ुरैश मुहम्मद की सत्यता और अमानतदारी का ज्ञान रखते थे। आप को सत्य और अमानतदार समझते थे, मगर फिर भी वे आपका तिरस्कार करते थे। तो ईश्वर ने उन्हें सारी मानवता, बल्कि सारे जिनों के साथ इकट्ठा होकर ख़ुरआन जैसे वाणी को लाने की चुनौती दी । कह दो, यदि मनुष्य और जिन्न इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ कि इस ख़ुरआन जैसी कोई चीज़ लाएँ तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों। (बनी इस्राईल, 88)

फिर भी वे झुठलाये, और हालांकि वे भाषा निपुण थे फिर भी वे ख़ुरआन जैसी वाणी ला न सके। तो ईश्वर ने किसी के साथ भी इकट्ठा होकर ख़ुरआन जैसी दस सूरतें लाने की चुनौती दिया। (उन्हें कोई शंका है) या वे कहते हैं कि उसने इसे स्वयं गढ़ लिया है ? कह दो अच्छा, यदि तुम सच्चे हो तो इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह से हटकर जिस किसी को बुला सकते हो, बुला लो। (हूद, 13)

फिर भी वे ला न सके। तो ईश्वर ने उन्हें ख़ुरआन के समान एक सूरा लाने की चुनौती दी । और अगर उसके विषय में, जो हमने अपने बन्दे पर उतारा है, तुम किसी सन्देह में हो तो उस जैसी कोई सूरा ले आओ। (अल-बक़रा, 23)



बैबल मुहम्मद की शुभ सूचना देता है

और यही बात शेष रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद प्रवेश करेंगे, जब मुहम्मद आयेंगे अल्लाह के कानून पर विश्वास रखनेवालों से यह रहस्य खोल देंगे। और इशइय्या में लिखा है ऐ मुहम्मद, ऐ ईश्वर के महान चरित्रवान मैने तेरा नाम मुहम्मद रखा है तेरा नाम अचयनित हैं। और हबखूख में लिखा है कि ईश्वर तैमान से और महान चरित्रवान फारान की पहाडियों से आया है। मुहम्मद की रौनक से आकाश रौशन हुआ है और उनकी प्रशंसा से पृथ्वी भर गयी है। इसी प्रकार से इशइय्या में लिखा है कि मैने जो उसको दिया है वह किसी और को नही दूँगा। अहमद ईश्वर की ऐसी प्रशंसा करेंगे जो सब से अच्छे पृथ्वी के स्थान से आयेगी, जिससे सारे जीव खुश होगे, हर सम्मान के लिए उनको एक मानेंगे, और हर नीच चीज़ों से उनको बडा समझेंगे।

बैबिल बरनाबा

फिर भी वे ला न सके। हालांकि वे भाषा निपुण थे ।

“ख़ुरैश” के काफिर सदा आपको झुठलाते रहे, तो ईश्वर ने पिछले संकल्पवान नबी और रसूल इब्राहीम, नूह, मूसा और ईसा के प्रकार आपको भी धैर्य से काम लेने का आदेश दिया । अतः धैर्य से काम लो जिस प्रकार संकल्पवान रसूलों ने धैर्य से काम लिया । (अल-अहक़ाफ़, 35)

परन्तु आपने धैर्य से काम लिया । उनकी मार्गदर्शनी करते रहे। उन्हें अपनी बातों और चरित्र से ज्ञान देते रहे तो ईश्वर ने आपकी सुरक्षा की ।

ऐ नबी। तुम्हारे लिए अल्लाह और तुम्हारे ईमानवाले अनुयायी ही काफ़ी है। (अल-अनफ़ाल, 64) क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नही है। (अल-ज़ुमर, 36)

ईशवर ने पिछले नबी और रसूलों के प्रकार आपको भी ख़ुरैश के विरोध में विजेता बनाया । अल्लाह ने लिख दिया है, मैं और मेरे रसूल ही विजयी होकर रहेंगे। निस्संदेह अल्लाह शक्तिमान, प्रभुत्वशाली है। (अल-मुजादला, 21)

ईशवर ने कहा और हमारे अपने उन बन्दों के हक़ में, जो रसूल बनाकर भेजेगए, हमारी बात पहले ही निशचित हो चुकी है कि निश्चय ही उन्हीं की सहायता की जाएगी। (अल-साफ़्फ़ात, 173) निश्चय ही हम अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए, अवश्य सहायता करते हैं, सांसारिक जीवन में भी और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे। (ग़ाफिर, 51)

वे आपके संदेश को रोकना चाहे और आपके प्राकश को बुझाना चाहे, फिर भी ईशवर ने अपने प्रकाश को पूर्ण किया। वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने



सब से अच्छे आदर्श

मैने इतिहास में इस मनुष्य के लिए अच्छे आदर्श की खोज किया, तो मै ने वह आदर्शवान नबी मुहम्मद को पाया

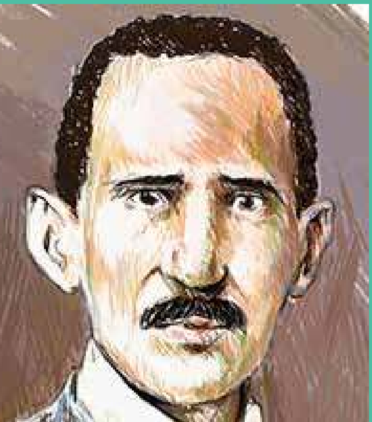
जोताह
जर्मनी कवि



आप प्रश्न करो और ख़ुरआन आपको उत्तर देगा

मै ने ख़ुरआन पढ़ा तो इसमें मैने जीवन के सारे प्रश्नों का उत्तर पाया

मैकलहाट
अमेरिकन लेखक





और लोगों के लिए अहमद

ईसाइयों की ओर से यह वाक्यांश मशहर है कि आसमानों में महिमा ईश्वर के लिए, पृथ्वी में शांति और लोगों के लिए खुशी है यह वाक्यांश इस तरह नहीं था, बल्कि इस तरह था कि आसमानों में महिमा अल्लाह के लिए ज़मीन पर इस्लाम और लोगों के लिए अहमद है

डेविड बिनजमिन कुलदानी

मूसल शहर का पूर्व पादरी

मुँह की फूँक से बुझा दें, किन्तु अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण करके ही रहेगा, यद्यपि इन्कार करनेवालों को अप्रिय ही लगे। वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शनी और सत्यधर्म के साथ भेजा, ताकि उसे पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, यद्यपि बहुदेव वादियों को अप्रिय ही लगे (अल-सफ़्फ, 8-9)

परन्तु ईशवर ने अपनी अनुग्रह को पूर्ण किया । इसलाम को प्रभुत्व प्रदान किया। सारे धर्मो में ईशवर के एकीकरण की पुष्टी की और इस संदेश और धर्म के द्वारा सारी मानवता पर अपनी अनुग्रह पूर्ण किया । आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया । (अल-माइदा, 3)

बल्कि धर्म की रक्षा की और इस संदेश को क़ियामत तक बाक़ी रखा । यह नसीहत निश्चय ही हमने अवतरित की है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं। (अल-हिज्र, 9)

यही संदेश सारे देवत्व संदेशों के अंत में आनेवाला संदेश है । मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (अन्तिम नबी) हैं। अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है। (अल-अहज़ाब, 40)

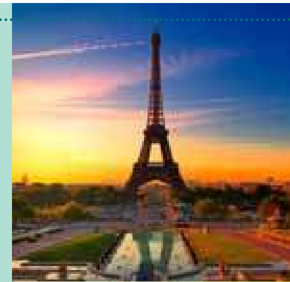
ईशवर की ओर से धरती और उसपर रहनेवालों के जीवित होने तक यही संदेश बाक़ी रहनेवाला है। तो ईशवर की सुरक्षा से क़ियामत तक बाक़ी रहनेवाला वह संदेश क्या है ?

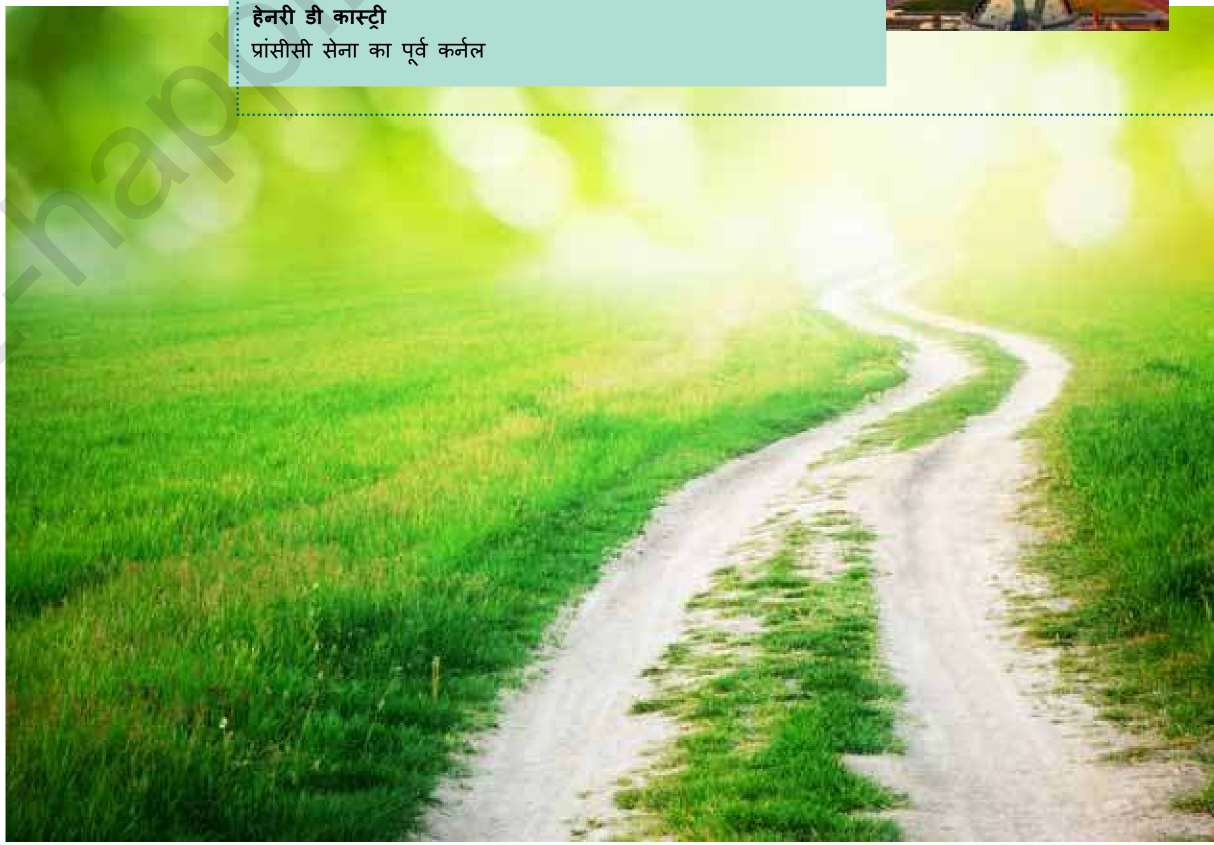
चमत्कारी खुरआन

खुरआन ए करीम सोंच विचार पर प्रभावित होता है, और दिलों की गहराियों पर असर करता है। और अवश्य रुप से खुरआन मुहम्मद की ईमानदारी का सबूत के रुप में उतरा है।

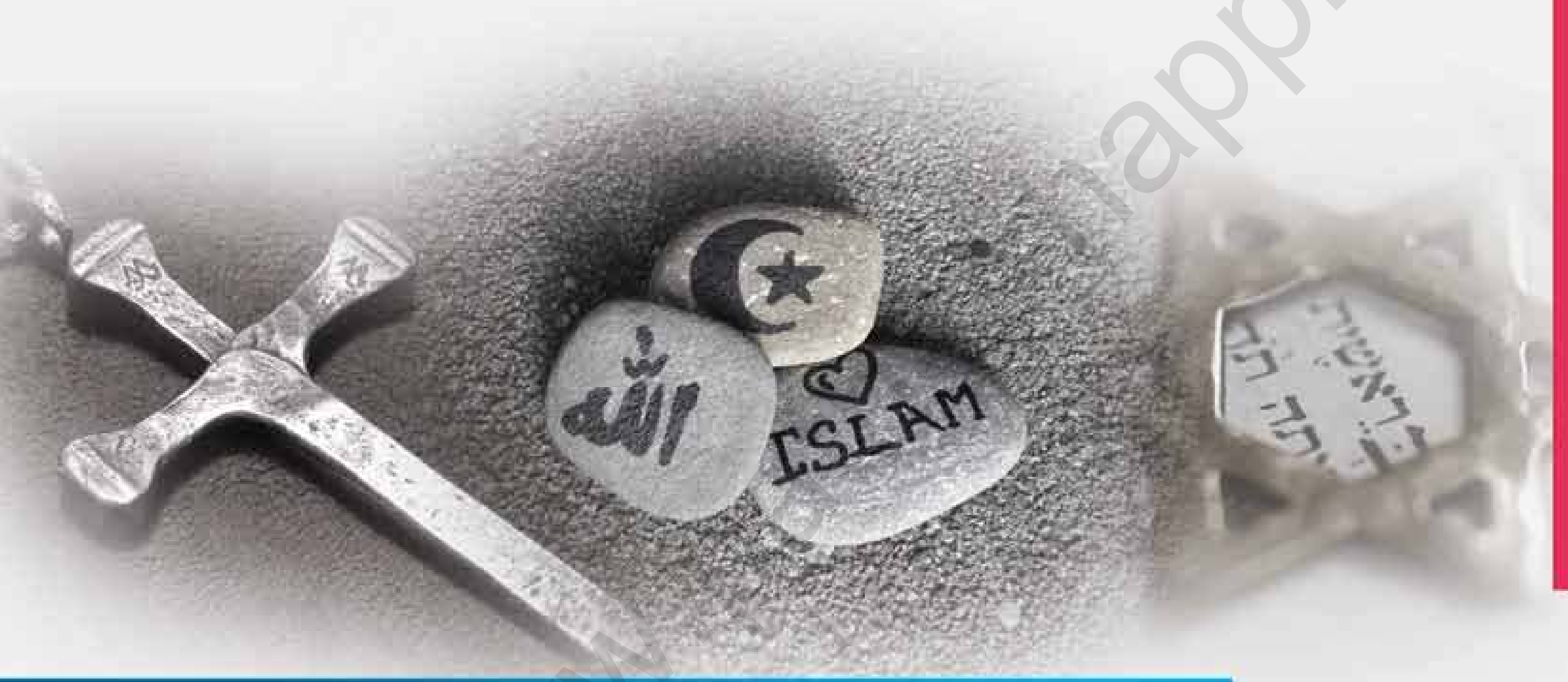
हेनरी डी कास्ट्री

प्रांसीसी सेना का पूर्व कर्नल





الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



सदा रहनेवाला संदेश

अनुक्रमणिका



सदा रहनेवाला संदेश

जैसे जैसे लोग देवत्व मार्गदर्शन और रसूलों के संदेश से दूर होते गये, लोगों में अप्रसन्नता और अंधेरा छा गया। ईशवर एक रसूल के बाद दूसरा रसूल भेजता रहा। रसूल शुभ समाचार देनेवाले और सचेत करनेवाले बनाकर भेजे गये हैं, ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में (अपने निर्दोष होने का) कोई तर्क न रह। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है। (अल-निसा, 165)

ईशवर किसी को रसूल भेजने से पहले यातना नहीं देता । और हम लोगों को यातना। नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेज दें । (अल-इस्रा, 15)

ईसा (अलैहिसलाम) के आने, फिर ईशवर की ओर से उन्हें उठा लिये जाने के बाद मानवता अज़ान, गुमराही और अन्याय से पीडित थी। पवित्र एकीकरण के सिद्धांत को मूर्ति पूजा से बदलने वाले ग़लत लोगों की ओर से देवत्व धर्म बदलाव और विरूपण का शिकार हो गये, जो ईशवर की शान में गुस्ताख़ी करते थे, ना हक़ उस पर आरोप लगाते थे। परन्तु किताब वालों और मूर्ति पूजा करनेवालों के जीवन और प्रार्थनाओं के बीच कोई अंतर नही था। नास्तिकता, बहु आराधिकता और ईशवर की वाणी में परिवर्तन के ढ़ेर के बीच एकीकरण का आकाश बुझ गया। किताब वालों ने वचनों और ईशवर की वाणी को पीठ पीछे डाल दिया। उसकी परवाह नहीं की। सत्य को छुपाया। असत्य को प्रभुत्व प्रधान किया। ईशवर और प्रजा के अधिकारों को कुछ न समझते हुए ईशवर की हराम की हुई चीज़ों का उपयोग किया। और इस तरह से वे सत्य को छिपाते हुए मामूली-मामूली धन और नायकत्व प्राप्त कर लिये, जिस प्रकार से कि हवस के पीछे चलने वाले और सत्य को छोडकर अपनी इच्छाओं को सही समझने वाले उनके मुखियाओं के साथ हुआ है। परन्तु रक्त रंजित युद्ध साधारण चीज़ हो गयी। अत्याचार आम हो गया। मानवता गहरे अंधेरे में जीवन बिताने लगी, और अज्ञान और बहुआराधिकता के कारण पाक दिल ना पाक हो गये। चरित्र बिगड़ गये। बलात्कार किया जाने लगा । अधिकारों का उल्लंघन होने लगा और जगह-जगह बुराई फैलने लगी। यहाँ तक कि अगर कोई विद्वान विचार करेगा, तो उसको यह मालूम हो जायेगा कि उस समय अगर ईशवर किसी ऐसे महान सुधारक को न सुधारता, जो ईश देवत्व के मशाल को और मार्गदर्शन के प्रकाश को मानवता के मार्ग को रोशन करने और सीधे पथ की ओर उसकी मार्गदर्शनी के लिए उठाये तो मानवता अपनी मौत के पास हो गयी थी और अपने निधन का निर्णय कर चुकी थी।

परन्तु मानवीय जीवन के इस अंधेरे काल में ईशवर ने अपने नबी को भेजा। और मुहम्मद को अपना मबी बनाया, ताकि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (अन्तिम नबी) हैं। (अल-अहज़ाब, 40)

ईशवर ने अपने नबी के साथ गुमराही और अप्रसन्नता से मानवता को बचाने वाला प्रकाश देकर भेजा। यहाँ तक कि ईशवर ने मानवता के लिए इस धर्म को पूरा किया। अपनी पूरी अनुग्रह को पूर्ण किया और सारे संसार तक सत्यता को पहुँचाने के लिए प्रयास किया । हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल अंबिया, 107)

ताकि उन्हें प्रसन्नता के मार्ग का स्वाद प्राप्त हो जाये।

ताकि उन्हें प्रसन्नता के मार्ग का स्वाद प्राप्त हो जाये। आप अपने सारे



एक महत्वपूर्ण घटना

मानवता के इतिहास में सबसे सर्वश्रेष्ठ परिणाम के अनुसार जो घटना घटी है, वह इस्लाम धर्म का उपस्थित होना है।

जॉर्ज सारथोन

वाशिंग्टन और हारवर्ड यूनिवर्सिटी का प्राध्यापक

प्रयासों में संसार के थोडे माल की भी इच्छा नही रखते थे, और न आप लोगों से कोई बदला माँगते थे। ईश्वर ने कहा। कह दो, मैं इसपर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, और न मैं अपनी ओर से बातें बनाने वालों में से हूँ। (साँद, 86)

बल्कि ईश्वर ने आपको इंजील रसूल होने या मानव रसूल होने का विकल्प दिया तो आप ने मानव रसूल होने का विकल्प चुत लिया । आप दूसरे मानव की तरह एक मानव होकर जीवन बिताने थे। आपको अपने साथियों की तरह भूख लगती थी। आप अपने साथियों की तरह घायल हुआ करते थे। आप उनके साथ काम करते थे, और आपको ईश्वर का बन्दा होने पर गर्व था। परन्तु ईश्वर ने आपको जब सम्मान देने का निर्णय लिया, तो आपके बन्दे होने का गुण वर्णन किया। ईश्वर ने कहा। प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर यह किताब उतारी और उसमें (अर्थात् उस बन्दे में) कोई टेढ़ नहीं रखी (अल-कहफ़ 1)

बल्कि आप हर किसी को अपने बारे में अतिशयोक्ति करने या अपने अधिकार से ज्यादा अधिकार देने से डराते थे। आप ने कहा ईसा इब्ने मरियम के बारे में ईसाइयों के समान आप लोग मेरे बारे में अतिशयोक्ति न करो। मैं तो केवल ईश्वर का बन्दा हूँ। परन्तु आप लोग मुझे ईश्वर का बन्दा और रसूल कहो (इमाम बुख़ारी ने इस हदीस का वर्णन किया। आपको देखने और जाननेवाला हर व्यक्ति आपकी सत्यता जान लेता है। आपके चरित्र से हक्का-बक्का हो जाता है, और आपके आचार से खुश हो जाता है। कैसे नहीं होगा । जबकि दोस्तों से पहले दुश्मनों ने और मुसलमानों से पहले काफ़िरों ने



सबसे अधिक प्रभावित करनेवाली खबर

इस्लाम धर्म के उपस्थित होने की खबर मानवता की इतिहास में सबसे अधिक प्रभावित करने वाली खबर है, इस प्रकार से कि इस्लाम धर्म ऐसे लोक में उपस्थित हुआ, जिनका इस्लाम की उपस्थिती से पहले कोई नामो-निशान नही था। और ऐसे देश में इस्लाम की उपस्थिती हुई, जिसका कोई हिसाब ही नही था। परंतु इस्लाम की उपस्थिती पर केवल दस(10) ही वर्ष हुए थे कि इस्लाम बडी और फैली हुई शाशनों को तोडते हुए, कई वंशज और कई दशकों से चले आते हुए पुरातन धर्मों को मिटाते हुए, संसार के कई प्रांतों के लोगों की भावनाओं को बदलते हुए, और मज़बूत स्थंभों वाली एक नया संसार बनाते हुए इस्लाम की व्याप्ती हुई, और वह संसार इस्लामिक संसार है।

लोथ्रो पस्टू डार्ड

अमेरिकन लेखक





सारे संसार के लिए करूणामय

निश्चित रूप से मुहम्मद (स) के जीवन के समान कोई जीवन, आप की तरह सोंच-विचार की क्षमता, अपनी लोक में स्थित अज्ञानता और मिथक के विरुद्ध प्रभावशाली सफलता, मूर्ती पूजा करने वालों से मिलने वाली कष्टों पर दृढ़ रहना, अपने संदेश को बुलन्द करना, और इस्लामी सिद्धांत के स्थंभों को मज़बूत करने के लिए आपकी बहादूरी इस बात का सबूत है कि आप अपने मन में किसी धोखे का विचार गुप्त नही रखा करते थे, या आप गलत नही थे। आप दार्शनिक, वक्ता, प्रवक्ता, इस्लामी नियम बताने वाले, मानवता की बुद्धि की ओर निर्देश करने वाले, ऐसे धर्म की स्थापना करने वाले जिसमे किसी प्रकार का संदेह नही, पृथ्वी पर 20 राज्य बनाने वाले और आकाश पर आध्यात्मिक राज्य के विजेता। कोई मनुष्य है जिसको आपके समान मानवीय सम्मान मिला ? और कोई मनुष्य है जो सफलताओं के उस उच्छ स्थर को प्राप्त किया हो। जिसको आपने प्राप्त किया है ।

लामार्थीन

फ्रेंच कवी

आपके हक़ में गवाही दी। आपके लिये तो आचार के प्रति आपके रब की गवाही काफ़ी है। निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो। (अल क़लम, 4)

बल्कि आप के लिए रसूलों और नबियों का ईशवर की ओर से समापक बनाया जाना ही काफ़ी है। जब आपका मिशन पूरो हो गया तो ईशवर ने आपको मृत्यु दी और आपके संदेश को मानवता के लिए क़ियामत तक बाक़ी रख दिया।



मानवता के महान लोग

निश्चित रूप से इतिहास में मुहम्मद (स) ही केवल वह व्यक्ति है जो धार्मिक और सामाजिक दोनों मंच में बेमिसाल सफलता प्राप्त की है। धार्मिक रूप से और सामाजिक रूप से संसार पर एक साथ प्रभावित करने की यह क्षमता इस विषय पर मजबूर करती है कि मानवीय इतिहास मै मुहम्मद (स) सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति है।

मैकल हार्ट

अमेरिकन लेखक



कृतघ्न ही विरोध कर सकता है

महम्मद(स) निश्चित रूप से सच्चे नबी हैं, और मुहम्मद (स) को मुक्ती दिलाने वाले मार्ग की ओर निर्देश करने वाला स्वीकार न करना असंभव है।

हेन्स कोंग

स्वसि धार्मिक संत

मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईश देवत्व के सबूत

1. -सारे रसूलों के समान आपने एक ईशवर की प्रार्थना करने, उसके अतिरिक्त किसी और की प्रार्थना न करने का संदेश दिया। अगर कोई मूसा और ईसा द्वारा लाये हुए सिद्धांत, आदेश और लाभदायक शिक्षा और मुहम्मद द्वारा लाये हुए शिक्षा की तुलना करेगा, तो उसको इन सारी शिक्षाओं का एक ही स्त्रोत से आने का ज्ञान प्राप्त होगा, और वह स्त्रोत ईश देवत्व है।

2. आपने चमत्कारों और खुली खुली निशानियों का प्रकट किया, जो ईशवर के नबी ही प्रकट कर सकते हैं। निस्संदेह पिछले रसूलों द्वारा चमत्कार के रूप मे अपनी सामान्य आदतें दिखाना ईशवर की पद्धति थी, जो रसूलों की सत्यता का सबूत और अपनी क़ौमों के विरोध तर्क पूरा करने का रास्ता था। हर नबी का चमत्कार उन्हीं चीज़ों से संबंधित होता था, जिनमें उनकी क़ौम चतुर होती थी। मूसा का चमत्कार उनकी क़ौम के कौशल के अनुसार था, जो जादू है। ईशवर ने मूसा द्वारा चमत्कार प्रकट करते हुए उनकी जादू को नाकाम (असफल) बना दिया। वे विभिन्न जादुओं का अनुभव रखते हुए भी मूसा का मुक़ाबला करने से असहाय रहे। ईसा की क़ौम विभिन्न चिकित्साओं का अनुभव रखती थी। ईशवर ने ईसा द्वारा गंभीर रोगों की चिकित्सा की। यहाँ तक कि ईशवर ने ईसा द्वारा मुर्दों को भी ज़िन्दा किया। यह भौतिक

चमत्कार है। इसी प्रकार से यह समय और स्थान में सीमित है। परन्तु यह चमत्कार सारे संसार के लिये या सदा रहनेवाला नहीं है। मुहम्मद के चमत्कारों में से भौतिक चमत्कार भी हैं। जिनमें से कुछ ये हैः आपकी उंगलियों से जल का निकलना। आपकी मौजूदगी में थोडे से भोजन का ज्यादा हो जाना, यहाँ तक कि आपके साथ रहनेवाले सारे मुसलमान उस भोजन को खा लेते थे, बल्कि कुछ भोजन बाक़ी भी रह जाता था। थोडे से जल का बहुत हो जाना, यहाँ तक कि पूरी सेना उसको पीति थी और उससे वज़ू भी करती थी। ऊँटनी का आपके प्रेम में रोना, जबकि आप उसको छोडकर मंच की ओर चले गये। मक्का मुकर्रमा में पत्थरों का आपको सलाम करना। पेड़ों का आपके पीछे चलना। आपके हाथ में कंकरियों का तस्बीह (ईशवर की बढ़ाई) करना। ईशवर के आदेश से आपके द्वारा रोगियों का स्वस्थ होना। इसके अतिरिक्त और भी आपके चमत्कार है। इन चमत्कारों में से मेराज के चमत्कार को ख़ुरआन ने वर्णन किया, जबकि आप को मस्जिदे हराम (मक्का) से मस्जिदे अक़्सा (फलस्तीन) ले जाया गया, फिर वहाँ से आपको ऊपर की सैर करायी गयी, यहाँ तक कि आप सात आकाश पार कर गये। ईशवर ने कहा। क्या ही महिमावान है वह जो रातों-रात अपने बन्दे (मुहम्मद) को प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) से दूरवर्ती मस्जिद (अक़्सा) तक ले गया, जिसके चतुर्दिक (माहौल) को हमने बरकत दी, ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ। निस्संदेह वही सब कुछ सुनता, देखता है। (अल-इस्रा, 1)



ईशवरीय ग्रंथ

जब मैं ने ख़ुराने करीम को संपूर्ण रूप से पढ़लिया तो मेरे भीतर यह भावना पैदा हुई कि ख़ुरआन प्राणी और बहुतसी विषयों के बारे में निस्संदेहं पूर्वक उत्तरों पर शामिल है, और ख़ुराने करीम ने घटनाओं को बडे अच्छे तार्किक रूप में वर्णन किया है, जब कि यही घटनाएँ ख़ुरआन के अतिरिक्त दूसरी धार्मिक किताबों मे एक समान नही मिलती। जहाँ तक ख़ुरआन की बात है, तो ख़ुरआन ने भव्य और निर्णायक रूप में इन घटनाओं का वर्णन करते हुए इस बात में कोई संदेह नही रखा की यही सत्य है, और यही निश्चित रूप से ईशवर की ओर से मिलने वाला ग्रंथ है।

डिपोरा पोटर

अमेरिकन पत्रकार



क्या ही अंतर है

इस्लाम धर्म के समान दूसरा कोई ऐसा धर्म नही है जो मुहम्मद (स) से पहले आने वाले नबी और रसूलों को सम्मान देता है। इस्लाम धर्म अपने भक्तों पर अनिवार्य करता है कि वे इनका सम्मान करे और इनपर विश्वास रखे। इस्लाम धर्म के समान दूसरा कोई ऐसा धर्म नही है जो इस्लाम से पहले आनेवाले आकाशीय धर्मों का सम्मान करता हो।

नश्री सलहब

लेबनानी विद्वान (पंडित)



इसी प्रकार से ख़ुरआन ने चाँद फटने के चमत्कार का भी वर्णन किया है। ईशवर का कहना है वह घड़ी निकट आ लगी और चाँद फट गया । (अल-क़मर, 1)

बहु आराधकों ने आप से ऐसे चमत्कार की माँग कि, जो आपके सत्यता का सबूत हो सके। विशेष तौर पर वे चाँद को फाटने का अनुरोध किये, और अगर आप चाँद को फाट दिये तो ईमान लाने का वादा किया। उस समय चाँदनी रात थी यानी चौदवी रात थी। इस रात चाँद अपने पूर्ण रूप में निकलता है। ईशवर के रसूल ने अपने रब से यह प्रार्थना की वह आपको इन बहु आराधकों के अनुरोध को पूरा करने की क्षमता दे। परन्तु चाँद दो टुकडे हो गया। एक टुकडा सफा पहाडी पर और दूसरा टुकडा “ख़ैख़ान” पहाड़ी पर (जो सफा के सामने है) इस महान निशानी के आजाने के बाद भी बहु आराधकों ने आपको सत्य नही माना, बल्कि इसको जादू समझा। ईशवर के धर्म से पीठ फेरनेवालों की यही आदत रही है, जब भी सत्यता उनकी शक्ति को नाश करदेती है और उसका प्रकाश उनकी गुमराही को मिटा देता है, तो इस जैसे समय में वे नियमों का विरूपण करके या तथ्य को बदल के वे सत्यता के साथ धोखा देने का प्रयास करने में कोई डर नहीं रखते। उनका यह विचार होता है कि यह प्रयास सत्यता का विनाश करने का जिम्मेदार है। ईशवर ने कहा किन्तु हाल यह है कि यदि वे कोई निशानी देख भी लें तो टाल जाएँगे और कहेंगे, यह तो जादू है, जो पहले से चला आ रहा है। उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया किन्तु हर मामले के लिए एक नियत अवधि है। (अल-क़मर, 2-3)

3. ख़ुरआनः इन चमत्कारों में ख़ुरआन सबसे महान और जब तक दुनिया रहेगी



साफ-साफ अरबी भाषा में

पवित्र ख़ुरआन के इन महत्वपूर्ण अध्यायों में मुहम्मद (स) ने जिन संकेतों का वर्णन किया है, उनके सामने मानवता के सारे महान पंडितों का कोई स्थान नही रहता, जैसे की हम तक पहुँचने वाली मन-घडत हदीसों को संकेतों के सामने रखने से पता चलता है।

ब्लाचेर रिजिश
प्राच्य विद्या विशारद

तब तक यह रहनेवाला है। यह अर्थवान और मान्सिक चमत्कार और ईश देवत्व की निशानियों में से एक निशानी हैछ इसलिए कि यह वाक्यपटु पुस्तक है, जिसको ईशवर ने ऐसे अनपढ़ व्यक्ति पर अवतरित किया है जो लिखना-पढना नहीं जानता है, और सुवक्ता लोगों को यह चुनौती दी कि वे इस जैसी वाणी को या इस जैसा एक सूरा लाये। ख़ुरआन में स्थिर चमत्कार और चुनौती का घमंडी ही तिरस्कार कर सकता है। ख़ुरआन अपनी शैली, वाग्मिता और समन्वय के अनुसार चमत्कार है। इसमें पूर्वकाल और भविष्य काल की सूचनाये हैं। अपरिवर्तन आदेश, उच्च चरित्र, मार्गदर्शन, प्रकाश और अनुग्रह है।

इसी प्रकार से वह्य (देवत्व रहस्य उद्घाटन) द्वारा बतायी हुई ब्रह्माण्ड की वैज्ञानिक तथ्य से वर्तमान काल में वैज्ञानिक आविष्कारों की (जिनका पहले कभी ज्ञान नहीं था) अनुरूपता हमारे नबी मुहम्मद के ईश देवत्व के सत्य होने का खुला सबूत है। इसी प्रकार से आधुनिक ज्ञान ने कुछ समय पहले माँ के पेट में भ्रूण की दशाओं की, और समुद्र में मीठे और नमकीन पानी के बीच जलीय बाँध होने, इसके अतिरिक्त और भी खोज की है। ख़ुरआन का ईशवर की ओर से अवतरित होने का सबसे बडा सबूत चौदह सदियों से बिना किसी विरूपण और



परिवर्तन के सुरक्षित रहना है, जिसमें आज तक कोई तबदीली नही हुई है, और ख़ुरआन को पढनेवाला, चाहे जितना भी उसको पढ़ले, कभी वह थक नहीं जाता। ईशवर ने कहा । यह नसीहत निश्चय ही हमने अवतरित की है और हम स्वयं इसके रक्षक है (अल-हिज़्र, 9)

बल्कि ख़ुरआन द्वारा सही सिद्धान्त को सुरक्षित रखा। संपूर्ण शरीअत (नियम) का वर्णन किया और सर्वश्रेष्ठ क़ौम को इसके द्वारा संतुलित बना दिया। इससे हमें यह मालूम होता है कि हमारे नबी मुहम्मद का चमत्कार दूसरे नबियों के चमत्कारों के मुक़ाबले में महानता, विश्व व्याप्त और सदा बाक़ी रहने के कारण सबसे अलग है। ख़ुरआन की चुनौती आज तक सब के लिए बाक़ी है। और क़ियामत तक आनेवाले लोगों का ख़ुरआन जैसी वाणी लाने से असहाय होना यक़ीनी है। ईशवर ने कहा। कह दो, यदि मनुष्य और जिन्न इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ कि इस ख़ुरआन जैसी कोई चीज़ लायें तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों। (बनी इसराईल, 88)

4. आप ने संसार के कई घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी की, परन्तु सारी घटनायें आपकी भविष्यवाणी के समान ही हुई, जैसे सिरिया, इराक़ और कॉन्स्टेंटिनोपल के विजेता की घोषणा की। इसी प्रकार से आदम से लेकर सारे रसूलः नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा तक सब क़ौमों के अपने रसूलों के साथ व्यवहार के बारे में, और पिछले क़ौमों के बारे में घोषणा की। आप ने भविष्य की घटनाओं के बारे में भी भविष्यवाणी की, और यह सारी घटनाएँ आपकी भविष्यवाणी के समान ही हुई। इन घटनाओं में से एक यह है कि जब फारसी लोग रूम पर विजेता प्राप्त कर लिये, तो ईशवर ने घोषणा की के कुछ वर्षों के बाद रूम फारसियों पर विजेता प्राप्त करलेंगे। ईशवर ने कहा। अलिफ़-लाम-मीम । रूमी निकटवर्ती क्षेत्र में पराभूत हो गए हैं। और वे अपने पराभव के पशचात शीघ्र ही कुछ वर्षों में प्रभावी हो जाएँगे। हुक्म तो अल्लाह ही का है, पहले भी और उसके बाद भी, और उस दिन ईमानवाले अल्लाह की सहायता से प्रसन्न होंगे। वह जिसकी चाहता है सहायता करता है। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है। यह अल्लाह



ख़ुरआन और आधुनिक विज्ञान एक पल्ले में

मैंने ख़ुरआन को पढ़ा है, पढ़ने से पहले मेरे मस्तिष्क में इसके बारे में किसी प्रकार का पूर्व ज्ञान नही था, और पूरे वस्तु निष्ठता से मैंने उसे पढ़ा, मेरा लक्ष्य यह था कि ख़ुरआन के संदेश और आधुनिक विज्ञान के बीच समानता के स्थर की खोज करूँ, तो मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ की आधुनिक विज्ञान की दृष्टिकोण से ख़ुरआन का एक संदेश भी आलोचना का अवसर नही रखता ।

मोरेस बुकाई
फ्रेंच वैद्य और वैज्ञानिक



यह ईश्वर का ग्रंथ है

मुझे एक क्षण के लिए भी मुहम्मद (स) के संदेश में कोई संदेह नही होता है, और मेरा यह विश्वास है कि आप सारे नबी और रसूलों के अंत में आने वाले हैं, आपको सारे मानवता के लिए रसूल बनाकर भेजा गया है, और तौरात, बैबल के रूप में आनेवाले देवत्व ग्रंथों के अंत में आनेवाला आपका संदेश है। इसका सबसे बडा सबूत चमत्कारी ख़ुरआन है। मैं यूरोपियन वैज्ञानिक और इस्लाम धर्म के शत्रु बिस्काल के सारे विचारों का तिरस्कार करता हूँ, परंतु उसके एक विचार के साथ मैं सहमत हूँ। वह यह है कि ख़ुरआन लेखक मुहम्मद (स) नही है, जिस प्रकार के बैबल के लेखक मत्ता नही है ।

फनसाई मुंताई
फ्रेच आलोचक और पर्याटक

का वादा है। अल्लाह अपने वादा का उल्लंघन नहीं करता, किन्तु अधिकांश लोग जानते नहीं। वे सांसारिक जीवन के केवल बाहय रूप को जानते हैं। (अल-रूम, 1-7)

निश्चय ऐसे ही हुआ जैसे ईशवर ने घोषणा की ।

5. पूर्वकाल में आनेवाले सारे नबी आपके आने से कई सदियों पहले आपके बारे में घोषणा की। आप जिस देश में आयेंगे उस देश के लक्षणों का वर्णन किया। सारी क़ौमें और सारे राजाओं का आपके और आपकी क़ौम के आज्ञावान होने, और आपके लाये हुए धर्म के फैलाव की घोषणा की।

6. आप सारे रसूलों के समापक हैं। अगर आप न भेजे जाते, तो आप से पहले आनेवाले उन सारे रसूलों की ईश देवत्व अवैध हो जाती, जिन्होंने आपके आने की शुभ सूचना की है।

7. असहिष्णुता से दूर रहने वाले कुछ किताब वालों जैसे साधु बुहैरा, वरख़ा बिन नौफल, सल्मान फारसी, अब्दुलाल बिन सलाम और ज़ैद इब्ने साना ने आपके नबी बनने के समय यह गवाही दी कि आप सच्चे हैं और आपके बारे में तौरात और इंजील में सबूत उपलब्ध है।

8. आपके साथ युद्ध करने वाले सारे क़ौमों के विरोध आपको विजेता मिलना, आपके सच्चे नबी होने की निशानी है क्योंकि किसी व्यक्ति का ईशवर की ओर से नबी होने का झूठा दावा करना, फिर ईशवर का उसको विजेता प्राप्त करना, उसका दुशमनों पर प्रभाव होना, उसके संदेश का आम होना और उसके अनुयायियों की अधिक संख्या होना असंभव है। इसलिए कि ये सारी चीज़े केवल सच्चे नबी के ही हाथों प्रकट हो सकती है।

9. आपकी प्रार्थना, शुद्धता, सत्यता, उच्च चरित्र, अच्छे नियम और व्यवहार के उच्च शिखर पर होना है। निश्चय ईशवर ने आपको अनुशासनबद्ध किया, और आपको सर्वश्रेष्ठ अनुशासित बनाया। निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो। (अल-क़लाम, 4)

निशचित रूप से यह सारी बातें केवल सच्चे नबी में इकट्ठा हो सकती हैं।

10. मुहम्मद के ईश देवत्व और चमत्कारों का पीडी दर पीडी हम तक पहुँचना। जो व्यक्ति सारे रसूलों के परिस्थितियों का विचार करेगा और उनके इतिहास को पढ़ेगा, तो उसको निस्संदेह यह यक़ीन हो जायेगा कि जिस किसी बात से किसी नबी के ईश देवत्व होने का सबूत मिलता है, उसी बात से मुहम्मद के नबी होने का सबूत अवश्य मिल जाता है। जब आप मूसा और ईसा की ईशदेवत्व हम तक पहुँचने के बारे में विचार करोगे, तो आपको यह ज्ञान प्राप्त होगा कि पीडि दर पीडि एक दूसरे को बताने के कारण यह हम तक पहुँची है। मुहम्मद के ईश देवत्व की ख़बर हम तक जिन पीडियों द्वारा पहुँची है वह महान, दृढ़ और हमारे युग से क़रीब है। इसी प्रकार से सारे रसूलों के चमत्कार और निशानियों का पीडि दर पीडि हम तक पहुँचना भी एक सबूत है, बल्कि मुहम्मद के हक़ मे यह महत्वपूर्ण सबूत है, इसलिए कि आपकी निशानियाँ बहुत है, बल्कि आप की सबसे बडी निशानी यह पवित्र ख़ुरआन है, जो आज तक पीडि दर पीडि वाणी और पुस्तक के रूप में मौजूद है।

11. मुहम्मद का अनपढ़ होना आपके चमत्कारों का एक सबूत है। निश्चित रूप से ईशवर ने अपने नबी को अनपढ़ बनाकर भेजा, जो न लिखना जानते हैं और न पढ़ना। बल्कि आपका अनपढ़ होना ख़ुरआन ईशवर द्वारा अवतरित होने का सब से बडा सबूत है, विशेषता के साथ उस समय जबकि आप कई वर्षों तक अपनी क़ौम के बीच जीवन बिताये। अगर आप लिखना-पढ़ना जानते, तो बहु आराधक यह दावा करते कि आपकी लायी हुई सारी बातें स्वयं आपके आविष्कारें है और आप के विचारों का परिणाम है। ईशवर ने कहा। इसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर किताब अवतरित की है, तो जिन्हें हमने किताब प्रदान की



ईशवर की कारीगरी

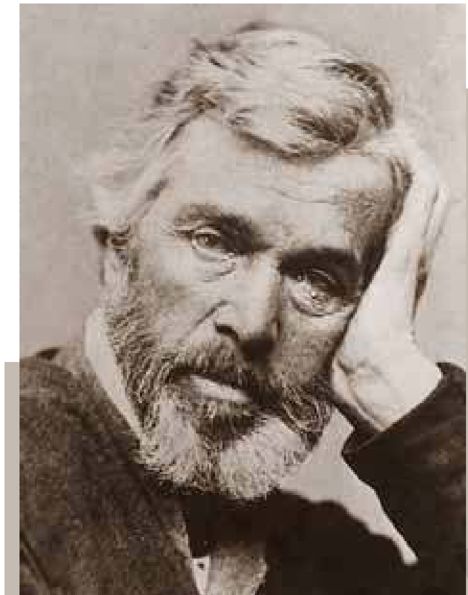
प्राचीन परंपराओं के शासन में जीवित समझे जानेवाले देशों में स्थिर चरित्र अधः पथन के काल में अचानक अरब की जंगलों में एक विरोधी का आगमन हुआ जो बिलकते हुए इस बूढ़े शासन का पीछा करने लगा, और इसी प्रकार से वह पश्चिम में जन्म लेने वाली नई-नई शासनों का भी वह बडा विरोधी था। इस विरोधी की समानता देखते-देखते बडती गई, इस प्रकार से कि ईशवर की पर्यवेक्षण ही उसके स-हृदय सेना को युद्ध और सफलता की ओर ले जा रही है, यहाँ तक की सीरिया और ईजिप्ट की फतह के कुछ समय बाद ही शासनीयों का साम्राज्य समाप्त होने लगा, और कोंसटेंटाइन मित्रों को भी इसी प्रकार कि अंत चेतावनी मिलचुकी थी।

आलडोमिली
फ्रेच प्राच्य विशारद

है वे उसपर ईमान लाएँगे। उनमें से कुछ ईमान ला भी रहे हैं। हमारी आयतों का इनकार तो केवल न माननेवाले ही करते हैं। इससे पहले तुम न कोई किताब पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते ही थे। ऐसा होता तो ये मिथ्यावादी सन्देह में पड़ सकते थे। (अल-अनकबूत, 47-48)

इसी प्रकार इस बात की पुष्टि होती है कि आपकी लायी हुई सारी बातें ईश्वर की ओर से है, आपकी ओर से नही। ईश्वर ने कहा वही है जिसने उम्मियों में उन्हीं में से एक रसूल उठाया जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें निखारता है और उन्हें किताब और हिकमत (तत्तवदर्शिता) की शिक्षा देता है, निस्संदेह इससे पहले तो वे खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे। (अल-जुमुआ, 2)

अनपढ़ रसूल के बारे में यह कहना कि वह अनपढ़ लोगों के सामने ईश्वर की आयतें यानी वहय पढ़कर सुनाते हैं, उन्हें पवित्र बनाते हैं और उन्हें किताब की शिक्षा देते है, (जिस प्रकार से कि पिछले रसूल अपनी क़ौमों को शिक्षा देते थे), और पिछले रसूलों के समान वह उन्हें तत्तवदर्शिता की शिक्षा देते हैं। इन सब गुणों में इस रसूल के अनपढ़ होने के चमत्कार दवारा चुनौती है। आप हालांकि अनपढ़ थे, फिर भी अपनी क़ौम को वह सब लाभ की बातें बताये, जो पिछले पढ़े-लिखे रसूल अपनी क़ौमों को बताया करते थे। आप लाभ की बातें बताने में कुछ कमी नहीं की। इस प्रकार अनपढ़ होना आपके लिए पिछले पढ़े-लिखे रसूलों जैसे मूसा के चमत्कारों से सर्वश्रेष्ठ चमत्कार बनकर उभरा है।

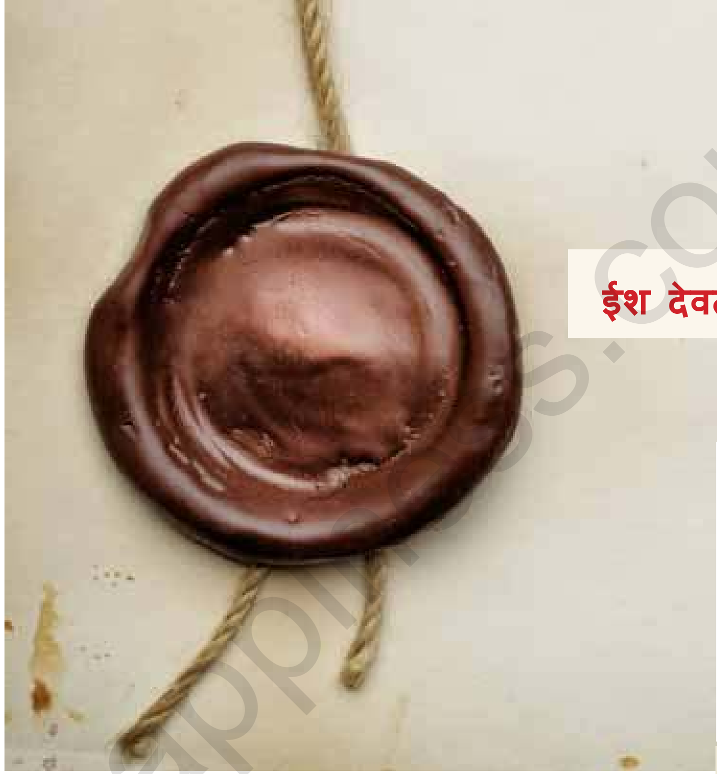


ईश देवत्व के चरित्र

निश्चित रूप से मैं मुहम्मद (स) से प्रेम करता हूँ, क्यों कि आपकी व्यक्तित्व में बनावट नही थी। रेगिस्थान में जन्म लेने वाले इस व्यक्ति में स्वतंत्र राय थी, केवल स्वयं ही पर निर्भर थे, और अपने बारे में बड-बढ़कर बातें न बताते थे, आप घमंडी नही थे लेकिन आप निम्न शैली भी नही थे। आप अपने पुराने कपडों में भी उसी प्रकार से जीवित थे जिस प्रकार से ईश्वर की इच्छा थी। आप साफ-साफ स्वर में रूम और एशिया के राजाओं से बात करते थे, उन्हे इस जीवन और आने वाले भविष्य जीवन की आवश्यकताओं कि ओर बुलाते थे। आप अपने व्यक्तित्व का स्थर जानते थे। और आप दृढ़ संकल्प वाले थे, आज का काम कल पर नही टालते थे।

टामल कार्लाई

स्काटलॉंड का इतिहासकार और लेखक



ईश देवत्व का अंत



ईश्वर की तत्वदर्शिता ने यह चाहा कि मुहम्मद को धरती वालों के लिए एक ऐसा सन्देश देकर भेजे, जो हर समय और स्थान के अनुकूल हो। ईश्वर ने कहा हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों को शुभ-सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (सबा, 28)

और विरूपण, परिवर्तन से इस सन्देश को सुरक्षित रखना चाहा ताकि आपका यह सन्देश मानव के जीवित रहने तक जीवित रहे, परिवर्तन और विरूपण के संदेह से पवित्र रहे। इसी कारण ईश्वर ने इस सन्देश को सारे संदेशों का समापक बनाया। और मुहम्मद को सारे रसूलों के अंत में आनेवाला बनाया। आपके बाद कोई रसूल नही है। इसलिए कि ईश्वर ने

धर्म एक है

सारे नबीयों का धर्म एक था, वे सब आदम से लेकर मुहम्मद (स) तक एक ही सिद्धांत को मानने वाले थे। तीन आकाशीय पवित्र पुस्तकें आई, वे ज़बूर, तौरात और ख़ुरआन हैं, तौरात के सामने ख़ुरआन का दर्जा बिल्कुल ज़बूर के सामने तौरात के जैसा है। मुहम्मद (स) का दर्जा ईसा के सामने बिल्कुल मूसा के सामने ईसा के दर्जे के समान है। लेकिन जिस विषय का जानना अधिक अवश्य है वह यह है कि ख़ुरआन आकाशीय अंतिम किताब है, जो लोगों के निर्देश के लिए आयी है। इस किताब को लाने वाले रसूलों के अंत में आनेवाले है, परंतु ख़ुरआन के बाद कोई किताब नही और मुहम्मद(स) के बाद कोई नबी नही है।

हेन्ड्री दी काष्ट्री

फ्रेंच सेना का पूर्व (जनरल) अध्यक्ष



पवित्र पुस्तकों के अंत में आनेवाली किताब

कभी किसी समय मानवता और उसके चरित्र के लिए तौरात ही निर्देशक थी, यहाँ तक की ईसा आये, तो उनके अनुयायीओं ने इंजील की शिक्षाओं का अनुकरण किया, फिर ख़ुरआन इन दोनों के स्थान पर आ गया। और ख़ुरआन इन दोनों पुस्तकों से अधिक विवरणात्मक है, इसी प्रकार से ख़ुरआन ने इन दोनों पुस्तकों में स्थिर विरूपण और परिवर्तन को सुधारा। ख़ुरआन में हर विषय विवरण प्राप्त होता है और ख़ुरआन सारे नियमों पर आधारित है क्यों कि ख़ुरआन अंत में आनेवाली पवित्र पुस्तक है।

वाशिंग्टन एरफिंग

अमेरिकन प्राशचय विशारद

आपके द्वारा सारे संदेशों को पूर्ण करदिया, नियमों को समाप्त करदिया और शरीर को संपूर्ण कर दिया ।

इसी कारण मुहम्मद की लायी हुई किताब को पिछली सारी किताबों पर ईशवर ने प्रभावित किया और इन किताबों का रद्द करनेवाला बनाया। इसी प्रकार आपके नियमों को पिछले सारे नियमों का रद्द करनेवाला बनाया। ईशवर ने आपके सन्देश को सुरक्षा रखने की ज़मानत लेली। परन्तु पीडि दर पीडि यह सन्देश बराबर पहुँचता रहा, इस प्रकार से कि ख़ुरआन वाणी और लिखित के रूप में एक पीडी से दूसरी पीडि तक आता रहा। और इस धर्म के नियम, प्रार्थना, सन्देश और पद्धतियाँ वास्तविक जीवन में उपयोग द्वारा पहुँचते रहे।

जो व्यक्ति मुहम्मद की सीरत (आत्मकथा) और हदीस की बडी-बडी किताबें पढेगा, वह यह ज्ञान प्राप्त करलेगा कि आप के सहाबा (साथी) मानवता के लिए आपकी सारी परिस्थितियाँ, सारी बातें और सारे कार्य को सुरक्षित रखा। वे आपके अपने ईशवर की प्रार्थना करने, उसके स्मरण करने, आपके ईशवर से क्षमा की प्रार्थना करने, ईशवर के मार्ग में युद्ध करने, आपकी दयालुता और बहादुर होने, आपका अपने साथियों और आनेवाले मेहमानों के साथ व्यवहार की पंजीकृत किया। इसी प्रकार से सहाबा ने आपकी ख़ुशी और ग़म की घडियों को, सफर और गृहस्थ के लम्हों को, आपके खाने-पीने, पहनने, आपके सोने और जागने के तरीक़े को लिखित रूप मे सुरक्षित रखा ।

जब आपको यह भावना प्राप्त हो जाये, तो आप को स्वयं ईशवर की ओर इस धर्म के सुरक्षित रहने का विशवास हो जायेगा।

और उस समय यह ज्ञान प्राप्त हो जायेगा कि मुहम्मद सारे नबी और रसूलों के समापक है। इसलिए कि ईशवर ने हमें यह सूचना दी है कि यह रसूल सारे रसूलों के समापक है। ईशवर ने कहा । मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं है, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (अन्तिम नबी) हैं. अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है। (अल-अहज़ाब, 40)



मानवता के गुरू

मैंने रसूले अरबी की जीवन शैली उनके अनुयायीओं के बुद्धियों से प्राप्त किया, आपका व्यक्तित्व इन बुद्धिमानों के भीतर बहुत महान है। परंतु यह लोग ने आपके संदैश पर इस प्रकार से विशवास रखते हैं जो उन्हे आपकी ओर आनेवाले देवत्व आदेश का पालन करने पर मजबूर करता है। इसी प्रकार से आपके कार्य (जैसा कि हदीस में बताया गया) नियमों का नीव है। यह केवल मुसलमानों के जीवन के अनुशास के लिए हीं नही, बल्की मुसलमान विजेता के ग़ैर मुस्लिम प्रजा के साथ संबन्धों के अनुशासन पर भी आधारित है।

अरनाल्ड ट्वेनबी

ब्रिटीष इतिहासकार

सारे नबियों के अंत में आनेवाले नबी

नबी मुहम्मद (स) से मोहित होने वालों में से मैं भी एक हूँ। जिनका ईशवरने चयन करलिया है, ताकी उनके द्वारा अंतिम देवत्व संदेश लोगों तक पहुँचे, और वह अंतिम नबी हो।

टोल स्टीव

रूसी लेखक





एक ईशवर की आराधना करो

मुहम्मद (स) सारे रसूलों के अंत में आनेवाले महान रसूल थे जिनको एक ईशवर की आराधना ओर सारे मानवों को बुलाने के लिए भेजा गया।

वाशिंग्टन एरफिंग

अमेरिकन प्राश्चय विशारद





सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता ।

ईशवर ने अपने नबी मुहम्मद को इसलिए भेजा ताकि वह सारे संसार, स्त्री-पुरुष, छोटे बडे के लिए सर्वथा दयालुता हो बल्कि ईशवर ने आपको उस व्यक्ति के लिए भी दयालुता बनाकर भेजा जो आप पर विशवास नही रखता था। आपके सारे जीवन में दया खुलकर सामने आती है। इस दया का सब से बडा पक्ष यह है कि जब आप अपनी क़ौम पर दया करते हुए सीधे पथ की ओर बुलाये, तो वे आपको झुठलाये। आपको अपने शहर मक्का से बहिष्कार किया, और आप की हत्या करने का प्रयास किया। लेकिन ईशवर ने आपको सुरक्षा प्रदान की और उनके साथ चाल चली। ईशवर ने कहा । और याद करो जब इन्कार करनेवाले तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे। तुम्हें क़ैद रखें या तुम्हें क़त्ल करदें या तुम्हें निकाल बाहर करें। वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी चाल चल रहा था। अल्लाह सबसे अच्छी चाल चलता है। (अल-अनफ़ाल, 30)

यह सब चालें आपके भीतर अपने क़ौम के लिये दया और उनके मार्गदर्शन की इच्छा अधिक होने का ही कारण बनी। इस बारे में ईशवर ने यह कहा। तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असह्य है। वह तुम्हारे लिए लालायित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करूणामय, दयावान है। (अल-तौबा, 128)

इस्लाम का विश्व विख्यात

निस्संदेह यह ख़ुरआन की वह आयत (वाक्य) जो ईशवर द्वारा सारे संसार के लिए दयालुता बनाकर भेजे गये रसूल पर अवतरित धर्म का विवरण करते हुए इस्लाम की विश्व विख्यात का संकेत दिया है, यह सारे संसार के लिए सीदी सदा है। यह इस बात का खुला सबूत है कि रसूल को यह यक़ीन था कि उनका संदेश अरब ख़ौम की सीमायें पार कर जायेगा, और इस बात की अवशयकता है की वह अपने इस नये संदेश को उन ख़ौमों तक भी पहूँचाए, जिनका संभन्ध अलग अलग ज़ात से है और जो विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोलती है।

लोरा वेग्यि फ़यागलेरी

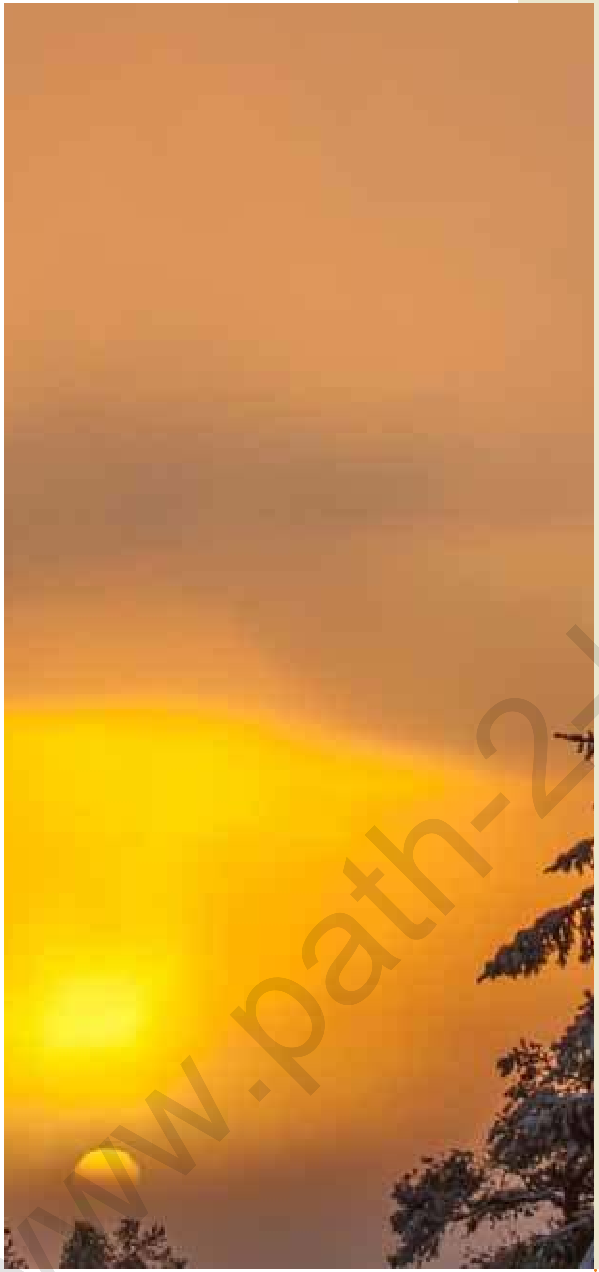
इटालियन प्रच्य विधी विचारक



फिर जब आप अपनी क़ौम के विरोध मक्का फतह कर लिये, उस समय आपने उनको क्षमा कर दिया। और जब ईशवर ने आपके पास आपकी क़ौम का विनाश करने के लक्ष्य से दो बडे पहाड़ों को मिलाने के लिए एक इंजील को भेजा, तो आपने कहाः बल्कि सब्र करो, हो सकता है कि उनकी पीडियों में से कोई एक ईशवर की प्रार्थना करनेवाला पैदा हो जाये। ईशवर ने कहा। **हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है।** (अल-अंबिया, 107)

आप सारे संसार के लिए, हर रंग, भाषा, विचार, सिद्धांत और स्थान के लोगों के लिए दयालुता बनाकर भेजे गये।

आपकी दयालुता केवल मानवता के लिए ही नही, बल्कि पत्थरों और जानवरों के लिए भी आप दयालु थे। एक अन्सारी साहबी का ऊँट, जिसको उसके मालिक ने मारा था और उसको भूखा छोड़ दिया था। ईशवर के रसूल को



उसकी स्थिति पर तरस आया। आप ने उस पर दया की। मालिक को ऊँट के साथ अच्छा व्यवहार करने, उसको भूखा न रखने और उसकी ऊर्जा से अधिक बोझ न लादने का आदेश दिया। जब आपने एक व्यक्ति को कबूतर के बच्चों को लेते हुए देखा, तो आपने उनपर दया की, हमदर्दी दिखायी, बच्चों को कबूतर के पास लौटाने का आदेश दिया। आप ने तो यह कहा हैः जब तुम ज़ब्ह करो तो अच्छे तरीक़े से करो। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है) इसी प्रकार से आप की दयालुता पत्थरों को भी अपने अन्दर समा लेती है। परन्तु आप उस ऊँटनी के लिए हमदर्द हो गये, जो आपकी जुदाई पर निराश थी, आपने उसपर दया की। उसके पास पहुँचे। अपने गले से लगाया यहाँ तक कि वह शांत हो गयी।

आपकी यह दयालुता केवल एक परिस्थिति और घटना नहीं थी। बल्कि यह आदेश, नियम तरीक़ा और चरित्र था, जो आपने लोगों को पालन करने के लिए कहा। निश्चय लोगों के साथ दया, करूणा, सहानुभूति की ओर उत्तेजित करते हुए, और लोगों के बीच आपसी वैर पैदा करने से डराते हुए आप ने यह कहाः ऐ प्रभु। जो भी व्यक्ति मेरे क़ौम के किसी भी मामले का ज़िम्मेदार बनें और उनके बीच आपसी वैर डाल दे, तो तू उस पर सख़्ती कर। और जो भी व्यक्ति मेरे क़ौम के किसी मामले का ज़िम्मेदार बने और उनपर दया करे तो तू उस पर दया कर (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है।) दयालुता आपके आचार में से सब से महत्वपूर्ण आचार है, दया और सुरक्षा वाले धर्म इस्लाम का मूल नियम है।

सर्वथा दयालुता

मुहम्मद के महान इतिहासिक जीवन का जिस रूप में ईशवर द्वारा विवरण किया गया है, उससे अधिकतर अच्छा विवरण करना संभव नही है। इस प्रकार कि ईशवर ने कहाः हमने तुम्हे सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। निस्संदेह इस महान अनंत ने स्वयं यह परिमाण दिया कि वह हर मजबूर और प्रत्येक ज़रूरतमंद के लिए सबसे महान दयालु हैं। निश्चित रूप से अनाथ, ज़रूरतमंद, पीडित, ग़रीब और मज़दूरों के लिए मुहम्मद वास्तव में दयालुता हैं।

जॉनलेक

स्पानीश प्रच्य विधी विचारक





मुहम्मद का भेजा जाना मानवता के लिए प्रसन्नता है।

मुहम्मद नबी बनकर आये, तो मुहम्मद के ईश देवत्व आपकी लायी हुई बातों और मार्गदर्शन से ईश्वर नें मानवता को ऐसे मार्गदर्शन किया, जिसका वर्णन करना और ज्ञान प्राप्त करना आसान नही है। आप मानवता के लिए लाभदायक ज्ञान, अच्छे कार्य, उच्च चरित्र और सीधा पथ लेकर आये। अगर सारी क़ौमों की ज्ञान और व्यवहार के प्रति तत्वदर्शिता का मुहम्मद के लाये हुए तत्वदर्शिता से तुलना की जाये तो दोनों में बहुत अंतर दिखायी देगा। ईश्वर ही के लिए उसकी इच्छा के अनुसार सारी प्रशंसाएँ हैं।

सिद्धांत के पहलू से (यह कहा जा सकता है कि) मानवता के बीच बहु आराधिकता और एक ईश्वर के अतिरिक्त दूसरों की प्रार्थना करना आम था, यहाँ तक कि पिछले बहुत से देवत्व पुस्तकों वाले भी इससे पीडित थे। फिर अल्लाह के रसूल एकीकरण का सिद्धांत और उस ईश्वर की प्रार्थना का संदेश लेकर आये जिसका कोई साझी नही। लोगों को मानवीय पूजा से निकाल कर मानवीय प्रभु की पूजा की ओर बुलाया। उनके मन को एकीकरण के सिद्धांत द्वारा बहु आराधिकता और एक ईश्वर के अतिरिक्त दूसरों की पूजा करने की गंदगी से पवित्र बनाया। ईश्वर ने मुहम्मद को उसी संदेश के साथ अवतरित किया, जिसको लेकर पिछले सारे नबी और रसूल आये थे। ईश्वर ने कहा। हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा उसकी ओर यही प्रकाशना की, मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बन्दगी करो। (अल-अंबिया, 25)

ईश्वर ने यह भी कहा । तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है, उस कृपाशील और दयावान के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। (अल-बक़रा, 163)

सामाजिक पहलू से (यह कहा जा सकता है कि) आप को उस समय रसूल बनाकर भेजा गया, जिस समय अन्याय और दासता का रिवाज था। सामाजिक रूढ़िवाद परंपराओं ने मानवता को कई भागों में विभाजित किया था, जो एक दूसरे को दासता बनाते और अन्याय करते। तो मुहम्मद सारे लोगों के बीच, अरब के हो या न हों, गोरे हो या काले हों, समानता का संदेश लेकर आये। हर एक को दूसरे पर केवल ईश्वर के डर और अच्छे कार्य ही के कारण महत्व मिलता है। ईश्वर ने कहा। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुम में सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुम में सबसे अधिक डर रखता है। (अल-हुजुरात, 13)

आप ने न्याय, दया और सामाजिक एकजुटता का आदेश दिया। अन्याय, निर्दय और ज़ुल्म से (रोका) निशेध किया। ईश्वर ने कहा। निश्चय ही अल्लाह न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो। (अल- नहल, 90)

बल्कि लोगों के अधिकार, यहाँ तक कि नैतिक अधिकार का भी ख्याल रखा। परन्तु आपस में एक दूसरे का परिहास करने से रोका। ईश्वर ने कहा। ऐ लोगों जो ईमान लाए हो। न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुष की हँसी उड़ाए, संभव है वे उनसे



मानवता को अंधेरों से उजाले की और लानेवाला

रसूल महम्मद ने सारे संसार को बहुत तेज़ी के साथ प्रसन्नता के सबसे ऊँचे स्थान पर ला खड़ा किया। जो व्यक्ती न्याय की दृष्टी से मुहम्मद के काल से पहले लोगों कि स्थिती और उनके बिगाड़ को देखें, फ़िर मुहम्मद के काल में और उस के बाद लोगों की स्थिती, उनको प्राप्त होने वाले महान विकास की ओर देखें, तो वह इन दोनों कालों के बीच धरती और आकाश के समान अंतर पायेगा।

कोईलयम

ब्रिटीष आलोचक



सारे लोगों का धर्म

दो आयतें (वाक्य) 1.दीन(धर्म) तो ईश्वर की दृष्टी में इस्लाम ही है। (आले इमरान, 19), 2. हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों को शुभ-सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा (सबा-28)। यह दोनों महान आयतें मेरे मन में गहरा असर छोड़ा है। इसलिए कि इन में उस वैश्विक छवी का परिमाण है, जिस्से इस्लाम धर्म पहचाना जाता है। इस के अतरिक्त इस्लाम की और भी विशेषताएँ है, जैसे नियम, आदेश और हमारे नबी ईसा के प्रती इस्लाम का विवरण। क्या सारे नबी और रसूलों द्वारा लाए हुए हर संदेश का सम्मान देने का आदेश देनेवाली इन महान शिक्षाओं से अधिकतर सत्य और शक्तिमान कोई और शिक्षा है। निस्संदेह इस्लाम धर्म सत्य, सच्चाई और प्रमाण का धर्म है।

व्यागनर

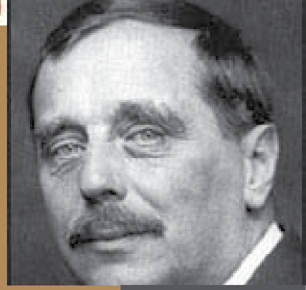
हालांड का वैज्ञानिक

अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, संभव है वे उनसे अच्छी हो, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के बाद अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति इस नीति से न रुकें, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं। (अल-हुजुरात, 11)

नैतिकता के भाग में (यह कहा जा सकता है कि) ईश्वर ने अपने नबी को उस समय भेजा, जब कि मानवता का चरित्र तल (नीचे) जा चुका था। न कोई सदाचार था, न उच्च नैतिकता और न कोई अच्छे आचार। फिर नबी आये, ताकि लोगों को उच्च नैतिकता और अच्छे चरित्र की ओर मोड (झुका) दे। इस प्रकार से उनका जीवन अच्छे व्यवहार के कारण सुखमय (आनंद) हो गया। ईश्वर के रसूल (मुहम्मद) ने कहा: मुझे नैतिकता को पूर्ण करने के लिए भेजा गया है (इस हदीस को इमाम बैहक़ी ने वर्णन किया। बल्कि ईश्वर ने मुहम्मद के चरित्र (नैतिकता) को सर्वश्रेष्ठ बताया है। ईश्वर ने कहा । निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो। (अल-ख़लम,4)

परन्तु आप नैतिकता और उच्च चरित्र के उदाहरण थे। आप पवित्रता, सदव्यवहार, भक्ति, सुशीलता, सुसंभाषण, बल्कि आप हर एक अच्छी बात में उदाहरण थे। ईश्वर ने कहा। निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है, अर्थात उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे। (अल-अहज़ाब, 21)

जहाँ तक स्त्री की बात है तो वह इस्लाम के आने से पहले दो कठिन चीज़ों से पीडित थी। इस प्रकार कि अल्लाह ने अपने नबी को भेजा, उस समय स्त्री का आदर नही था,



हज्जतुल विदा (मुहम्मद का अंतिम हज्ज) से मिलने वाले उपदेश

मुहम्मद ने अपने मृत्यु से एक वर्ष पहले मदीने से मक्का की ओर यात्रा करते हुए हज्जतुल विदा किया। उस समय आपने अपनी ख़ौम के सामने महत्वपूर्ण भाषण दिया। इस भाषण का पहले वाक्य के सामने मुसलमानों के बीच स्थिर अन्याय, भेद-भाव, और हत्याचार दब जाता है। इस भाषण के अंतिम वाक्य नीग्रो मुस्लिम को राजा के समान मानता है। निश्चित रूप से इस भाषण ने संसार में सम्मान जनिक और न्याय पर आधारित व्यवहार के महान नियमों की स्थापना की है।

हार्बर्ट जॉर्ज विल्स

ब्रिटिश भाषाविद वैज्ञानिक

उसके कोई अधिकार नहीं थे। लोग स्त्री के प्रति आपसी यह अंतर रखते थे कि वह मानव है या नहीं। क्या उसको जीवित रहने का अधिकार है या फिर उसकी हत्या कर दी जाय, और बाल्य काल में ही उसको दफ़ना दिया जाय। लोग स्त्री के प्रति इस प्रकार की बातें करते थे जैसा कि ईश्वर ने कहा। और जब उनमें से किसी को बेटी की शुभ-सूचना मिलती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह घुटा-घुटा रहता है। जो शुभ-सूचना उसे दी गई वह (उसकी दृष्टि में) ऐसी बुराई की बात हुई कि उसके कारण वह लोगों से छिपता फिरता है कि अपमान सहन करके उसे रहने दे या उसे मिट्टी में दबा दे। देखों, कितना बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं। (अल-नहल, 58, 59)

परन्तु स्त्री केवल एक खिलौना थी, गुडिया थी और निरादर प्राणी थी ।

तो ईश्वर ने स्त्री को सम्मान देने के लिए अपने रसूल को भेजा। ईश्वर ने कहा। और यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोडे पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा की। और निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोंच-विचार करते हैं। (अल-रूम, 21)

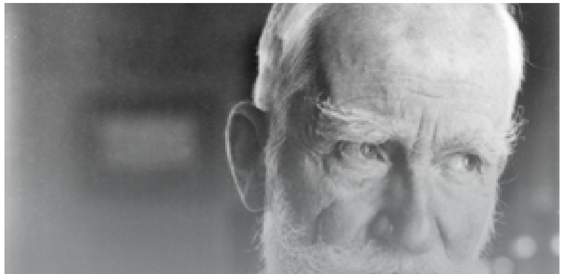


ईश्वर के नबी मुहम्मद के चरित्र

मुहम्मद मनोदशा, चरित्र, नैतिकता और भावना के महान शिखर पर थे। आप चमत्कार्य अहसास, बुद्धिमत्ता और पवित्र भावनाओं की शक्ती रखते थे। आप महान नैतिकता और उच्च आचार के ऊँचे स्थान पर थे।

अब्दुल्ला कोयेलयं

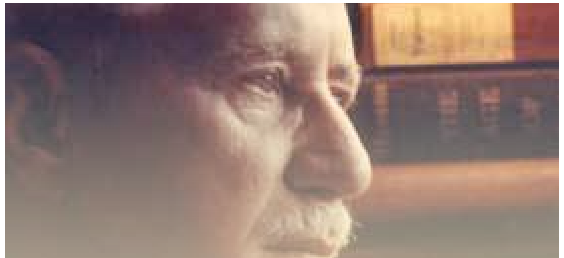
ब्रिटीष आलोचक



संसार का मार्ग

मैंने इस्लाम के रसूल (मुहम्मद) कि जीवनी को कई बार अच्छे से पढ़ा है। मैंने इस में केवल वही चरित्र पाए जिनके होने की आवश्यकता होती है। मैने कई बार यह आशा की इस्लाम सारे संसार का मार्ग हो।

बर्नार्ड शाह
ब्रिटीष लेखक



स्त्री का स्थान

इस्लाम ने अरब देश में स्त्री के स्थान को ऊँचा किया। लडकियों को ज़िन्दा दफ़न करने के रिवाज को समाप्त किया। न्यायिक कार्यों और संपती के अधिकारों में स्त्री और पुरुष के बीच समान्ता का निर्णन दिया, स्त्री को हर हलाल काम करने, अपनी संपती और धन की स्वयं सुरक्षा करने, वारीस बनने, और इच्छा के अनुसार अपने धन को ख़र्च करने का अधिकार दिया है। इस्लाम ने अज्ञानपूर्ण काल में वास्तुओं के समान स्त्रियों का वंशानुक्रम से संतान की संपती बन जाने की परंपरा को समाप्त किया। विरासत में पुरुष के भाग से आधा स्त्री का भाग माना। स्त्रियों की इच्छा के बिना उनका विवाह करने से रोका ।

वेल्डोरॉन्ट
अमेरिकन लेखक

बल्कि ईशवर ने माँ के रूप में स्त्री के साथ सदव्यवहार करने का आदेश दिया। ईशवर ने कहा ।

तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। (अल-इस्रा, 23)

ईशवर ने स्त्री के साथ अच्छा व्यवहार करने को पुरुष से अधिक महत्व दिया। परन्तु जब एक व्यक्ति ईशवर ने रसूल के पास आया, तो कहने लगाः ऐ ईशवर के रसूल मेरे अच्छे व्यवहार का कौन सब से अधिक अधिकार रखता है। रसूल ने कहाः आपकी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर कौन, रसूल ने कहाः आपकी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर कौन, रसूल ने कहाः आपकी माँ। व्यक्ति ने कहाः फिर इसके बाद कौन। रसूल ने कहाः आपके पिता (इस हदीस को बुख़ारी ने वर्णन किया) बेजी के रूप में स्त्री को सम्मान देने का आदेश दिया। कहाः जिस व्यक्ति ने तीन लड़कियों का पालन-पोषण किया। उन पर दया किया और उनकी आवश्यक्ताओं को पूरा किया, तो निस्संदेह वह स्वर्ग का अधिकारी है। आप से यह प्रश्न किया गयाः ऐ ईशवर के रसूल, अगर किसी के पास केवल दो ही लड़कियाँ हो तो। आप ने कहाः चाहे दो ही क्यों न हो। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया है) इसी प्रकार बेटी के रूप में स्त्री को सम्मान दिया। इस सम्मान को स्त्री के अच्छे होने से संबन्धित रखा परन्तु आप ने कहाः तुम में सब से अच्छा व्यक्ति वह है जो अपने घरवालों (बीवि बच्चों) के साथ अच्छा हो। मै अपने घरवालों के साथ तुम में सब से अच्छा हूँ (इस हदीस को इब्ने माजा ने वर्णन किया।)



अन्याय और ज़ुल्म

पश्चिम के फ़िलासफ़रों का ग्रूप इस समस्या में बहस करने के लिए बैठा कि क्या स्त्री के लिए पुरुष के समान आत्मा है। क्या स्त्री मानवीय आत्मा रखती है या पशु कि आत्मा। फ़िलासफ़र यह परिमाण को पहुँचे कि स्त्री को आत्मा है, लेकिन पुरुष के मुक़ाबले में स्त्री की आत्मा अधिकतर कम दर्जे की है।





वह हमेशा रहनेवाला सन्देश क्या है।

सारे धर्मों में हर धर्म का अपने निर्माता के नाम पर, या उस विशेष क़ौम के नाम पर जिनके बीच उसका निर्माण हुआ, नाम रखा गया। जोरास्टर से सह संबंध होने के कारण जोरास्टरी (फारसी धर्म) रखा गया। बुद्ध के नाम से संबंध करते हुए बौद्धमत नाम रखा गया। यहूदीयत का यह नाम इसलिए रखा गया कि वह यहूज़ा नामी कुंबे में प्रकट हुआ। नसरानी (ईसाई) धर्म नसारा (सहायतकार) के नाम से दिया गया है। यह बातें इस्लाम के अन्दर नहीं है।

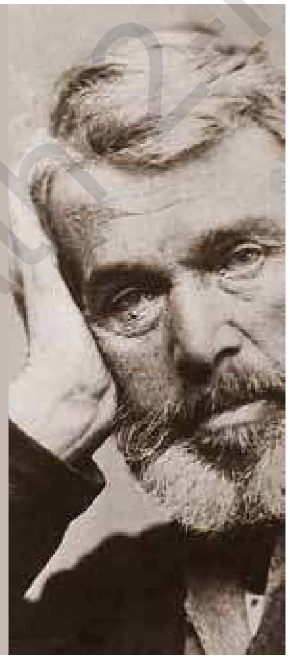
इस्लाम धर्म को किसी व्यक्ति या किसी विशेष क़ौम से जोड़ा नही गया है। बल्कि हर वह व्यक्ति जो ईशवर के सामने विनम्र (झुकता) होता है। उसके आदेशों का पालन करता है। और उल्लंघन नहीं करता है। एक ईशवर की आराधना करता है, तो उसने अपने आप को ईशवर को सौंप दिया। जब यह नबी और रसूलों के समापक मुहम्मद का अनुसरण करेगा। आपके लाये हुए सत्य धर्म के मार्ग पर चलेगा। आप पर विशवास रखेगा और आपकी बतायी हुई बातों पर चलेगा, निस्संदेह वह सच्चा मुसलमान है, चाहे वह किसी समय या स्थान का रहनेवाला हो, और किसी भी रंग और जात का हो

ईशवर वह है जिसका कोई साझी नही

ईशवर के अतिरिक्त कोई प्रभु नही है। वह एक है, उसका कोई साझी नही है। वह सत्य है। उसके अतिरिक्त हर चीज़ असत्य है। उस ने हमारी सृष्टी की, वही हमें रोटी देता है। निस्संदेह इस्लाम यह है कि हम अपना मामला ईशवर को सौंप दें । उसी के सामने आत्मसमर्पण करें। उसी से सुख प्राप्त करें। उसी पर भरोसा रखें। यह विश्वास रखें कि संसार के संतुलन में ईशवर की तत्वदर्शता ही को पूर्ण शक्ती प्राप्त है। इस संसार और भविष्य जीवन में जो भी हमें नसीब में मिले उस्से खुश रहें। ईशवर द्वारा हमें मिलने वाली हर चीज़, चाहे वह कठिन मौत ही क्यों न हो, हमें उसको मुस्कुराते चहरे और सुखी मन के साथ स्वीकार करना चाहिये। हम यह जानलें कि वही भलाई है। उसके अतिरिक्त कोई और भलाई नही। मानव की यह नादानी है कि वह संसार और उसकी परिस्थितियों को समझने के लिए अपने कमज़ोर दिमाग़ से कोई स्वयं हिसाब बनालें। बल्कि मानव के लिए इस बात की आवश्यकता है कि वह इस ब्रहमाण्ड के लिए न्यायिक नियम होने का विश्वास रखे। चाहे वह अहसास न करपाएँ। यह विश्वास रखें कि ब्रहमाण्ड की स्थापना अच्छाई पर आधारित है, और संसार की आत्मा सुधार पर है। मानव को इस बात का ज्ञान रखने और इस पर विश्वास रखने की आवश्यकता है, और सुखी मन के साथ इसका पालन करें।

टोमस कार्लाई

स्काटलॉंड का इतिहासकार और लेखक



अरब समूहों और दूसरे समूहों के बीच कोई अंतर नही

मुस्लिम जिस किसी समूहों से वे संबन्धित हों, फ़िर भी वे आपस में एक दूसरे के लिए अजनबी नही है। इस्लामिक समूहों में हर प्रकार के अधिकारों से लाभ उठाने में अरब मुस्लिम और चीन मुस्लिम के बीच कोई अंतर नही। इसी कारण इस्लामिक अधिकार पश्चीमी अधिकार से पूर्ण रूप से अलग है।

गुस्ताव लोबुन

फ्रेंच इतिहासकार





सदा रहनेवाला सन्देश सारे ब्रहमाण्ड को उन्नत शिखर का मार्ग दिखाया ।

इस्लाम वह धर्म है जिसका सारा ब्रहमाण्ड पालन करता है। ईशवर ने कहा। अब क्या इन लोगों को अल्लाह के दीन (धर्म) के सिवा किसी और दीन की तलब है, हालाँकि आकाशों और धरती में जो कोई भी है स्वेच्छापूर्वक या विवश होकर उसी के आगे झुका हुआ है। और उसी की ओर सबको लौटना है। (आल-इमरान, 83)

यह बात सब जानते है कि इस ब्रहमाण्ड की हर चीज़ विशेष नियम और निश्चित आधार पर चलती है। सूर्य, चन्द्रमा, तारे और धरती नियम के अनुसार चलते हैं, जिनसे कण (ज़र्रा भर भी) भी हटना या निकल जाना उनके वश (बस) की बात नही यहाँ तक कि मानव भी जब स्वयं अपने आप में विचार करेगा, तो आपको यह ज्ञान प्राप्त होगा कि मानव भी ईशवर के विशेष नियमों का पूर्ण रूप से अनुपालन करता है। परन्तु वह अपने जीवन के लिए बनाये गये नियमित देवत्व अनुमान (ख़ुदाई अंदाजा) के अनुसार ही साँस लेता है। पानी, भोजन, प्रकाश और गर्मी की आवश्यकता से प्रभावित होता है। शरीर के सारे आंग इसी देवत्व अनुमान के प्रकार चलते हैं। इन अंगों से होने वाला हर काम ईशवर के निश्चित आधारों के अनुसार ही होता है।

इस ब्रहमाण्ड की हर चीज़, आसमान के बडे ग्रह से लेकर धरती के छोटे मिट्टी के कण तक, इसी देवत्व पूर्ण अनुमान का पालन करती है। यह शक्तिमान, आदरणीय प्रभु का अनुमान (अंदाज़ा) है। जब आकाश, धरती और इन दोनों

के बीच की हर चीज़ इसी अनुमान (अंदाज़े) की अनुयायी है, तो इस से य मालूम हो जाता है कि इस्लाम सारे ब्रह्माण्ड का धर्म है। क्योंकि इस्लाम का मतलब बिना किसी आपत्ति के पालन करना, अपने शासक के आदेशों को मानना है। सूर्य, चन्द्रमा और धरती ईशवर के अनुयायी है। हवा, पानी, प्रकाश, अंधेरा और गर्मी अनुयायी है। पेड़, पत्थर, पशु-पक्षी अनुयायी है। ईशवर ने कहा । जो चीज़ें आकाशों में हैं जो धरती में हैं, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं। (अल-जासिया, 13)



बल्कि वह मानव जो अपने ईशवर का ज्ञान नही रखता है, उसके वजूद का इन्कार करता है, उसके निशानियों का तिरस्कार करता है, या उसके अतिरिक्त किसी और की पूजा करता है, किसी और को उसका साझी बनाता है, वह भी अपनी वृत्ति (फितरत) के अनुसार अनुयायी है। मानव के मन में दो बातों के बीच टकराव रहता है।

पहली बातः वह वृत्ति (फितरत) जिसके अनुसार ईशवर ने मानव की सृष्टि की है। यानी ईशवर के अनुयायी बनना, उसके सामने झुकना, श्रद्धा से उसकी आराधना करना। हर उस चीज़ से प्रेम करना जिससे ईशवर प्रेम करता है, जैसे सत्यता, भलाई और नेकी। हर उस चीज़ से नफरत करना जिससे ईशवर द्वेश करता है, जैसे बुराई, अन्याय और झूठ। इसके अतिरिक्त वृत्ति (फितरत) के अनुसार दूसरी चीज़ें, जैसे खाने-पीने और ब्याह की इच्छा रखना। धन और बाल बच्चों से प्रेम रखना। इसके लिए शरीर के अंगों का अपने-अपने विशेष काम करना। दुसरी बातः मानव की इच्छा और उसकी पसन्द। ईशवर ने मानव की ओर अपने रसूल भेजे और पुस्तकें अवतरित की। ताकि सच और झूठ, मार्गदर्शन और गुमराही, भलाई और बुराई के बीच मानव अंतर करे। ईशवर ने मानव को बुद्धि और समझ दी, ताकि वह अपनी पसंद में दूरदर्शिता से काम ले। अगर वह चाहे तो भलाई के मार्ग पर चले, जो उसे सत्यता और मार्गदर्शन की ओर ले जाता है। अगर चाहे तो बुराई के मार्ग पर चले, जो उसे विनाश और असत्य की ओर ले जाता है।

कह दो, यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से। तो अब जो कोई चाहे माने और जो चाहे इनकार कर दे। हमने तो अत्याचारियों के लिए आग तैयार कर रखी है जिसकी क़नातों ने उन्हें घेर लिया है। यदि वे फ़रियाद करेंगे तो फ़रियाद के प्रत्युत्तर में उन्हें ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा, वह उनके मुँह भून डालेगा। बहुत ही बुरा है वह पेय और बहुत ही बुरा है वह विश्रामस्थल । (अल-कहफ़, 29)

जब आप पहली बात को सामने रखते हुए मानव की ओर देखेंगे, तो आप उसको आत्मसमर्पण करने वाला और इसी के भीतर जीवित रहने वाला पाओगे। इस आत्मसमर्पण के अलावा मानव के लिए कोई दूसरा विकल्प नहीं है। मानव की स्थिति पूर्ण रूप से दूसरे प्राणियों के समान है। जब आप दूसरी बात को सामने रखते हुए मानव की ओर देखेंगे, तो आप उसको चयनित पायेंगें। जो चाहे वह चयन कर सकता है। चाहे तो वह मुसलमान हो जाये, और चाहे तो काफिर। ईशवर ने कहा। हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्र। (अल-दहर, 3)

इसी कारण आप मानवता को दो भागों में विभाजित देखेंगेः एक वह मानव जो अपने प्रजापति का ज्ञान रखता है। उसको अपना प्रभु, देवता और मालिक जानता है। उसी की पूजा करता है। अपने वैकल्पिक जीवन में उसके नियमों का पालन करता है। जिस प्रकार से कि वह वृत्ति के अनुसार अपने ईशवर के लिए आत्मसमर्पण करने वाला है, जिसके अतिरित उसके लिए कोई विकल्प नही है, इसी प्रकार से वह अपने ईशवर के अनुमान (तक़दीर) का अनुयायी है। यही वह पक्का मुसलमान है जिसका इस्लाम संपूर्ण हो गया और उसका ज्ञान भी सही हो गया। इसलिए कि वह यह ज्ञान प्राप्त करलिया कि ईशवर उसका प्रजापति है, जिसने उसके पास रसूलों को भेजा है और ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति दी है। इस मुसलमान की बुद्धि संपूर्ण हो गयी और उसकी सोंच सही हो गयी इसलिए कि वह अपने विचार की शक्ति काम में लाया। फिर यह निर्णय लिया कि एक उस ईशवर के अतिरिक्त किसी और की पूजा न की जाय, जिसने उसको हर विषय में सोंचने समझने की क्षमता दी है। इस मानव की जिह्वा सही हो गयी, सत्य को बोलने वाली हो गयी, इसलिए कि वह अब केवल एक ईशवर को मानता है, वह ईशवर जो उसमें बातचीत की क्षमता पैदा की है। अब ऐसा लगेगा कि उसके जीवन में केवल सत्य ही है। इसलिए कि वह अब ईशवर के उन नियमों का

अनुयायी है जिसमें स्वयं उसी के समस्याओं के लिए अच्छाई है। मानव और सारे प्राणियों के बीच प्रेम और परिचय का संबन्ध हो गया। इसलिए कि वह तत्वदर्श, ज्ञानी ईश्वर की पूजा करता है, जिसके आदेशों और अनुमान (तक़दीर) का सारे प्राणी अनुपालन करते हैं। निस्संदेह ऐ मानव ईश्वर ने इन सारे प्राणियों को तेरे ही काम में लगाया है। ईश्वर ने कहा। जो कोई आज्ञाकारिता के साथ अपना रूख़ अल्लाह की ओर करे और वह उत्तमकार भी हो तो उसने मज़बूत सहारा थाम लिया। सारे मामलों का अंजाम अल्लाह ही की ओर है। (लुक़मान, 22)

दोनों के बीच कितना ही बड़ा अंतर है

एक ईसाइ होने के कारण मेरे पास पवित्र ख़ुरआन में ईश्वर के एकी करअ के सिद्धांत और तीन ईश्वर को मानने के सिद्धांत के बीच तुलना करने के अलावा कोई विकल्प नही था। मैंने यह पाया कि दूसरा सिद्धांत (यानी ईसाई) इस्लामी सिद्धांत से अधिकतर दर्जे कम है। विशेष तौर पर इस सिद्धांत के कारण मै ईसाइ धर्म से अपना विश्वास खोने लगा। क्योंकि किसी भी धर्म में ईश्वर पर विश्वास रखना सबसे पहला और महत्वपूर्ण सिद्धांत है। जब धार्मिक संकलपना के अनुसार ईश्वर पर मेरा विश्वास ही ग़लत हो, तो इसका मतलब दूसरी सारी प्रयासों का कोई लाभ और लक्ष्य नही रहता है।

नागीमोर अमुनी

ग़ाना का धार्मिक प्राचारक







इस्लाम वह धर्म है जिसको ईश्वर ने सारी मानवता के लिए अवतरित किया है। ईश्वर ने कहा।

अतः तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है। तो उसी के आज्ञाकारी बनकर रहो और विनम्रता अपनानेवालों को शुभ-सूचना दे दो। (अल हज, 34)

वह सारे नबी और रसूलों का धर्म है। ईश्वर ने कहा कहो, हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतरी और जो इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान की ओर उतरी, और जो मूसा और ईसा को मिली और जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान की गई। हम उनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम केवल उसी के आज्ञाकारी हैं। (अल-बक़रा, 136)

निश्चित रूप से ईश्वर के रसूलों ने इसी धर्म पर विश्वास किया। ईश्वर के लिए अपने आत्मसमर्पण की घोषणा की और उसी का संदेश पहुँचाया। ईश्वर ने नूह (अलैहिसलाम) के बारे में कहा। उन्हें नूह का वृत्तान्त सुनाओ। जब उसने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों । यदि मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों के द्वारा नसीहत करना तुम्हें भारी हो गया है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है। तुम अपना मामला ठहरालो और अपने ठहराए हुए साझीदारों को भी साथ लेलो, फिर तुम्हारा मामला तुमपर कुछ संदिग्ध न रहे, फिर मेरे साथ जो कुछ करना है, करडालो और मुझे मुहलत न दो। फिर यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं माँगा। मेरा बदला (पारिश्रमिक) बस अल्लाह के ज़िम्मे है और आदेश मुझे मुस्लिम (आज्ञाकारी) होने का हुआ है। (यूनुस, 71, 72)

ईशवर ने इब्राहीम (अलैहिसलाम) के बारे में कहा। क्योंकि जब उससे उसके रब ने कहा, मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो जा। उसने कहा, मैं सारे संसार के रब का मुस्लिम हो गया। (अल-बक़रा, 131)

बल्कि इब्राहीम ने बाद में आनेवाली अपनी संतान को भी इसी बात की वसीयत की। ईशवर ने इस बारे में यह कहा। और इसी की वसीयत इब्राहीम ने अपने बेटों को की और याक़ूब ने भी (अपनी संतान को) की कि ऐ मेरे बेटों । अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन (धर्म) चुना है, तो इस्लाम (ईश-आज्ञापालन) के अतिरिक्त किसी और दशा में तुम्हारी मृत्यु न हो। (क्या तुम इब्राहीम के वसीयत करते समय मौजूद थे) या तुम मौजूद थे जब याक़ूब की मृत्यु का समय आया। जब उसने अपने बेटों से कहा, तुम मेरे पशचात किसकी ईबादत करोगे, उन्होंने कहा, हम आपके इष्ट-पूज्य और आपके पूर्वज इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ के इष्ट-पूज्य की बन्दगी करेंगे - जो अकेला इष्ट-पूज्य है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं। (अल-बक़रा, 132, 133)

ईशवर ने मूसा (अलैहिसलाम) के बारे में कहा। मूसा ने कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों। यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसपर भरोसा करो, यदि तुम आज्ञाकारी हो। (यूनुस, 84)



ईशवर ने ईसा के बारे में कथा के रूप में यह कहा। और याद करो जब मैंने हवारियों (साथियों और शार्गिदों) के दिल में डाला कि (मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ, तो उन्होंने कहा, हम ईमान लाए और तुम गवाह रहो कि हम मुस्लिम (फ़रमॉबरदार) हैं। (अल-माइदा, 111)

इस्लाम मानवता के लिए वह अंतिम देवत्व सन्देश है, जिसको ईशवर ने मुहम्मद द्वारा सारी मानवता के लिए भेजा है। इसी को धर्म के रूप में ईशवर ने संपूर्ण किया है, और अपने भक्तों के लिए पसंद किया है। ईशवर ने कहा।

आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को पूर्ण करदिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी करदी और मैंने तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया। (अल-माइदा, 3)

इस पवित्र आयत में ईशवर ने यह सूचना दी है कि वह मानवता के लिए इस्लाम को धर्म के रूप में पसन्द किया है। जिससे कभी वह निराश नहीं होगा। ईशवर ने यह घोषणा की कि इस्लाम सत्य धर्म है। इसके अतिरिक्त किसी से वह कोई धर्म स्वीकार नहीं करेगा। ईशवर ने कहा । दीन (धर्म) तो अल्लाह की दृष्टि में इस्लाम ही है। (अल-इमरान, 19)

ईशवर ने यह भी कहा । जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। और आख़िरत में वह घाटा उठानेवालों में से होगा। (आल-इमरान, 85)

पहली आयत में ईशवर ने इस बात की पुष्टि की है कि ईशवर की दृष्टि में धर्म केवल इस्लाम ही है। दूसरी आयत में ईशवर ने यह सूचना दी है कि वह किसी से इस्लाम के अतिरिक्त कोई और धर्म हरगिस स्वीकार नहीं करेगा। मृत्यु के बाद सफल और सुखी केवल मुसलमान ही हैं। इस्लाम के अतिरिक्त किसी और धर्म का अनुसरण करते हुए मरजाने वाले भविष्य जीवन में घाटे में है और उन्हें नरक में दण्ड दिया जायेगा। इसी कारण सारे रसूलों ने ईशवर के नाम आत्मसमर्पण करने की घोषणा की। इस्लाम न लानेवालों से अपनी बेगुनाही की सूचना दी। यहूदी या ईसाइयों में से जो भी मुक्ति और प्रसन्नता प्राप्त करना चाहे, वह इस्लाम में प्रवेश करे। इस्लाम के रसूल मुहम्मद का पालन करे, ताकि वह वास्तव में मूसा और ईसा का पालन करनेवाला बने। इसलिए कि मूसा, ईसा, मुहम्मद और ईशवर के सारे रसूल मुस्लिम थे। सब ने इस्लाम की ओर बुलाया इसलिए कि ईशवर का यही वह धर्म है जिसको लेकर वे आये है। रसूलों के समापक मुहम्मद के आजाने के बाद से ख़ियामत तक इस धरती पर पाये जाने वाले हर व्यक्ति के लिए अपने आपको मुसलमान कहना, और मुसलमान होने का दावा करना, केवल उसी समय ईशवर स्वीकार करता है जब कि वह मुहम्मद को ईशवर द्वारा भेजा गया रसूल मानता है। उसका पालन करता है, और मुहम्मद पर अवतरित की हुई ख़ुरआन के अनुसार चलता है। निश्चित रूप से ईशवर के रसूल ने कहाः उस ज़ात (ईशवर) की क़सम जिसके

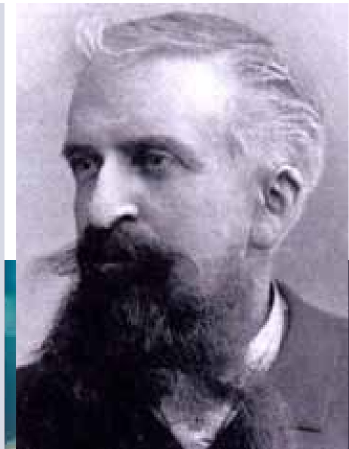
हाथ मे मुहम्मद की जान है, इस उम्मत (क़ौम) का कोई भी व्यक्ति, यहूदी हो या ईसाई, मुझसे कोई बात सुने, फिर उसकी मृत्यु हो जाये, और वह मेरे लाये हुए सन्देश पर विश्वास न रखे, तो वह नरक वालों में से होगा। (इस हदीस को ईमाम मुस्लिम ने वर्णन किया।)

इस्लाम सरल है

इस्लाम की महान सरलता एकीकरण के सिद्धांत से निकली हुई है। इस सरलता में इस्लाम की शक्ती का रहस्य है। इस्लाम धर्म को समझना आसान है। वह दूसरे धर्मों में उपलब्द बुद्धी स्विकार न करने वाली विरोधाभासी और रहस्य बातों से ख़ाली है। एक ईशवर के होने और ईशवर की दृष्टी में सारी मानवता एक समान होने के इस्लामिक नियमों से अधिकतर खुली कोई और बात नही है।

गुस्ताव लोबुन

फ्रैंच इतिहासकार







सदा रहनेवाले सन्देश की पूर्णतः

इस्लाम धर्म जिसको लेकर ईशवर ने अपने रसूल मुहम्मद को सारी मानवता के लिए भेजा है, वह ईशवर पर विश्वास और उसे एकीकरण का सिद्धांत वाला धर्म है। ईशवर ने कहा। वह जीवन्त है। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः उसी को पुकारो धर्म को उसी के लिए विरुद्ध करके। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है। कह दो, मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी बन्दगी करूँ जिन्हें तुम अल्लाह से हटकर पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले प्रमाण आचुके हैं। मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं सारे संसार के रब के आगे नत मस्तक हो जाऊँ। (अल-ग़ाफिर 65,66)

वह एक ईशवर के लिए प्रार्थना को शुद्ध बनाने का धर्म है। ईशवर ने कहा। क्या अलग-अलग बहुत-से रब अच्छे हैं या अकेला अल्लाह, जिसका प्रभुत्व सब पर है। तुम उसके सिवा जिनकी भी बन्दगी करते हो वे तो बस निरे नाम हैं जो तुमने रख छोड़े हैं, और तुम्हारे बाप-दादा ने। उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। सत्ता और अधिकार तो बस अल्लाह का है। उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो। (यूसुफ़, 39, 40)

वह श्रेष्ठ बुद्धियों का धर्म है, जो अपनी सत्यता और पवित्रता के साथ प्रस्तुत किया जाये, तो सारे लोग अनुयायी और आत्मसमर्पण करते हुए ज़रूर इसका पालन करेंगे। ईशवर ने कहा। यही सीधा, सच्चा दीन (धर्म) है, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । (यूसुफ़, 40)

सबूत, प्रमाण और तर्क का धर्म है। कहो, लाओ अपना प्रमाण यदि तुम सच्चे हो। (अल-नम्ल, 64)

सुख, प्रसन्नता और शाँति का धर्म है। जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। (अल-नहल, 97)

वह इस्लाम धर्म जिसको देकर ईशवर ने अपने रसूल मुहम्मद को भेजा है, उसमें ईशवर ने लाभदायक चीज़ों को हलाल और नष्टदायक अस्वच्छ चीज़ों को हराम किया है। हर भलाई का आदेश दिया है। हर बुराई से रोका है। वह आसान और सरल धर्म है। इसमें कोई कष्ट नही है। मानव की क्षमता से अधिक कोई बोझ नही है। ईशवर ने कहा । (तो आज इस दयालुता के अधिकारी वे लोग हैं) जो उस रसूल, उम्मी नबी, का अनुसरण करते हैं जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इन्जील में लिखा पाते हैं। और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता और बुराई से उन्हें रोकता है, उनके लिए अच्छी-स्वच्छ चीज़ों को हलाल और बुरी-अस्वच्छ चीज़ों को उनके लिए हराम ठहराता है और उनपर से उनके वे बोझ उतारता है जो अब तक उनपर लदे हुए थे और उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उसपर ईमान लाये, उसका सम्मान किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-आराफ़, 157)

वह पूर्ण शुद्ध धर्म है जो हर समय और स्थान के लिये धरती और उस पर रहनेवालों के ईशवर की ओर से समाप्त किये जाते तक संतुलित है। निश्चित रूप से यह धर्म मानव के



ईशवर के अतिरिक्त किसी और की प्रार्थनानही।

इस्लाम के एकीकरण के नियम ने मुझे सोंचने पर मजबूर किया। इस्लाम का यही सबसे प्रमुख संदेश है। एकी करण के सिद्धांत ने मुझे एक ईशवर का भक्त बनादिया। मैं किसी मानव का भक्त नही हूँ। इस्लामिक एकी करण का सिद्धांत मानव को पवित्र बनाता है। किसी मानव के सामने झुकने से दूर रखता है। वास्तव में यही स्वतंत्रता है। क्योंकि एक ईशवर के अतिरिक्त किसी और के लिए प्रार्थना नही।

इब्राहीम ख़लील

इजिप्शियन धार्मिक प्रचारक



धर्म और संसार का मिलाप

धार्मिक और संसारिक प्रभाव का यह अनोखा संगम, जिसका इतिहास में उदाहरण नही मिलता है, यह संगम मुहम्मद को मानवीय इतिहास में अधिकतर प्रभावित व्यक्तित्व स्वीकार करने पर मजबूर करता है।

मैकल हार्ट

अमेरिकन लेखक



क्यों नही

जब इस्लाम यही है, तो क्यों नही हम सब मुस्लिम बन जाते ।

गुतः

जर्मनी लेखक

धार्मिक और संसारिक आवश्यकताओं को लेकर आया है।

वह प्रसन्नता और शाँति का मार्ग है। ज्ञान और सभ्यता का मार्ग है। न्याय और कृपा का मार्ग है। सम्मान और स्वतंत्रता का मार्ग है। हर भलाई और अच्छाई का मार्ग है। यह धर्म कितना ही महान और पूर्ण है। और धर्म की दृष्टि से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है जिसने अपने आप को ईशवर के आगे झुका दिया। ईशवर ने कहा और दीन (धर्म) की दृष्टि से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है जिसने अपने आपको अल्लाह के आगे झुका दिया और वह अत्यन्त सत्कर्मी भी हो और इब्राहीम के तरीक़े का अनुसरण करे, जो सबसे कटकर एक का हो गया था। अल्लाह ने इब्राहीम को अपना घनिष्ठ मित्र बनाया था। (अल-निसा, 125)

प्रजापति (जो तुम पर तुम्हारी अपनी जान से भी ज्यादा दयालुता हैं) प्रजापति की ओर से यह एक सदा है, जो तुम्हें अंधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर आने का संदेश देती है। ईशवर ने कहा ।

कहो, ऐ किताबवालों । आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है, यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और न उसके साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ और न परस्पर हममें से कोई एक-दूसरे को अल्लाह से हटकर रब बनाए। फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो कह दो, गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं। (आले-इमरान, 64)

ईशवर के सामने अपने आप को झुकानेवाले इस मानव के मुक़ाबले में एक दूसरा मानव ऐसा है जो ईशवर द्वारा बनायी गयी अपनी इस्लामिक वृत्ति (फितरत) को, इस धर्म के सत्य होने का प्रमाण देने वाली निशानियों और चमत्कारों के बावजूद, इन्कार

के पर्दे से छुपाना चाहता है। ईशवर के एकीकरण के सिद्धांत के विरोध में वह अपने लिए बहु आराधिकता का चयन करता है। सत्य, विश्वास, मार्गदर्शन के प्रकाश के बदले मिथक, किवदंती और भ्रम के अंधेरे में घूमने लगा।

वह अपने लिए स्वयं साधुओं और पुजारियों का भक्त बनना पसंद किया, बल्कि एक ईशवर का भक्त होने के बदले रसूलों का भक्त होने को पसन्द किया। उसने अपने वृत्ति (फितरत) को मिटा दिया। अपनी बुद्धि को व्यर्थ बनादिया। ईशवर की ओर से बनायी गयी वृत्ति को छोडकर हवस और इच्छाओं का पालन किया। जबकि प्रत्येक शिशु इस्लाम की वृत्ति ही (प्रकृति) पर जन्म लेता है।

अल्लाह की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिस पर उसने लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनायी हुई संरचना बदली नही जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (अल-रूम, 30)

अब आप स्वयं यह अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि काफिर कितना ज़्यादा गुमराही और अंधेरे में पडा हुआ है। ईशवर ने कहा।

वही तो है जिसने तुम्हें धरती में ख़लीफ़ा बनाया। अब जो कोई इन्कार करेगा, उसके इन्कार का वबाल उसी पर रै। इनकार करनेवालों का इन्कार उनके रब के यहाँ केवल प्रकोप ही को बढ़ाता है, और इन्कार करनेवालों का इन्कार केवल घाटे में ही अभिवृद्धि करता है। (फ़ातिर, 39)



मुहम्मद का अपने संदेश पर विश्वास

वह राजा और शासक जिनके पास रसूल कि ओर से पत्र पहुँचे, शायद वे सब इस साधारण व्यक्ति से आशचर्य हो गये, जो उन्हें आत्मसमर्पण का संदेश देता है। लेकिन पत्रों को भेजने का यह सिलसिला हमें मुहम्मद का अपने आप पर और अपने संदेश पर विश्वास की सूचना देता है। इसी विश्वास और यक़ीन के कारण मुहम्मद ने अपने समुदाय के लिए शक्ती, सम्मान्ता और प्रभाव का मार्ग खोल दिया है। वे जो जंगलों के वासी थे, उन्हें अपने काल कि मशहूर आधे संसार का विजेता बनादिया । मुहम्मद ने आपसी नफ़रत रखने वाले अरब समुदायों को एक ऐसा समुदाय बनाने के बाद इस संसार को छोडा, जो उत्साह और प्रेर्णा से भरा हुआ था।

जवहर लाल नेहरू

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री



इस सन्देश के मूल नियम और विशेषताएँ क्या-क्या है ।

(इस्लाम के) क़ानून बनाने के विधान

इस्लामी क़ानून अमूल्य नियम और विधान पर आधारित है, जिनसे इस क़ानून के अन्दर हर मानव, समय और स्थान के लिए आवश्यक है । इनमें से कुछ महत्वपूर्ण नियम निम्न लिखे जा रहे हैं।

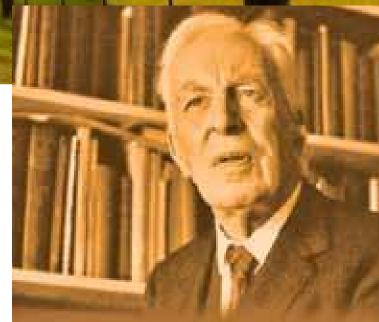
प्रथमः सरलता पैदा करना, कष्ट दूर करना।

इस्लाम के सारे आदेश उसके माननेवालों की क्षमता और शक्ति से बाहर नही है। न उसमें कोई परेशानी है, जो उचित सरल व्यवहार से बाहर हो। इसलिए कि धर्म बिल्कुल आसान है। ईशवर ने कहा। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती और कठिनाई नही चाहता। (अल-बक़रा, 185)

ईशवर ने कहा अल्लाह चाहता है कि तुम पर से बोझ हलका कर दे, क्योंकि इन्सान निर्बल पैदा किया गया है। (अल-निसा, 28)

ईशवर ने कहा अल्लाह किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है। (अल-बक़रा, 286)

आइषा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहाः ईशवर के रसूल (मुहम्मद) को जब भी दो बातों में से किसी एक के चयन करने का विकल्प दिया गया, तो आपने इनमें से अधिकतर सरल बात ही का चयन किया, जब कि वह न हो। अगर



मुहम्मद के ईश देवत्व का संदेश

मुहम्मद ने अपने सारे जीवन को अरब समाज में अपने संदेश के दो पक्षों को उपयुक्त बनाने में लगा दिया। वह दो पक्ष यह हैः धार्मिक विचारों में समानता और शासन के नियम और विधी में समान्ता। निश्चय इस्लाम धर्म के संपूर्ण नियमों के कारण यह दो चिज़ें उपयुक्त हो गई, क्योंकि इस्लाम अपने अंदर एक ही समय में एकता और प्राधिकरण का अधिकार रखता है। इसी कारण इस्लाम के भीतर ऐसी शक्तिशाली प्रेरणा पैदा हो गई, जिसने एक अज्ञानी समुदाय को सभ्य समुदाय बनादिया ।

अर्नाल्ड टोयेम्बी

ब्रिटीष इतिहासकार

वह पाप की बात हो तो आप ही सब से ज्यादा उससे दूर रहते थे। ईशवर की क़समः आपके साथ होनेवाले किसी भी व्यवहार का आपने अपने लिए कभी प्रतिकार (बदला) नहीं किया। जब ईशवर के आदेशों का उल्लंघन किया जाए, तो फिर आपने ईशवर के लिए प्रतिकार किया। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने वर्णन किया)

इस्लामी क़ानून में दायित्व का कम होना भी कष्ट को दूर करने का एक उदाहरण है। इस प्रकार से कि बिना कष्ट और मज़बूरी के मानव के लिए इस दायित्व का उठाना आसान होता है। इसलिए कि जबरदस्ती से मजबूर करने में कष्ट और परेशानी है, जब कि (इस्लाम में) कष्ट बिल्कुल नही है। ईशवर ने कहा ।

और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और कठिनाई नही रखी। (अल-हज, 78)

इसी प्रकार दायित्व को लागू करने का लक्ष्य मानव को इस संसार और भविष्य संसार में सुखी जीवन तक पहुँचाना है। परन्तु इस्लामिक नियम मानवीय व्यक्तित्व की क्षमता के अनुसार ही लागू किये जाते हैं। ईशवर ने कहा । ऐ ईमान लानेवालों । ऐसी चीज़ों के विषय



गहरा सिद्धांत

इस्लाम के पाँच सतूनों में एसी कोई बात नही है जिस्से मुस्लिम के अतिरिक्त कोई व्यक्ति नफ़रत करे। हालांकि इस्लाम के नियम साधारण और बहुत कम है, फिर भी इन में किसी बदलाव की आवश्यकता नही है। यही वह कारण है कि इस्लामिक सिद्धांत हर मुस्लिम के मन में बैठ जाता है। निस्संदेह इस्लामिक सिद्धांत के वास्तविक महत्व को स्वयं शक्ति व प्रभाव प्राप्त है।

जॉर्ज सार्थोन

हार्वर्ड और वाशिंग्टन के
विश्वविद्यालय का लेक्चरर



अधिक धर्म महत्वपूर्ण विषय है

मुसलमानों कि नैतिकता, धार्मिक और शासन के नियम सारे धर्म पर आधारित हैं। इस्लाम सारे धर्मो में अधिकतर साधारण और साफ है। इस्लाम कि जड़ ईशवर (अल्लाह) के अतिरिक्त किसी और को पूज्य प्रभु न मानने और मुहम्मद को ईशवर का रसूल मानने की गवही देना है।

वैडोरान्ट

अमेरिकन लेखक



में न पूछो कि वे यदि तुमपर स्पष्ट कर दी जाएँ तो तुम्हें बुरी लगें। यदि तुम उन्हें ऐसे समय में पूछोगे, जबकि ख़ुरआन अवतरित हो रहा है, तो वे तुमपर स्पष्ट कर दी जाएँगी। अल्लाह ने उसे क्षमा करदिया । अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला, सहनशील है। तुमसे पहले कुछ लोग इस तरह के प्रश्न कर चुके हैं, फिर वे उसके कारण इन्कार करनेवाले हो गए। (अल-माइदा, 101, 102)

द्वितीयः लोगों की आवश्यकताओं का खयाल रखना

इस्लाम धर्म के आदेशों का विचार करने वाले के लिए यह बात खुलकर सामने आती है कि इन आदेशों का लक्ष्य लोगों कि आवश्यकताओं को उपलब्द कराना है। इस प्रकार कि लोगों के लिए भलाई और अच्छाई उपयुक्त हो। उनसे इस संसार और भविष्य संसार में बुराई और बिगाड दूर हो, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में। हर स्थान और हर समय। ईशवर ने कहा । हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)

दयालुता लोगों की आवश्यकताएँ उपयुक्त कराने के लिए है। वरना अगर दया लक्ष्य न हो, तो रसूल को दयालुता के गुण से विवरण न किया जाता । सारे दायित्व का मूल इस संसार और भविष्य संसार में मानव की आवश्यकताएँ हैं । इसलिए कि ईश्वर को अपने किसी भक्त की आवश्यकता नही है। न उसको किसी की आज्ञाकारी से लाभ है, और न किसी की अवज्ञाकारी से नष्ट। सारे नियम न्याय, दयालुता, आवश्यकताएँ और तत्वदर्शिता पर आधारित हैं। हर वह बात जो न्याय से अन्याय की ओर, दया से निर्दया की ओर सुधार से बिगाड़ की ओर, और तत्वदर्शिता से अतत्वदर्शिता की ओर जाती हो, वह इस्लामी नियम में से नही है।

तृतीयः न्याय की हर कडी को उपयुक्त बनाना ।

न्याय को सामान्य विधि के रूप में स्थापना करने पर कई इस्लामी प्रमाण उपलब्ध हैं। हमें कई ऐसी बातें मिलती है जो न्याय को स्थापना करने और अन्याय से (चाहे विरोधी के साथ क्यों न हो) द्वेष करने का आदेश दिया है। ईश्वर ने कहा । ऐ ईमान लानेवालों । अल्लाह के लिए गवाह होकर दृढ़तापूर्वक, इन्साफ़ की रक्षा करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इन्साफ़ करना छोड दो। इन्साफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ख़बर है। (अल-माइदा, 8)

चतुर्थः पूर्णतः और समावेश

निस्संदेह किसी भी धर्म और सन्देश के सत्य होने का प्रमाण उसकी पूर्णतः और समावेश की विशेषता से पूर्ति होना है। ईश्वर ने कहा । हमने किताब में कोई भी चीज़ नही छोडी है। (अल-अनआम, 38)

ईश्वर ने यह भी कहा हमने तुमपर किताब अवतरित की हर चीज़ को खोलकर बयान करने के लिए और मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना के रूप में। (अल-नहल, 89)

इस्लाम धर्म का समावेश सिद्धांत और विचार में, प्रार्थना और पूजा में, चरित्र और आचार में, नियम, आदेश, और पद्धतियों में, बल्कि जीवन के हर भाग में खुलकर सामने आता है।



इस्लाम आनंद और शान्ति

यहूद को इस्लाम के सायेतले शाँती और न्याय मिला। जिसके द्वारा वे अन्याय और ज़ुल्म से सुरक्षित रहे। वे कई सदियों से सुख और शाँती में जीवन बिता रहे हैं।

नसीम सोस्त

नसीम सूसह इराख़ का यहुदी लेक्चरर

पाँचवाः सन्तुलन, मध्यस्थ और न्यायिक।

इस्लाम धर्म सन्तुलन, मध्यस्थ और न्यायिकता का धर्म है। और इसी प्रकार हमने तुम्हें बीच का एक उत्तम समुदाय बनाया है। (अल-बक़रा, 143)

इस्लाम के आदेश और नियम में हर विषय अधिकतर गहराई के साथ तैयार बनाया गया है। उसने आकाश को ऊँचा किया और संतुलन स्थापित किया (अर-रहमान, 7)

ईश्वर ने मुस्लिमों को भी हर विषय में संतुलन रखने का आदेश दिया । जो खर्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और ना ही तंगी से काम लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्य-मार्ग पर रहते हैं। (अल-फ़ुरक़ान, 67)

नबी (मुहम्मद) ने अतिशयोक्ति से रोका। आप ने कहा धर्म में अतिशयोक्ति से बचो। क्योंकि तुम से पूर्व काल के लोगों को अतिशयोक्ति ने नाश किया। आप ने संतुलन रखने और हर अधिकारी को उसका अधिकार देने का आदेश दिया। आप ने कहाः तुम्हारे ईश्वर का तुमपर अधिकार है। तुम्हारे अपने शरीर का तुमपर अधिकार है। तुम्हारे परिवार वालों का तुमपर अधिकार है। हर अधिकारी को उसका अधिकार दो।



इस्लामिक नियम की विशेषताएँ ।

प्रथमः देवत्व स्त्रोत

इस्लाम धर्म का स्त्रोत वह महान प्रजापति है, जिसने मानव और ब्रह्माण्ड की हर चीज़ की सृष्टि की है। इस धर्म का देवत्व स्त्रोत होना इसके लिए कई विशेषताएँ उपलब्ध कराता है। इनमें से एक यह कि ईशवर ही प्रजापति और दानी है। उसी को नियम बनाने का अधिकार है। सारे नबी और उनके अनुयायी एक ईशवर की ओर ही नियमों को सौंपते थे। उसके अतिरिक्त हर नियम को ग़लत समझते थे। नबी और रसूलों के समापक ने अपने नियमों के बारे में जो कहा है, उसका विवरण करते हुए ईशवर ने यह कहा। कह दो, मैं कोई पहला रसूल तो नही हूँ। और मैं नही जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और न यह कि तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा मैं तो बस उसी के अनुगामी हूँ जिसकी प्रकाशना मेरी ओर की जाती है और मैं तो केवल एक स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ। (अल-अहक़ाफ़, 9)

ईशवर ने रसूल (ईशवर के पास अपने ऊँचे दर्जे और बुलन्द शान के बावजूद) ईशवर द्वारा अपनी ओर अवतरित किये हुए नियमों का पालन करते हैं। आप स्वयं कुछ घढ़नेवाले और विधि बनाने वाले नही हैं। ना आप ईशवर की विधि का उल्लंघन करने वाले हैं। ईशवर प्रजापति है । इसी कारण वही अपनी प्रजा का अधिकतर ज्ञान रखता है। ईशवर ने कहा । क्या वह नही जानेगा जिसने पैदा किया। वह सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखनेवाला है। (अल-मुल्क, 14)

ईशवर अपने भक्तों की वृत्ति (प्रकृति), उनकी सुधार ने और बिगाड़ने वाली चीज़ें, उनके लाभ और नष्ट का अधिकतर ज्ञान रखता है। कारीगर के अतिरिक्त कोई और उसकी कारीगरी का ज्यादा ज्ञान नही रखता है।

ईशवर ने कहा । कहो, तुम अधिक जानते हो या अल्लाह । (अल-बक़रा, 140)

ईशवर का ही विधिकार (क़ानून बनाने वाला) होना इस विधि को पूर्ण न्यायिक और सत्य बनाता है। ईशवर की पवित्रता की दृष्टि से यह बात असंभव हैं कि वह जीव में से किसी एक भक्त के पक्ष में बात करे। इसी प्रकार इस्लामिक दण्ड संसारिक जीवन और परलोक मे मिलने वाला हैं। जो व्यक्ति किसी भी कारण से संसारिक जीवन में अपना अधिकार प्राप्त न किया हो, या अपने दुर्व्यवहार के कारण उसको दण्ड न दिया गया हो, तो वह परलोक में इस का बदला ज़रूर पायेगा ।

द्वितीयः शरियत का नैतिकता से संबंध

सब इस बात को स्वीकार करते हैं कि नियमों का लक्ष्य केवल उसकी स्थापना से प्राप्त नही होता है। बल्कि आनंद और विश्वास के साथ लोगों के स्वीकार करने पर आधारित होता है। इसी प्रकार नियमों का वांछित लक्ष्य केवल उसकी अच्छी स्थापना और अच्छे आदेशों से पूरा नहीं होता है। बल्कि इसके साथ-साथ इस नियमों का उन लोगों के द्वारा पालन करना ज़रूरी है, जिनके लिए यह नियम बनाये गये। शर्त यह होगी कि लोग स्वयं प्रेरित होकर इन नियमों का पालन करे। यह प्रेरिता लोगों के अन्दर नियमों के न्यायिक होने का विश्वास रखने, उनको पसन्द करने और विधिकार (अल्लाह) के आदेशों से प्रसन्न होते हुए इन नियमों का पालन करने पर विधिकार की ओर से बदली मिलने का यक़ीन रखने पर पैदा होती है। क्योंकि इस्लामिक नियम विश्वास और पसन्द पर आधारित है। ईशवर ने इस्लाम की शिक्षा देने में इसी का आदेश दिया है।

उनके विषय में वह बात कहो जो प्रभावकारी हो। (अल-निसा, 63) अच्छा तो नसीहत करो। तुम तो बस एक नसीहत करनेवाले हो। तुम उनपर कोई दारोगा नहीं हो। (अल-ग़ाशियह, 21, 22)



सुखी धर्म

मै पहली बार अपने जीवन में शाँती और सुख से प्रभावित हूँ। मेरे अंदर यह भावना पैदा हो गई की मेरे जीवन का भी कुछ महत्व है। निश्चय मुझे इस सत्य का ज्ञान प्राप्त हो गया कि जिस ईशवर को तुम नही देख पाते। वह तुम्हे हर स्थान में देखता है। तुम्हारे कर्मो की निगरानी करता है, और इन कर्मो को न्याय के तराज़ू में तोलता है। ताकि तुम्हें ख़यामत के दिन पूरा पूरा बदला दे।

अनटोली अन्ड्रबोष

रशियन कर्नल



इसी कारण ईशवर ने अपने नबी (मुहम्मद) के प्रवेश होने को सीमित करदिया। नबी ने कहाः मुझे तो केवल उच्च नैतिकता को पूर्ण करने के लिए भेजा गया है।

तृतीयः संसार और परलोक का आपसी संबंध ।

सारे मानवीय नियम और संसारिक क़ानून से इस्लामिक नियम को यह विशेषता प्राप्त है कि वह संसारिक जीवन में और परलोक में भी दण्ड और पुरस्कार देता है। परलोक का बदला सदा संसारिक बदले से अधिकतर महान होता है। इसी कारण मुस्लिम के मन में स्वयं प्रेरणा पैदा होती है, जो उसको आदेशों का पालन करने और ईशवर का अनुयायी बन ने की ओर ले जाती है। (हालांकि संसारिक जीवन में उसके लिए दण्ड से मुक्ति पाना संभव है) क्योंकि उसका यह विश्वास होता है कि ईशवर की आँख कभी सोती नही। लोग संसारिक जीवन में अपने कार्य के अनुसार ईशवर के सामने पकड़े जायेगें । ईशवर ने कहा। क्या वह समझता है कि उसपर किसी का बस न चलेगा। (अल-बलद, 5)

ईशवर ने यह भी कहा क्या वह समझता है कि किसी ने उसे देखा नहीं । (अल-बलद, 7)

चतुर्थः इस्लामी आदेशों की सामाजिक छवि (शैली)

इस्लामिक नियम एक समूह के फायदों को दूसरे समूह पर प्रधानता नही देता है, और न किसी व्यक्ति के विरोध में दुसरे व्यक्ति के पक्ष बात करता है। लेकिन इस्लामिक नियम ने इस्लाम को अपने जीवन की विधि न माननेवाले अधिकतर मानवीय समुदाय जिस कठिन समस्या से पीड़ित है, उस समस्या का समाधान किया है। वह समस्या समुदाय में व्यक्तिगत लाभ और सामुदायिक लाभ के बीच का तनाव है। हम यह देखते हैं कि कुछ समुदाय बिल्कुल व्यक्तिगत लाभ को प्रधानता देती है। जैसा कि पूंजिवादी व्यवस्था का हाल है। जब कि कुछ समुदाय ने समुदायिक लाभ को प्रधानता दी और व्यक्तिगत लाभ का नाश किया । उसकी विशेषता, स्वतंत्रता और मालिक बनने के अधिकार की वृत्ति को ज़ब्त किया, जिससे उसका व्यक्तित्व निम्न हो जाता है, प्रतिभाएँ छुप जाती है और उसकी क्षमताएँ व्यर्थ हो जाती है। लेकिन इस्लाम ने अपने नियमों की व्यवस्था मानव के समुदाय में इन अधिकारों के बीच संतुलन रखने पर आधारित किया। इस्लामिक समुदाय के लिए इस्लाम ने सामुदायिक लाभ का ख्याल रखा। लेकिन साथ-साथ इस्लाम मुस्लिम व्यक्ति के लाभ से असावधान नहीं। राजनीतिक विभाग में हम यह देखते हैं कि राजा के लिए यह अधिकार है कि प्रजा उसके आदेशों का पालन करे, लेकिन शर्त यह है कि राजा के आदेश इस्लामिक नियमों के अनुसार हो। जिसमें सामुदायिक लाभ का खयाल रखा गया हो। वरना इस्लाम राजा से उसका यह अधिकार छीन लेता है । क्यों कि ईशवर के आदेशों से हटकर दूसरे विषयों में राजा का आज्ञा पालन करना ज़रूरी नही है ।

पाँचवाः नियमों की स्थिरता और उनके अनुसरण करने में सरलता

इस्लाम बुनियादी नियमों पर आधारित है, जिसमें कोई परिवर्तन होने वाला नही है। वह अपने प्रथम स्त्रोतों से स्थापित है। वह स्त्रोत पवित्र सुरक्षित क़ुरआन है, जिसकी सुरक्षा ईशवर करता है। यह नसीहत निश्चय ही हमने अवतरित की है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं । (अल हिज्र, 9)

असत्य उस तक ना आसकेगा । असत्य उस तक न उसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से, अवतरण है उसकी ओर से जो अत्यन्त तत्तवदर्शी, प्रशंसा के योग्य है। (हा-मीम अस-सजदा, 42)

ईशवर के नबी की हदीस (पवित्र वाणी) सुरक्षित और बडे ध्यानपूर्वक रूप में लिखी गयी है। क़ुरआन और हदीस के अधिकतर वाणी शरीयत के साधारण आदेशों का तो विवरण करते हैं, लेकिन इस आदेशों का पालन करने से संबंधित

बातों का विवरण नहीं करते। ताकि ज्ञानी (उलमा) लोगों के पास अंदाज़ा लगाने का प्रधिकार रहे, जिससे वे परिस्थितियों का समय के साथ बदलने का खयाल रखे। लेकिन पालन करने के इन बडी सीमाओं को ऐसी सत्यता से मिलाकर छोडा, जो सरलता और क्षमता से संबंधित हो। क्योंकि महत्व यह है कि लक्ष्य प्राप्त हो। चाहे इस लक्ष्य तक पहुँचने वाले साधन और उसके रूप जो भी हो। शर्त यह होगी कि वह (साधन) या रूप किसी पवित्र वाणी या इस्लामी शरीयत के किसी नियम से न टकराती हो। इसी कारण इस्लामिक शरिअत में समुदायिक लाभ के अनुसरण करने का नियम बडी हद तक सरलता और विकास की क्षमता पर आधारित है। इसी प्रकार पूर्व काल में न पाये जानेवाले नये आदेशों का प्रकट होना कोई आश्चर्य की बात नही, क्योंकि इन आदेशों के संबंधित घटनाएँ प्रकट होती हैं।



सम्मानिक और प्रभाविक धर्म

इस्लाम शाँति, स्वतंत्रता, भाईचारगी, सम्मान्ता और समान्ता का धर्म है। यह बात इस्लाम के आदेश, नियम और आकार से साफ़ मालुम होती है। (उपवास) इस्लाम धर्म में दूसरे धर्मों के प्रकार नही है। क्योंकि मानव कि दुविधा शारीरिक अवश्यकताओं को दबाये रखने में नहीं है, जैसा कि साधु करते हैं। इस प्रकार की मानव का शरीर चलते फ़िरते हड्डियों के ढाँचे के समान हो जाता है। इसी कारण इस्लाम धर्म ने शारीरिक अवश्यकताओं को सुधारा, न कि उनको दबाया। इस्लाम में उपवास का उदाहरण मन को हराम(मना) की हुई ग़लत हवस के विरुध में धैर्य और कष्ट का आँदी बनाना। बाहीय और अंतरीय जीवन में ईशवर से डरना और भूक-प्यास का मज़ा चकना है। ताकि उपवासी अर्धनि लोगों पर दया करे। इसी प्रकार से उपवास शरीर को दैनिक ख़ुराक से कुछ विश्राम का अवसर देना है। क्योंकि उपवास मानव की आत्मा, बुद्धी, स्वस्थता, और समुदाय के बीच आपसी मिलाप, संघटन और सहयोग के लिए उपयोगी है।

ब्रेषा बेंनकामर्ट

थाईलाँड का शिक्षक (जिसने बुधमत छोड़ कर इस्लाम स्वीकार करलिया)



इस्लामिक शरिअत और संसारिक क़ानून... अंतर और इख़्तिलाफ ।

इस्लामिक नियम और संसारिक क़ानून के बीच बडा अंतर है। इन निम्न लिखित कारणों के अनुसारः

सम्मानता, महानता और आध्यात्मिक प्रेम ।

इस्लामिक शरिअत महानता, सम्मानता और आध्यात्मिक प्रेम की विशेषता रखती है। क्यों कि इसके अन्दर धार्मिक गुण हैं। इसकी स्थापना करनेवाला ईशवर है। वह ईशवर जिसके लिए सारे दिलों में महान सम्मानता है और उसी के आगे सब झुकते हैं।

इस्लामिक शरिअत का प्रकृति (वृत्ति) के समान होना और हर समय, स्थान के लिए उपयुक्त होना ।

इस्लामिक शरिअत हर समुदाय, हर क़ौम से निकट है, हालांकि उनका व्यवहार, सभ्यता, जात और भाषाएँ विभिन्न होती है। इसलिए कि शरिअत का बनाने वाला पवित्र ईशवर है, जो पूर्वकाल और भविष्य काल का ज्ञान रखता है। मानव, उनकी प्रकृति, व्यवहार, वृत्ति की ख़बर रखता है। जब कि ईशवर हवस और इच्छाओं के पीछे चलने से बहुत दूर है। अतः एक ओर का होकर अपने रुख़ को दीन (धर्म) की ओर जमा दो, अल्लाह की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिस पर उसने लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नही जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (अल-रूम, 30)

जहाँ तक संसारिक क़ानून की बात है, तो इसकी स्थापना करनेवाले मानव है। वे ज्ञान के किसी भी दर्जे को पहूँच जाये फिर भी उनका ज्ञान संपूर्ण नही है। अगर वे कल (पूर्वकाल) और आज (वर्तमान काल) का ज्ञान पाले, लेकिन वे आनेवाले कल का ज्ञान कभी प्राप्त नही कर सकते। अगर वे कुछ मानवीय व्यवहार का

ज्ञान प्राप्त करले लेकिन वे हर एक मानव के व्यवहार का ज्ञान प्राप्त नही कर सकते। इसी कारण संसारिक क़ानून हर प्रकृति और हर सभ्यता से मेल नही खाता है। क्योंकि यह क़ानून किसी एक समूह के लिए उपयुक्त हो, तो दूसरों के लिए वह उपयुक्त नही होगा ।

इस्लामिक शरिअत की सत्यता, न्याय और सच से अनुरूपता

इस्लामिक शरिअत सत्य और न्याय से अनुरूप है। क्योंकि इसमें अशुद्ध, ग़लत, ज़ुल्म, अन्याय होने का या हवस और इच्छाओं के पीछे चलने की संभावना नही है। ईशवर ने कहा । तुम्हारे रब की बात सच्चाई और इन्साफ़ के साथ पूरी हुई, कोई नहीं जो उसकी बातों को बदल सके, और वह सुनता, जानता है। (अल-अनआम, 115)

वही एक ईशवर है जो इच्छाओं से पवित्र है। हर विषय के बाहय और आंतरिक का ज्ञान रखता है। अपने भक्तों के समस्याओं का ज्ञानी है। वह उसी विषय का आदेश देता है, जिसमें भक्तों का लाभ हो, और उसी विषय के करने से रोकता है जिसमें उनका नष्ट हो। संसारिक क़ानून, अशुद्ध, ग़लती, भूल और हवस की मार से पीडित हो सकते हैं। इसी कारण वह ग़लती, परिवर्तन और भूल से सुरक्षित नही रह सकता। ईशवर ने कहा । यदि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते। (अल-निसा, 82)

शरिअत की ओर से मानवीय जीवन का खयाल रखना ।

इस्लामिक शरिअत स्वयं वह नियम नही है, जिसकी स्थापना लोगों के विचारों ने की हो। बल्कि इनको ईशवर ने मानवीय प्रकृति और मनोदशा के अनुसार बनाया है। क्योंकि जिसने लोगों की सृष्टि की है वही उनकी उपयुक्तता का अधिकतर ज्ञान रखता है। क्या वह नही जानेगा जिसने पैदा किया । वह सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखने वाला है। (अल मुल्क, 14)

और वही इस बात का ज्ञान रखता है कि मानव से बोझ को कैसे हल्का किया जाय। अल्लाह चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका कर दे, क्योंकि इन्सान निर्बल पैदा किया गया है। (अल-निसा, 28)

जब कि संसारिक क़ानून विधिकार की इच्छाओं, उसकी रूचियों और सभ्यता के अनुसार बनाये जाते हैं ।



इस्लामिक शरिअत का आध्यात्मिकता के साथ संबंध ।

इस्लामिक शरिअत बाहय और अंतरिक कार्य से संबंध रखती है। ईशवर ने कहा । जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे मन की बात भी जानता है। अतः उससे सावधान रहो, और यह भी जानलो कि अल्लाह अत्यन्त क्षमा करनेवाला, सहनशील है। (अल-बक़रा, 235)

मानव निर्मित उन क़ानूनों के विपरीत, जो केवल बाहय कार्य ही का ध्यान रखते हैं। आध्यत्मिकता और भविष्य जीवन से कोई रूचि नही रखते । जहाँ तक दण्ड का प्रश्न है, तो मानवीय निर्मित क़ानून में यह केवल संसारिक है।



प्रसन्न और पवित्र समुदाय

मुस्लिम समुदाय जो इस्लामिक आदेश और विचार का पालन करता है। वह प्रसन्न और पवित्र समुदाय है। जिस में किसी प्रकार का अपराध पाया नही जाता है।

व्रेषा बेनकामर्ट

थाईलाँड का शिक्षक (जिसने बुधमत छोड़ कर इस्लाम स्वीकार करलिया)





इस्लाम धर्म के स्त्रोत

इस्लाम धर्म अपने आदेश, सिद्धांत और नियमों देवत्व रहस्योद्घाटन (ख़ुरआन और हदीस) से निकला। यही इस्लाम के स्त्रोत है। इन्हीं से इस्लामिक नियम, सिद्धांत और आदेश निकलते हैं। हम आगे इन दोनों के बारे में छोटा सा प्रसंग लिखेंगे ।

1- पवित्र क़ुरआनः

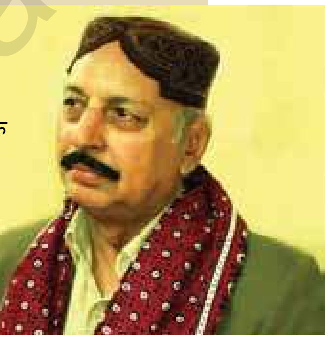
ईशवर ने अपने रसूल मुहम्मद पर क़ुरआन अवतरित किया, जो डर रखनेवालों के लिए मार्गदर्शन, मुसलमानों के लिए संविधान, उन लोगों के लिए सुखी है जिनके प्रति ईशवर ने मार्गदर्शन का निर्णय लिया है, और उन लोगों के लिए प्रकाशन है, जिनके प्रति ईशवर ने सफलता लिख दी है। क़ुरआन उन नियमों पर आधारित है, जिनके लिए ईशवर ने रसूलों को भेजा। क़ुरआन देवत्व पुस्तकों में कोई नई चीज़ नही है। इसी प्रकार मुहम्मद भी रसूलों में कोई नई बात नहीं है। निस्संदेह ईशवर ने इब्राहीम पर कई पुस्तकें अवतरित किया । मूसा को तौरात से, दाऊद (डेविड) को ज़बूर से, और ईसा मसीह को बाईबल से सम्मान दिया। ये सारी पुस्तकें ईशवर की ओर से अपने रसूलों पर वह्यी (रहस्योद्घाटन) की गयी है। क़ुरआन के ईशवर द्वारा वह्यी होने, सारे रसूलों पर विश्वास रखने और इनमें से किसी के बीच अंतर न करने वाला होने का प्रमाण ईशवर का यह उद्घाटन है।

ख़ुरआन देवत्व पुस्तकों का समापक है

जिस समय मैंने एकी करण के सिद्धांत पर विश्वास करलिया। तो मैंने उन परिणाम की खोज करना प्रारंभ कर दिया। जिनसे यह परिणाम निकलता है कि ख़ुरआन ईशवर की पुस्तक और देवत्व पुस्तकों का समापक है। मैं ईशवर का आभारी हूँ। उसने मुझे इस समस्या का साधन पाने कि क्षमता दी। ख़ुरआन वही अनोखी एक पुस्तक है जो दूसरी देवत्व पुस्तकों को मानती है। जबकि दूसरी सारी पुस्तकें एक दुसरे का तिरस्कार करती है। वास्तव में यही ख़ुरआन की विशेषता में से एक विशेषता है।

बषीर चात

भारतीय धार्मिक प्रचारक





ख़ुरआन कि छवी और उसकी महान्ता

14 सदियों तक ख़ुरआन मुसलमानों के विचार, आचार और लाखों लोगों कि प्रतिभा सुधारते रहा। ख़ुरआन मन में अधिकतर सरल, अल्प अस्पष्टता, परंपरा और रिवाज का अनुसरण करने से बहुत दूर, मूर्ती पूजा और पुजारियों से मुक्ति पाने का सिद्धांत पैदा करता है। मुसलमानों के चारित्रिक और संस्कृतिक स्थल को ऊँचा करने में इस्लाम ही की बड़ी भूमिका है। इस्लाम ने ही मुसलमानों के बीच समाजिक विधी और समाजिक संघटन की स्थापना की है। उन्हें सही नियमों का पालन करने पर प्रोत्साहिक बनाया। उनकी बुद्धी को मिथक, भ्रम, अन्याय और क्रूर्ता से आज़ाद किया। सेवकों कि स्थितियों को सुधारा और निमन जाती लोगों के मन में सम्मान पैदा किया।

वेलडोरान्ट

अमेरिकन लेखक

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह औस उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नही मानते, और इस तरह वे चाहते हैं कि बीच की कोई राह अपनाएँ, वही लोग पक्के इन्कार करनेवाले हैं, और हमने इन्कार करनेवालों के लिये अपमान जनक यातना तैयार कर रखी है। रहे वे लोग जो अल्लाह और रसूलों पर ईमान रखते हैं और उनके (रसूलों के) बीच अन्तर नही करते। ऐसे लोगों को अल्लाह शीघ्र ही उनके प्रतिदान प्रदान करेगा। अल्लाह बडा क्षमाशील, दयावान है। (अल-निसा, 150, 152)

लेकिन इन पिछली पवित्र पुस्तकों में से अधिकतर पुस्तकें खो गयी हैं। इन में से बहुत सी किताबें मिट गयी हैं इन पुस्तकों में परिवर्तन और विरूपण भी हुआ है।\

जहाँ तक पवित्र क़ुरआन की बात है, तो ईशवर ने इसकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी ली है। ईशवर ने कहा । यह नसीहत निश्चय ही हमने अवतरित की है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं। (अल-हिज़्र, 9)

ईशवर ने क़ुरआन को प्रमुख और पिछली पुस्तकों का समापक बनाया है। ईशवर ने कहा । और हमने तुम्हारी ओर यह किताब हक़ के साथ उतारी है, जो उस किताब की पुष्टि करती है जो इसके पहले से मौजूद है और उसकी संरक्षक हैं। (अल-माइदा, 48)

क़ुरआन को अवतरित करनेवाले ईशवर ने इसके बारे में विवरण करते हुए यह कहा कि क़ुरआन हर चीज़ को खोलकर बयान करता है। ईशवर ने कहा । हमने तुमपर किताब अवतरित की हर चीज़ को खोलकर बयान करने के लिए और मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना के रूप में। (अल-नहल, 89)

क़ुरआन मार्गदर्शन और दयालुता है। ईश्वर ने कहा । तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण, मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है। (अल-अनआम, 157)

क़ुरआन सब से सीधा मार्ग दिखाता है। ईश्वर ने कहा । वास्तव में यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है और उन मोमिनों को, जो अच्छे कर्म करते हैं, शुभ-सूचना देता है कि उनके लिए बडा बदला है। (बनी इसराईल, 9)

क़ुरआन मानवता को उनके जीवन के हर भाग में सीधे रास्ते की ओर मार्ग दिखाता है।

पवित्र क़ुरआन मनुष्य की सारी आवश्यकताओं को पूरा करता है। क़ुरआन नियम, सिद्धांत, आदेश, व्यवहार, आचार और इसके अतिरिक्त बहुत सी बातें अपने अन्दर रखता है। ईश्वर ने कहा । हम ने किताब में कोई भी चीज़ नही छोडी है। (अल-अनआम, 38)



संपूर्ण पुस्तक

ख़ुरआन शिक्षा देने और शिक्षित बनाने वाली पुस्तक है। ख़ुरआन में केवल आदेश और धार्मिक संस्कार ही नही है। ख़ुरआन जिन अच्छे कार्य की और मुस्लिम को बुलाता है, वह नैतिकता के भाग में सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक का मार्गदर्शन उसके आदेशों के प्रकार निशेदों में भी प्रकट है।

सिडनीवेषर

ओहायो(अमेरिका) विश्वविद्यालय का अध्यापक



2- नबी की हदीस (पवित्र वाणी)

ईश्वर ने अपने रसूल पर पवित्र क़ुरआन अवतरित किया, और वहयी (रहस्योद्घाटन) द्वारा हदीस उतारा। ईश्वर ने कहा वह तो बस एक प्रकाशन है जो की जा रही है। (अल-नज्म, 4)

हदीस तो क़ुरआन के समान है। रसूल ने कहाः ध्यान से सुनो, मुझे पुस्तक और इसके समान एक और चीज़ दी गयी है। ध्यान से सुनो, मुझे क़ुरआन और इसके समान एक और चीज़ दी गयी है। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया है) हदीस ईश्वर द्वारा अपने रसूल मुहम्मद की ओर प्रकाशना है। क्योंकि मुहम्मद अपने इच्छाओं के अनुसार नही बोलते। बल्कि वह वही बात लोगों तक पहुँचाते हैं जिनका उन्हें आदेश मिलता है। ईश्वर ने कहा । मैं तो बस उसी का अनुगामी हूँ जिसकी प्रकाशना मेरी ओर की जाती है और मैं तो केवल एक स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ। (अल-अहक़ाफ़, 9)

हदीस इस्लाम का दूसरा स्त्रोत है । हदीस कहते हैं रसूल की हर बात या, कार्य को, या हर उस काम को जो रसूल के सामने किया गया हो, या वह बातें जिनमें रसूल के व्यक्तित्व के गुणों का विवरण किया गया हो, वह सही क्रमानुसार रूप से रसूल से जाकर मिलती हो। हदीस क़ुरआन का विवरण करनेवाली और उसको खोलकर बयान करनेवाली है। निश्चय ईश्वर ने अपने रसूल को यह आदेश दिया कि वह क़ुरआन में लिखी हुई साधारण, विशेष या अल्प प्रसंग का विवरण करें। ईश्वर ने कहा । और अब यह नसीहत तुम्हारी ओर हमने अवतरित की, ताकि तुम लोगों के समक्ष खोल-खोलकर बयान कर दो जो कुछ उनकी ओर



रौशन वाणी (हदीस)

मुहम्मद कि रौशन वाणी (हदीस) आज तक बाक़ी हैं। जो धर्ती पर मौजूद आपके लाखों अनुयायी के मन में स्थिर धार्मिक प्रेर्णता का खुला परिमाण है।

इतेनडिन्हे

फ्रेंच आलोचक और चित्रकार



उतारा गया है, और ताकि वे सोच-विचार करें। (अल-नहल, 44)

हदीस क़ुरआन का विवरण करती है। उसके वाक्य को खोल कर बयान करती है। क़ुरआन के अल्प प्रसंग के आदेशों का विस्तृतीकरण करती है। परन्तु रसूल अपनी ओर अपतरित किये हुए आदेशों का कभी उपन्यास से, कभी कर्म से और कभी इन दोनों से वर्णन करते थे। निस्संदेह कुछ आदेशों और नियमों का विवरण करने मे हदीस स्वयं एक नियमवान ग्रंथ है।

हदीस इस्लाम के आदेश, सिद्धांत, प्रार्थना, व्यवहार और आचार का वास्तविक अनुरूप है। रसूल अपनी ओर अवतरित किये हुए आदेशों का पालन करते थे। लोगों के समक्ष उसका विवरण करते थे। अपने कर्मों के प्रकार लोगों को कार्य करने का आदेश देते थे। निस्संदेह ईश्वर ने रसूल की बातों और कार्य में ईमानवालों को उनका अनुसरण करने का आदेश दिया है, ताकि उनका ईमान संपूर्ण हो जाय। ईश्वर ने कहा । निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्शन है, अर्थात उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे। (अल-अहज़ाब, 21)

मानवीय सहाबा ने रसूल से उपन्यास और कर्मों को भविष्य में आनेवालों तक पहूँचाया । फिर वे अपने बाद में आनोवालों तक पहूँचाये। इसके बाद हदीस की पुस्तकों में इसको लिखा गया। हदीस को पहूँचाने वाले लोग इस विषय में बडी गंभीरता से काम लेते थे कि किस व्यक्ति से वे हदीस ले रहे हैं। इसी प्रकार वे जिनसे हदीस लेते, उनसे वे यह आवेदन करते कि वे जिनसे हदीस लिये हैं वह उनके काल में जीवित हों । ताकि हदीस का काल चक्र इसका विवरण करनेवाले से लेकर अल्लाह के रसूल तक जा मिले और इस काल चक्र के सारे व्यक्ति न्यायिक, सत्य, विश्वासी और अमानतदार हो।



खुरआन और हदीस एक पल्ले में

ख़ुरआन का पूर्ण रूप में प्रचार करने वाली वाणी हदीस कहलाती है। वह मुहम्मद के कार्य और सलाह से संबन्धित उपन्यास की एक कडी है। हदीस द्वारा मानव मुहम्मद के मन में पैदा होने वाली बातें जानता है। जो जीवन कि बदलते स्थितियों के सामने मुहम्मद के आचार का महत्वपूर्ण भाग है। हदीस ख़ुरआन का विवरण करती है। हदीस के बिना कोई और चारा नही है।

जैक रेस्लर

प्रच्यविधी विचारक

क़ुरआन और हदीस को इस्लाम धर्म के दो महत्वपूर्ण स्त्रोत होने का विश्वास रखना ज़रूरी है। जिनका अनुसरण करना आदेशों का पालन करना, उनके निषेध से दूर रहना, उनकी सूचनाओं को सत्य मानना, उनमें विवरण किये हुए ईश्वर के नाम, गुण और कर्मों पर विश्वास रखना, ईश्वर ने अपने ईमानवाले भक्तों के लिये जिन चीज़ों का वादा किया है और काफिरों को जिन चीज़ों से डराया है उन सब पर विश्वास रखना आवश्यक है। ईश्वर ने कहा । ये ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के झगडों में ये तुमसे फैसला न कराएँ । फिर जो फ़ैसला तुम कर दो उसपर ये अपने दिल में कोई तंगी न पाएँ और पूरी तरह मानलें । (अल निसा, 65)

ईश्वर ने कहा रसूल जो कुछ तुम्हें दे उसे लेलो और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दें उससे रुक जाओ । (अल-हश्र, 7)

क्या ही प्रसन्न है वह व्यक्ति जो इस मार्ग का पथिक है। वह प्रसन्नता का मार्ग है ।



मार्ग दिखानी वाली हदीस

मुहम्मद की हदीस का अनुसरण करना वास्तव में इस्लाम धर्म के वजूद और उसकी प्रगती कि सुरक्षा है। हदीस का पालन न करना इस्लाम धर्म की प्रगती में कमी का कारण है। निश्चय हदीस फ़ौलादी स्थंभ है, जिस पर इस्लाम का महल बना है। जब आप किसी महल के स्थंभ ही को तोड दें, तो क्या आप पत्तों के घर के समान इस महल के टूट जाने से आशचर्य होंगे ।

ल्योबोल्ड फ़ायीस

ऑस्ट्रिया का आलोचक

नबी की हदीसों को एक जगह इकट्ठा करना

यह सारी वाणी कि बडी संख्या को हदीस कहते हैं। सहाबा से उसके चयन करने में बड़ी गंभीरता अपनाई गई। इसी प्रकार बहुत सी हदीसें एकट्ठा की गई।

जैक रेस्लर

फ्रेंच प्रच्यविधी विचारक



الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



प्रसन्नता का मार्ग

अनुक्रमणिका

प्रसन्नता का मार्ग

प्रसन्नता का मार्ग

प्रसन्नता की परिभाषा और उसका तथ्य

प्रसन्नता का शब्द उन शब्दों में से एक है, जिनकी परिभाषा में लोगों ने विभेद किया। कुछ का यह ख्याल है प्रसन्नता का मतलब रूचि, आनंद, धन, स्थिती या ख्याति है। इस विवरण के अनुसार अधिकतर लोग प्रसन्नता की खोज में अलग-अलग रास्ते चल रहे हैं। प्रसन्नता एक भावना है, जब भी आप आंतरिक सुख, खुशी, आनंद से प्रभावित होते हैं, तो यह भावना पैदा होती है। लेकिन लोगों की प्रकृति, रूचियाँ, इच्छाएँ और सभ्यता अलग-अलग होने के कारण प्रसन्नता को लेकर उनकी दृष्टि में विभेद हो गया। कुछ लोग प्रसन्नता को धन या गृह या स्थिती या स्वस्थता में पाते हैं। जब कि दूसरे लोग पत्नी या संतान या नौकरी या शिक्षा में पाते हैं। हो सकता है कि कुछ लोग अपने प्रिय से निकट होने, या अपने शत्रु से मुक्ति पाने, ब्रह्मचार्य बनने या किसी ग़रीब और निर्धन की सहायता करने में प्रसन्नता को पाये। लेकिन आश्चर्य जनक बात यह है कि जब इनमें से अधिकतर लोगों से यह प्रश्न किया जाता है: क्या तुम वास्तव में प्रसन्न हो। तो नही में उत्तर मिलता है।

फिर आप यह देखेंगे कि प्रसन्नता का विवरण लोगों के बीच और एक समुदाय से दूसरे समुदाय के बीच अलग-अलग है। यहाँ तक कि कुछ अंतर्राष्ट्रीय समुदायों ने एक माप दंड बनाया, जिसका नाम अंतरराष्ट्रीय प्रजा की प्रसन्नता की सीढी वे यह बताना चाह रहे थे कि कौनसी प्रजा सब से अधिक प्रसन्न है। इन

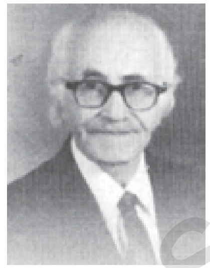


प्रसन्नता और सुख वाला धंम

मैं अपने आप से यह प्रष्न किया करता था की मुस्लमान अज्ञानी और गरीब होने के बावजूद क्यों उन्का जीवन प्रसन्नता से भरा हुवा है। आधुनिक विकास में सुख भरा जीवन बिताने के बावजूद भी क्यों स्वीडन के लोग मान्सिक कष्ट और तंगी से पीडित हैं । यहां तक की मैं मेरे शहर स्विटजरलैंड में भी वही बात महसूस करता था जो स्वीडन में मैंने महसूस किया, हालां की स्विटजरलैंड का जीवन सुविधाओं से भरा है और उस्का महत्व ऊँचा है। इन सब विषयों को देखते हुए मेरे भीतर पूर्वि धंमों का ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यक्ता पैदा हुई, तो मैंने सबसे पहले हिन्दू पढ़ना शुरू किया, लेकिन मै उस्से संतुष्ट नही हुआ, तो फिर मैने इस्लाम धंम को पढ़ना प्रारंभ किया, तो मुझे इस विषय ने इस्लाम की ओर खिंचा की इस्लाम धंम दूस्रे धंमों के साथ टकराव नही रखता है । बल्की इस्में सारे धंमों के लिए स्थान है, यह धंम सारे धंमों के अंत मे आने वाला धंम है । और यह बात निषचित रूप से मेरे मन में जगह बनाती गई, यहां तक की पूरी तरह से मेरे दिमाग़ में घर कर गई।

रोजीहीढु बाकीह

सुवीस पत्रकार और आलोचक



मान्वता की प्रसन्नता

किसी मन को यह बात अजीब ना लगे की पश्चिमी आधुनिक संस्क्रुति सारी मानव्ता को सुखी रखने में और मानव्य प्रसन्नता उपलब्द कराने में नाकाम हो गई और लोगों को अप्रसन्नता, भ्रम में ले डूबी है, इसलिए की आधुनिक ज्ञान के सारे प्रयास विनाष और बरबादी की ओर ले जाते हैं, और इस प्रकार की स्थिती में आधुनिक ज्ञान को पूर्णता से भरपूर मान्ना, या उस्को मानवता की सेवा का साधन समझना (जैसा की इस्लामी युग में था) बहुत दूर की बात है ।

नसीम सुसाह

इराक़ का यहुदी प्रध्यापक



लोगों ने इस सीढी के कई दर्जे बनाये और अलग-अलग सर्वेक्षण किये। लेकिन इसका परिणाम सब के लिए आश्चर्य चकित था। अमेरिका की प्रजा सब से अधिक दुखी और अप्रसन्न थी। जिसको अल्प अंक मिले। जबकि हमें यह ज्ञान है अमेरिका वासी को अपने देश में कितनी ज़्यादा सुविधाएँ प्राप्त हैं। आश्चर्यजनक बात यह है कि नैजिरिया की प्रजा को सब से अधिक अंक मिले। वही सब से अधिक प्रसन्न प्रजा रही। हालांकि वे दरिद्र ग़रीबी से पीडित है। यह उस सर्वेक्षण का परिणाम है जिसको न्यूज़ वीक नामी अमेरिकन पत्र ने संसार के अधिकतर प्रसन्न प्रजा के बारे में बताया है। जिसके परिणाम में मुस्लिम बहुमत वाला ग़रीब देश नैजिरिया की प्रजा पैंसठ (65) देशों की सूची में सबसे ऊपर रही। इसके बाद मेक्सिको, वेनिज़ूला, साल्वाडोर का नाम आया। जबकि विकसित देश (इस रिपोर्ट को तैयार करनेवालों के आश्चर्य के साथ) प्रसन्नता की इस सीढी से सब से निम्न दर्जे पर रहे। लेकिन हमें इस रिपोर्ट को स्वीकार करनेवाले अधिकतर अमेरिकियों की इस मान्यता के बारे में लम्बे समय तक विचार करने की आवश्यकता है, जो यह कहते हैं कि प्रसन्नता का संबंध धन या संपत्ति से नही है। न्यूज़ वीक(पत्र), अरबिक एडीशन, 3-8-2004, पन्ना 58 । यह बात उस दृष्ट समुदाय में विचित्र सी लगती है, जिसकी स्थापना ही पूँजीवादी विधी के अधिकतर सख्त नियमों पर आधारित है। यही कारण बना कि आगे चलकर इसी पत्र ने अमेरिका में धर्म के फैलाव की समस्या पर विचार किया, न्यूज़ वीक (पत्र), अरबिक एडीशन, 6-9-2005 । ताकि प्रसन्नता की खोज में अमेरिकियों कि लगातार कोशिशों के प्रति फिर से सोंच विचार के अलग-अलग तरीक़ों द्वारा प्रश्न उठे, जो पिडित मन की चिकित्सा के लिए ख़ुराक है।

प्रसन्नता की हक़ीकत और उसको प्राप्त करने की विधि के बारे में प्रसन्नता की परिभाषा करनेवाले अधिकतर लोगों के पास शायद आप यही समस्या पायेंगे। प्लेटों ने प्रसन्नता को मानवीय गुण (तत्वदर्शिता, बहादुरी, शुद्धता, न्याय) माना है। उसने यह ख्याल किया कि मानव संपूर्ण रूप से प्रसन्न उसी समय होता

है, जब उसकी आत्मा भविष्य जीवन की ओर लौट जाती है। अरस्तू ने प्रसन्नता को ईशवर द्वारा उपहार माना है। उसका ख्याल है कि प्रसन्नता पाँच आयामों से प्राप्त होती है। वह ये है: 1) शरीर और पाँच ज्ञानेन्द्रियों का स्वस्थ होना, 2) धन की उपलब्दी और उसका अच्छा उपयोग होना, 3) नौकरी में सफलता और इच्छाएँ पूरी होना, 4) श्रेष्ठ बुद्धि और सही सिद्धांत होना, 5) उच्च प्रतिष्ठा और लोगों के बीच अच्छा नाम होना। मनोविज्ञान में जीवन से सुख की स्थिति या आनंदित भावनाओं के बार बार आने वाले दर की प्रशंसा से प्रसन्नता को समझना संभव है। लेकिन प्रसन्नता की परिभाषा में विभेद होने के कारण यह प्रश्न रह जाता है कि प्रसन्नता है क्या। कैसे प्रसन्न होना मेरे लिए संभव है। क्या केवल रुचियों (इच्छाओं) की उपलब्दी से प्रसन्नता प्राप्त हो जाती हैं।





प्रसन्नता रूचि (इच्छा) के अतिरिक्त है ।

अधिकतर समय मानव विभिन्न रुचियों के पीछे दौड़ता है। हर रुचि का वह स्वाद लेता है। उसका यह ख्याल होता है, अगर वह सारी रूचियों को प्राप्त करले, तो प्रसन्नता उसको प्राप्त हो जाती है। लेकिन वह इस बात से आश्चर्यजनक हो जाता है कि प्रसन्नता से वही सब से ज़्यादा दूर है। संसार की रुचियाँ विभिन्न और अलग-अलग हैं। इनके रूप अनेक हैं। लेकिन हर रूचि में प्रसन्नता नही है। इसी कारण प्रसन्नता और रूचि कि परिभाषा के बीच मिश्रण हो जाता है। सही बात तो यह है कि एक प्रकार से यह दोनों इकट्ठा है और दूसरे प्रकार से अलग-अलग है। इन दोनों से मन में शांती पैदा होती है, इसलिए यह दोनों इकट्ठा हो सकते हैं। लेकिन अलग-अलग भी होते हैं। इन दोनों के बीच अंतर यह है कि रूचि पल भर में प्राप्त होती है और उसके कारण का समाप्त होते ही उसका प्रभाव चला जाता है। हो सकता है अधिकतर समय इस रुचि के बाद पश्चाताप और गंभीर कष्ट हो। प्रसन्नता मानव के साथ लम्बे समय तक बाक़ी रहती है।

प्रसन्नता और रुचि की परिभाषा के बीच मिश्रण स्वयं मानव के भीतर कभी संदेह पैदा करता है। तो मानव हर रुचि को प्रसन्नता समझ लेता है। विख्यात एक रुचि है, जिसके मुक़ाबले में कोई और रुचि नही है। आप लोगों के बीच विख्यात हो। कार्यक्रमों में लोग आपको आगे बढ़ायें और आपके कार्यों की प्रशंसा करे... यह सब रुचि का एक भाग है। लेकिन कितने ही विख्यात पुरुष, धनी, अधिकारी और सुन्दर लोग है, फिर भी वे अपने जीवन में कष्ट और अप्रसन्नता से पीडित हैं, और मनोचिकित्सक के पास अपना इलाज करा रहे हैं। या वे आत्म हत्या से अपना जीवन समाप्त कर लिये ताकि उनका कष्ट और अप्रसन्नता का अंत हो जाये। अधिकतर समय आप यह देखते हैं कि जो व्यक्ति चैन सुख में डूबा रहता है। एक स्त्री से दूसरी स्त्री के पास जाता है। जब आप कुछ समय बाद इस व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगें, तो आपको मालूम होगा कि वह एड्स से पिडित है। वर्जित संबंध चाहे कितने भी स्वादिष्ट हो, लेकिन इसमें परिवार और गृह का विनाश है। समुदायों का बिगाड़ है, और वंशजों के मिश्रण का कारण है। सेक्स फिल्मों को देखने में कभी-एक किस्म की रुचि मिल सकती है लेकिन इसमें देखनेवाले के व्यक्तित्व के लिए बिगाड़, सम्मान जनिक संबंधों का उल्लंघन, समुदाय की पवित्रता और प्रतिरक्षा के विरोध, अन्याय है। भोजन की भी एक रुचि है। आप इस प्रकार की रुचि रखनेवाले को प्रार्थना या उससे भी अधिक भोजन का उत्सुक पायेंगे। वह अपने शरीर में मांस और वसा (कोलेस्ट्राल) का भरमार कर चुका होगा। फिर आप इस व्यक्ति को सदा चिकित्सकों और आस्पतालों का अतिथी पाओगे।

कभी-कभी प्रसन्नता और रुचि के बीच की परिभाषा का यह भ्रम कुछ विशेष समूहों का लक्ष्य होता है। अधिकतर समूह यह प्रयास करते हैं कि विभिन्न रुचियों का संपूर्ण प्रसन्नता के रूप में प्रचार किया जाय। उनका लक्ष्य यह होता है कि मानवीय बुद्धि पर नियंत्रण रखा जाय, उन्हें अलग-अलग दिशाओं में मोडा जाय। वह युवक जो नशीले पदार्थ का उपयोग करता है। वह प्रारंभ में उस में स्थिर रुचि के कारण उपयोग करता है। लेकिन कुछ समय बाद वह नशीली पदार्थ प्रदान करनेवाले और इसके लिये धन लगाने वाले के हाथ में कटपुत्ली बन जाता है।

विभिन्न वस्तुओं के विपणन करने वाले सारे प्रचार अपने वस्तुओं को आकर्शित करदेते हैं। आप लोगों को देखेंगे, वे बज़ारों में नये वस्तु की तलाश में रहते हैं।

तो फिर प्रसन्नता यह नही है कि मानव को उसकी सारी इच्छाएँ प्राप्त हो जाय। वरना तो सब से अधिक प्रसन्न धनी और नायक होते। हालांकि वैज्ञानिक अध्ययन और वास्तविक जीवन इसका इन्कार करता है। शायद ब्रह्माण्ड में ईशवर का यही संपूर्ण न्याय है। क्या आप बहुत से ग़रीबों और पीडितों की प्रसन्नता नही देखते। बल्कि क्या आप नैतिक स्थितियों में धनी लोगों की प्रसन्नता नही देखते, जिसमें गरीब लोग उनसे अधिक प्रसन्न है। शायद कि प्रसन्नता सुख में हो।





किसी भी संदर्भ में प्रसन्नता सुख में नही है ।

अधिकतर लोगों का यह विचार है कि प्रसन्नता का मतलब सुख है । वे सुख के लिए प्रयास करते हैं, जो अधिकतर समय उनके लिए दुख, कष्ट, एकांत और अप्रसन्नता का कराण बनता है। वे भूल जाते हैं कि प्रसन्नता से प्रभावित करने वाली यह चीज़ें अनके लिए शारीरिक नष्ट का कारण बनती है। बल्कि कभी-कभी स्वयं प्रसन्नता ही कष्ट बन जाती है। अगर कभी आप कुएँ में गिरे हुये किसी बालक की जान बचाने के लिए कुएँ में कूद जाये। तो भी आप प्रसन्न होंगे । हालांकि कुएँ में उतरने के कारण आप घायल और पीडित हो जाते हैं। क्या आप ज्ञान प्राप्त करने के लिए ज्ञानी और शिष्य की ओर से की जानेवाली मेहनत नही देखते। जो उनके लिए प्रसन्नता का कारण बनती है। उन्हें प्रसिद्धता के ऊँची स्थिति तक ले जाती है। हालांकि वे अनगिनत कष्टों से पीडित होते हैं। इसी प्रकार खिलाडी अपने खेल से प्रसन्न होता है। हालांकि उसके शरीर से पसीना टपकता है। इसी प्रकार वह व्यक्ति जो पीडित और कमज़ोर लोगों की सहायता का प्रयास करता है। थकान के बावजूद इस सहायता से वह प्रन्न होता है। इसी प्रकार अपने इष्ट धर्म को पीडित और ग़रीब लोगों के लिए ख़र्च करता है। (और प्रसन्न होता है)। मानव अपने सुख और इष्ट चीज़ों को निछावर करता है। ताकि वह प्रसन्न हो।

प्रसन्नता के विभिन्न परिभाषा, टिप्पणी और दृष्टि के कारण मानव असली प्रसन्नता का विवरण और उसको प्राप्त करने के लिए अपने लगातार प्रयासों के प्रति भ्रम में पड़ जाता है।

जिवन असंभव है

आत्मा हत्या कर लेने से पहले उस्ने अपना आखरी संदेश लिखा, जिस्में उस्ने यह कहा की - जिवन असंभव है, मुझे क्षमा करदेना ।

डालीडा
विष्व प्रसिध्द गायक

1. मानव

किस चीज़ से मानव की सृष्टि हुई

ईश्वर ने कहा वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के लोथड़े से, फिर वह तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालता है, फिर (तुम्हें बढ़ाता है) ताकि अपनी प्रौढ़ता को प्राप्त हो, फिर मुहलत देता है कि तुम बुढ़ापे को पहुँचो - यद्यपि तुममें से कोई इससे पहले भी उठा लिया जाता है - और यह इसलिए करता है कि तुम एक नियत अवधि तक पहुँच जाओ और ऐसा इसलिए है कि तुम समझो। (अल ग़ाफिर, 67)

हाँ.. मानव वास्तव में मिट्टी और व्यर्थ पानी से पैदा किया गया है, उसका अंत बेजान शरीर है। वह जन्म से मृत्यु के बीच अपने पेट में गंदगी लिये फिरता है। अपने शरीर से निकलने वाली हर चीज़ को अशुद्ध समझता है। इन सबके बावजूद वह अपने ईशवर का विरोधी होता है। मानव कितना ही अधिक अकृतज्ञ है। ईशवर ने कहा । विनिष्ट हुआ मनुष्य। कैसा अकृतज्ञ है। उसको किस चीज़ से पैदा किया। तनिक-सी बूँद से उसको पैदा किया, तो उसके लिए एक अन्दाज़ा ठहराया, फिर मार्ग को देखो, उसे सुगम कर दिया, फिर उसे मृत्यु दी और क़ब्र में उसे रखवाया, फिर जब चाहेगा उसे (जीवित करके) उठा खड़ा करेगा। (अ-ब-स, 17-22)

इसके बावजूद मानव सारे जीव से अधिकतर सम्मानित है। ईशवर ने मानव के बाप आदम के सामने एंजीलों को सजदा करने का आदेश दिया। (धरती और सारे जानवरों को मानव के काम में लगा दिया। वह बुद्धि प्रदान की जिससे वह चमत्कार दिखाता है। ईशवर ने कहा। हमने आदम की संतान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी और अच्छी पाक चीज़ों से उन्हें रोज़ी दी और अपने पैदा किए हुए बहुत-से प्राणियों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की। (अल-इस्रा, 70)

मानव के हक़ीकत को इन दो हक़ीकी विचारों के बिना समझना संभव नही है। इसी विचार से उस विश्वास पर आधारित संतुलन बनता है, जो यह संदेश देता है, मानव को मिलनेवाले सम्मान, धन, ज्ञान सारी चीज़ें केवल ईशवर ही की दया है। ईशवर ने कहा । तुम्हारे पास जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो फिर तुम उसी के आगे चिल्लाते और फ़रियाद करते हो। (अल-नहल, 53)

मानव स्वयं मांस और हड्डियों का ढाँचा है। इसी के दवारा मानव के व्यक्तित्व को सम्मान मिलता है। इस व्यक्तित्व को पवित्र बनाना लाभदायक शिक्षा और अच्छे कार्य करना ज़रूरी है। हालांकि मानव कमज़ोर है। फिर भी ईशवर ने उसको ऐसे गुणों से सम्मानित बनाया, जो मानव को उस बोझ (अमानत) को उठाने की क्षमता दी है, जिसको उठाने से ब्रह्माण्ड की सारी चीज़ें असहाय थी। ईशवर ने कहा ।



हमने अमानत को आकाशों और धरती और पर्वतों के समक्ष प्रस्तुत किया, किन्तु उन्होंने उसके उठाने से इन्कार कर दिया और उससे डर गए। लेकिन मनुष्य ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह बड़ा ज़ालिम, नादान, आवेश के वशीभूत हो जानेवाला है। (अल-अहज़ाब, 72)

जब मानव दो हक़ीक़ी बातों के बीच सन्तुलन की शर्त के साथ अपने विश्वास (ईमान) में संदेहयुक्त हो जाये। उसकी बुद्धि केवल पहली हक़ीकत की ओर ही देखने लगे। तो वह अपने आप को गंदा, अत्याचार शरीर समझता, जिसके सामने कोई लक्ष्य नही होता। वह अपनी हवस को जानवरों के प्रकार पूरा करता है। यहाँ तक कि अपने व्यक्तित्व को नीच बना लेता है। ईशवर ने कहा। रहे वे लोग जिन्होंने इन्कार किया, वे कुछ दिनों का सुख भोग रहे हैं और खा रहे हैं, जिस तरह चौपाए खाते हैं। और आग उनका ठिकाना है । (मुहम्मद, 12)

फिर वह दूसरी हक़ीकत के विचार के साथ अन्याय करे। तो यह अन्याय उसको घमण्ड और सरकशी की ओर ले जाता है। वह यह भूल जाता है कि उसको अपने ईशवर की ओर लौटना है। ईशवर ने कहा । कदापि नहीं, मनुष्य सरकशी करता है, इसलिए कि वह अपने आपको आत्मनिर्भर देखता है। निश्चय ही तुम्हारे रब ही की ओर पलटना है। (अल-अलक़, 6-8)

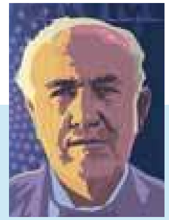
मानव के लिए इस बात की आवश्यकता है कि वह अपने व्यक्तित्व को जाने। उसको सुधारे। इसीलिए अप्रसन्नता का महत्वपूर्ण कारण अपने व्यक्तित्व को न जानना है, समाज में अपनी स्थिती को न पहचानना, अपने छवि और व्यक्तिगत क्षमता का ज्ञान न रखना ।



महत्वपूर्ण उत्तर

इस्लामी धर्म की शिक्षा के पालन से मानवीय अपनी मानवता और वास्तविक व्यक्तित्व की खोज करलेता है और अपने आप को पहचान लेता है । निश्चिंत रूप से केवल इस्लाम ही वो धर्म है, जिस्ने मेरे भ्रम प्रश्नों का सही उत्तर दिया ।

रोज़ मारी हओ
ब्रिटिष पत्रकार



अपनी क्षमताओं को जानो

हालांकी स्थिती मामुली थी और लोगों के अनुसार उस्के कारनामें बहुत कम थे (अडेसुन को स्कूल से निकाल दिया गया था) लेकिन उसने अपने आविष्कारों में स्वयं को पालिया, परन्तु मानवता पर उस्का बहुत बडा अहसान है। महत्वपूर्ण बात यह है कि आप स्वयं के साथ संझोता करलें, ताकी सुखी रहसको, अपनी स्थिती को जान सको और अपनी क्षमता को पहचान सको ।

अडेसुन

मानव का जन्म किस कारण हुआ ।

ईश्वर ने ब्रह्माण्ड की हर चीज़ को पैदा किया। ईश्वर कोई काम व्यर्थ नही करता । ईश्वर ने कहा । तो क्या तुमने यह समझा था कि हमने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और यह कि तुम्हें हमारी ओर लौटना नही है। तो सर्वोच्च है अल्लाह, सच्चा सम्राट । उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नही, अधीश है महिमाशाली सिंहासन का। (अल-मोमिनून, 115-116)

बल्कि ईश्वर ने प्रार्थना के लिए सारे प्रणियों को पैदा किया है। प्रार्थना की परिभाषा जीवन के हर भाग में उपस्थित है। यहाँ तक कि प्राणि के कार्य, खेल, कूद और सारा जीवन प्रार्थना में शामिल है। केवल धार्मिक संस्कार का नाम प्रार्थना नही है। मैंने तो जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि मेरी बन्दगी करें। (अल-ज़ारियात 56)

जिस व्यक्ति को इस सत्यता का ज्ञान न हो, वह सदा अज्ञान से पीडित रहेगा । अपने जीवन को संदेह और भ्रम से अप्रसन्न बनायेगा । इस मानव के स्पष्ट प्रार्थना प्रसन्नता से और संसारिक जीवन से अलग है। इसी प्रकार संसारिक जीवन भविष्य से अलग है। ईश्वर ने धरती और आकाश में स्थित हर चीज़ को मानव के काम में लगा दिया है। ईश्वर ने कहा । जो चीज़ें आकाशों में हैं और जो धरती में है, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं। (अल-जासिया, 13)

मानव को यह ज्ञान रखना चाहिए कि वह परीक्षा के लिए अपने असली मालिक की ओर से इस ज़मीन पर उत्तराधिकारी बनाया गया है। वही है जिसने तुम्हें धरती में ख़लीफ़ा (अधिकारी, उत्तराधिकारी) बनाया और तुममें से कुछ लोगों के दर्जे कुछ लोगों की अपेक्षा ऊँचे रखे ताकि जो कुछ उसने तुमको दिया है उसमें वह तुम्हारी परीक्षा ले। निस्संदेह तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है। और निश्चय ही वह बडा क्षमाशील, दयावान है। (अल-अनआम, 165)



2. जीवन

मानव को अपने वजूद की सत्यता का ज्ञान होने के बाद जीवन की वास्तविकता के बारे में उसके मन में विचार करने की इच्छा पैदा होती है। मानव के मन में जीवन से लगाव होना उसकी प्रकृति है। यही वह स्थंभ है जिस पर संसार की सारी रुची और सुख आधारित है। मन में पैदा होने वाली इच्छाओं को प्राप्त करने से जीवन ही पर आशा निर्भर होती है। तो जीवन का लक्ष्य क्या है। निस्संदेह मृत्यु और जीवन का लक्ष्य लोगों की परीक्षा लेना है कि कौन सब से अच्छे कर्म करनेवाला है। ईश्वर ने कहा । जिसने बनाया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करें कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सब से अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है। (अल-मुल्क, 2)

यही वास्तविकता है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। हाँ संसार को बनाने की यही तत्वदर्शिता है। ईश्वर ने कहा । सांसारिक जीवन की उपमा तो बस ऐसी है जैसे हमने आकाश से पानी बरसाया तो उसके कारण धरती से उगनेवाली चीज़ें, जिनको मनुष्य और चौपाये सभी खाते हैं, धनी हो गई, यहाँ तक कि जब धरती ने अपना श्रृंगार कर लिया और सँवर गई और उसके मालिक समझने लगे कि उन्हें उस पर पूरा अधिकार प्राप्त है कि रात या दिन में हमारा आदेश आ पहुँचा। फिर हमने उसे कटी फ़सल की तरह कर दिया, मानो कल वहाँ कोई आबादी ही न थी। इसी तरह हम उन लोगों के लिए खोल-खोलकर निशानियाँ बयान करते हैं जो सोच-विचार से काम लेना चाहें। (यूनुस, 24)

ईश्वर ने कहा । और उनके समक्ष सांसारिक जीवन की उपमा प्रस्तुत करो, यह ऐसी है जैसे पानी हो, जिसे हमने आकाश से उतारा तो उससे धरती की पौध घनी होकर परस्पर गुँथ गई। फिर वह चूरा-चूरा होकर रह गई जिसे हवाएँ उड़ाए लिये फिरती है। अल्लाह को तो हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। (अल-कहफ़, 45)

हमारा यह जीवन केवल एक मार्ग है, शयन गृह नही है। जीवन एक पथ है जो हमें परलोक तक पहुँचाता है। संसार के समाप्त हो जाने से जीवन समाप्त नही होता है। बल्कि परलोक में सदा रहनेवाला एक जीवन है। संसारिक जीवन केवल खेल-कूद, और वेश-भूषा है जैसा कि ईशवर ने कहा। जानलो, संसारिक जीवन तो बस एक खेल और तमाशा है और एक साज-सज्जा और तुम्हारा आपस में एक दुसरे पर बड़ाई जताना, और धन और संतान में परस्पर एक-दूसरे से बढा हुआ प्रदर्शित करना, वर्षा की मिसाल की तरह जिस की वनस्पती ने किसान का दिल मोह लिया, फिर वह पकजाती है, फिर तुम उसे देखते हो कि वह पीली हो गई। फिर वह चूर्ण-विचूर्ण होकर रह जाती है, जबकि आख़िरत में कठोर यातना भी है और अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता भी। सांसारिक जीवन तो केवल धोखे की सुख-सामग्री है। (अल-हदीद, 20)

इस वाक्य में संसारिक जीवन को निम्न बताया गया है। जिससे उसका महत्व कम हो जाता है। लोग इससे दूर रहते हैं। परलोक से इसका संबंध बनाते हैं। जब संसारिक जीवन को उसी के मापदंड से मापा जायेगा तो आँखों के सामने जीवन एक महान नज़र आयेगा। लेकिन जब वजूद के मापदंड से मापा जायेगा और परलोक के तराज़ू से तोला जायेगा तो जीवन साधारण निम्न खेल-कूद, वेश-भूषा दिखाई देगा। जीवन में स्थिर हर रुची और हर प्रयास की यही सत्यता है। हाँ यही संसारिक जीवन की वास्तविकता है। जब मन में सत्यता के खोज की प्रेरणा होगी, तो मन इस वास्तविकता से प्रभावित होगा। ख़ुरआन का लक्ष्य इस वास्तविकता के द्वारा संसारिक जीवन से अलग-थलग होना, विकास न करना और उत्तराधिकारी न बनना नही है। बल्कि ख़ुरआन का लक्ष्य भावनाओं, मानसिक मूल्यों, समाप्त हो जानेवाले सामाग्री के धोखे से दूरी और धरती से संबंधित आकर्शित होने के नियमों को सुधारना है। जीवन तो केवल पुल है, जिसपर चलते हुए सारा ब्रह्माण्ड परलोक





की ओर जाता है। यह संसार अपनी छोटी उम्र और तुरन्त समाप्त होने के कारण भविष्य में आनेवाले शाश्वत जीवन के सामने कुछ नही। इसी प्रकार परलोक का कभी समाप्त न होनेवाला जीवन, इस संसारिक जीवन में मानव की स्थिती पर आधारित है। तो फिर संसारिक जीवन सदा परीक्षा की घडी है। मानव के आस-पास की सारी सामाग्री, रुची, और सुख या कष्ट, नष्ट और घटनाएँ, यह सब कुछ लम्हों की बात है, जो तुरन्त ही समाप्त हो जायेगी। फिर संसारिक जीवन के सारी चीज़ों को पल्ले में रखा जायेगा, ताकि सदा रहनेवाला स्थान तय कर दिया जाय। वरना तुम अपनी क़बर में क्या ले जाओगे। ईशवर ने कहा । और निश्चय ही तुम उसी प्रकार एक-एक करके हमारे पास आ गये जिस प्रकार हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा था, उसे अपने पीछे छोड़ आये, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशों को भी नही देख रहे हैं जिनके विषय में तुम दावे से कहते थे कि वे तुम्हारे मामले में (अल्लाह के) शरीक हैं। तुम्हारे परस्परिक संबन्ध टूट चुके हैं और वे सब तुमसे गुम होकर रह गये जिनका तुम दावा रखते थे। (अल-अनआम, 94)

अधिकतर लोगों को क्या हो गया कि वे इस हक़ीक़त से असावधान है, इसी की सूचना ईशवर ने पहले ही दी है। ईशवर ने कहा । वे सांसारिक जीवन के केवल बाह्य रुपको जानते हैं, किन्तु आख़िरत की ओर से वे बिल्कुल असावधान हैं। (अल-रूम, 7)





उस व्यक्ति का क्या होगा, जो संसारिक जीवन से आकर्शित हो, और अपने ईश्वर से मिलने की आशा न रखता हो। ईश्वर ने कहा। रहे वे लोग जो हमसे मिलने की आशा नही रखते और संसारिक जीवन ही पर निहाल हो गये हैं और उसी पर संतुष्ट हो बैठे और जो हमारी निशानियों की ओर से असावधान है, ऐसे लोगों का ठिकाना आग है, उसके बदले में जो वे कमाते रहे। (यूनुस, 7,8)

उस व्यकित का क्या होगा, जो संसारिक जीवन को प्राथमिकता दे। ईश्वर ने कहा । तो जिस किसी ने सरकशी की और सांसारिक जीवन को प्रथमिकता दी होगी, तो निस्संदेह भडकती आग उसका ठिकाना है। और रहा वह व्यक्ति जिसने अपने रब के सामने खड़े होने का भय रखा और अपने जी को बुरी इच्छा से रोका, तो जन्नत ही उसका ठिकाना है। (अल-नाज़िआत, 37, 41)

हाँ। क्योंकि वे धर्म को खेल-तमाशा बनालिये और संसारिक जीवन में उन्हें धोखे में डाल दिया। ईश्वर ने कहा। उनके लिये जिन्होंने अपना धर्म खेल और तमाशा ठहराया तथा जिन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया, तो आज हम भी उन्हें भुलादेंगे जिस प्रकार वे अपने इन दिन की मुलाक़ात को भूल रहे और हमारी आयतों का इन्कार करते रहे। (अल-आराफ़, 51)

हाँ। क्योंकि वे ईश्वर के मार्ग में टेढ़ पैदा करना चाहे। ईश्वर ने कहा । जो आख़िरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं, वही पहले दर्जे की गुमराही में पड़े हैं। (इब्राहीम, 3)

इसका मतलब यह नही है कि संसारिक जीवन मानव की दृष्टि में अल्प हो जाय, और मानव ज्ञान और अपने कर्मों से धरती के विकास को छोड़कर सन्यास लेलें और अपने मौत का इन्तेज़ार करें। कदापि । बल्कि सही उदाहरण यह है कि हम संसारिक जीवन में उसी प्रकार व्यवहार करें जैसे ईश्वर ने कहा । जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नही करता। (अल-क़सस, 77)

ईश्वर ने यह भी कहा। जो चीज़ भी तुम्हें प्रधान की गई है वह तो सांसारिक जीवन की सामग्री और उसकी शोभा है। और जो कुछ अल्लाह के पास हैं वह उत्तम और शेष रहनेवाला है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नही लेते। (अल-क़स्स, 60)

इस दृष्टि से संसारिक जीवन मानव की नज़र में क़ीमती ख़ज़ाना है। जिसका उपयोग आवश्यक है। संसारिक जीवन अपनी सत्यता के अनुसार शाश्वत प्रसन्नता की ओर पहुँचाने वाले पुल से अधिक महत्व का अधिकार नही रखती है। संसारिक जीवन में मिलने वाली ख़ुशियों के रंग केवल एक संसारिक जीवन की सामाग्री और साज-बाज है। ईश्वर ने कहा । मनुष्यों को चाहत की चीज़ों से प्रेम शोभायमान प्रतीत होता है कि वे स्त्रियाँ, बेटे, सोने-चाँदी के ढेर और निशान लगे (चुने हुए) घोड़े हैं और चौपाए और खेती। यह सब सांसारिक जीवन की सामाग्री है, और अल्लाह के पास ही अच्छा ठिकाना है। (अले-इमरान, 14)





आप प्रश्न करो ख़ुरान आपको उत्तर देगा

मैने ख़ुरान को पढ़ा, तो मुझे उस्में जिवन के हर प्रश्न का उत्तर मिला ।

मैक टैयसन

विश्व बाक्सिंग चाम्पियन

ईशवर ने कहा । माल और बेटे तो केवल सांसारिक जीवन की शोभा हैं, जबकि बाक़ी रहनेवाली नेकियाँ ही तुम्हारे रब के यहाँ परिणाम की दृष्टि से भी उत्तम है और आशा की दृष्टि से भी वही उत्तम हैं। (अल-कहफ़, 46)

जब सांसारिक जीवन का उपयोग सही हो तो स्वयं उसको भी बुरा न माना जायेगा । ईशवर ने कहा । कहो, अल्लाह की उस शोभा को जिसे उसने अपने बन्दों के लिये उत्पन्न किया है, और आजीविका की पवित्र, अच्छी चीज़ों को किसने हराम करदिया । कह दो, ये सांसारिक जीवन में भी ईमानवालों के लिए हैं, क़ियामत के दिन तो ये केवल उन्ही के लिए होंगी। इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए सविस्तार बयान करते हैं जो जानना चाहें । (अल-आराफ़, 32)

इसी विचार के साथ मुस्लिम संसारिक जीवन की रुचियों को अपनाता है। जबकि उसका यह विश्वास होता है कि संसार में जिस किसी चीज़ का वह मालिक है वह सारी चीज़ें शाश्वत नही है। इसी लिए वह संसार से लाभ उठाने में सीमाओं के भीतर रहते हुए सदा प्रयास करता रहता है। उसके भीतर यह विश्वास होता है कि उसकी संपत्ति बनने वाली सारी चीज़ों का स्थान उसका हाथ है न कि मन इस जीवन में उसको प्राप्त होने वाली चीज़ें या उससे खोनेवाली चीज़ें उसके लिए किसी नष्ट का कारण नही है। ईशवर ने कहा । जो मुसीबत भी धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, वह अनिवार्यतः एक किताब में अंकित है, इससे पहले कि हम उसे अस्तित्व में लायें - निश्चय ही यह अल्लाह के लिए आसान है - (यह बात तुम्हें इसलिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे और न उसपर फूलजाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। अल्लाह किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नही करता। (अल-हदीद, 22, 23)

इसी विचार के साथ मुस्लिम संसारिक सामाग्री, रुची और शोभाओं से लाभ उठाता है। ईशवर द्वारा उसको पुण्य भी मिलता है। उसकी दृष्टि में संसारिक जीवन भविष्य जीवन से, शरीर का सुख आत्मा के सुख से, प्रसन्नता संसारिक सामाग्री, आंतरिक सुख और ख़ुशी से संबन्धित है।



3. ब्रह्माण्ड

संसारिक जीवन को समझने के लिए मुस्लिम विचार करते करते तीसरे और अंतिम कड़ी तक पहुँचता है। वह कडी ब्रह्माण्ड है। जिसमें सारे जीव रहते हैं। मुस्लिम ब्रह्माण्ड में विचार करते हुए सब से पहले ईशवर की यह वाणी पढ़ता है। कहो, देख लो, आकाशों और धरती में क्या कुछ है। किन्तु निशानियाँ और चेतावनियाँ उन लोगों के कुछ काम नही आती जो ईमान न लाना चाहें। (यूनुस, 101)

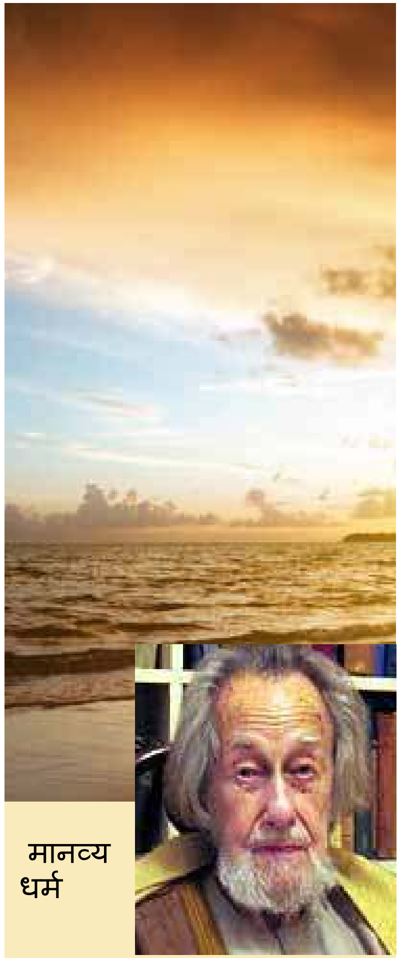
फिर मुस्लिम ख़ुरआन के कई वाक्य पढ़ने लगता है, जो उसको ईशवर के बनाये हुए जीव और उसकी उच्च कारीगरी में विचार करने का सन्देश देती है। ताकि वह इन वाक्य से उसी समान परिणाम प्राप्त करें जिस समान पूर्व काल में विचार करनेवालों ने संसारिक जीवन की सत्यता के प्रति प्राप्त किया था। उसको यह ज्ञान होगा कि ब्रह्माण्ड की सत्यता को समझने के लिए दो बातों का ज्ञान ज़रूरी है।

1. यह कि ब्रह्माण्ड में स्थिर अधिकतर जीव स्वयं मानव ही के काम में लगाये गये हैं, क्योंकि मानव का सारे जीव पर सर्वश्रेष्ठ होना केवल उसकी कुछ विशेषताओं के कारण नही है। बल्कि सारे जीव को उसकी सेवा करने और सुख पहुँचाने में लगा देने के कारण भी है। ईशवर ने कहा। क्या तुमने देखा नही कि अल्लाह ने, जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, सबको तुम्हारे काम में लगा रखा है और उसने तुमपर अपनी प्रकट और अप्रकट अनुकम्पाएँ पूर्ण कर दी है। इसपर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान, बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी प्रकाशमान किताब के झगड़ते हैं। (लुक़मान, 20)

ईशवर ने कहा । और उसने तुम्हारे लिये रात और दिन को और सूर्य और चन्द्रमाँ को कार्यरत कर रखा है। और तारे भी उसी की आज्ञा से कार्यरत हैं - निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। (अल-नहल, 12)

ईशवर ने कहा। वही तो है जिसने तुम्हारे लिये धरती को वशीभूत किया। अतः तुम उसके (धरती के) कन्धों पर चलो और उसकी रोज़ी में से खाओ, और उसी की ओर दोबारा उठकर (जीवित होकर) जाना है। (अल-मुल्क, 15)

मुस्लिम ख़ुरआन के बहुत सारे वाक्य में ब्रह्माण्ड को अपने काम में लगाने और स्वयं को शक्तिमान बनाने का प्रमाण पाता है। इसमें यह खुला संदेह है कि ब्रह्माण्ड से मानव को लगाव होना ज़रूरी है, और ब्रह्माण्ड में मानव पर आनेवाली प्रकृति विपदा और कष्टों से भय न खाने का आदेश है। क्योंकि प्रकृति सदा कमज़ोर मानव को चुनौती नही देती। मानव भी सदा प्रकृति के बिगाड़ पर नियंत्रण रखने के लिए दबाव में नही है।



मानवव्य धर्म

अपने सारे जिवन में खोये हुए अपने व्यक्तित्व को मैने इस्लाम धर्म में पाया है, और उस समय पहली बार मेरे भीतर यह भावना पैदा हुइ कि मैं मानव हूँ । इस्लाम मानव को उस्के व्यक्तित्व कि ओर लेजाता है, जो मानव्य वृत्ति के बिलकुल एक समान है ।

मारटीन लिंगीज़

ब्रिटीषआलोचक

2. यह है कि ब्रहमाण्ड ने अभी तक मानव के लिए अपने सारे रहस्य नही खोले हैं। हालांकी मानव शक्तिशाली और प्रभाव रखता है, फिर भी बहुत सारी चीज़ें मानव के ज्ञान से दूर है। या उसके नियंत्रण से बाहर है। ब्रहमाण्ड में बहुत सारे एंजील(फरिशते) भूत प्रेत हैं। दूसरे और बहुत से प्राणी है। मानव के बस में यह नहीं कि वह उसकी सत्यता का ज्ञान प्राप्त कर लें या कस से कम उसके वजूद का ज्ञान प्राप्त कर लें। ब्रहमाण्ड में मानव का वजूद छोटे कण से अधिक कुछ नही है। जिसका इस ब्रहमाण्ड के महानता और फैलाव के सामने कोई हिसाब नही है।

ब्रहमाण्ड के प्रति इन दो बातों द्वारा मुस्लिम की दृष्टि पूर्ण होती है। वह सारे जीव के बीच अपने विशेष स्थान का संपूर्ण ज्ञान रखता है। ईशवर ने उसको संसार का केन्द्र बनाया है। इसके लिए दूसरी अधिकतर जीव काम में लगे हुए हैं। साथ साथ मुस्लिम को इस बात का भी ज्ञान है कि कुछ द्वार अभी उसकी सामने बंद है वह अपने चमत्कारी क्षमता के कितने ही उच्च स्थान पर हो, फिर भी वह इन द्वारों को खटखटा नही सकता। आस-पास रहनेवाली चीज़ों के साथ मानव का संबन्ध विनम्रता और चरित्र के नियमों पर आधारित है। अपने संबंधों में दुर्व्यवहार करनेवाले लोग अप्रसन्नता, कष्ट और नष्ट मे जीवन व्यतीत करते हैं। वे समस्याओं का सामना करते हैं। क्योंकि उनके संबन्ध असंतुलित और नियम विरुद्ध है। यह संबंध घमंड, जलन, ग़लत सोंच, मक्कारी और दूसरों की ग़लतियों की खोज पर आधारित है। यह सब बातें मानव को अप्रसन्न और दुखी बनाती है। उसके भीतर दुविधा भरे विचार पैदा करती है। इसी कारण मानव सदा दुख और तनाव से पीडित रहता है। तो फिर कैसे उसको सुख और प्रसन्नता प्राप्त होगी । ईशवर ने कहा । न अच्छे आचरण परस्पर समान होते हैं और न बुरे आचरण। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र है। किन्तु यह चीज़ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्य से काम लेते हैं, और यह चीज़ केवल उसको प्राप्त होती है जो बडा भाग्यशाली होता है। (अल-फुस्सिलत 34, 35)

अपने जीवन और संबन्धों को अधिकार और कर्तव्य के नियमों पर आधारित करनेवाला मानव अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी करता है। अधिकार में छूट देता है और दुशमनों को माफ करता है। यह मानव इन सब चीज़ों के बाद निस्संदेह प्रसन्न है। प्रेम मानवता के बीच आपसी व्यवहार में उच्च स्थान रखता है। प्रेम का मतलब मोहब्बत, दयालुता है। और यही मानव का सही स्वभाव है।





उच्च चरित्र और समान्ता का धर्म

मैंने इस्लाम का इस कारण चहन किया की मुझे इस्लाम के दामन मे सुख प्राप्त हुआ । हाँ मैने इस्लाम स्विकार करलिया हैं, क्यों कि मेरी यह भावना है कि इस्लाम वह धर्म है जो शरीर और आत्मा के बीच और न शरीर और मानवता के बीच अंतक करता है। मेरे लिए यह बात बहुत है कि इस्लाम पवित्र धर्म है, जो उच्च चरित्र, मानव्य समान्ता को अपनाने का संदेष देता है। इसी कारण मैंने यह गवाही दी है कि अल्लाह के सिवा दूसा ईश्वर नही है और मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल है, और इसी गवाही पर में अपने ईश्वर से मिलूँगा ।

फानान मुसेह

फ्रेंच आलोचक



प्रसन्नता का मार्ग... मानव का स्वयं अपने साथ, जीवन के साथ और ब्रह्माण्ड के साथ संझौता करना है।

इसी विश्वास द्वारा मानव अपने पूज्य प्रभु, अपनी आत्मा और ब्रह्माण्ड के साथ संझौता कर लेता है। वह सबसे पहले ईशवर के लिए बन्दगी की सत्यता का ज्ञानी है। प्रार्थना के प्रति अपने कर्तव्य निभाता है। फिर वह एक प्राणि होने के रूप में अपने मूल्य का भी ज्ञान रखता है, जिसके लिए ईशवर ने सारे जीव को काम में लगाया है। वह यह भी जानता है उसके लिए बनाये गये स्वर्ग की ओर लौटने से पहले धरती पर परीक्षा के लिए उतारा गया है। वही इस धरती के विकास का ज़िम्मेदार है। ईशवर ने कहा। उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया और उसमें तुम्हें बसाया। अतः उससे क्षमा माँगो, फिर उसकी ओर पलट आओ। निस्संदेह मेरा रब निकट है, प्रार्थनाओं को स्वीकार करनेवाला भी। (हूद, 61)

मानव कि यह ज़िम्मेदारी है वह स्वयं को शरिअत के नियम और ज़रूरत की सीमाओं में रहते हुए अपनी इच्छाओं को अपनाये। जब हमें प्रजापति ईशवर, व्यक्तित्व और ब्रह्माण्ड की इस संपूर्ण परिभाषा तक पहूँच जायेंगे, तो हमे इस परिभाषा के अनुसार पालन करने से मिलने वाले वास्तविक परिणाम के बारे में प्रश्न करने का अधिकार होगा। जब मानव इस सत्यता का ज्ञान प्राप्त करलेगा तो निश्चय वह यह परिणाम प्राप्त करेगा कि दोनों (संसारिक और परलोक) जीवन में प्रसन्नता ईशवर की पसन्द, उसके आदेश और निशेध का पालन करने और उसकी सीमाओं को पार न करने से संबन्धित है। प्रसन्नता, शरीर और आत्मा के बीच, व्यक्तिगत और सामूहिक आवश्यकताओं के बीच, संसार और परलोक की ज़रूरतें के बीच संतुलन रखने से प्राप्त होती हैं। संसार में मिलने वाली प्रसन्नता (चाहे कितनी ही अधिक हो) अल्प प्रसन्नता है। क्योंकि संसार कष्ट, कर्म और परीक्षा का गृह है। परलोक हिसाब-किताब का गृह है। जो व्यक्ति परलोक में सफल हो जाये, वह संपूर्ण औक सदा रहनेवाली प्रसन्नता प्राप्त करलेगा। ईशवर ने कहा । उन्हें उनका रब अपनी दयालुता और प्रसन्नता और ऐसे बाग़ों की शुभ-सूचना देता है जिनमें उनके लिए स्थायी सुख-सामाग्री है। उनमें वे सदैव रहेंगा। निस्संदेह अल्लाह के पास बडा बदला है। (अल-तौबा, 21, 22)

मानवता के लिए प्रसन्न होने, सुखी भावना प्राप्त करलें, संसार और परलोक में शुभ जीवन बिताने के लिए विश्वास (ईमान) और अच्छे कार्य ज़रूरी है। ईशवर ने कहा।



इस्लाम धर्म कि अनुग्रह

संसार कि सारी अनुग्हों में से सबसे विशाल अनुग्रह (जिस्से मानव आनंद लेते हैं) वह ईश्वर का मानव को इस्लाम कि समझ देने से बढ़कर कोई नही है। मनुष्य कि किरणों से मार्गदर्शन प्राप्त करता है, यहाँ तक कि जीवन और भविष्य जीवन के तथ्य का ज्ञान प्राप्त करता है, सत्य और झूट के बीच, और प्रसन्नता और अप्रसन्नता के पथ के बीच अंतर करता है। मैं इस महान अनुग्रह कि उपलब्दी पर इश्वर के सामने सर झुकाता हूँ, जिसने मुझे उस्से प्रेम करने कि क्षमता मेरे भीतर पैदा की है। इस अनुग्रह ने वास्तविक प्रसन्नता से मेरे मन को भर दिया है, और मुझे यह अवसर दिया मैं इस पहले हुए छाया और अन्गिनत फलों वाले इस पैड़ तले सुख प्राप्त करूँ और वह पेड़ इस्लामी परिवार और भाईचारगी का पेड़ है ।

मारशीला मायकल अंगलु

ब्रिटीष अभिनेत्री



जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अल-नहल, 97)



प्रसन्नता के मार्गदर्शक ।

सच्ची प्रसन्नता के मार्ग (जो ईशवर पर विश्वास रखने का मार्ग है) को जानने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि हम इसके मार्गदर्शक का विवरण करें, ताकि इस पर चलते समय हमे शाँती और आत्म विश्वास प्राप्त हो।

1. वह ईशवर का मार्ग है।

ईशवर ने कहा । और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हे उसके मार्ग से हटाकर इधर-उधर करदेंगे। यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हे ताकीद की है ताकि तुम (पथभ्रष्टता से) बचो। (अल-अनआम, 153)

तो फिर प्रसन्नता का मार्ग ईशवर का मार्ग है। उसकी ओर से अपने भक्तों के नाम वसीयत है। (ईशवर ही अपने भक्तों के लिए लाभदायक बातों का अधिक ज्ञान रखता है) निस्संदेह अप्रसन्न है वह व्यक्ति जो ईशवर के मार्ग को छोड दें, और मानवीय विभिन्न मार्गों में प्रसन्नता की आशा रखे। ईशवर के मार्ग के अतिरिक्त किसी अन्य मार्ग में प्रसन्नता नही है। ईशवर ने कहा । तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया वह ना तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ़ में पडेगा। और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन तंग (संकीर्ण) होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अन्धा उठाएँगे। (ता-हा, 123, 124)



ईमान(विश्वास) और मान्सिक स्वस्थ

पिछले तीस(30) वर्षो के दौरान संसारल के ऊँची ऊँची सभ्यता वाले अनेक लोगों ने मुझसे सलाह ली। मैंने कई पीडितों का इलाज किया। मैंने अधड़ उम्र या पैंतीस(35) या इस जैसी उम्र वालों कि समस्याओं में से हर समस्या कि जड़ यही पाया, वे ईमान (विश्वास) और धर्म कि शिक्षों से दूर हैं । यह कहना बिलकुल सत्य होगा, यह सब पीडित रोंगों के शिकार बनगये हैं, इसलिए कि यह सब धर्म के द्वारा मिलने वाले मान्सिक सुख से बहुत दूर हैं। इन पीडितों में से हर पीडित उसी समय स्वास्थीक्ता को प्राप्त कर सका, जब वह अपने विश्वास को सुधार लेता है, और जीवन का सामना करने के लिए धर्म के आदेशों से सहायता प्राप्त करने का प्रयास करता है।

कॅाल युंग

प्रसिध्द मनोचिकित्सक

प्रसन्नता उस व्यक्ति के लिए है जो इस मार्ग पर चले और मार्गदर्शन का अनुपालन करें। जो इस मार्ग से मुँह मोडेगा, उसका जीवन संकीर्ण होगा। चाहे वह प्रसिद्ध और विख्यात ही क्यों न हो। संकीर्ण का मतलब संसार और परलोक में तंगी और अप्रसन्नता है।

2. यह मार्ग आत्मा और शरीर की प्रसन्नता का संगम है।

यह सब जानते हैं कि मनुष्य आत्मा और शरीर का मिश्रण है। हर एक के लिए उसकी अपनी ख़ुराक है। कुछ दर्शन और मार्ग आत्मा को महत्व देते हुए शरीर की आवश्यकताओं का इन्कार किया, जो एक बडी समस्या बनगया । इसके विपरित आधुनिक भौतिकवाद ने आत्मा को मिटा दिया और शरीर को उसकी सारी इच्छाएँ दे दी। जिसके कारण मानवता का बडा समूह पशु-पक्षी के समान अपनी हवस को पूरा करनेवाला, या व्यर्थ सामाग्री बन गया है। इस्लाम के मार्ग ने देवत्व प्रकाश से आत्मा को स्वस्थ रखा, शरीर की सुरक्षा की, और शरीर की आवश्यकताओं और हवस को पवित्र हलाल से पूरा किया । जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है। (अल-क़सस, 77)

ईश्वर के रसूल (मुहम्मद) ने सल्मान फ़ारसी की इस बात को सराहाः आप के ईशवर का आप पर अधिकार है, आप के शरीर का आप पर अधिकार है, आपके संतान का आप पर अधिकार है, परन्तु हर व्यक्ति को उसका अधिकार दो। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने वर्णन किया है।)

3. वह प्रसन्नता और साहस का मार्ग है।

जो व्यक्ति विश्वास (ईमान) का मज़ा चकलें, तो फिर वह कभी उसको छोड़ न पायेगा, चाहे उसकी गर्दन पर तलवार रख दी जाय। फ़िरऔन के जादूगर जब ईमान लाए। प्रसन्नता के मार्ग पर चलने लगे तो फ़िरऔन ने उन्हें धमकी दी। उनसे यह कहा, जैसा कि ख़ुरआन ने विवरण किया है। अच्छा, अब मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवादूँगा और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दे दूँगा। तब तुम्हें अवश्य ही मालूम हो जाएगा कि हममें से किस की यातना अधिक कठोर और स्थायी है। (ता-हा, 71)

तो स्थिरता के साथ उनका पुनः उत्तर यह था। उन्होंने कहा, जो स्पष्ट निशानियाँ हमारे सामने आ चुकी है उनके मुक़ाबले में सौगन्ध है उस सत्ता की जिसने हमें पैदा किया है, हम कदापि तुझे प्राथमिकता नही दे सकते। तो जो कुछ तू फ़ैसला करनेवाला है, कर ले। तू बस इसी सांसारिक जीवन का फ़ैसला कर सकता है। (ता-हा, 72)

यह लोग ईमान लानेके कुछ ही क्षणों बाद जिस स्थिरता का प्रदर्शन किया है। इसका कारण केवल यह है कि वे (ईमान) विश्वास का आनंद ले चुके थे। इसी आनंद ने उन्हें अपने निर्णय और फ़ैसले में, हत्या की धमकी मिलने के समय भी अधिक सुख और स्थिरता प्राप्त की।

4. प्रसन्नता मन की शाँती और सुख का नाम है।

सुख और शाँती के बिना प्रसन्नता नही है, और न विश्वास (ईमान) के बिना सुख और शाँती है। ईशवर ने कहा। वही है जिसने ईमानवालों के दिलों में सकीनत (प्रशान्ति) उतारी, ताकि अपने ईमान के साथ वे ईमान की और अभिवृद्धी करें - आकाशों और धरती की सभी सेनाएँ अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (अल-फ़तह, 4)

ईमान दो भागों में प्रसन्नता देता है। प्रथम1- पाप और अपराध के गड़ढे में गिरने से रोकता है। यही अप्रसन्नता और तंगी का गंभीर कारण है। जब मानव का मन ईशवर पर विश्वास से ख़ाली हो, तो कोई दूसरी चीज़ यह ज़मानत नही दे सकती कि हवस और इच्छाएँ उसको नश्वर पाप की और न ले जायेंगी। द्वितीयः ईमान प्रसन्नता के लिए महत्वपूर्ण शर्त है। प्रसन्नता का मतलब सुख और शाँती है। संकटों और समस्याओं के समुद्र में मुक्ती का प्लाटफार्म ईमान के सिवा कुछ नही हैं। ईमान के बिना डर और चिंता अधिक होते जायेंगे। लेकिन ईमान के साथ ईशवर की महानता के सिवा कोई चीज़ डरने का अधिकार नही रखती है।

ईमानवाले का मन हर प्रकार की समस्या को साधारण समझता है। इसलिए कि वह ईशवर पर भरोसा रखता है। ईमान से ख़ाली रहनेवाला दिल डाली से टूटे हुए पत्ते के समान है, जिसको तेज़ आँधी उड़ाये लिये फिरती है। आप के ख़्याल में संसार से चले जाने और मृत्यु से अधिक कौनसी चीज़ मानव को डरा सकती है। परन्तु

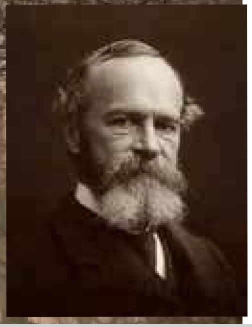


महत्वपूर्ण उत्तर

मैंने इस्लाम धर्म में आत्मा और भौतिकवाद कि दुविधा महत्वपूर्ण उत्तर प्राप्त करलिया है। मुझे यह ज्ञान होगया कि बिलकुल आत्मा के समान शरीर का भी अधिकार है और इस्लाम कि निगाह में भौतिक आवश्यक्तायें स्वभाविक प्रावृत्ती हैं जिनको पुरा करने कि आवश्यक्ता है, ताकी मानव बलवान और प्रभाविक जीवन बिता सके, मगर इस्लाम ने संथुलित रूप से इन भौतिक आवश्यक्ताओं को पूरा करने के लिए कुछ उच्च नियम बनाया है, जो मान्सिक सुख और ईशवरके आदेशों के पालन का कारण बनते है, परन्तु बियाह इस्लाम कि निगाह में वह एक मान्सिक प्रावृत्ती को पूरा करने का सही जायज़ रास्ता है। नमाज, रोज़ा, प्रार्थना और ईशवर पर विशवास मानव के लिए आध्यात्मिक पक्ष को पूरा करने के रास्ते है, और इस प्रकार से मानव्य सम्मानित जीवन के लिए आवश्यक संतुलन उपलब्द हो जाता है।

रोज मारी हाओ

ब्रिटीष पत्रकार



ईमान (विश्वास) और चिंता दोनों एक जगह इखटठा नही हो सकते

निशचिंता रूप से समुद्र कि बड़ी बड़ी लहरें समुद्र के भीतर के शाँति को कभी अशाँत नही करती और ना उस्के सुखों को समाप्त करती है। इसी प्रकार से जब मानव ईशवर पर गहरा विशवास करलेता है तो वह चिंता से मुक्ती प्राप्त करलेता है। संतुलित जीवन बिताता है, और भविष्य में आने वाली दुविधाओं का सामना करने के लिए सदा तैयार रहता है।

विलियम जेम्स

अमेरिका दर्शनिक

मृत्यु भी ईमानवाले कि दृष्टि में डर का कारण नही है। बल्कि यह भी सुख का कारण है। उस व्यक्ति के लिए मृत्यु भी कितनी लाभदायक है जिसका मन ईमान और विश्वास से भरा हुआ हो।

ईमान मानवीय व्यक्तित्व में सुख और शाँती की भावना पैदा करता है। ईमानवाला ईशवर के मार्ग में चैन से चलता है। क्येंकि सच्चा ईमान सदा उसको हर समय ईशवर की सहायता और सुरक्षा की आशा प्रदान करता है। उसकी यह भावना होती है कि हर क्षण में ईशवर उसके साथ है। ईशवर ने कहा । और यह कि अल्लाह मोमिनों के साथ होता है। (अल-अनफ़ाल, 19)

ईमानवाला चाहे कितने ही समस्याओं और विपदाओं का सामना करें। फिर भी ईशवर की पुस्तक और मार्गदर्शन के प्रकाश से रोशन करनेवाली उसकी वाणी इस बात की ज़िम्मेदार है कि ईमानवाले के मन से ग़लत विचार और उसके शरीर से तकलीफ दूर कर दे। उसके डर को शाँती और सुख से, अप्रसन्नता को प्रसन्नता और राहत से बदल दे। इसीलिए यह ईमान मानव को मान्सिक सुख और आध्यात्मिक प्रसन्नता की ओर ले जाता है। जिसकी कोई दूसरी प्रसन्नता मुक़ाबला नही कर सकती। चाहे वह संसार के सारे निधियों का मालिक बन जाये।

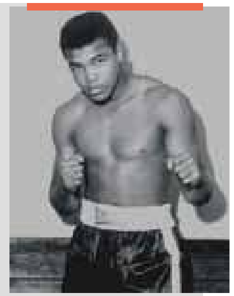
5. संसार से अनुग्रह पूर्ण स्वर्ग की ओर यात्रा करने की प्रसन्नता

सब यह जानते हैं कि मानवीय जीवन के तीन स्थितियाँ हैं। 1. सांसारिक, 2. मृत्यु के बाद ख़बर में, 3. कियामत के दिन । प्रसन्नता का मार्ग इन तीनों स्थितियों से गुज़ारता है। सांसारिक जीवन के बारे में ईशवर ने यह कहा।

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन करायेंगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अल-नहल, 97)

यानी हम संसार में उसको सुखी और प्रसन्न जीवन देंगे। चाहे वह निर्धन ही क्यों न हो। इस प्रकार कि उसको मान्सिक और आध्यात्मिक सुख चैन और राहत प्राप्त होगी। ईशवर पर उसको विश्वास होगा। उसी की ओर उसको आंतरिक आनंद मिलता है और वह उसी ईशवर पर भरोसा रखता है। ईमान वाले के अपनी ख़बर में प्रसन्नता के प्रति अबु हुरैरा द्वारा ईशवर के रसूल से वर्णन की हुई यह वाणी (हदीस) है। ईशवर के रसूल ने कहाः निश्चय ईमानवाला अपनी क़बर में हरे-भरे बाग़ में होता है। उसके लिए ख़बर को सत्तर हाथ फैला दिया जाता है, और चौदवी रात के चाँद की तरह उसकी ख़बर रोशन होती है (इस हदीस को इमाम अलबानी ने हसन कहा है।) परलोक में ईमानवाले की प्रसन्नता के प्रति ईशवर ने यह कहा। रहे वे जो भाग्यशाली होंगे तो वे जन्नत में होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे, जब तक आकाश और धरती स्थिर रहें। बात यह है कि तुम्हारे रब की इच्छा ही चलेगी। यह एक ऐसा उपहार है, जिसका सिलसिला कभी न टूटेगा। (हूद, 108)

वे सांसारिक जीवन में भाग्यशाली हैं, और परलोक में भी सदैव अनुग्रह से पूर्ण जीवन पानेवाले हैं। इस्लाम सदैब प्रसन्नता का संदेश लेकर आया है। संसारिक जीवन में मानव की प्रसन्नता और परलोक में इसकी प्रसन्नता। जो ईशवर के पास है वह भला और शाश्वत है। बल्कि ईशवर ने संसार और परलोक की प्रसन्नता को मिलेझुले साथी माना है। इनके बीच कोई झगड़ा या तनाव नही है। यह संसार परलोक के लिए और क़ियामत के दिन उच्च प्रसन्नता को प्राप्त करने के लिए केवल एक मार्ग ही तो है। संसार और परलोक में सदैव प्रसन्नता का मार्ग एक है। ईशवर ने कहा।



सुख का प्लाटफ़ॉम

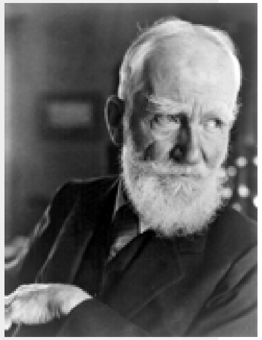
जब भी मुसलमान खुरान को गहराई से पडेगा और इस्लामिक आदेशों का सच्चे दिल से पालन करेगा, तो वह इस्लाम कि नाव के द्वारा सुख के प्लाटफ़ॉम तक पहुँच जाएगा, शाँति और सुख कि रेल पर सवार हो जायेगा, और दानव कि धोकों से दूर रहेगा।

कास्यंस वलायी

अमेरिका बाक्सर



जीवन और भविष्य जीवन का धर्म



ज्ञानी मानव प्रकृतिक रूप से इस्लाम कि ओर अपने भीतर खींचाओ पाता है, क्यों कि इस्लाम हि वो धर्म है जो जीवन और भविष्य जीवन कि ओर एक ही निगाह से देखता है ।

बरर्नाडशाह

ब्रिटीष लेखक



जो कोई दुनिया का बदला चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया का बदला भी है और आख़िरत का भी। अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है। (अल निसा, 134)

इस्लाम में सांसारिक जीवन की प्रसन्नता के कारण

इस्लाम के अनुसार हमारे इस सांसारिक जीवन की प्रसन्नता के लिए बहुत से कारण है।

1. ईश्वर पर विश्वास और एकीकरण सिद्धांत की प्रसन्नता

एकीकरण के सिद्धांत से मिलनेवाले सुख और राहत के समान कोई अन्य सुख या शाँती नही है। ईश्वर ने कहा। जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान में किसी ज़ुल्म (शिर्क) की मिलावट नही की, वही लोग हैं जो भय-मुक्त हैं और वही सीधे मार्ग पर हैं। (अल-अनआम, 82)

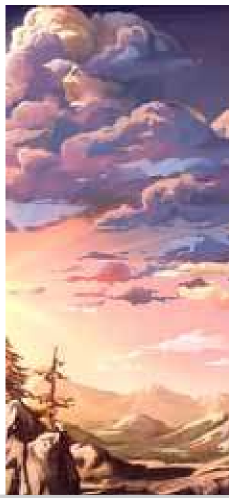
इसीलिए एकीकरण के सिद्धांत की संपूर्णता के अनुसार संसार और परलोक के जीवन में शाँती, प्रसन्नता और सुख प्राप्त होता है। क्योंकि ईश्वर इस सिद्धांत के रखनेवाले व्यक्ति को मान्सिक सुख और चैन प्रदान करता है। शिर्क (भागीदार) - ईश्वर हमें इससे मुक्ति दे - मानव के मन में अप्रसन्नता और तंगी पैदा करता है, इस प्रकार कि वह आकाश की ओर चढ़ रहा हो। ईश्वर ने कहा । अतः (वास्तविकता यह है कि) जिसे अल्लाह सीधे मार्ग पर लाना चाहता है उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे गुमराही में पड़ा रहने देने चाहता है, उसके सीने को तंग और भिंचा हुआ कर देता है, मानो वह आकाश में चढ़ रहा है। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो ईमान नही लाते। (अल-अनआम, 125)

वह व्यक्ति जिसका सीना ईश्वर ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो, वह अपने ईश्वर की ओर से प्रकाश पर है। और वह व्यक्ति शिर्क (भागीदार) के अंधेरे में हो, ईश्वर की याद से विस्मरण हो, उसका मन कठोर हो गया हो। वह खुली गुमराही में पडा हो। यह दोनों प्रकार के व्यक्ति कभी एक समान नही होते। ईश्वर ने कहा। अब क्या वह व्यक्ति जिसका सीना (ह्रदय) अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, अतः वह अपने रब की ओर से प्रकाश पर है, (उस व्यक्ति के समान होगा जो कठोर ह्रदय और अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल है)। अतः तबाही है उन लोगों के लिए जिनके दिल कठोर हो चुके हैं अल्लाह की याद से ख़ाली होकर। वही खुली गुमराही में पड़े हुए हैं। (अल-ज़ुमर, 22)

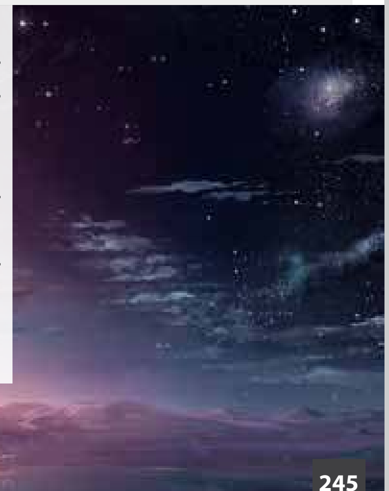
वह व्यक्ति जो शिर्क (भागीदार) के अंधेरों में डूबा हुआ था। फिर ईश्वर ने अपनी दया से उसको मार्गदर्शन किया हो। यह उस व्यक्ति के समान कभी नही हो सकता जो शिर्क के अंधेरों में डूबा हुआ हो और उससे बाहर न आनेवाला हो। ईश्वर ने कहा।

क्या वह व्यक्ति जो पहले मुर्दा था, फिर उसे हमने जीवित किया और उसके लिए प्रकाश उपलब्ध किया जिसको लिए हुए वह लोगों के बीच चलता-फिरता है, उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अंधेरों में पड़ा हुआ हो, उससे कदापि निकलनेवाला न हो। ऐसे ही इन्कार करनेवालों के कर्म उनके लिए सुहावने बनाये गये हैं। (अल-अनआम, 122)

2. ईश्वर की याद, उसका स्मरण और उससे निकट होना



सांसारिक जीवन की शोभा कितनी ही ज्यादा मानव को प्राप्त हो जाये। प्रसन्नता को उत्पन्न करने वाले कितने ही ज़्यादा कारक वह रखता हो। फिर भी जब तक वह ईश्वर के मार्ग से दूर होगा, कभी प्रसन्नता प्राप्त नही कर पायेगा। मानव के लिए सुख की उपलब्धी ईश्वर के निकट होने, उसकी छाया और उसकी याद करने में है। ईश्वर ने कहा।





सरल सिध्दाँत

इस्लाम धर्म का सिध्दाँत बिलकुल सरल है, जिस पर विशवास रखने से हर प्रकार के भ्रम और डर का रास्ता बंद हो जाता है, इसी प्रकार से हर मानव के भीतर सुख पैदा करता है। इस सिध्दाँत का दवार हर मानव के लिए उपलब्द है। किसी को उसकी जाति या रंग के कारण इस दवार से रोका नही जायेगा। इसी प्रकार से न्यमित समाँता के कारण इस देवत्व सिध्दाँत में हर मानव अपने लिए एक स्थान पाता है, जिस में ईशवर के डर के सिवा कोई किसी से सर्वश्रेष्ट नही है।

नज़मी लुखा

इजिप्शियन दर्षनक और आलोचक



वास्तविक सुख

नमाज़ पडते समय मुसलमानों के भीतर जो भावनाएँ होती है उनही भावनाओं से मैं भी प्रभावित हूँ। यही वो विषय है जिसकी मैं आभारी हूँ, इसी प्रकार से मेरी संतान भी सुख में है, और निशचिंत रूप से मुझे इस्से अधिक कुछ नही चाहिये।

लुरैन बोत

ब्रिटीष वकील

ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाये और जिनके दिलों को अल्लाह की याद से आराम और चैन मिलता है। (अल-रअद, 28)

इसका कारण यह है किः दिल में एक बिखराव है। जिसको ईशवर के निकट होने में ही इकट्ठा किया जा सकता है। दिल में भ्रम होता है। जिसको तन्हाई में ईशवर से प्रेम के द्वारा दूर किया जा सकता है। दिल में दुख है। जो केवल ईशवर ने ज्ञान और उसके साथ सद्व्यवहार करते हुए सुखी रहनेसे दूर होता है। दिल में एक चिंता है। जो केवल ईशवर के साथ बैठने और उसी से प्रार्थना करने से समाप्त होती है। दिल में पश्चाताप की आग है। जो केवल ईशवर के आदेश, निशेध, फैसले, और ईशवर से मिलने के समय तक धैर्य से काम लेने पर बुझ जाती है। दिल में गंभीर इच्छा है। जो केवल एक ईशवर को अपना लक्ष्य बनाने के बिना पूरी नही हो सकती। दिल में एक आवश्यकता है। जो केवल ईशवर से प्रेम, उसका प्रतिस्थापन, सदा उसकी याद और ईमानदारी से पूरी होती है। चाहे संसार और उसमें स्थिर सारी चीज़ें प्राप्त हो जायें, तो भी कभी यह आवश्यकता पूरी नही होगी। 4. मदारी जुससालीकीन, पन्ना नं 743

3. अच्छे कार्य

ईशवर ने कहा । जो लोग ईमाम लायें और उन्होंने अच्छे कर्म किये उनके लिये सुख-सौभाग्य है और लौटने का अच्छा ठिकाना है। (अल-रअद, 29)

जो लोग दिल से ईशवर, उसके एंजील (फरिशते), पुस्तकों, रसूलों और क़ियामत के दिन पर विश्वास रखते हैं। इस विश्वास का अच्छे कार्य (दिल के कार्य, जैसे ईशवर से प्रेम, डर और उससे आशा । शारीरिक कार्य जैसे नमाज़ वग़ैरह) से सबूत पेश करते हों। तो उनको पूर्ण सुख और राहत की स्थिती मिलती है। इस प्रकार कि वे संसार और परलोक में ईशवर द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। ईशवर ने कहा। निस्संदेह वे लोग जो ईमान लाये हैं और जो यहूदी हुए हैं और साबी और ईसाई, उनमें से जो कोई भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाये और अच्छा कर्म करे तो ऐसे लोगों को न तो कोई डर होगा और न वे शोकाकुल होंगे। (अल-माइदा, 69)

रसूल (मुहम्मद) नमाज़ और ईशवर का अनुसरण करने में सुख और आनंद पाते थे। आप कहा करते थे ऐ बिलाल नमाज़ खड़ी करो। हमें नमाज़ से सुख मिलता है। (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने वर्णन किया है।)





4. दान प्रसन्नता का रहस्य है।

यह एक अनुभविक और वास्तविक बात है। हम यह देखते हैं कि जो व्यक्ति दूसरों की सहायता करता है, वह लोगों में सबसे अधिक प्रसन्न और प्रिय है। ईशवर ने कहा। तुम नेकी और वफ़ादारी के दर्जे को नही पहुँच सकते जब तक कि उन चीज़ों को (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च न करो, जो तुम्हें प्रिय है। और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे, निश्चय ही अल्लाह को उसका ज्ञान होगा। (आले-इमरान, 92)

दान के कई प्रकार है। ईशवर ने धन देने को इस्लाम का एक भाग बनाया। ज़कात को धनी पर निर्धनी को देने के लिए फ़र्ज़ (आवश्यक) किया है। ईशवर ने इस दान देने में यह निर्णय लिया कि वह प्रसन्न मन से ईमानदारी के साथ मानव की सर्वश्रेष्ठ धन से दिया जाय, और लोगों पर एहसान न प्रकट किया जाय। ईशवर ने कहा । ऐ ईमानवालों। अपने सदक़ों को एहसान जताकर और दुख देकर उस व्यक्ति की तरह नष्ट न करो। (अल-बक़रा, 264)

बल्कि दान के मतलब को ईशवर ने फैला दिया है। ताकि माल के अतिरिक्त हर चीज़ दान में शुमार हो जाय। चाहे धन हो या भोजन, प्रयत्न हो या कर्म । वे मुहताज, अनाथ और क़ैदी को खाना उसकी चाहत रखते हुए खिलाते हैं, हम तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए तुम्हें खिलाते हैं, तुमसे न कोई बदला चाहते हैं और न शुक्रिया । (अल-दहर, 89)

बल्कि एक मुस्कुराहट भी दान है। ईशवर के रसूल ने कहाः आपका अपने भाई के सामने मुस्कुराना भी दान है (इस हदीस को इमाम तिर्मिजी ने वर्णन किया है) ईशवर के रसूल ने कहा जो अपने किसी भाई की सहायता में होता है, ईशवर उसकी सहायता में होता है। जो किसी मुस्लिम का कष्ट दूर करता है, तो क़ियामत के कष्टों में से कोई कष्ट ईशवर उससे दूर करता है, जो किसी मुस्लिम के ग़लती को छिपाता है, क़ियामत के दिन ईशवर उसकी ग़लतियों को छुपाता है। (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने वर्णन किया है।) निस्संदेह यही वह दान है जिससे सांसारिक प्रसन्नता अवश्य उपलब्ध होती है। सांसारिक उद्देश्य या एहसान और तकलीफ़ के साथ दान देने से किसी तरह कि प्रसन्नता प्राप्त नही होती। चाहे दान देनेवाला इसके अतिरिक्त कुछ भी दिखाये ।



5. प्रसन्नता की चाबी भरोसा है।

अधिकतर समय मानव किसी विषय पर स्वयं असहाय होने की भावना अपने अन्दर पाता है। तो वह किसी बलवान की सहायता लेता है, और अपनी इच्छाओं को पाने के लिए उसपर भरोसा करता है। ईशवर से अधिक बलवान कौन है। प्रसन्नता की चाबी उस बलवान और शक्तिमान ईशवर पर भरोसा करना है, जिसके हाथ में धरती और आकाशों का शासन है। वह जब किसी विषय का इरादा (निर्णय) करता है, तो उससे कहता है, हो जा। और वह हो जाती है। ईशवर ने कहा। उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ (के पैदा करने) का इरादा करता है तो उससे कहता है, हो जा। और वह हो जाती है। (या-सीन, 82)

इसीलिए ईशवर ने केवल उसी पर भरोसा करने का आदेश दिया है। ईशवर ने कहा। अल्लाह पर भरोसा रखो, यदि तुम ईमानवाले हो। (अल-माइदा, 23)

इसके अतिरिक्त मानव कौन-सी पर्याप्तता और आवश्यकताओं को पूरा करने पर सहायक है। यह बात वही मानव जान सकता है, जो इससे अनुभव हुआ हो। ईशवर ने कहा। और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह का कार्यसाधक होना काफ़ी है। (अल-निसा, 81)

निस्संदेह यह भरोसा मानव के लिए सुख, शाँती, प्रसन्नता, पर्याप्तता और आवश्यकताओं को पूरा करने पर सहायक है। यह बात वही मानव जान सकता है, जो इससे अनुभव हुआ हो। ईशवर ने कहा । जो कोई अल्लाह का डर रखेगा, उसके लिए वह (परेशानी से) निकलने की राह पैदा करदेगा। और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है। अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा नियत कर रखा है। (अल-तलाक़, 2,3)



और यह भी कि ईश्वर भरोसा रखने वाले को शैतान से सुरक्षित रखता है। ईश्वर ने कहा। उसका तो उन लोगों पर कोई ज़ोर नही चलता जो ईमान लाये और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (अल-नहल, 99)

दुशमनों से भी सुरक्षित रखता है। ईश्वर ने कहा । ये वही लोग हैं जिनसे लोगों ने कहा कि तुम्हारे विरुद्ध लोग इकट्ठा हो गये हैं, अतः उनसे डरो । तो इस चीज़ ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया और उन्होंने कहा, हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है। तो वे अल्लाह की ओर से प्राप्त होनेवाली नेमत और उदार कृपा के साथ लौटे। उन्हें कोई तकलीफ़ छू भी नही सकी और वे अल्लाह की इच्छा पर चले भी, और अल्लाह बड़ा ही उदार कृपावाला है। वह तो शैतान है जो अपने मित्रों को डराता है। अतः तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो। (आले-इमरान, 175)

भरोसे का मतलब और उसकी हक़ीक़त केवल एक ईश्वर पर दिल से भरोसा करना। परन्तु जब दिल सामाग्री पर भरोसा करने से ख़ाली हो, तो इनका उपयोग कोई नष्ट की बात नही है। इसी प्रकार केवल ईश्वर पर भरोसा होने का दावा करना और ईश्वर के अतिरिक्त दूसरों पर भरोसा करना भी लाभदायक नही है। जीभ के द्वारा भरोसे की बातें करना कुछ है और दिल से भरोसा करना कुछ और बात है।





6. ईश्वर पर विश्वास और यक़ीन रखने में प्रसन्नता है।

निश्चय ईमान मुस्लिम के मन में ईश्वर पर संपूर्ण भरोसा यक़ीन पैदा करता है। जो उसके अन्दर आत्मविश्वास का कारण होती है। फिर वह इस संसार में किसी भी चीज़ से नही डरता। क्योंकि उसको यह ज्ञान होता है कि सारा मामला ईश्वर के हाथ में है। ईश्वर ने कहा। और यदि अल्लाह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाए तो उसके अतिरिक्त उसे कोई दूर करनेवाला नही, और यदि वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। (अल-अनआम, 17)

वैज्ञानिक अध्यान इस बात कि पुष्टी करते हैं कि दूसरों कि सहायता करने से मान्सिक तनाव दूर होता है। परन्तु मान्सिक रोग के वंशेषज्ञ का मानना है कि दूसरों कि सहायता करने से मान्सिक तनाव कम होता है। क्यों के दूसरों कि सहायता का प्रयास करने से निकोटीन हारमोन का अधिक स्राव होता है। यह हारमोन मान्सिक सुख के लिए मदद देता है। अमेरिकन स्वास्थ संवर्धन संस्थान के पूर्व अध्यक्ष अलान लेकस का कहना हैः दूसरों कि सहायता करना मान्सिक तनाव के दबाव को कम करता है, क्यों कि जब कोई मानव दूसरों कि सहायता करता है तो वह अपने कष्ट और चिंताओं के बारे में विचार करना कम करता है, इस कारण वह मान्सिक सुख से प्रभावित होता है।

इसी प्रकार मुस्लिम का यह विश्वास होता है कि उसकी रोज़ी रोटी एक ईश्वर के हाथ में है। ईश्वर ने कहा। तुम तो अल्लाह से हटकर बस मूर्तियों को पूज रहे हो और झूठ गढ़ रहे हो। तुम अल्लाह से हटकर जिनको पूजते हो वे तुम्हारे लिए रोज़ी का भी अधिकार नही रखते। अतः तुम अल्लाह ही के यहाँ रोज़ी तलाश करो और उसी की बन्दगी करो और उसके आभारी बनो। तुम्हें उसी की ओर लौटकर जाना है। (अल-अनकबूत, 17)

धरती में चलने-फिरनेवाले हर प्राणी की रोज़ी-रोटी का ज़िम्मेदार ईश्वर है। ईश्वर ने कहा। धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। वह जानता है जहाँ उसे ठहरना है और जहाँ उसे सौंपा जाना है। सब कुछ एक स्पष्ट किताब में मौजूद है। (हूद, 6)

चारे वह प्राणी अपनी रोज़ी स्वयं लाने की क्षमता न रखता हो। ईश्वर ने कहा। कितने ही चलनेवाले जीवधारी हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नही फिरते। अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी। वह सब कुछ सुनता, जानता है। (अल-अनकबूत, 60)



मुस्लिम का यह विश्वास होता है कि उसकी रोज़ी निश्चित रूप से उसको मिलकर रहेगी। यह ऐसा सत्य जिसमें कोई संदेह नही। ईशवर ने कहा। और आकाश में ही तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। अतः सौगन्ध है आकाश और धरती के रब की । निश्चय ही वह सत्य बात है ऐसी है जैसे तुम बोलते हो। (अल-ज़ारियात, 22, 23)

मुस्लिम का यह भी यक़ीन होता है कि ईशवर ने लोगों के बीच रोज़ी नाप-तोल के साथ बाँट दी है। ईशवर ने कहा। निस्संदेह मेरा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसे चाहता है नपी-तुली देता है, किन्तु अधिकांश लोग जानते नही। (सबा, 36)

यह भी दृढ विश्वास होता है कि ईशवर सदा उसको अच्छी बुरी परिस्थितियों में डालकर परीक्षा लेते हैं। ईशवर ने कहा। हर जीव को मौत का मज़ा चखना है और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सब की परीक्षा करते हैं। अन्ततः तुम्हे हमारी ही ओर पलटकर आना है। (अल-अंबिया, 35)

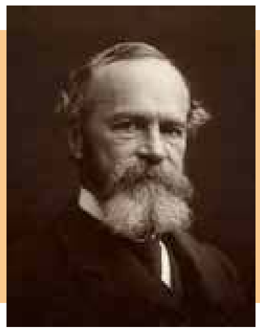
अगर ईशवर द्वारा कृपा न होती तो अवश्य मानव विनाश हो जाता। इसी प्रकार मुस्लिम यह ज्ञान रखता है कि वह इस संसार में अतिथी है। चाहे उसकी उम्र बडी हो या छोटी। निस्संदेह वह परलोक की ओर लौट जानेवाला है। इसीलिए वह संसार में इसी नियम के अनुसार चलता है। सांसारिक दुविधाओं से डरता नही, और न ईशवर के अलावा किसी और से डरता है। चाहे उसका दुशमन बिल्कुल उसके निकट हो। जब मूसा को फ़िरऔन की सेना ने पकड़लिया तो मूसा के बारे में ईशवर ने यह कहा। फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो पकडे गये। उसने कहा, कदापि नही, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा। तब हमने मूसा की ओर प्रकाशना की, अपनी लाठी सागर पर मारा तो वह फट गया और (उसका) प्रत्येक टुकड़ा एक बडे पहाड़ की भाँति हो गया। और हम दूसरों को भी निकट ले आये। हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ ते, बचा लिया। और दूसरों को डुबो दिया। निस्संदेह इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नही। (अल-शुअरा, 61, 67)

विश्वास रखने वालों के सरदार (मुखिया) मुहम्मद अगर दुशमन को अपने पैरों तले भी पाते, तो आप उनको देखते कि वह (हत्या करने के लिए दुशमनों के पीछा करने के समय भी अपने ईशवर पर भरोसा रखनेवाले की भाषा में) अपने गुफ़ा के साथी अबूबकर से यह कहते हैं। शोकाकुल न हो। निस्संदेह अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह ने उसपर अपनी ओर से सकीनत (प्रशान्ति) उतारी और उसकी सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हे तुम देख न सके और इन्कार करनेवालों का बोल नीचा कर दिया। बोल तो अल्लाह ही का ऊँचा रहता है। अल्लाह अत्यंत प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है। (अल-तौबा, 40)

इसी प्रकार मुहम्मद का यह यक़ीन था कि मृत्यु देने वाला ईशवर है। इसीलिए वह मृत्यु से नही डरते। ईशवर ने कहा। अल्लाह ही प्राणों को उनकी मृत्यु के समय ग्रस्त करलेता है और जिसकी मृत्यु नही आई उसे उसकी निद्रा की अवस्था में (ग्रस्त करलेता है) । फिर जिसकी मृत्यु का फ़ैसला कर दिया है, उसे रोक रखता है। और दूसरों को एक नियत समय तक के लिए छोड़ देता है। निश्चय ही इसमें कितनी ही निशानियाँ है सोच-विचार करनेवालों के लिए। (अल-ज़ुमर, 42)

बल्कि आप को यह विश्वास था यह सत्य होनी है, जिससे भागने का कोई विकल्प नही है। ईशवर ने कहा। कह दो, मृत्यु जिससे तुम भागते हो, वह तो तुम्हें मिलकर रहेगी। फिर तुम उसकी ओर लौटाये जाओगे जो छिपे और खुले का जानने वाला है। और वह तुम्हें उससे अवगत करदेगा जो कुछ तुम करते रहे होगे। (अल-जुमुआ,8)

और यह भी विश्वास था कि मृत्यु उसके निश्चित समय पर ही आयेगी। ईशवर ने कहा। यदि अल्लाह लोगों को उनके अत्याचार पर पकड़ने ही लग जाता तो धरती पर किसी जीवधारी को न छोडता, किन्तु वह उन्हें एक निश्चित समय तक टाले जाता है। फिर जब उनका नियत समय आ जाता है तो वे न तो एक घडी पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं। (अल-नहल, 61)



विश्वास और जीवन

विश्वास वह शक्ती है, जिसकी सहायता होना मानव के जीवन के लिए ज़रूरी है। और विश्वास का खोना जीवन के कष्टों का सामना करने से कमज़ोर होने के समान है।

अर्नेस्ट रिनान

फ़्रेंच इतिहासकार





भौतिक सभ्यतायें विनाश होजायेगी

मेरी यह खोज है कि इस्लाम अपने नियमों के द्वारा मन में सुख पैदा करता है। भौतिक सभ्यता अपने अनोयाई को निराश कि ओर लेजाती है, क्यों कि वे किसी बात पर विशवास नही रखते। इसी प्रकार से मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि पच्छिम के रहने वाले इस्लाम कि सत्यता के अहसास से दूर हैं, क्यों के वे इस्लाम के प्रति अपने भौतिकवादी नियमों के अनुसार निर्णय लेते हैं।

रोजयहीढ़ बारही

स्विस पत्रकार और आलोचक



7.संतोष प्रसन्नता के मार्ग का द्वार है।

प्रसन्नता यह है कि मानव संतोष जीवन यापन करें। क्रोध और निराशा मानवीय जीवन, आत्मा और भावना को निम्न करदेते है। सुतुष्टता प्रसन्नता, सुख, शाँती और खुशी का द्वार है। संतुष्टता ईश्वर द्वारा मानव का चयन होने पर मन में सुख और शाँती है। यह सुख और शाँती सांसारिक जीवन में होनेवाली हर घटना को मानव के लिए भलाई, प्रसन्नता और सुख का कारण बना देती है। फिर मानव ईश्वर के अंतिरिक्त किसी और की ओर चाहत नही रखता और न संसार के किसी सामाग्री पर निराश होता है। यह सुख मानव को प्रयास करने और ईश्वर की प्रार्थना करनेवाला बना देता है। फिर वह ईश्वर द्वारा। स्वयं को मिले हुए हिस्से से संतुष्ट रहता है। ताकि वह प्रसन्न जीवन यापन करे। संतुष्टता के कई प्रकार है।

1. ईश्वर को अपना प्रभु, इस्लाम को धर्म, मुहम्मद को रसूल और नबी मानकर संतुष्ट रहना है। जो इससे संतुष्ट न हो वह सदा दुखी और भ्रम से जीवन यापन करता है। ईश्वर के रसूल ने कहाः ईश्वर को अपना प्रभु, इस्लाम को अपना धर्म और मुहम्मद को रसूल मानने वाला व्यक्ति विश्वास (ईमान) का मज़ा चकलिया। (इस हदीस को इमाम बुखारी ने वर्णन किया है।) जो व्यक्ति विश्वास का मज़ा न चके, वह प्रसन्नता का मज़ा भी न चक पायेगा। बल्कि सदा वह निराश और दुखी रहेगा। ईश्वर से संतुष्ट होने का मतलब ईश्वर की स्थिरता का यक़ीन, उसकी महानता, तत्वदर्शिता, समर्थता, ज्ञान और उसके पवित्र नामों की भावना, उसकी प्रार्थना पर विश्वास है। वरना वह संदेह, भ्रम, बीमारी और दुख है। (ईश्वर हमें इससे सुरक्षित रखे।)

2. ईश्वर के आदेश और उसकी शरिअत से संतुष्ट होना। ईश्वर ने कहा। तो तुम्हें तुम्हारे रब की क़सम। ये ईमानवाले नही हो सकते जब तक कि अपने आपस के झगड़ों में ये तुमसे फ़ैसला न कराएँ। फिर जो फ़ैसला तुम कर दो उसपर ये अपने दिल में कोई तंगी न पाएँ और पूरी तरह मान लें। (अल-निसा, 65)

मानवता कई प्रकार कि असंपूर्ण विधि, आदेश और धार्मिक नियमों का अनुसरण करते हुए सांसारिक निराश, और दुख के कई मार्ग चलकर अनुभव कर चुकी। क्योंकि यह सारे नियम मानवीय है। न कि उस प्रजापति ईश्वर की ओर से है, जो मानवता के लिए लाभदायक चीज़ों का अधिक ज्ञान रखता है। ईश्वर ने कहा। क्या वह नही जानेगा जिसने पैदा किया। वह सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखनेवाला है। (अल-मुल्क, 14)

3. ईश्वर के फैसले और उसके बनाये हुए नसीब से संतुष्ट होना। मानव ईश्वर के फैसले और नसीब से संतुष्ट होता है। क्योंकि उसका यह विश्वास होता है, ईश्वर की अनुमति के बिना किसी कष्ट से पीडित होना संभव नही है। यह भी विश्वास होता है कि ईश्वर उसके दिल को मार्गदर्शन दिखायेगा। ईश्वर ने कहा। अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई भी मुसीबत नही आती। जो अल्लाह पर ईमान ले आये अल्लाह उसके दिल को मार्ग दिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है। (अल-तगाबुन, 11)

मानव ईश्वर के फैसले और बनाये हुए नसीब से संतुष्ट रहता है। क्योंकि वह जानता है कि तकलीफ़ को दूर करनेवाला केवल ईश्वर ही है। ईश्वर ने कहा। यदि अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में डाल दे तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नही और यदि वह तुम्हारे लिये किसी भलाई का इरादा करले तो कोई उसके अनुग्रह को फेरने वाला भी नही। वह इसे अपने बन्दों में से जिस तक चाहता है, पहुँचाता है और वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है। (यूनुस, 107)





विश्वास (ईमान) का मामला बडा विचित्र है, वह मुस्लिम के मन में ईश्वर द्वारा बनाये गये नसीब से संतुष्ट, दुविधा और समस्याओं पर धैर्य से काम लेने, ईश्वर की ओर से मिली हुई अनुग्रह पर आभारी होना सिखाता है। यह बात आंतरिक सुख पैदा करती है, जो मुस्लिम के अतिरिक्त किसी और को प्राप्त नही होती है। ईश्वर के रसूल ने कहाः मुस्लिम का मामला बडा विचित्र है। इस प्रकार कि उसकी हर चीज़ भलाई है। यह मुस्लिम के अलावा किसी और को प्राप्त नही है। अगर उसको सुख मिलजाये, वह ईश्वर का आभारी हो जाये, तो यह उसके लिए भलाई है। अगर उसको दुख मिले, वह धैर्य से काम ले, तो यह भी उसके लिए भलाई है। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है।) बल्कि रसूल ने हमें यह भी शिक्षा दी है, जब सांसारिक सामाग्री में हम से अधिक किसी को देखे, तो भी कैसे संतुष्ट रहे। आपने कहा तुम स्वयं से निम्न लोगों की ओर देखो। उच्च लोगों की ओर न देखो। क्योंकि ईश्वर द्वारा मिली हुई अनुग्रह को कम ना समझने के लिए यह चीज़ अधिक सहायकारी है। (इस हदीस पर इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम सहमत है।)



रेक्स इन्नग्राम

विषय सिनेमा निर्देशक

इस्लाम धर्म कि आध्यात्मिकता

मेरा यह विशवास है कि इस्लाम ही वह धर्म है जो मन में सुख और शाँती पैदा करता है और इस जीवन में मान्सिक चैन और मनोरंजन का कारण होता है। निशचिंत रूप से इस्लाम कि आध्यात्मिकता मेरे मन में बसगई है, परन्तु मै देवत्व निर्णय पर विशवास, सुख और दुख जैसी भौतिक भावनाओं कि परवाह ना करने कि अनुग्रह से मालामाल हैं।

प्रसन्नता के मार्ग से दूर रहने का कष्ट और दुर्भाग्य ।

निश्चय इस्लाम हर समय और स्थान के लिए क्षमतावान है। मानवीय प्रकृति के अनुसार है। जीवन के परिवर्तन का ख़्याल रखता है। विकास और सभ्यता के साथ चलता है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, रक्षणात्मक, और इसके अतिरिक्त कई समस्याओं का समाधान रखता है। लेकिन अधिकतर लोग इस प्रकाशवान मार्ग से भटक गये। कुछ अन्य लोगों ने इस मार्ग से मानवता को दूर करने के लिए इसका विरोध किया और इसकी छवी बिगाड़ दी। यही वह कारण है जिससे बहुत से व्यक्ति और समूह अप्रसन्न हो गये। ईश्वर ने अपने नियमों का पालन और मार्गदर्शन के अनुयायी के लिए संसार और परलोक में प्रसन्नता की ज़मानत ली है। इस मार्ग से दूर रहने वाले के लिये अप्रसन्नता और रूसवाई का फैसला किया है।

निश्चय मानवता को ईश्वर ने इस्लाम धर्म का ज़िम्मेदार बनाया, ताकि उसका मामला सीधा हो जाये। संसार और परलोक में प्रसन्न हो जाये, और कहीं दुखी न रहे। लेकिन मानवीय आत्मा (अपनी प्रकृति के अनुसार) हवस, इच्छाओं और आशाओं पर प्रतिबंध लगाना पसन्द नही करती। चाहे यह प्रतिबंध उसी की भलाई के लिए हो। इसी कारण ईश्वर ने सत्य जाननेवालों को उस भलाई और सत्यता की ओर संदेश देने का आदेश दिया, जिसकी ओर उनकी मार्गदर्शनी की गयी है। उन्हें यह आदेश दिया गया, सारे संसार को यह संदेश पहुँचाए। ईश्वर के रसूल को केवल इसीलिए भेजा गया, ताकि वह और उनका समूह सारी मानवता प्रसन्न हो। ईश्वर ने कहा। हमने तुमपर यह ख़ुरआन इसलिए नही उतारा है कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ। (ता-हा, 2)

ईश्वर ने यह भी कहा। हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)

रसूल का अनुसरण करना, उसके मार्ग पर चलना, और उसकी बतायी हुई बातों का पालन करना प्रसन्नता का महत्वपूर्ण स्थंभ और मुक्ति का मार्ग है। ईश्वर के आदेश और निशेध के अनुसार जिस प्रकार से हमें ईश्वर द्वारा जीवन यापन करने का आदेश दिया गया, उसका परिणाम (फल) संसार और परलोक की प्रसन्नता है। इस सीमा को पार करना संसार और परलोक की अप्रसन्नता का कारण है। ईश्वर ने सच कहा। और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन तंग (संकीर्ण) होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अन्धा उठायेंगे। वह कहेगा, ऐ मेरे रब। तूने मुझे अन्धा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखों वाला था। वह कहेगा, इसी प्रकार (तू संसार में अंधा रहा था) तेरे पास मेरी आयतें आई थी तो तूने उन्हें भुला दिया था। उसी प्रकार आज तुझे भुलाया जा रहा है। (ता-हा, 124-126)





इस्लाम धंम का सवेरा

कितनी ऐसी पीडियाँ है, जो महान इस्लाम धंम को सवेरा होने से पहले पहले अप्रसन्नता और डर से पीडित होंगी। (इस्लाम वह महान धंम है जिसके प्रती यह लगता है कि सारा इतिहास उसी के इर्द गिर्द घूमता है) उस दिन सारा संसार शाँत जनक हो जायेगा और उस दिन सारे मनों में सुख भर जायेगा ।

हारबर्ट जॉजविल्स

ब्रिटीष लेखक

निश्चय उस मुस्लिम के बीच जिसके बारे में ईश्वर ने यह कहा। हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। (अल-नहल, 97)

और उस व्यक्ति के बीच बहुत बडा अंतर है, जिसके बारे में ईश्वर ने यह कहा। उसका जीवन तंग (संकीर्ण) होगा । (ता-हा, 124)

सुखी जीवन अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी जीवन में ईश्वर के आदेशों का पालन करने और उसके फैसले से संतुष्ट होने में उपलब्ध है। इसलिए कि वह ईश्वर की रक्षा और ध्यान में जीवन-यापन करता है। ईश्वर ने कहा। ऐसे ही लोग है जो ईमान लाये और जिनके दिलों को अल्लाह की याद से आराम और चैन मिलता है। सुनलो, अल्लाह की याद से ही दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है। (अल-रअद, 28)

मानव के हर वह कर्म जो ईश्वर के आदेशों के विरोध में हो। उन पर मन के सुख का पुनःप्रभाव उस व्यक्ति के समान होगा, जो कष्ट और तंगी में जीवन-यापन करता है। जैसे ईश्वर ने कहा। अतः (वास्तविकता यह है कि) जिसे अल्लाह सीधे मार्ग पर लाना चाहता है उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे गुमराही में पड़ा रहनेदेना चाहता है, उसके सीने को तंग और भिंचा हुआ कर देता है, माने वह आकाश में चढ़ रहा है। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो ईमान नही लाते। (अल-अनआम, 125)

मानव की निराशा, अप्रसन्नता और तंगी का कारण ग़रीबी या बीमारी नही है। बल्कि हर कार्य या मामले में भ्रम से पीडित होना है। दुर्भाग्यशाली मानव के पास धन के आने या जाने से अप्रसन्नता दूर नही होती। क्योंकि धन उसके लिए अप्रसन्नता का कारण नही है। बल्कि असली कारण उसके सोंच-विचार की विधि है। धन की ज्यादती या कमी, स्वस्थता या बीमारी कभी-कभी अप्रसन्नता के बडने का कारण हो सकती है। ईश्वर ने कहा।

अतः उनके माल तुम्हें मोहित न करें और न उनकी संतान ही। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके द्वारा उन्हें संसारिक जीवन में यातना दे और उनके प्राण इस दशा में निकालें कि वे इन्कार करनेवाले ही रहें। (अल-तौबा, 55)

ईश्वर ने यह भी कहा । और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें मोहित न करें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके द्वारा उन्हें संसार में यातना दे और उनके प्राण इस दशा में निकलें कि वे कुफ़्र की हालत में हो। (अल-तौबा, 85)

मानव की अप्रसन्नता का संबन्ध मालदारी या ग़रीबी से नही है। न बीमारी या परीक्षा से है। बल्कि अप्रसन्नता ईश्वर से दूरी, उसके मार्ग से मुँह मोडने, भक्त और ईश्वर के बीच वाले संबन्ध के टूटजाने में है। ईश्वर के रसूल ज़करिया जब अपने ईश्वर से प्रार्थना द्वारा विनती की, तो यह कहा। और मेरे रब। तुझे पुकार कर मैं कभी बेनसीब नही रहा। (मरयम, 4)

ऐ मेरे ईश्वर, पिछले ज़माने में मेरी पुकार सुनकर आपने मुझे सम्मानित किया। आपने मेरी पुकार स्वीकार करते हुए मुझे प्रसन्न बना दिया। ये मामला केवल ज़करिया के साथ ही ख़ासकर नही है। बल्कि हमारे ईश्वर ने हमे यह सूचना दी है, उसने कहा, और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे संबन्ध में पूछें तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारने वाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान रखें, ताकि वे सीधा मार्ग पा-लें। (अल-बक़रा, 186)

जब तक मानव और ईश्वर के बीच प्रत्यक्ष रूप से संबन्ध जुडा रहेगा, तो मानव के लिए प्रसन्नता उपलब्ध रहेगी। जब यह संबन्ध टूट जाये तो अप्रसन्नता प्रवेश होगी। इस्लाम धर्म के पालन करने में मानव जिस प्रकार से कमी करेगा, उसी प्रकार से वह मानवीय और सांसारिक भ्रम और बेचैनी से पीडित होगा । इसीलिए ईश्वर ने मार्गदर्शन और दयालुता के बीच, गुमराही और अप्रसन्नता के बीच संबन्ध रखा है। पहली चीज़ (मार्गदर्शन और दयालुता) के प्रति ईश्वर ने यह कहा। वही लोग हैं जो अपने रब के सीधे मार्ग पर हैं और



वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-बक़रा, 5)

ईशवर ने यह भी कहा। यही लोग हैं जिनपर उनके रब की विशेष कृपाएँ हैं और दयालुता भी, और यही लोग हैं जो सीधे मार्ग पर हैं। (अल-बक़रा, 157)

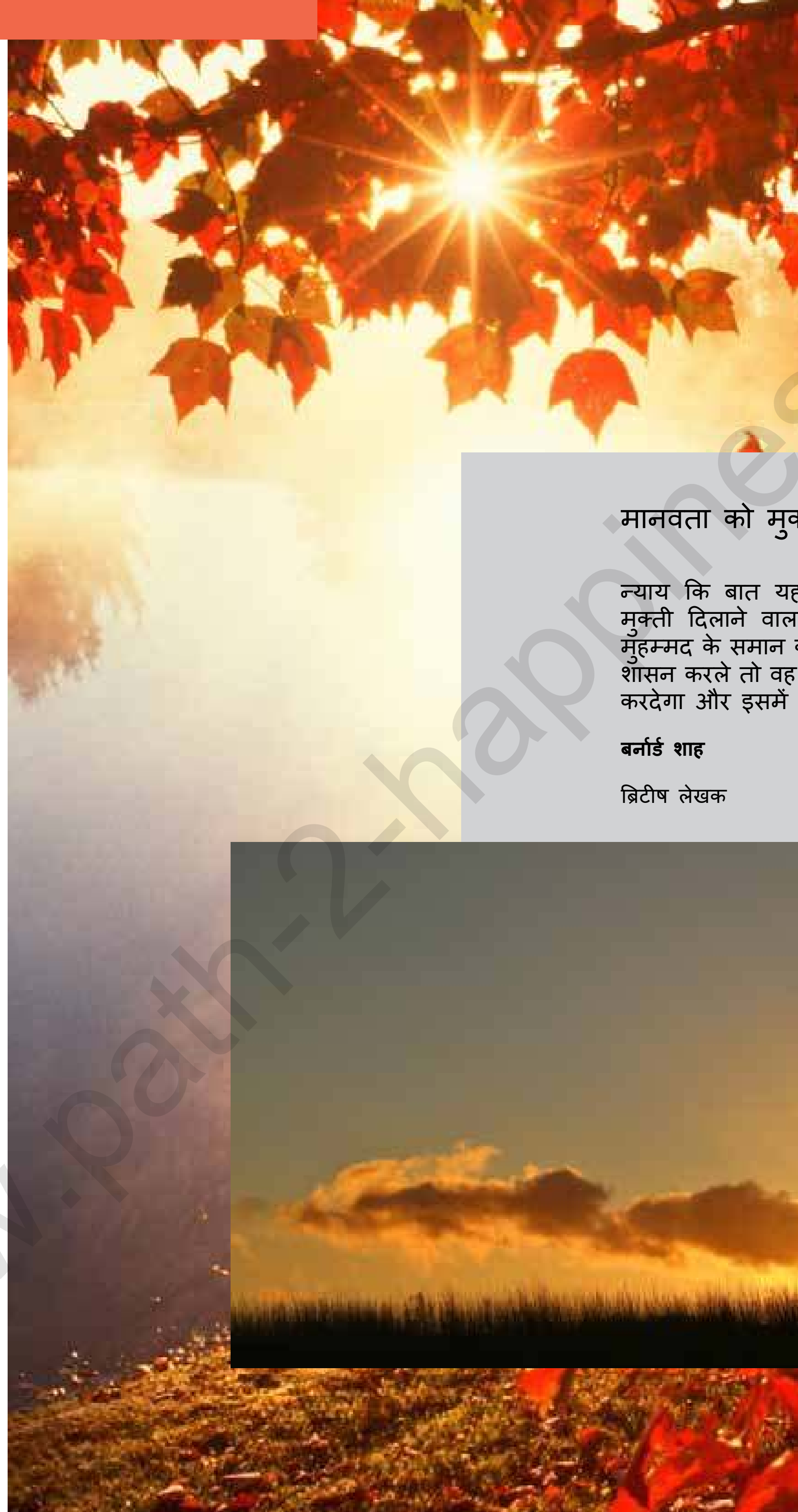
और ईशवर ने यह भी कहा। फिर यदि मेरी ओर से तुम्हें मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तक़लीफ़ में पड़ेगा। (ता-हा, 123)

मार्गदर्शन का मतलब पथभ्रष्ट से दूर रहना है। दयालुता का मतलब अप्रसन्नता से दूर रहना है। इसी बात को ईशवर ने सूरे ता-हा के प्रारंभ में बताया । हमने तुमपर यह ख़ुरआन इसलिए नही उतारा है कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ। (ता-हा, 2)

मानव के लिए ख़ुरआन को अवतरित करने और उससे अप्रसन्नता को दूर करने की समस्या को एक साथ विवरण किया गया। जैसे ख़ुरआन के अनुयायियों के पक्ष में इसी सूरे के अंत में ईशवर ने यह कहा। वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ़ में पड़ेगा । (ता-हा, 123)

मार्गदर्शन, अनुग्रह और दयालुता सहसंबन्धी है। जो एक दूसरे से अलग नही हो सकते। इसी प्रकार पथभ्रष्ट और अप्रसन्नता सहसंबन्धी है। जो एक दूसरे से बिदा नही हो सकते। ईशवर ने कहा। निस्संदेह अपराधी लोग गुमराही और दीवानेपन में पड़े हुए हैं। (अल-क़मर, 47)

सईर एक वचन है। इसका बहुवचन सुउर हैं। इसका माना अप्रसन्नता कि अंत वाला दण्ड है। अपराधी लोगों के विश्रामगृह के मुक़ाबले में ईशवर ने इसी सूरे में डर रखनेवालों के विश्रामगृह के प्रति यह कहा। निश्चय ही डर रखनेवाले बाग़ों और नहरों के बीच होंगे, प्रतिष्ठित स्थान पर, प्रभुत्वशाली सम्राट के निकट। (अल-क़मर, 54-55)



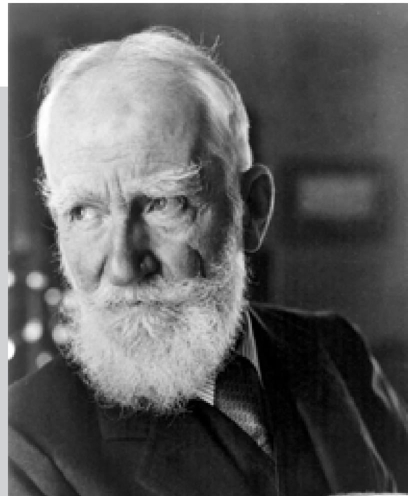
यही प्रसन्नता का मार्ग है। अगर आप इस पर चलना हैं और इसका अनुयायी बनना चाहते हैं। यह मार्ग मिथक, आध्यात्मिक बिगाड़ या केवल विचार पर आधारित नही है। यह प्रसन्नता का मार्ग है। और यही ज्ञान और सभ्यता का मार्ग है।

मानवता को मुक्ती दिलाने वाला

न्याय कि बात यह है कि मुहम्मद को मानवता का मुक्ती दिलाने वाला कहा जाये। मेरा विशवास है कि मुहम्मद के समान कोई व्यक्ती इस आधुनिक संसार का शासन करले तो वह संसार के सारे आपदधियों को खतम करदेगा और इसमें प्रसन्नता और शाँती पैदा करदेगा

बर्नार्ड शाह

ब्रिटीष लेखक





الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



ज्ञान और सभ्यता का मार्ग

अनुक्रमणिका



ज्ञान और सभ्यता का मार्ग

इस्लाम और ज्ञान

निस्संदेह प्रसन्नता के मार्ग का ज्ञान और सभ्यता के राहों से गुज़रना आवश्यक है। किसी भी स्थिति में प्रसन्नता के मार्ग को अज्ञान या मंदता की राहों से गुज़रना संभव नही है। इस्लाम धर्म के समान कोई ऐसा धर्म नही है, जो ज्ञानी लोगों का गौरव बढाया हो। उनको सम्मानता दी हो। ज्ञान प्राप्त करने और बुद्धि का उपयोग करने पर प्रोत्साहित किया हो। सोंच-विचार करने की ओर बुलाया हो। इस्लाम वह धर्म है जो ईशवर के रसूल मुहम्मद लेकर आये। इस ने एक बडी सभ्यता बनायी, जो पूर्व, पश्चिम में फैल गयी। इसी कारण मुहम्मद का प्रवेश होना वास्तव मे ऐसे समूह के भीतर ज्ञानिक क्रांति है, जो समूह न ज्ञान से प्रेरणा रखता था, और न इसका आदि था। इस्लाम का प्रवेश हुआ, ताकि ज्ञान का प्रारंभ हो और संसार को देवत्व मार्गदर्शन के प्रकाश से रोशन कर दें। अब क्या वे अज्ञान का फ़ैसला चाहते हैं। तो विश्वास करनेवाले लोगों के लिये अल्लाह से अच्छा फ़ैसला करनेवाला कौन हो सकता है। (अल-माइदा, 50)

इस्लाम धर्म मे अज्ञान, संदेह, भ्रम और शक के लिए कोई स्थान नही है। परन्तु अनपढ़ नबी (मुहम्मद) पर अवतरित होने वाली पहली वाणी यह थी। पढो, अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, पैदा किया मनुष्य को चिपकनेवाली चीज़ से। पढो, हाल यह है कि तुम्हारा रब बडा ही उदार और श्रेष्ठ है, जिसने क़लम के द्वारा शिक्षा दी, मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह न जानता था। (अल-अलक़, 1-5)

यह बात खुली थी कि यह पहली वाणी ही इस धर्म को समझने की, संसार को समझने की, बल्कि उस परलोक को समझने की चाबी भी है, जिसकी ओर भविष्य में मानव को लौटना है। बल्कि यह नोट किया गया, ख़ुरआन केवल अवतिरत होने के प्रारंभ में ही ज्ञान के मुद्दे को महत्व नही दिया है। बल्कि मानव की सृष्टि के समय से ही महत्व दिया है। जैसा कि ख़ुरआन ने अपने वाक्य में इसका विवरण किया है। ईशवर ने आदम को पैदा किया। उनको धरती पर अपना उत्तराधिकारी बनाया। एंजीलों को आदम के सामने झुकने का आदेश दिया। आदम को सम्मान, गौरव और महत्व दिया। फिर हमें इस सम्मान का कारण बताया। वह कारण ज्ञान है। ईशवर इसी के प्रति यह विवरण करता है। और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में (मनुष्य को) ख़लीफ़ा (सत्ताधारी) बनाने वाला हूँ। उन्होंने कहा, क्या उसमें उसको रखेगा जो उसमें बिगाड़ पैदा करे और रक्तपात करे, और हम तेरा गुणगान करते और तुझे पवित्र कहते हैं। उसने कहा, मैं जानता हूँ जो तुम नही जातने। उसने (अल्लाह ने) आदम को सारे नाम सिखाये, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा, अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। वे बोले, महिमावान है तू। तूने जो कुछ हमे बताया उसके सिवा हमे कोई ज्ञान नही। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। उसने(अल्लाह ने) कहा, ऐ आदम। उन्हें उन लोगों के नाम बताओ। फिर जब उसने उन्हें उनके नाम बतादिए तो (अल्लाह ने) कहा, क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं आकाशों और धरती की छिपी बातों को जानता हूँ और मै जातना हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो। (अल-बक़रा, 30-33)

इस्लामकि पुकार सुनो

निस्संदेह इस्लाम (जो ज्ञान का धर्म है) ज्ञाने प्राप्त करने और उस्का उप्योग करने की ओर अपने मानने वालों को बुलाता है, इस बात में किसी को आश्चर्य होने की ज़रूरत नही है, क्यों कि ख़ुरान की पहली आयत ही ईशवर का यह संदेश देती है, “पढ़ो अपने रब के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है” ।



राबर्ट बेर जोसफ़

फ़्रेंच विश्वविद्यालय के दर्शन प्रोफेसर

इस्लाम धर्म में ज्ञान की क़ीमत और महत्व का संकेत इस बात से भी मिलता है कि केवल ख़ुरआन के प्रारंभ में ही ज्ञान को महत्व से संबंधित यह वाणी नही है, जिसमें ईशवर ने कहा।

पढो ।

बल्कि शाश्वत संविधान की यह स्थिर विधि है। ख़ुरआन की सूरतों में से एक भी सूरा ज्ञान संबंधित बातों से खाली नही है, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से। ईशवर ने सबसे अधिक महत्व विषय, यानी ईशवर के एकीकरण के सिद्धांत का ज्ञान प्राप्त करने का अपनी वाणी में आदेश दिया है। अतः जान रखो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नही। और अपने गुनाहों के लिए क्षमा-याचना करो, और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के लिए भी। अल्लाह तुम्हारी चलत-फिरत को भी जानता है और तुम्हारे ठिकाने को भी। (मुहम्मद, 19)

ईशवर की यह वाणी ज्ञान और ज्ञानी कि सर्वश्रेष्ठता के महत्व पर आधारित है। बल्कि ईशवर ने ज्ञानी और अज्ञानी के बीच बराबरी से इन्कार किया। कहो, क्या वे लोग जो जानते हैं और वे लोग जो नही जानते दोनों समान होंगे। शिक्षा तो बुद्धि और समझवाले ही ग्रहण करते हैं। (अल-ज़ुमर, 9)

बल्कि ईशवर संसार में ज्ञानी लोगों को उच्चता प्रधान करता है, और परलोक में पुण्य भी। ईशवर ने कहा। तुममें से जो लोग ईमान लोये हैं और जिन्हे ज्ञान प्रदान किया गया है, अल्लाह उनके दरजों को उच्चता प्रदान करेगा। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है। (अल-मुजादला, 11)



मस्जिद विश्वविद्यालय है

पहले (और आज भी कुछ) मस्जिदें इस्लाम की विश्वविद्यालय है। ज्ञान की इच्छा रखने वाले छात्रों से मस्जिदें भर जाती थी। ये छात्र धर्म, नियम, दर्शन, फार्मसी और गणित का ज्ञान के प्रती अध्यापकों के लेक्चर्स सुन्ने के लिये आया करते थे। स्वयं ज्ञानी लोग भी विश्व के हर ओर से आते थे जो अरबी भाषा बोलने वाले हुआ करते थे, यह लोग हर छात्र को आमंत्रित करते थे, चाहे वे किसी भी देश के वासी हो ।

स्टानली लीन पॉल

ब्रिटीष ज्ञानी

इसके अतिरिक्त पवित्र ख़ुरआन में ज्ञान अर्जित करने से अधिक किसी और विषय पर प्रोत्साहित नही किया गया। ईशवर ने कहा। और कहो, मेरे रब, मुझे ज्ञान में अभिवृद्धी प्रदान कर। (ता-हा, 114)

यह कोई अतिशयोक्ति वाली बात नही है कि जब रसूल ने यह कहाः जो व्यक्ति ज्ञान अर्जित करने के लिए किसी मार्ग पर चलता है, तो ईशवर उसके लिए स्वर्ग का मार्ग सरल बना देता है। शिक्षक से आनंदित होकर फ़रिश्ते अपने पंख बिछा देते हैं। शिक्षक के लिए धरती और आकाश में स्थिर हर चीज़, यहाँ तक कि समुद्र कि मछिलयाँ भी क्षमा माँगती है। ज्ञानी पुरुष की उच्चता साधु-सन्त पर चन्द्रमा की सारे ग्रह पर उच्चता के समान है। निस्संदेह ज्ञानी लोग रसूलों के वारिस है। रसूल धन दौलत का किसी को वारिस नही बनाते। बल्कि वे ज्ञान का वारिस बनाते हैं। जिसने ज्ञान प्राप्त करलिया उसने अपना महत्व भाग हासिल करलिया। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है।) इसी कारण रसूल के प्रवेश होने के बाद मस्जिदें ज्ञान और ज्ञानी लोगों के लिए सुरक्षित स्थान बन गयी।



ख़ुरआन और उसका वैज्ञानिक चमत्कार

ख़ुरआन प्राकृतिक ज्ञान के प्रती खुले और साफ़ संदेश पर आधारित है, इस बात का अध्यापक यूसुफ़ मरवा ने ख़ुरआन में प्राकृतिक ज्ञान नामक पुस्तक में वर्णन किया है। इनकी पूरी गिंती 774 है, जिसका विस्तर निम्न लिखा जा रहा हैः गणित 61, फिज़िक्स 264 परमाणु विज्ञान 5, रसायन विज्ञान 29, सापेक्ष विज्ञान 62, खगोल विज्ञान 100, मौसम विभाग 20, जल ज्ञान 14, अंतरिक्ष विज्ञान 11, पषु विज्ञान 12, कृषि विज्ञान 21, जीव विज्ञान 36, भूगोल विज्ञान 73, एंथ्रोलॉजी 10, भूविज्ञान 20, ब्रह्मण्ड और उस्की घटनाओं के इतीहास का ज्ञान 36 ।

मैरीस बोके

फ्रेंच डाक्टर और वैज्ञानिक

सबसे बडी आश्चर्य बात यह है कि ज्ञान का शब्द अपने अलग-अलग प्रकार में ख़ुरआन के भीतर 779 बार आया है। यानी लगभग ख़ुरआन के हर सूरे में 7 बार आया है। यह तो केवल ज्ञान शब्द से संबंधित बात है। लेकिन बहुत से ऐसे शब्द हैं जो ज्ञान की ओर संकेत करते हैं। जैसेः यक़ीन, मार्गदर्शन, बुद्धि, सोंच, विचार, तत्वदर्शिता, समझ, प्रमाण, तर्क, निशानी, दलील, इनके अतिरिक्त और भी शब्द है जो ज्ञान कि ओर प्रेरणा पैदा करते हैं। जहाँ तक रसूल कि वाणी (हदीस) की बात है, तो इस पुस्तक में उसकी गणना करना कठिन है। क्योंकि हदीसों की संख्या बहुत है। पवित्र ख़ुरआन भौतिक, रसायन, प्रकृति या गणित की पस्तक नही है। बल्कि वह मार्गदर्शन की पुस्तक है। तथापि ख़ुरआन में आधुनिक ज्ञान से प्राप्त होनेवाली किसी भी बात के विपरीत कभी कोई चीज़ नही रही।

इस्लामिक शासन में इन सारी बातों का अधिक प्रभाव रहा। इस प्रकार कि ज्ञान की अलग-अलग क्षेत्रों में ऐसी वैज्ञानिक गतिविधियाँ पैदा हुई, जिसकी इतिहास में कोई मिसाल नही मिलती। इन गतिविधियों से मुस्लिम वैज्ञानिकों द्वारा महान सभ्यता कि प्रगती हुई, और मानवीय ज्ञान को वह बेमिसाल कोष प्रधान किया, जिसके एहसान तले सारा संसार रहेगा। मेक्स मैर होफ कहता हैः पश्चिम में रसायन के विकास का कारण प्रत्यक्ष रूप से "जाबिर बिन हय्यान" को माना जा सकता है। इसका सब से बडा प्रमाण यह है कि जाबिर ने जिन शब्दावलियों का आविष्कार किया वह आज तक पश्चिम की अन्य भाषाओं में उपयुक्त है।

अल्डो मेली का कहना हैः जब हम गणित और खगोल की ओर देखें, तो प्रारंभ से हमे पूर्वकाल के ज्ञानी मिलते हैं। इनमें से अधिकतर प्रसिद्ध ज्ञानी अबू अब्दुल्ला, मुहम्मद बिन मूसा, खवारिज़्मी है। (1. बीज गणित और भारतीय अंक प्रणाली का संस्थापक। गणित, खगोल और भूगोल के अधिकतर अनुसंधान लेखक) ख़वारिज़्मी बडे बडे गणितज्ञों में से प्रथम है। उसकी पुस्तकें 16 वी शताब्दी तक पश्चिम कि विश्वविद्यालयों में पढायी जाती रही।



ज़गरेड़होंका ने ज़हरावी कि पस्तक अत्तसरीफ लिमन आजज़। अनित तालीफ के सर्जरी से संबंधित विशेष भाग के बारे में यह कहाः इस पुस्तक के तीसरे भाग ने पश्चिम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। क्योंकि पश्चिम में सर्जरी के नियम कि स्थापना इसी पुस्तक ने किया है। सर्जरी से संबंधित भाग के कारण पुस्तक को ऊँचा स्थान मिला । सर्जरी स्वयं एक ज्ञान और अपने नियमों से शारीरिक विच्छेद (एनॉटमी) पर आधारित हो गया। पाँच शताब्दियों तक पश्चिमी विकास में ज़हरावी की इस पुस्तक का अधिक प्रभाव रहा । क्योंकि यह पश्चिम की विश्व विद्यालयों में पढायी जाती थी। इसी प्रकार पश्चिम के सर्जन इसी को अपने शिक्षा का मार्ग बनाते थे। आज तक भी मुस्लिम वैज्ञानिक सारी मानवता के लिए कई आविष्कार कर रहे हैं। अहमद ज़ुवैल अपनी पुस्तक असरूल इलम में कहता हैः मेरी कोशिश परमाणु के बीच एक स्थान रखती है जहाँ पर आशिंक के बीच मिलाप और जुदाई है। जिस प्रकार कि समय क्षण के भीतर शामिल होता है फिर क्षण एक महत्वपूर्ण समय बन जाता है।

कोई आश्चर्य कि बात नही की यह ज्ञान, मार्गदर्शन और प्रकाश, जो मुहम्मद लेकर आये, वह मानवता को गंदी नालियों से मुक्ति दिलायी है। और सारे इतिहास में ज्ञान, सभ्यता और विकास द्वारा उच्चता प्रधान की है। इस्लाम ज्ञान पर आधारित व्यवस्थित मार्ग लेकर आया है। उदाहरण के तौर पर इस्लाम ने सोंच विचार के बिना अनुसरण करने से चेतावनी दी। ईशवर मुश्रिकों (साझीदारों) के प्रति यह कहता है।



संप्रदा से लगाओ

आधुनिकता के इतीहास में संप्रदा से अधिक लगाव का इस से महान आन्दोलन कभी नही हुआ, जिस प्रकार से कि इस्लामी विश्व कैं चारों ओर देखा गया । हर मुस्लिम चाहे राजा हो या मज़दूर सब के भीतर ऐसा लगता है कि अचानक ज्ञान के प्रती लगाव और यात्र की तड़प पैदा होगई । यही वह सबसे उच्च विषय है जिसको इस्लाम ने प्रस्तुत किया । आधुनिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये जिस प्रकार से वर्तमान युग में पश्चीमी विज्ञानों से विश्वविद्यालय भरे हैं उसी प्रकार से छात्र बुग़दाद और इस के सिवा दूसरे केन्द्र की ओर रुक़ करते थे, बल्की वे वर्तमान छात्रों से भी अधिक लगाव रखते थे ।

स्टानली लीन पॉल

ब्रिटीष प्राच्ये विद्या विशारद

ज्ञान की सभ्यता



गोस्ताव लोबुन
फ्रेंच इतीहासकार

जब जब हम अरब की सभ्यता, ज्ञानिक पुस्तक, अविश्कार और उनकी कलाओं में विचार करते हैं, तो हमारे सामने नये रहस्य और व्यापक संभावनायें स्पष्ट होती हैं। फिर हम तुरन्त ही यह स्वीकार करलेते हैं कि पूर्व काल के ज्ञान को मध्ययुगीन तक पहुँचाने में अरब के लोग ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायें हैं। पाँच सदियों तक पश्चिम की विश्वविद्यालायों में अरब की लिखित पुस्तकों से हट कर कोई और उनके पास ज्ञान का स्त्रोत नही था। उन ही लोगों ने भौतिक, मान्सिक और चारित्रिक रूप से पश्चिम को उच्च सभ्यतावान बनाया । इतीहास में कोई ऐसी ख़ौम नही है, जो कम ही समय में अरब के प्रकार वैज्ञानिक विकास किया हो, और कोई ख़ौम कलात्मक आविष्कारों में अरब से आगे नही बड़ी है ।

चमत्कारिक ख़ुरआन



रेन्हे गीनो
फ्रेंच दर्शनिक

मैंने ज्ञान और प्राकृति से संबंधित ख़ुरआन की सारी आयतों में विचार किया है, तो मैंने इन सारी आयतों पर आधुनिक ज्ञान को पूरा पूरा प्रयोजित पाया । इसलिए कि मेरा विश्वास है कि एक हज़ार वर्ष पहले, (जबकि न कोई मानवीय आचार्य था और न कोई शिक्षक) मुहम्मद एक खुला सत्य लेकर आये। अगर किसी भी ज्ञान या कला का विशेषज्ञ अपने प्राप्त किये हुए सारे ज्ञान का ख़ुरआन की आयतों से तुलना करेगा, जिस प्रकार से मैंने की है, तो वह निस्संदेह ख़ुरआन पर विश्वास करेगा, लेकिन निजी उद्देश्यों से उस विशेषज्ञ को दूर होने की आवश्यकता है ।

और जब उनसे कहा जाता है, अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसका अनुसरण करो तो कहते हैं, नहीं, बल्कि हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या उस दशा में भी जबकि उनके बाप-दादा कुछ भी बुद्धि से काम न लेते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों। (अल-बक़रा, 170)

इस्लाम ज्ञान मार्ग के बिना सोंच विचार का अनुसरण करने से रोका है। ईश्वर ने कहा। वे तो केवल अटकल के पीछे चलते हैं और वे केवल अटकल ही दौड़ाते हैं। (अल-अनआम, 116)

इसी प्रकार इस्लाम ज्ञान, बुद्धि, सोंच विचार और तर्क के विपरीत हवस से रोकता है। ईश्वर ने कहा।

परन्तु अधिकतर लोग तो ज्ञान के बिना केवल अपनी इच्छाओं (ग़लत विचारों) के द्वारा पथभ्रष्ट करते रहते हैं। (अल-अनआम, 119)

इस्लाम गुनाह और कपट से रोका, जो न्याय से दूर रखता है। ईश्वर ने कहा। और ऐसा न हो कि किसी गिरोह कि शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इन्साफ़ करना छोद दो। इन्साफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ख़बर है। (अल-माइदा, 8)

इस्लाम वैज्ञानिक निष्पक्षता को भी चुनौती दी है। ईश्वर ने युद्ध के बारे में कहा। वे लोग जो यहूदी बनगए, वे शब्दों को उनके स्थानों से दूसरी ओर फेरदेते हैं और कहते हैं, समिअना व असैना (हमने सुना, लेकिन हम मानते नही), (अल-निसा, 46)

अन्याय और युद्ध न करने के प्रति ईश्वर ने यह कहा।

इल्ज़ाम तो केवल उनपर आता है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और धरती मे नाहक़ ज़्यादती करते हैं। (अल-शूरा, 42)

लोगों के बीच न्याय के साथ ज्ञान के प्रति अमानतदारी का आदेश दिया। ईश्वर ने कहा। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। (अल-निसा, 58)

इस्लाम न्याय, इन्साफ़ करने और सच्ची गवाही देने का आदेश देता है। ऐ ईमान लानेवालों। अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इन्साफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने विरुद्ध ही क्यों न हो। (अल-निसा, 135)

प्रमाण और सबूत के साथ खोज करने की महत्वता के प्रति ईश्वर ने यह कहा। कहो, लाओ अपना प्रमाण यदि तुम सच्चे हो। (अल-नम्ल, 64)

इसके अतिरिक्त और भी बहुत सी चीज़े हैं जो ज्ञान और सभ्यता के मार्ग को व्यवस्थित बनाते हैं।





सभ्यता का मार्ग

कोई भी समूह या गिरोह, विकसित हो या अवतनि हो, स्वयं के लिए एक संस्कृति रखता है, जिससे वह संबंधित रहता है, और इस संस्कृति, द्वारा मनुष्य के भीतर विशिष्ट चरित्र पैदा होता है। संस्कृति जीव की एक विधि है। जीवन और संसार कि एक स्थिति है। सामाजिक और चारित्रिक प्रणाली है, जो जीवन के अभिव्यक्तियों और हर कड़ी पर प्रभावित होता है। गतिविधियों में प्रकट होता है। समाज को अपनी एक पहचान देता है। और संस्कृती कि एकता को सुरक्षित रखता है। जहाँ तक सभ्यता कि बात है, तो यह समूह के सांस्कृतिक स्थिर का जायद गुण है। जो विकास, मात्रात्मक और गुणात्मक श्रेष्ठता और सांसारिक आविष्कार का कारण होता है। इतिहास में प्रभाव का एक उल्लेखनीय स्तर (डिग्री) होता है। संसार कि घटनाएँ और उसके निर्देशन में प्रभावित है। यह प्रभाव स्थान और समय के अनुसार कभी-कभी विस्तृत गठन का कारण होते है। इसी तरह हर सभ्यता, प्रकृति, समाज, राजनैतिक, धर्म, संस्कार, ज्ञान और चरित्र के बीच अनोखा गठन होता है। इन सब कारणों को हम एक ही स्थान में सीमित पाते हैं। और वह स्थान किसी भी समूह कि विशेषताओं के साथ उसकी सभ्यता है।

निश्चय इस्लाम पहले इमान लानेवाले गिरोह के व्यक्तित्व को उनके असहिष्णुता और मंदता से उच्च नैतिकता और अच्छे नियमों से बदल दिया। जो बहुत ही कम वर्षों में विकास और सभ्यता में जॉन डाल दी। इन कम वर्षों में उन्होंने दुनिया में विजय प्राप्त कर ली। उस समय के बहुत से गिरोह ने इस सभ्यता को स्वीकार किया। क्योंकि मुहम्मद द्वारा शुभ सूचना दिये हुए धर्म में सरलता, न्याय, भाई चारगी समानता थी। इस्लामी सभ्यता उस समय प्रवेश हुई, जबकि लोग ज़ुल्म और बंदगी पर आधारित पुरानी विधि से निराश हो गये, वे ऐसी नयी विधि की इच्छा करने लगे, जिसमें वे स्वयं के लिए सम्मान और मानवता पाते हैं। जबकि पहले वे अत्याचार और कठोर राजाओं के अन्याय से पीडित थे। इस्लाम ने उन्हें सुवर्ण अवकाश प्रधान किया। इसलिए कि इस्लाम ने उनकी बहुत सी स्थितियों को सुधारा। वे इस्लाम में वही सम्मान जनित जीवन देखते थे जिसकी वे इच्छा किया करते थे। साथ-साथ उनसे अन्याय, अज्ञान और मंदता को दूर किया।

इस्लामी सभ्यता ने मानव कि दृष्टि को सम्मान दिया। किसी भी समय जात रंग या भाषा के आधार पर मानवता के बीच कभी कोई अंतर नही रखा। बल्कि सारी मानवता ने एक ही व्यवहार और एक ही समान के अधिकार इसमें पायी। इस्लामिक सभ्यता ने मानवीय समूह के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इस प्रकार कि रिशते-नाते के आधार पर चलनेवाली परंपराओं को सिद्धांत और विचार में संयुक्त समूह की विधि से बदल दिया। जिसका सामाजिक संबन्ध भाई-चारगी और सम्मानता पर आधारित है।

इस्लाम कि दृष्टि में सभ्यता का सबसे पहला लक्ष्य सुख, शांति की उपलब्धी। सर्वश्रेष्ठ समाज की स्थापना। मानवता को अच्छाइयों से प्रसन्न करना। और बुराई के हर कारण का विरोध करना है। इस प्रकार कि विभिन्न आधुनिक साधनों द्वारा सभ्यता की उन्नति स्वयं कोई लक्ष्य नही है। बल्कि उच्च सभ्यता का लक्ष्य मान्सिक प्रसन्नता और मानव के लिए सम्मानता के द्वारा भावात्मक सुख की उपलब्धी है। साथ साथ समाज और राष्ट्र के लिए विकास और शांति का प्रधान है। जिसका कारण हर भलाई और लाभदायक विषयों तक पहुँचना, नष्टदायक और बुरी बातों से दूर रहना है।

उस आधुनिक सभ्यता के विपरीत जो दुख और व्याकुल, मानवता को भौतिक पथभ्रष्ट में डालने, मानवीय उच्च आचार जैसे धर्म और नैतिकता से दूर रखने और लोगों का ऐसे मानवीय क्षेत्रों में परिवर्तन करना है, जिस में आत्मा नही और जिसमें बलवान निर्बल पर अत्याचार करता है।

उच्च प्राणाली

निशचित रूप से इस्लाम ने साम्राज्य संभाला है, क्यों कि वह सामाजिक और राजनीतिक ऐसा उच्च प्रणाली है जिस्को संसार प्रस्तुत करसका है। इस्लाम फ़ैल चुका है क्यों कि वह हर ओर राजनीती की समझ न रखने वाले लोग देखता था । जिनका धन लुट लिया जाता था, उनके साथ अन्याय किया जाता था, डराया जाता था, ज्ञान से दूर रखा जाता था, और उनके जीवन में कोई अयोजन नही था। इसी प्रकार से इस्लाम ने ऐसी स्वार्थी सरकारें देखा, जिस में सरकार और जनता के बीच कोई संबंध ही नही था। परन्तु इस्लाम नया और पवित्र राजनीतिक विचार रखने वाला धर्म था, जो उस काल में भी संसार के भीतर वास्तविक गती-विधी की विशेषता रहा। इस्लाम किसी भी प्रणाली से मानव को अधिक सर्वश्रेष्ट प्रणाली उपलब्ध करता है। रोमन साम्राज्य में कम्यूनिज़म की ग़ुलामी पर आधारित प्रणाली, पश्चिम में चरित्र, सभ्यता और सामाजिक परंपरा पूर्ण रूप से विघटित हो चुकी थी, और इस्लाम के आने से पहले समाप्त हो चुकी थी ।

हारबर्ड जॉर्ज विल्स

ब्रिटीष लेखक



घमण्ड के संकेत

वर्तमान काल में जब कि अरब के मुस्लिम्स और क्रिस्टियन्स का पश्चीमी वासियों के साथ गहरा संबंध होता जा रहा है, इस जैसे समय में इस बात कि आवश्यकता है कि पश्चिम पर इस्लामिक प्रभाव के प्रती एक रिपोर्ट तैयार की जाये । मध्ययुग में यह बात नोट की गई कि पश्चिम के कुछ ईसाई लेखक इस्लाम की छवी को कई पक्षों से विरूपण किया है, मगर पिछली सदी में वैज्ञानिकों के प्रयास के द्वारा पश्चीमी लोगों के दिमाग़ में इस्लाम की छवी कुछ अच्छी होने लगी। अरब और मुसलमानों के साथ अच्छे संबन्ध होने के कारण मुसलमानों की ओर से हम पर होने वाले एहसान को हमें मानना चाहीये। अगर हम इस एहसान को इनकार करने का प्रयास करें तो यह खुले घमण्ड का संकेत है ।

मुंटोबु मेरी वॉट

ब्रिटीष प्राचयं विद्या विशारद



संसार की आत्मा हत्या

पूर्व काल से अधिक आज कल पश्चिम को इस्लाम की आवश्यकता है, ताकि जीवन को एक लक्ष्य और इतीहास को महत्व मिले, यहाँ तक कि ज्ञान को ईमान से अलग रखने के प्रति पश्चिम के विचार बदल जाये। निश्चय इस्लाम ज्ञान और ईमान के बीच कोई रुकावट नही रखता है, इसके विपरीत इस्लाम इन दोनों को संपूर्ण एकाई समझता है, जो एक दूसरे से अलग नही हो सकते। इसी प्रकार से इस्लाम में यह शक्ती है कि वह उन पश्चीमी समुदायों में जीवन कि किरण फिर से ज़िंदा करदे, जो संसार को आत्महत्या की ओर लेजाने वाले व्यक्तिगत विकास से प्रभावित है ।

मरमाडु कब्कसोल

ब्रिटीष आलोचक



वैज्ञानिक उपलब्दीयाँ

इस्लाम ने 8 सदियों के भीतर महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धियाँ प्राप्त की है, इसी कारण इस्लाम को केवल सभ्यता का स्थानांतरण करने वाला, या पश्चीमी सभ्यता को पूर्ण रूप से पश्चीमी ही समझना ग़लत है, क्यों कि पश्चिम को उन महत्वपूर्ण नियमों के द्वारा सहायता करने में इस्लाम का बहुत बड़ा रोल रहा है, जिनके उप्योग से पश्चिम ने यह सारी उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं ।

प्रिन्स चारलेस

ब्रिटीष युवराज

सभ्यता के मार्ग के तत्व

इस्लामिक सभ्यता के कुछ विशेश और मुख्य तत्व है, जिसके द्वारा सभ्यता अपने लक्ष्य, नियम और सिद्धांत में अन्य सभ्यताओं के मुक़ाब्ले संपूर्ण हो जाती है। हालांकि इस सभ्यता और अन्य सभ्यताओं के बीच कुछ बातें मिलीझुली भी हो सकती है।

इस्लामिक सभ्यता का सिद्धांत यूनानि सभ्यता के समान बुद्धि कि प्रशंसा नही है। न रूमानि सभ्यता के प्रकार प्रभाव, शासन और शक्ति कि प्रशंसा है। न पारसियों के समान भौतिक रुचियों, सैन्य बल और राजनीतिक प्रभाव है। न भारतीय और चीनियों के समान आध्यात्मिक शक्ति का अधिक ध्यान है। न साधु सन्तों का प्रभाव है, जो मिथक और किवदंतियों का मिश्रण है। इसी चीज़ ने पश्चिम को मध्ययुगीन के अंधेरों में रखा। न भौतिक ज्ञान, ब्रह्माण्ड के खनिज पदार्थ से लाभ उठाने, और सरकश भौतिकवाद का नाम इस्लामिक सभ्यता है। जिस प्रकार कि यूनान और रोम से मिलनेवाली आधुनिक सभ्यता की विधि है। बल्कि इस्लामिक सभ्यता एकीकरण के सिद्धांत, सोंच-विचार, ज्ञान, कार्य आत्मा, विकास, मानव और बुद्धि को सम्मान देने पर आधारित है। यानी उन सारे विषयों पर जो मानवीय जीवन के भाग है। इस प्रकार से इस्लामिक सभ्यता स्वयं एक संपूर्ण संविधान है, जो अन्य सभ्यताओं से बिल्कुल भिन्न है। इस्लामिक सभ्यता अपने भीतर युद्ध की शक्ति, न्याय विरोधी के साथ नर्मी, भलाई की इच्छा और सारे संसार के लिए ज्ञान को फैलाने के कारण अन्य सभ्यताओं पर विशिष्टता रखती है। इसी कारण फिर से अपने भीतर स्थिर तत्व के अनुसार इस्लामी सभ्यता को मानवता पर शासन करने का अधिकार मिलता है।

इस्लामिक सभ्यता कई तत्व के कारण सर्वश्रेष्ठ है। जिनमें से कुछ निम्न लिखे जा रहे हैं।

1. ईमान (विश्वास) और एकीकरण का सिद्धांत

ईमान (विश्वास) प्रसन्नता के मार्ग का सारा ज्ञान प्राप्त करने और सभ्यता का सृजन करने का सबसे बडा कारण है। हर वह सभ्यता जो ईशवर पर विश्वास और एकीकरण के सिद्धांत पर आधारित नही है, वह अपने अंदर नियमों में टकराव रखता है। जो एक दूसरे का विरोध करते हैं। क्योंकि इन सभ्यताओं में नाम बदल बदल कर ईशवर के अलावा कई अन्य प्रभु बनालिये गये हैं। यही वह कारण है जो मानवीय जीवन का बिगाड़ और अप्रसन्नता की ओर ले जाती है। ईशवर ने कहा। यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में अल्लाह के सिवा दूसरे इष्ट-पूज्य भी होते तो दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः महान और उच्च है अल्लाह, राजासन का स्वामी, उन बातों से जो ये बयान करते हैं। (अल-अंबिया, 22)

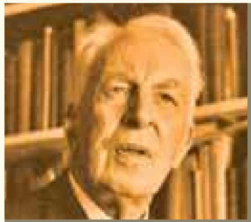
मध्यलोक

अगर मूसा इबने मसीर को पश्चिम का शासन दिया जाये, तो वह पूरे पश्चिम को मुसलमान बनादें । सारी सभ्यतावान ख़ौमों को एक ही धार्मिक इकाई में ढ़ाल दे, और इस बात की संभावना है कि पश्चिम को मध्यलोक के रूल से मुक्ती दिलादें, जिसको स्पेन ने अरब के एहसान द्वारा ज्ञान प्राप्त किया है ।

जोस्ताव लोबुन

फ्रेंच इतीहासकार





अर्नाल्ड ट्वेम्बी
ब्रिटीष इतिहासकार

पराजित का अपने विजेता को बन्धी बनाना

प्राजित इस्लाम ने ईसाइयों के विरुध धार्मिक युध्द में अपने विजेता को बन्धी बनालिया । ईसाई संसार के जीवन में सभ्यता की कलायें डाल दी। निश्चय पश्चीमी जीवन में इस्पात भर गया था, और मध्य युग में ईसाई संसार के भीतर कुछ मानवीय गतीविध्यों के छात्रों जैसे इंजीनियरिंग में इस्लामिक प्रभाव सार्वजनिक था। सिसीली और इस्पेन में प्राचीन अरबिक साम्राज्य से अधिक पश्चिम आधुनिक शासन प्रभावित था ।

ईश्वर ने कहा अल्लाह ने अपना कोई बेटा नही बनाया और न उसके साथ कोई अन्य ख़ुदा है। ऐसा होता तो प्रत्येक ख़ुदा अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देता। महान और उच्च है अल्लाह उन बातों से जो वे बयान करते हैं। (अल-मोमिनून, 91)

ईश्वर ने कहा । कह दो, यदि उसके साथ अन्य भी पूज्य-प्रभु होते, जैसा कि ये कहते हैं, तब तो वे सिंहासनवाले (के पद) तक पहुँचने का कोई मार्ग अवश्य तलाश करते। (अलःइस्रा, 42)

इसकी प्रतिचर्या अधिकतर सभ्यताओं को मिली है और मिलती रहेगी। वे अपने उद्देश्य से हटजायेंगे, अपनी दिशाओं से फिर जायेंगे। फिर मानवता के लिए भलाई कि इच्छा रखते हुए भी बुराई का कारण बनेंगे। ईश्वर ने कहा। उन्होंने अल्लाह से हटकर अपने धर्म ज्ञाताओं और संसार-त्यागी संतों को अपने रब बना लिए और तदधिक मरयम के बेटे ईसा को (अल्लाह का बेटा भी)- हालाँकि उन्हें इसके सिवा और कोई आदेश नही दिया गया था कि वे अकेले इष्ट-पूज्य की बन्दगी करें, जिसके सिवा कोई और पूज्य नही। उसकी महिमा के प्रतिकूल है वह शिर्क जो ये लोग करते हैं। (अल-तौबा, 31)

2. विश्व व्याप्त

इस्लाम विश्व व्याप्त धर्म है, जो हर समय और स्थान, हर भाषा और जात, हर रंग और वंशज की सुधार के लिये आया है। ईश्वर ने कहा। हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों को शुभ-सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (सबा, 28)

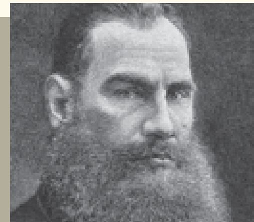
ईश्वर ने कहा । बडी बरकतवाला है वह जिसने यह फ़ुरक़ान अपने बन्दे पर अवतरित किया, ताकि वह सारे संसार के लिये सावधान करनेवाला हो। (अल-फ़ुरक़ान, 1)

ईश्वर ने कहा। कहो, ऐ लोगों । मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जो आकाशों और धरती के राज्य का स्वामी है। (अल-आराफ़, 158)

ईश्वर ने कहा। हमने तुम्हें सारे संसार के लिये सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)

इस्लाम ऐसा स्थिर सिद्धांत लेकर आया है स्थितियों के परिवर्तन से नही बदलता, और न्याय, सत्य, भलाई पर आधारित ऐसे नियम (शरिअत) लेकर आया है, जो हर समय और स्थान में मानवीय प्रकृती के मुनासिब है। इसका कारण केवल यह है कि यह नियम उस ईशवर द्वारा है, जो सारे जीव के लाभ और सुधार का ज्ञान रखता है। ईशवर ने कहा। क्या वह नही जानेगा जिसने पैदा किया। वह सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखनेवाला है। (अल-मुल्क, 14)

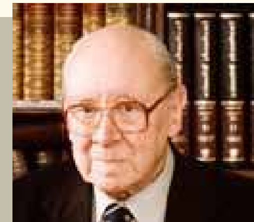
इसी प्रकार इस्लाम धर्म लोगों कि किसी विशेष जात, रंग या गिरोह के लिए नही है। वह गोरे, काले, लाल, पीले सब के लिए है। वह पूर्वकाल, वर्तमानकाल और भविष्य के लोगों के लिए है। कोई भी अनुसंधान वैज्ञानिक, चाहे वह कितना भी महान हो, इस्लाम के रसूल मुहम्मद के लाये हुए धर्म में क्षेत्रिय चरित्र, या सांप्रादायिक और जातिवाद रंग नही पाता है। यह खुला सबूत है कि मुहम्मद का लाया हुआ संदेश विश्व व्याप्त है, जो किसी विशेष गिरोह या समूह का पक्षपात नही करता क्योंकि इस्लाम के उपदेश, संस्कार और आचार सब किसी भी काल के हर मानव के लिए उपयुक्त है।



जीवन में प्रवेश होना

निश्चय इस्लाम मानवता के लिये सर्वश्रेष्ठ धर्म है। इस्लाम मुस्लिम के जीवन के हर पक्ष में प्रवेश करता है, बल्कि मुस्लिम की हर गतीविधी में इस्लाम ही का निर्णय होता है। इस्लाम के सिवा कोई ऐसा दूसरा धर्म नही है, जो इस आधुनिक काल में लोगों की सारी समस्याओं के समाधान की क्षमता रखता हो, यही इस्लाम धर्म की विशेषता है।

कवीलाल जाबा
भारतीय पत्रकार और राजनीतिक नेता



उचित नेता

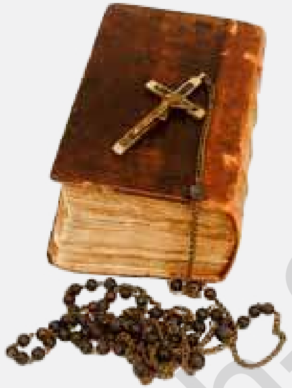
अगर कोई उचित नेता हो, जो इस्लाम के प्रति उचित बातें बतलाएँ तो इस्लाम धर्म के लिए फिर से यह संभव है कि वह इस संसार की महत्वपूर्ण शक्ती बनकर उभरे ।

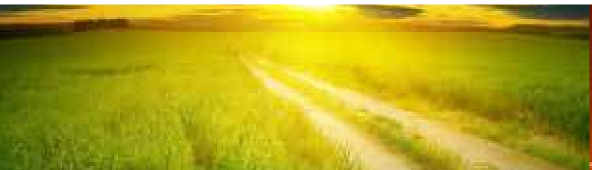
मौन्ट्गु मेरी वाई
ब्रिटीष प्राचये विद्या विशारद

यह कहना संभव नही है कि न्याय या उच्च चरित्र किसी समूह या समय के लिए उपयुक्त नही है। यह इस्लाम धर्म की विशेषता है। कुछ अन्य धर्मों में क्षेत्रिय, सांप्रादायिक या जातिवाद चरित्र साफ नज़र आता है। उदाहरण के रूप मे यहूद है। जब वे अपने धर्म के अतिरिक्त किसी और धर्म का अनुपालन करने वाले से व्यवहार करते हैं, तो ईश्वर ने उनके चरित्र के बारे में यह विवरण किया है। और किताबवालों में कोई तो ऐसा है कि यदी तुम उसके पास धन-दौलत का एक ढेर भी अमानत रखदो तो वह उसे तुम्हे लौटा देगा। और उनमें कोई ऐसा है कि यदि तुम एक दीनार भी उसकी अमानत में रखो, तो जब तक कि तुम उसके सिर पर सवार न हो, वह उसे तुम्हें अदा नही करेगा। यह इसलिए कि वे कहते हैं, उन लोगों के विषय में जो किताबवाले नही हैं, हमारी कोई पकड़ नही। और वे जानते-बूझते अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं। (आले-इमरान, 75)

बैबुल मत्ता

मुझे केवल इस्राईलियों के भटके हुए लोगों के लिये भेजा गया है। जब मैने 12 समूहों को चयन किया, ताकि वे यहूदों का मार्गदर्शन करे, तो उन्हें यह आज्ञा दिया गया कि तुम पिछली ख़ौमों के मार्ग पर ना चलो, न सामरिओं के नगर में प्रवेश करो, बल्कि इस्राईलियों के भटके हुए लोगों के पास जाओ ।









3. ज्ञान और पुनर्निर्माण की सभ्यता

मानव की ओर इस्लाम की दृष्टी यह है कि ईशवर ने मानव को धरती पर उत्तरधिकार और पुनर्निर्माण के लिए पैदा किया है। ईशवर ने कहा। उसी ने तुम्हे धरती से पैदा किया और उसमें तुम्हे बसाया । (हूद, 61)

ईशवर ने कहा। वही तो है जिसने तुम्हें धरती में ख़लिफ़ा बनाया । अब जो कोई इन्कार करेगा, उसके इन्कार का वबाल उसी पर है। इनकार करनेवालों का इनकार उनके रब के यहाँ प्रकोप ही को बढ़ाता है, और इनकार करनेवालों का इनकार केवल घाटे में ही अभिवृद्धी करता है। (फ़ातिर, 39)

विकास और पुन निर्माण

इस्लाम प्रतिभा और व्यक्तिगत उत्कृष्टता को मान्यता देता है। इस्लाम विकास और पूर्निर्माण का धर्म है न कि तोड फ़ोड का। उदाहरणः अगर कोई व्यक्ति एक ज़मीन का मालिक है, वह धनी भी है, उस्को इस ज़मीन की खेती करने कि आवश्यकता नही है, और वह इस ज़मीन को वीरान छोड दिया है। ऐसी स्थिति में एक लम्बा समय बीत गया, तो इस्की यह ज़मीन अपने आप लोक संपति बन जाती है, और इस्लामिक नियम यह निर्णय लेते हैं कि इस संपति का अधिकार उस व्यक्ति को प्राप्त हो जायेगा, जो सबसे पहले इस ज़मीन की खेति कर सकता हो ।

प्राध्यापक चॉलस एडवर्ड अर्ची पॉल्ड

ब्रिटीष राजनीतिक नेता



आत्मा की अनुशास्तिक

सारे धर्मों में इस्लाम विज्ञानिक खोजों से अधिक उपयुक्त है, आत्मा की अनुशास्ता, दया और न्याय के संदेश देने में इस्लाम सबसे महान धर्म है।

गोस्ताब लोबुन

फ्रेंज इतिहास्कार

इस्लाम धर्म के अनुसार हर वह व्यक्ति पापी है, जो मानवता के लिए लाभदायक और धरती के पुनर्निर्माण का ज्ञान प्राप्त न करे। निस्संदेह मुहम्मद को उस समय भेजा गया, जब कि मानवता सांस्कृतिक और वैज्ञानिक मंदता में जीवन यापन कर रही थी। लोग दर्शन, बहस टकरार, धरती के विकास और पुनर्निर्माण के अवतलता में पडे हुए थे। तो मुहम्मद ने मानवता को मुक्ती दिलायी, इस्लाम धर्म (ज्ञान, पुनर्निर्माण और सभ्यता पर आधारित धर्म) के द्वारा उसको सम्मानित बनाया। जिसमें धरती के विकास और आध्यात्मिक विचारों के बीच कोई विवाद नही है। मुस्लिम मनुष्य के भीतर प्रार्थना, पुनर्निर्माण के बीच और आध्यात्मिक जीवन, अपने ईश्वर की इच्छा के अनुसार अनुसरण करने के बीच कोई अंतर नही है। बल्की यह सब ईश्वर के लिए और उसी के मार्ग में शुमार है। ईश्वर ने कहा। कहो, मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है। (अल-अनआम, 161, 162)







सारे संसार के आमने सामने

आप सब जानते हैं कि मैं मूर्ती पूजा करने वाले महान राजनीतिक गाँधी का पुत्र हूँ। मैं संसार के सामने मुसलमानों के इस सम्मेलन में यह एलान करता हूँ कि मैं निश्चय इस्लाम से प्रेम करचुका हूँ, ख़ुरआन पसंद कर चुका हूँ, एक ईश्वर पर, पवित्र रसूल मुहम्मद पर, उनके अंतिम नबी होने पर, उनके बाद किसी नबी ते न आने, ख़ुरआन के लाये हुए संदेश को सत्य मानने, सारी पवित्र पुस्तकों को सही जानने और ईश्वर के रसूलों को सच्चा समझने पर विश्वास (ईमान) लाचुका हूँ। मैं ख़ुरआन और इस्लाम के लिए ही जियूँगा, मरूँगा और उसी की रक्षा करूँगा। उसके लिए एक वाक्य स्वयं बनूँगा। उसी कि ओर निर्देश करूँगा और अपने परीवार, संसार के लोगों को बुलाऊँगा। यह सच्चा धर्म, ज्ञान, सभ्यता, न्याय, अमानतदारी, दया और संतुलन का धर्म है।

अब्दुल्ला हेराल गाँधी

महात्मा गाँधी का पुत्र

4. नैतिकता की सभ्यता

इस्लाम के अनुसार नैतिकता प्रार्थना है। बल्की रसूल ने हमे यह सूचना दी है कि आपको भेजे जाने का लक्ष्य नैतिकता को पूर्ण करने में प्रकट होता है। आप ने कहाः मुझे उच्च नैतिकता को पूर्ण करने के लिए भेजा गया है। (इस हदीस को इमाम मालिक ने वर्णन किया है) सभ्यता और प्रसन्नता का मार्ग नैतिकता का मार्ग है, जो उच्च चरित्र और अच्छे कार्य पर प्रेरणा देता है। इस्लाम के अनुसार नैतिकता जीवन के हर भाग में व्यापक है, जैसे मनुष्य का अपने स्वयं के साथ, अपने ईश्वर के साथ और अन्य लोगों के साथ व्यवहार है। इसी प्रकार मुस्लिम और काफिर के साथ, छोटे बडे, पुरुष, स्त्री और मित्र शत्रु के साथ व्यवहार पर व्यापक है। व्यवहार, सत्यता, शर्म, मन की स्वच्छता, भलाई कि इच्छा और इसके अतिरिक्त सभी चीज़ों मे इस्लाम ने दया, न्याय, उच्च चरित्र और वीरता के साथ व्यवहार करने का आदेश दिया है। ईश्वर ने न्याय महत्व और दुश्मनों के साथ भी आवश्यकता का विवरण करते हुए यह कहा। ऐ ईमान लानेवालों । अल्लाह के लिए गवाह होकर दृढ़तापूर्वक, इन्साफ़ की रक्षा करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इनसाफ़ करना छोड दो। इनसाफ़ करो, यही धर्म परायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ख़बर है। (अल-माइदा,8)

ईश्वर ने अपने रसूल मुहम्मद के संदेश का विवरण करते हुए कहा कि यह संदेश सारे संसार के लिए दयालुता है। ना कि केवल उनलोगों के लिए जो इस पर ईमान लाये, ईश्वर ने यह कहा। हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)



नैतिकता इस्लामिक सभ्यता का अलग न होनेवाला अंग और मूल स्तंभ है। यह संभव नही है कि धरती के विकास या किसी और आवश्यकता के कारण मुस्लिम उच्च चरित्र से दूर रहे। निश्चय ईशवर ने अपने रसूल मुहम्मद को अच्छी शिक्षा दी, ताकि वह हर विषय में उच्च चरित्र और नैतिकता का महान रूप हो। ईशवर ने कहा। निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है, अर्थात उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे। (अल-अहज़ाब, 21)

ईशवर ने अपने रसूल को दयालु, प्रसन्नता के मार्ग की ओर लोगों को मार्गदर्शन करने पर आदर्शवान होने का विवरण करते हुए यह कहा। तुम्हारे पास तुम्ही में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असहय है। वह तुम्हारे लिए लालायित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है। (अल-तौबा-128)

5. बुद्धिमत्ता और विचार की सभ्यता

इस्लाम धर्म में कोई ऐसी मिथ्या बाते नही हैं जिसके प्रति प्रश्न करना संभव ना हो। या कोई ऐसा रहस्य नही है जिसके प्रति विचार असंभव हो। बल्की ईशवर ने अपनी निशानियों, जीव और सारे समूहों में विचार करने का आदेश दिया है। ईशवर ने कहा। जो खडे, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते हैं, और आकाशों और धरती की संरचना में सोंच-विचार करते हैं। (वे पुकार उठते हैं) हमारे रब। तूने यह सब व्यर्थ नही बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें आग की यातना से बचालें। (आले-इमरान, 191)



ईशवर ने कहा। इसी तरह हम उन लोगों के लिए खोल-खोल कर निशानियाँ बयान करते हैं जो सोंच-विचार से काम लेना चाहें। (यूनुस, 24)

ईशवर ने कहा। स्पष्ट प्रमाणों और ज़बूरों (किताबों) के साथ। और अब यह नसीहत तुम्हारी ओर हमने अवतरित की, ताकि तुम लोगों के समक्ष खोल-खोल कर बयान कर दो, जो कुछ उनकी ओर उतारा गया है, और ताकि वे सोंच-विचार करें। (अल-नहल, 44)

ईशवर ने कहा । क्या उन्होंने अपने आप में सोच-विचार नही किया। अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है सत्य के साथ और एक नियत अवधि ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत से लोग तो अपने प्रभु से मिलन का इन्कार करते हैं। (अल-रूम, 8)



ईश्वर ने कहा । ये मिसालें लोगों के लिए हम इसलिए पेश करते हैं कि वे सोंच-विचार करें। (अल-हश्र, 21)

बल्कि ईश्वर ने हमें यह सूचना दी कि ज्ञान केवल ख्यालों का नाम नही है। बल्कि उसका प्रमाणों पर आधारित होना ज़रूरी है। ईश्वर ने कहा। कहो, यदि तुम सच्चे हो तो अपने प्रमाण पेश करो। (अल-बक़रा, 111)

इस्लाम धर्म में ऐसे कोई रहस्य नही है, जिसको कोई न जानता हो। या ऐसी कोई मिथ्या बातें नही है, जिसका कोई साधन प्राप्त ना कर सकता हो।

6. बाहय और आंतरिक शांती कि सभ्यता

आंतरिक शांति यानी मानव की आंतरिक प्रसन्नता और आधुनिक सभ्यता में अधिकतर लोगों को भ्रम में रखनेवाले आंतरिक संघर्ष से मुक्ति दिलाना है। इस प्रकार कि मानवीय विचार में संसार और परलोक का जीवन शांति के साथ व्यतीत हो। प्रार्थना, कार्य और पुनर्निर्माण के कार्योन्मुख हो। आध्यात्मिक और भौतिक जीवन का संबंध हो, ज्ञान और धर्म का संगम हो। निश्चय इस्लामिक सभ्यता में आंतरिक शांति एकीकरण के सिद्धांत से निकलने वाला खुला संकेत है, जो मुस्लिम के मन में पैदा होनेवाली हर चीज़ को सरलता के साथ इकट्ठा करता है। इस्लाम धर्म में संसार स्वयं अपने आप कोई लक्ष्य नही है। बल्कि वह परलोक के लिए खेती और पुल के समान है। यह संदेश हमें ईश्वर कि इस वाणी में मिलता है । जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल और भलाई कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नही करता। (अल-क़सस, 77)



बुद्धिमत्ता और तर्क

इस्लाम की अनोखी बात यह है कि वह बुद्धिमता पर आधारित है। वह अपने भक्तों से देवत्व महात्वपूर्ण राज्य को कभी भी बेकार समझने का संदेश नही दिया। इसी प्रकार से इस्लाम खोज और ज्ञान पर आधारित प्रश्नों से लगाव रखता है और अपने भक्तों को आदेश देता है कि वे इस्लाम लाने से पहले सोंच-विचार और बुद्धि से काम लें। निश्चय इस्लाम सही बातों का सबूत तलाश करो और भलाई को चुनलो, की बुद्धिमता का पूरा समर्थन करता है, यह कोई नई बात नही है, इसलिए कि भलाई ईमान वालों के लिये उनकी अपनी खोई हुई चीज़ है, जहाँ भी वे उसे पालें वही उसका ज़्यादा अधिकार रखते हैं। इस्लाम बुद्धिमता और तर्क का धर्म हैं, इसी कारण ईश्वर के नबी मुहम्मद पर आने वाला पहला संदेश "पढ़ो" है, इसी कारण ईमान लाने से पहले सोंच-विचार की ओर बुलाना इस्लाम का नारा है। इस्लाम सत्य है, उसका हत्यार ज्ञान है, और उसका गहरा दुशमन अज्ञान है।

हारून ल्योन

ईश्वर की इस वाणी में भी मिलता है। फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह का उदार अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम सफल हो। (अल-जुमुआ, 10)

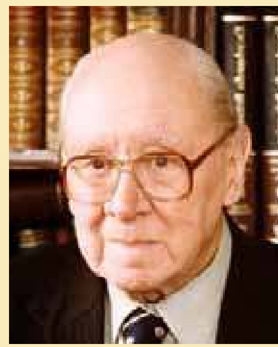
यानी जब नमाज़ पूरी हो जाये, तो अपने सांसारिक कार्य कि ओर निकल जाओ। शर्त यह है कि वह कार्य हलाल हो। आप इस कार्य में प्रेरणा के साथ ईश्वर कि इच्छा तलाश करते हुए लगे रहे। जैसा कि रसूल ने अपने एक साथी से कहाः आप ईश्वर की इच्छा कि तलाश के साथ जो कुछ भी धन खर्च करोगे आपको उस पर पुण्य मिलेगा, यहाँ तक कि वह खाना, जो आप अपनी पत्नी के मुँह में डालते हो। (इस हदीस को इमाम मालिक ने वर्णन किया) यानी आप अपनी पत्नी के मुँह में जो खाना (भोजन) डाल रहे हो उसपर भी आपको पुण्य मिलेगा। इस्लाम धर्म में संसार और परलोक के बीच कोई अंतर नही है। लेकिन शर्त यह है कि हम परलोक को छोडकर केवल संसार में ही अपना मन लगालें। जैसा कि ईश्वर ने कहा। ऐ ईमान लानेवालों। तुम्हारे माल तुम्हें अल्लाह कि याद से ग़ाफिल न करदें और न तुम्हारी सन्तान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं। (अल-मुनाफ़िक़ून, 9)

ईश्वर ने यह भी कहा। जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है। (अल-क़सस, 77)

कार्य के प्रति, पत्नी के प्रति प्रेम, और अपनी संतान के साथ खेल-कूद और उनका ध्यान रखना, इसके अतिरिक्त अन्य चीज़ें शरिअत के सीमाओं के भीतर धर्म में और ईश्वर के रसूल की मार्गदर्शनी में व्यापक है। शर्त यह है कि इसका लक्ष्य ईश्वर की इच्छा है। ईश्वर ने कहा। कहो, मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है। (अल-अनआम, 162)

प्रभावपूर्ण समाधान

निश्चय ख़ुरआन सारी आस्थि, समाजिक और चारीत्रिक समस्याओं का प्रभावित समाधान प्रस्तुत करता है, इसी कारण ख़ुरआन की सत्यता पर संदेह करना असंभव है, क्यों कि मुहम्मद ईश्वर की ओर से मिले हुए संदेश को पहुँचाने में सफ़ल हो गये। मेरे ख़याल में हमारी जो भी धार्मिक स्थिती हो, हमें ख़ुरआन को मक्काः मुकर्रमाः के जीवन में चारीत्रिक बुलंदी का संदेश समझना ज़रूरी है।



मौन्टोगु मेरी वॉट
ब्रिटीष प्रचय विधीविचारक

सारा जीवन ईश्वर के लिए है। यहाँ तक कि जब आशय साफ हो, तो शारीरिक आवश्यकताएँ को पूरा करना भी ईश्वर का अनुपालन करने के समान है।

बाहय शांति बन्धुओं और अजनबियों के साथ, मित्र और शत्रु के साथ (अच्छा व्यवहार है) बल्कि मुस्लिम का अपने किसी भाई के लिए सबसे पहला अभिवादन यह हैः अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहु (तुम पर ईश्वर द्वारा शांति और दया हो) सारे धर्म सुरक्षित और प्रसन्न नही रहे, जिस प्रकार कि इस्लामिक शासन में प्रसन्न थे। कुछ मुसलमानों के अधः पतन के कारण संसार को कितना अधिक घाटा हुआ। ईश्वर ने कहा। ऐसा ना हो कि एक गिरोह कि शत्रुता, जिसने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर का रास्ता बन्द करदिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लगो। हक़ अदा करने और ईश-भय के काम मे तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग ना करो। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही अल्लाह बडा कठोर दण्ड देनेवाला है। (अल-माइदा, 2)



सुखी जीवन

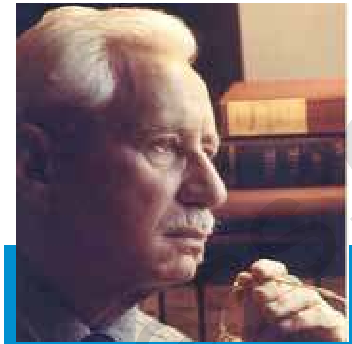
अगर हम इस्लाम के प्रती नियमित व्यवहार करना चाहें, तो इस्लाम की शिक्षाओं का प्रभावी शक्ति और भलाई पर आधारित होने से सहमत होना हमारे लिये ज़रूरी है। इस शक्ति की शिक्षाओं के अनुसार जीवन का सुखी होना संभव है, जिस में चारीत्रिक रूप से कोई कमी नही रहती । यह शिक्षायें ईश्वर की सारी प्रजा के साथ दयालुता, लोगों के आपसी संबंधों में अमानतदारी, प्रेम और दूसरों की आवश्यकताओं को महत्व देने की वृती पैदा करती है। इसी प्रकार इस्लामिक शिक्षायें हर अच्छे कार्य की ओर बुलाती है। इन शिक्षाओं के प्रमाण में नेक मुसलमान चारीत्रिक नियमों के अनुसार जीवन बिताता है।

गोल्ड टेसीहर

यहूदी प्रचय विधि विचारक

7. पवित्रता और प्रेम की सभ्यता

इस्लामिक सभ्यता अपने अनुयायियों पर यह अधिरोपण करती है कि वे पवित्र मन और साफ दिल वाले हो। ईश्वर ने मुस्लिमों की प्रार्थना का विवरण करते हुए यह कहा। और (इस माल में उनका भी हिस्सा है) जो उनके बाद आए, वे कहते हैं, ऐ हमारे रब। हमें क्षमा करदे और हमारे उन भाइयों को भी जो ईमान लाने मे हमसे अग्रसर रहे और हमारे दिलों मे ईमानवालों के लिए कोई विद्वेष न रख। ऐ हमारे रब। तू निश्चय ही बडा करुणामय, अत्यन्त दयावान है। (अल-हश्र, 10)



महान लोगों के चरित्र

निस्संदेह मुसलमान, इसाइयों से उच्च चरित्र वाले थे, इसी प्रकार वे अपने इतिहास की अधिक पंजिकृति करने वाले और असहायों की अधिक सहायता करने वाले थे। अपने इतिहास में मुसलमानों ने बहुत ही कम निर्दयता का व्यवहार किया है। जिस प्रकार इसाइयों ने वर्ष 1099 में जेरूसलाम पर विजेता प्राप्त करने के बाद किया था।

वीलडुरांट

ईश्वर ने कहा। और मुझे उस दिन रुसवा न कर जब लोग जीवित करके उठाए जाएँगे। जिस दिन न माल काम आयेगा और न औलाद, सिवाय इसके कि कोई भला-चंगा दिल लिए हुए अल्लाह के पास आया हो। (अल-शुअरा, 88,89)

रसूल ने कहाः आपस में घृणा, जलन और एक दूसरे के विरोध में बुरी चाल न चलो। ईश्वर ने भक्तों आपस में भाई-भाई बनजाओ। मुस्लिम के लिए अपने किसी मुस्लिम भाई से तीन दिन से अधिक बात ना करना शोभा नही देता। इस प्रकार कि वह इससे मुँह मुडे और यह उससे मुँह मुडे। इन दोनों में सबसे अच्छा व्यक्ति वह है जो अभिवादन (सलाम) से प्रारंभ करे (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है) आप ने आपसी प्रेम और दयालुता से प्रेरित करते हुए यह कहाः जिस महान प्रभु के हाथ में मेरी जान है उसकी क़सम, तुम स्वर्ग में उस समय तक प्रवेश न कर सकोगे जब तक कि तुम ईमान ना लाओ। तुम उस समय तक ईमान वाले न बनोगे जबतक कि तुम आपस में एक दूसरे के साथ प्रेम न करो। क्या मै वह बात तुम्हें न बताऊँ जो तुम्हारे लिए आपसी प्रेम का कारण बनती हो। तुम आपस में सलाम को फैलाओ। (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने वर्णन किया हैं) ईश्वर के रसूल से यह प्रश्न किया गया है कि लोगों में सबसे अधिक सर्वश्रेष्ठ कौन है। आप ने कहा हर वह व्यक्ति जिसका मन पवित्र हो और ज़बान सच्ची हो। लोगों ने कहाः सच्ची ज़बान वाले को तो हम जानते हैं, लेकिन यह पवित्र मन वाला कौन है। आप ने कहाः धर्मपरायणता और उच्च नैतिकता रखनेवाला वह व्यक्ति है जिसके मन में न पाप है, न अन्याय है, न घृणा और न जलन है। (इस हदीस को इब्ने माज़ः ने वर्णन किया है)

8. आध्यात्मिक व भौतिक सभ्यता

इस्लामिक सभ्यता आध्यात्मिक विचार लेकर आयी। साथ-साथ उसने भौतिकवाद को नही भूला और न छोडा। निश्चय ही ईश्वर ने मानव को आत्मा और भौतिक सामाग्री से पैदा किया। मानव के जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों भागों के लिए हर तरह के साधन से सहायता की। किन्तु शरीर के लिए उपयुक्त वातावरण बनाया जिसमें वह धरती पर रहता है। इसी प्रकार ईश्वर ने आध्यात्मिक भाग के लिए आकाशीय प्रकाशना मानव के लिए अपने रसूलों द्वारा अवतरित की, ईश्वर ने आत्मा और भौतिक सामाग्री से मानव कि सृष्टी के बारे

आध्यात्मिक सुख



डेल कर्नेजी

अमेरिकन लेखक

मेरे अनुभव से अब महत्वपूर्ण बात यह है कि धर्म की क्या क्या अनुग्रहें मुझ पर हैं। जिस प्रकार से कि बिजली, भोजन और साफ़ जल की अनुग्रहें मेरे लिए महत्वपूर्ण है। यह अनुग्रहें हमारे सुख जीवन के लिए सहायक हैं, लेकिन धर्म इन से अधिक कई ज़्यादा अनुग्रह हम पर करता है। निश्चय धर्म आध्यात्मिक सुख का मददगार है, या वह (विलियम जेम्स के अनुसार) बुलंद होस्ले के साथ जीवन बिताने में सहायक है, वह जीवन जो सुख प्रसन्नता और संतुष्ट पर आधारित होता है। धर्म हमारे लिये विश्वास, आशा और साहस का मददगार है, धर्म मुझ से डर, चिंता और परेशानी दूर करता हैछ मुझे धर्म जीवन के लक्ष्यों से परिचय कराता है। मेरे सामने सुख की संभावना का मार्ग खोल देता है और हमारे जीवन के रेगिस्तान के बीच हरा भरा घर बनाने पर मेरी सहायता करता है।

इस्लाम की महानता



हमारे ख़ल्म चाहे कितना ही वाग्मिता रखते हों, फ़िर भी इस्लाम को इनकी आवश्यकता नही है। लेकिन हमारे ख़ल्मों को इस्लाम की आवश्यकता है। क्योंकि इस्लाम आध्यात्मिक और चारीत्रिक विषयों पर आधारित है। इस्लाम में वह चमत्कारी ख़ुरआन भी है, जिस से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

में यह कहा। याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, मैं सड़े हुए गार की खनखनाती हुई मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करनेवाला हूँ। तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना। (अल-हिज्र, 28, 29)

आत्मा और शरीर दोनों मिलीझुली चीज़ें हैं, जो एक दूसरे से मृत्यु तक भिन्न नही होती। इनमें से हर एक कि अपनी-अपनी आवश्यकताएँ हैं। शरीर खाना-पानी और वस्त्र की आवश्यकता रखता है। अगर किसी एक भाग में कमी हो तो सारा शरीर इससे प्रभावित हो जाता है। अगर मानव भोजन में कमी करें तो आप उसको कमज़ोर व निर्बल पायेंगे जो सुखी जीवन बिताने से असहाय होगा। यही हाल खाने और पीने का भी है।

शरीर कि आवश्यकताओं में से किसी एक में भी कमी का प्रभाव सारे शरीर पर होगा, जिससे मानव जीवन-यापन करने से निर्बल होगा, और शरीर के दूसरे भाग सुखी जीवन-यापन करने में सहायक न होंगे। आत्मा की भी कुछ आवश्यकताएँ हैं। आत्मा प्रेम, दया, त्याग के बिना जीवित नही रह सकती। आत्मा उस ईशवर को प्राप्त किये बग़ैर कैसे आश्रय में आये। मानव जब अपनी आत्मा की आवश्यकताएँ पूरी करने में कमी करे, तो वह बिल्कुल उस मानव के समान है जो खाने-पीने में कमी करता हो। मानव को कैसे सुख मिलेगा और कैसे उसकी स्थिति सुधर जायेगी, जबकि उसका दूसरा



भाग(आत्मा) घायलों से पीडित हो। अफ़सोस की बात है कि पश्चिमी सभ्यता आत्मा का सुख भूल गयी। इसी कारण वह संपूर्ण सुविधाओं के होते हुए भी इस संसार में सुखी नही है। आधुनिक सभ्यता शरीर और भौतिकवाद की सेवा के लिए सर्वश्रेष्ठ है। लेकिन वह यह भूल गयी, या भूलना चाहती है कि आत्मा के बिना शरीर को प्रसन्नता, सफलता और सुख, बल्कि वास्तविक रूप से सभ्यता भी उपलब्ध नही है।

9. मानव और उसके अधिकारों का ध्यान रखनेवाली सभ्यता।

यह बात ज्ञात है कि मानवीय अधिकारों का उपयुक्त होना किसी भी देश के नियम और अपने वासियों के अधिकारों की सुरक्षा व स्वतंत्रता का ध्यान रखने का ज्ञान प्राप्त करने में मानक है। इसी प्रकार अधिकारों का उपयुक्त होना वासियों कि जागरुक्ता और

दोश हमा रा है

हमारे लिए इस बात का साफ़ । होजाना ज़रूरी है कि मुसलमानों की लापरवाही ही वर्तमान काल में विघटन का कारण है। क्यों कि इस्लामिक शिक्षाओं का कोई दोष नही हैं।

योबूल्ड फ़ायिज़

ऑस्ट्रियी आलोचक



इन अधिकारों से लाभ उठाने कि सीमा के लिए भी मानक है। बल्कि लोकतंत्र प्रणाली का सब से महत्वपूर्ण भाग मानवीय अधिकार का ध्यान रखना है।

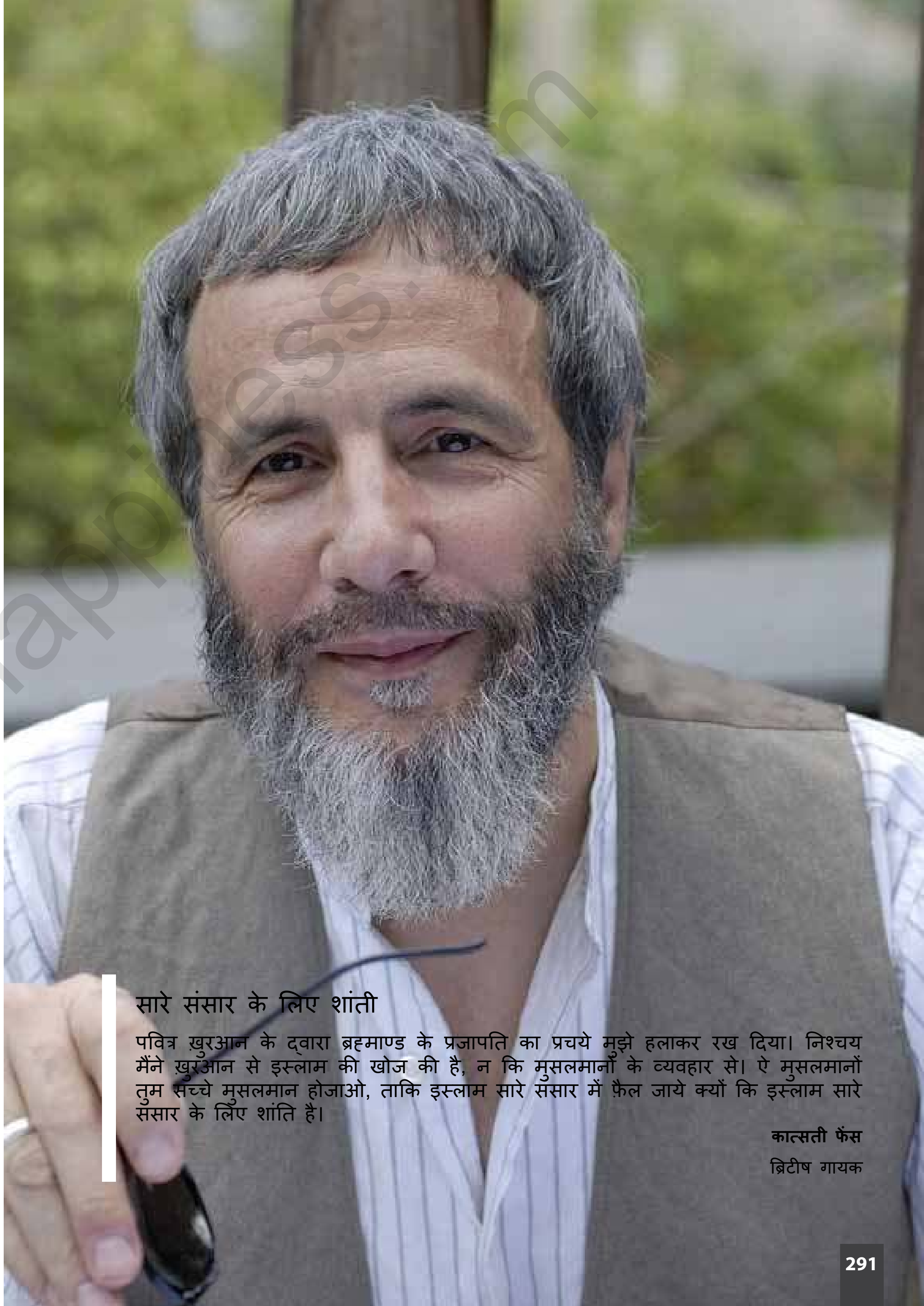
इस्लामिक सभ्यता ने मानवीय अधिकार के प्रति वास्तविक रूप में एक अनोखा नमूना पेश किया है। यही इस्लामिक सभ्यता की महानता है कि वह केवल निनाद (नारा) नही है। इसी कारण इस्लाम में सब से अधिक मानवीय अधिकारों को सर्वश्रेष्ठ बनानेवाली कुछ चीज़े वह है, जो निम्न लिखित है।

1. इन अधिकारों का स्त्रोत इस बात पर आधारित है कि सरदारी और संप्रभुता ईशवर के लिए है। ईशवर ने कहा। निर्णय का सारा अधिकार अल्लाह ही को है, वही सच्ची बात बयान करता है और वही सबसे अच्छा निर्णायक है। (अल-अनआम, 57)

जिस प्रकार जीव की ओर देवत्व दृष्टि है, उसी प्रकार अधिकार की ओर इस्लामिक नियम दृष्टि रखता है और लाभ दायक चीज़ों का ध्यान रखता है।

2. स्थिरताः समय के बदलने से और परिस्थितियों में परिवर्तन से यह अधिकार नही बदलते।
3. परोपकार के स्थान से अधिकारों के निकलने ध्यान रखनाः इस्लाम में अधिकार उस स्थान से निकलते हैं, जिसमें कि भक्त ईशवर के डर के सामने होता है। यह वह स्थान है जिसके प्रती रसूल ने यह कहाः तुम ईशवर की इस प्रकार से प्रार्थना करो कि तुम उसको देख रहे हो। अगर तुम उसको देख ना पाओ, निस्संदेह वह तो तुम्हें देख रहा है। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया।
4. मानवीय अधिकार इस धर्म की प्रकृति के बीच पूर्ण रूप से एकताः इस्लाम ने अधिकारों को ऐसे ही नही छोड़ दिया, बल्कि इस्लामिक नियम और लक्ष्य ने सीमाओं में इनको सीमित रखा। उच्च चरित्र और नैतिकता से संबंधित रखा। इन चरित्र का उल्लंघन अधिकार का उल्लंघन माना। अंत में इनको धर्म से जोडा और इनका स्त्रोत देवत्व जाना। इसी कारण मुस्लिम व्यक्ति पर यह चीज़ें अधिरापण है ना कि केवल अधिकार। इस्लाम में अधिकारों को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखा गया, जो इस धर्म कि देवत्व प्रकृति के अनुसार है।
5. इस्लाम में मानवीय अधिकार इस बात पर आधारित है कि मानवीय समाज की संप्रभुता, मानवीय व्यक्तियों के संप्रभुता की शाखा है, ना कि इसका विपरीत है। जैसा कि संसारिक नियमों की स्थिती है। ईशवर ने कहा।





सारे संसार के लिए शांती

पवित्र ख़ुरआन के द्वारा ब्रह्माण्ड के प्रजापति का प्रचये मुझे हलाकर रख दिया। निश्चय मैंने ख़ुरआन से इस्लाम की खोज की है, न कि मुसलमानों के व्यवहार से। ऐ मुसलमानों तुम सच्चे मुसलमान होजाओ, ताकि इस्लाम सारे संसार में फ़ैल जाये क्यों कि इस्लाम सारे संसार के लिए शांति है।

कात्सती फंस

ब्रिटीष गायक

इसी कारण हमने इसराईल की संतान के लिए यह अध्यादेश पारित कर दिया गया था जिसका उन्हें ध्यान रखना है कि किसी व्यक्ति को किसी के ख़ून का बदला लेने या धरती में फ़साद फैलाने के अतिरिक्त किसी और कारण से मार डाला तो मानो उसने सारे ही इन्सानों की हत्या कर डाली। और जिसने उसे जीवन प्रदान किया, मानो सारे इनसानों को उसने जीवन दान किया। उनके पास हमारे रसूल स्पष्ट प्रमाण ला चुके हैं, फिर भी उनमें बहुत-से लोग धरती में ज़्यादतीयाँ करनेवाले ही हैं। (अल-माइदा, 32)

6. इस्लाम धर्म दूसरे अन्य धर्म के मुक़ाबले बहुत समय पहले मानवीय अधिकारों का विवरण करता हैः इस्लाम धर्म ने मानव के लिए जिन अधिकारों की ज़मानत दी है। उनमें आज तक बौद्धिक संघर्ष या क्रांती और दावेदारी नही हुई, जिस प्रकार कि लोकतंत्र और उसके विकास के कारणों के भीतर मानवीय अधिकारों के इतिहास कि परिस्थिती है। जैसा कि फ्रांस, अमेरिका और अन्य देशों का हाल है। निश्चय मानवीय अधिकार के नियम और आदेश ईशवर द्वारा प्रकाशन हुए हैं। इन अधिकारों की ओर पहले से न कोई विचार हुआ था, न उसकी आकांक्षा किसी मन में थी, और न इनको प्राप्त करने में कोई संघर्ष हुआ था।
7. यह अधिकार वास्तविक है। जीवन से संबंधित है। और मानवीय आवश्यकताओं को पूर्ती करनेवाले हैं। उन अधिकारों के विपरीत जो अन्य धार्मिक नियमों मे है। वे सब दर्शन के रंग से रंगे हुए हैं।
8. कुछ वह बातें जिससे इस्लामिक नियम मानवीय अधिकार के प्रती विशेषता रखते हैं। इनमे सबसे सर्वश्रेष्ठ अधिकार यह हैः माता-पिता और बन्धुओं का अधिकार, संतान पर, रिश्तेदारी के अधिकार, भ्रूण के अधिकार, धार्मिक और सांसारिक शिक्षा में प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार। वैध आय और ब्याज़ से रुकने का अधिकार, भलाई की ओर बुलाने का, अच्छाई का आदेश देने और बुराई से रोकने का अधिकार है।
9. मानवीय अधिकारों के मुद्दे में वास्तविक रूप से इस्लामिक नियम अन्य नियमों के विपरीत मानवीय सम्मान और ईशवर पर विश्वास की भावनाओं को प्रोत्साहित करने पर आधारित है। और सांसारिक जीवन में पूर्ण रूप से अनुरूपता के अनुसार मानवीय लाभ के लिए ब्रहमाण्ड की हर चीज़ को ईशवर द्वारा मानव के लिए अनुयायी बनाने की परिभाषा पर आधारित है। इस्लाम को इस बात से की चिंता नही थी कि इतिहास में किसी भी समय ऐसी सभ्यता प्रकट नही हुई जो (निहित) स्वार्थ से दूर होकर मानवीय अधिकार को उपयुक्त बनाती है। वरना कितने ऐसे नारे हैं, जिनसे आवाज़ें बुलन्द होती हैं और बैनर लगाये जाते है। लेकिन जब इन नारों को बुलन्द करनेवाले संदेह के स्तर निकट हो, तो इन की



आड़ मे उनकी छुपी हुई आशय का प्रकट हो जाना बहुत कठिन है।

इस्लाम के रसूल मुहम्मद के प्रवेश होने के बाद मानवता को सामान्य रूप से सभ्यता उपलब्ध हुई। फिर भी कुछ लोग मुसलमानों की प्रस्तुत परिस्थिती और उनके निम्न वर्ग होने के कारण के प्रति प्रश्न करते हैं, हालांकि इस्लाम ने उनके लिए उच्च सभ्यता प्रदान की है। लेकिन यह आश्चर्य जनक प्रश्न उस समय दूर हो जाता है, जब हमे यह ज्ञान हो जाये कि मुसलमानों की प्रस्तुत परिस्थिती उनके धर्म कि वास्तविक रूप से प्रतिनिधी नहीं करती है। अधिकतर मुस्लिम जब अपने धर्म, अपनी पुस्तक और अपनी रसूल की वाणी में वर्णन किये हुए नियमों से दूर हो गये, तो वे मंदता से पीडित हो गये। वरना तो यह संसार सारी मानवता के लिए इस्लामी सभ्यता से अधिकतर किसी अन्य सभ्यता को प्रसन्न नही देखा है। इतिहास के चरित्र पढना और लेखकों की बातें सुनना, (यहाँ तक कि वह लेखक जो मुसलमान नही है) इस विषय को जानने के लिए काफी है कि मुसलमानों के अधः पतन से संसार का कितना नष्ट हुआ है।



मुसलमानों के लिए यह संभव है कि वे संसार में अपनी सभ्यता उसी गती से फ़ैला सकें, जिस गती से वे पूर्व काल में फ़ैलाए। शर्त ये है वे अपने पूर्व चरित्र की ओस लौट आयें। इसलिए कि यह निपूर्ण संसार उनकी सभ्यता कि शक्ती के सामने खडे होने की क्षमता नही रखता है।



ख़ुरआन और हदीस का चमत्कार

हर रसूल के लिए कुछ निशानियाँ होती हैं, जो उसके सच्चे नबी और रसूल होने का प्रमाण है। उदाहरण के रूप में मूसा कि निशानी उनकी लाठी थी। ईसा की निशानी यह थी कि वह जन्मांध, कोढ़ी को स्वस्थ करदेते थे, और मृत्यु को ईश्वर के आदेश से जीवित करदेते थे। नबी और रसूलों के समापक (मुहम्मद) कि निशानी, मानवता के शेष रहने तक हर समय और स्थान के लिए उपयुक्त होने के अनुसार यह ख़ुरआन है। ख़रआन मार्गदर्शक पुस्तक है, इसी प्रकार से वह हर विषय में चमत्कार है। ख़ुरआन का चमत्कार होना पूर्वकाल से लेकर आज तक उसके सन्देश, और रसूल के सच्चे होने का सबूत है। इसी तरह इस बात का भी प्रमाण है कि यह पुस्तक प्रजापति अमर प्रभु की ओर से अवतरित की गयी है। इसको नबी और रसूलों के साथ भेजा गया है, जो हर समय और स्थान के लिये उपयुक्त है। उपयुक्त जिन कारणों का विवरण किया गया, इसके साथ-साथ ख़ुरआन का चमत्कार यह भी है कि वह अपनी वैज्ञानिक सूचनाओं में भी अद्भुत हैं। जैसा कि प्रकृतिक ज्ञान के रहस्य के प्रति ख़ुरआन कि विवरण की हुई बातों मे समाकालिन शोधकर्ता के प्रयासों से मालूम होता है। जब कि इस प्रकृतिक ज्ञान की खोज वर्तमान काल में ही हुई है। उदाहरण के रूप में मानव की सृष्टी और भ्रूण के प्रति संपूर्ण रूप से मानवता को ज्ञान प्राप्त होने से कई वर्षों पहले विवरण हुआ है। ईश्वर ने कहा। हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया। फिर हमने उसे एक सुरक्षित ठहरने की जगह टपकी हुई बूँद बनाकर रखा। फिर हमने उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया, फिर हमने उस लोथडे को बोटी का रूप दिया, फिर हमने बोटी की हड्डियाँ बनाई, फिर हमने उन हड्डियों पर माँस चढ़ाया, फिर हमने उसे एक दूसरा ही सृजन रूप देकर खड़ा किया। अतः बहुत ही बरकतवाला है अल्लाह, सब से उत्तम स्पष्टा । (अल-मोमिनून, 12-14)

ईशवर ने कहा। वह तुम्हारी माँओं के पेटों में तीन अँधेरों के भीतर तुम्हें एक सृजन रूप के पश्चात अन्य एक सृजनरूप देता चला जाता है। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नही। फिर तुम कहाँ फिर जाते हो। (अल-ज़ुमर, 6)

जब वैद्य (डॉक्टर) अपने संदर्भो और खोज की ओर देखें, तो बिल्कुल उसी प्रकार पाया, जिस प्रकार कि ख़बर रखने वाला ज्ञाता ईशवर ने विवरण किया। इसके साथ साथ ख़ुरआन ने शरीर में ज्ञानेन्द्रिय स्थान का वर्णन किया। ईशवर ने कहा। जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया उन्हे हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब भी उनकी खाले जाएँगी तो हम उन्हे दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखते ही रहें। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्तवदर्शी है। (अल-निसा, 56)

ख़ुरआन ने आकाश को विशाल होने का वर्णन किया। ईशवर ने कहा। आकाश को हमने अपने हाथ के बल से बनाया और हम बड़ी समाई रखनेवाले हैं। (अल-ज़ारियात, 47)

सूर्य को अपने ठिकाने में चलते रहने का ख़ुरआन में विवरण हुआ है। ईशवर ने कहा। और एक निशानी उनके लिए रात है। हम उसपर से दिन को खींच लेते हैं। फिर क्या देखते हैं कि वे अंधेरे में रह गये। और सूर्य अपने नियत ठिकाने के लिए चला जा रहा है। यह बाँधा हुआ हिसाब है प्रभुत्वशाली, ज्ञानवान का। (या-सीन, 37-38)

रसूल की वाणी (हदीस) भी इस चमत्कार से कुछ दूर नही है। माँ आइशा कहती है कि रसूल ने कहाः आदम की संतान के हर मानव कि 360 जोड़ों पर सृष्टी हुई है। जिसने ईशवर की महत्ता की, प्रशंसा की, ईशवर के एक होने की गवाही दी। ईशवर कि कृतज्ञता की, उससे



भ्रूण का विवरण

मुझे इस बात को स्वीकार करने में दुविधा नही होती है कि ख़ुरआन ईशवर की वाणी है। क्यों कि ख़ुरआन ने भ्रूण के बारे में जो विवरण किया है, उनको सातवीं सदी कि विज्ञानिक खोज पर आधारित करना संभव नही है। एक ही उचित परिणाम यह है कि ये विवरण ईशवर द्वारा मुहम्मद की ओर वह्यी (रहस्योद्घाटन) हुई हैं।

प्रोफ़ेसर यो शेवदी कोज़ान

टोकियोवैद्यशाला का डैरेक्टर



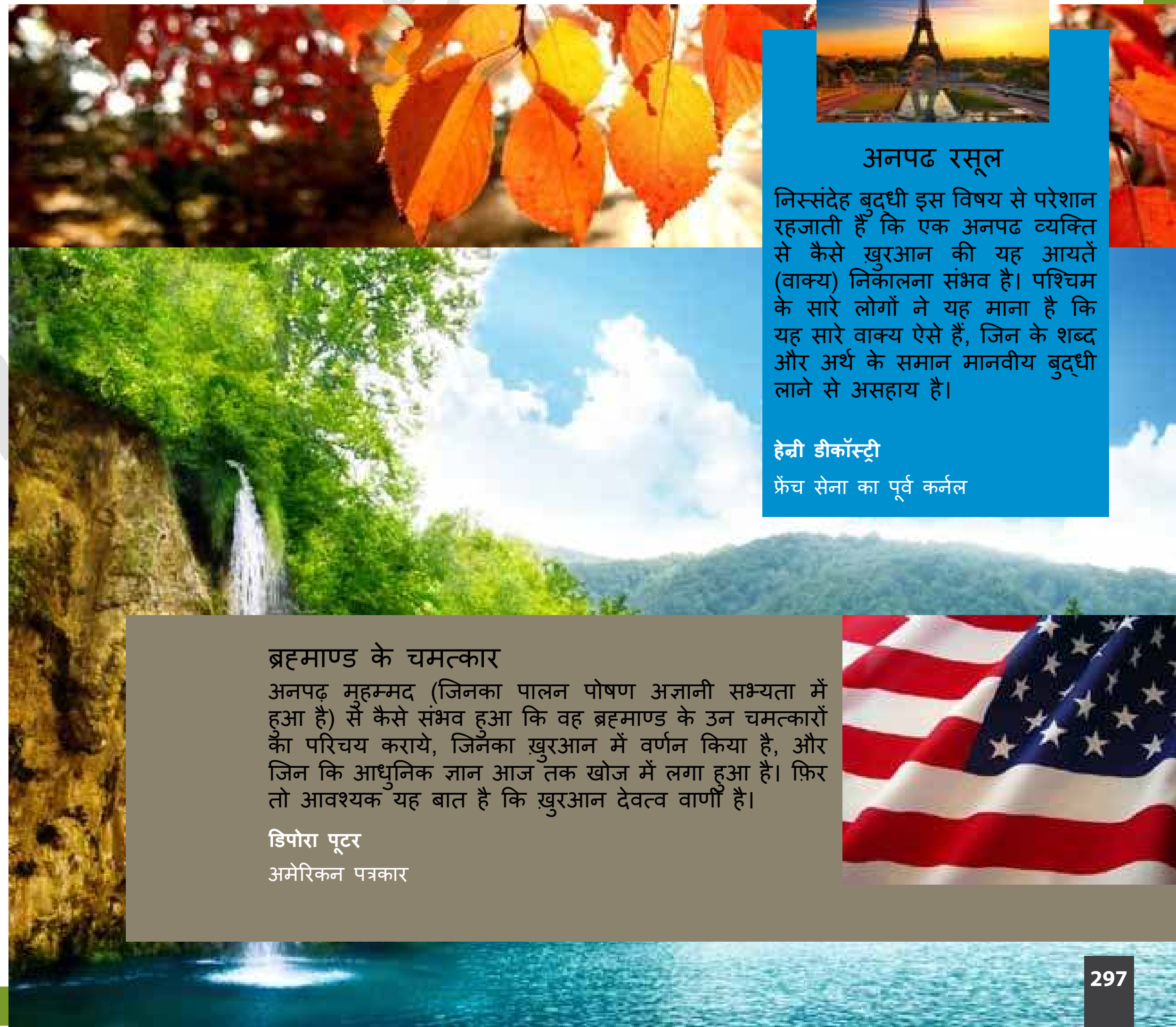
मुक्ती चाही, रास्ते से पत्थार, काँटा या हड्डी हटायी, अच्छाई का आदेश दिया या बुराई से रोका । (ईशवर के रसूल ने इसी प्रकार से 360 जोड़ों की संख्या बतायी) तो वह उस दिन स्वयं को नरक से दूर करलिया। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है)

वैज्ञानिक रूप से यह बात प्रमाणित है कि मानवीय शरीर में इन जोडों के बिना मानव के लिए सांसारिक जीवन से प्रसन्न होना संभव नही है। न धरती में अपने उत्तरधिकार होने के कर्तव्य वह पूरा कर सकता है। इसी कराण मनुष्य पर यह अधिरोपण है कि वह हर दिन ईशवर की इस अनुग्रह का आभारी रहे, जो जीव के हर विषय में उसकी महान कला का प्रमाण है। रसूल की इस वाणी में अद्‌भुत बात यह है कि आपने ऐसे समय में मानवीय शरीर के जोड़ों की संख्या का विवरण किया, जबकि किसी को इसके बारे में थोडासा ज्ञान भी प्राप्त नही था। और आज कि इक्कीसवीं शताब्दी में भी अधिकतर लोग नही जानते। बल्कि कई वैद्य शिक्षक भी इस बात से अज्ञानी है। यहाँ तक कि कुछ समय पहले मानवीय शरीर के जोड़ों की संख्या बिल्कुल उसी समान बतायी गयी, जिस समान के मुहम्मद ने चौदाह सौ वर्ष पहले बताया था। इनमे से 147 जोड़ रीढ़ की हड्डी में 24 जोड़ छाती में, 86 जोड़ शरीर के ऊपरी आधे भाग में, 88 जोड़ शरीर के निचले आधे भाग मे और 15 जोड़ कमर मे हैं।

स्वयं यह प्रश्न उठता हैः प्रजापति ईशवर के अतिरिक्त कौन है जिसने नबी और रसूलों के समापक मुहम्मद को यह विशेष वैज्ञानिक ज्ञान कि शिक्षा दी, जिसको मानवीय ज्ञान ने अभी बीसवीं शताब्दी के अंत में प्राप्त किया है।

कौन है जिसने मुहम्मद मुस्तफा को इस जैसी अनदेखी चीज़ों कि ओर बुलाया। अगर ईशवर को अपने महान ज्ञान के द्वारा यह पता न होता कि किसी न किसी दिन मानव शारीरिक तथ्य तक पहुँच जायेगा। तो रसूल की इस वाणी में स्थिर प्रकाशवाने इस समापक रसूल कि ईश देवत्व का सत्य प्रमाण है। इसी प्रकार रसूल के आकाशीय प्रकाशन से सच्चे जोड़ का सबूत है।

जब तक ज्ञान और सभ्यता का मार्ग उच्च चरित्र और नैतिकता की ओर ले जानेवाला न हो, तो वह सभ्यता विनाश करनेवाली है, और वह ज्ञान अप्रसन्नता और नष्ट का कारण है, ना कि मानवता की सेवा और उन्हें प्रसन्न बनाने का कराण। इसी कारण ज्ञान और सभ्यता का मार्ग ही नैतिकता का मार्ग भी है। जिस प्रकार ज्ञान और सभ्यता के बिना नैतिकता का मार्ग केवल एक मिथक और ख़्याल है, इसी प्रकार नैतिकता के बिना सभ्यता और ज्ञान का मार्ग प्रत्येक व्यक्ति, समाज, समूह और मानवता के लिए विनाशक है।



अनपढ रसूल

निस्संदेह बुद्‌धी इस विषय से परेशान रहजाती हैं कि एक अनपढ व्यक्ति से कैसे ख़ुरआन की यह आयतें (वाक्य) निकालना संभव है। पश्चिम के सारे लोगों ने यह माना है कि यह सारे वाक्य ऐसे हैं, जिन के शब्द और अर्थ के समान मानवीय बुद्‌धी लाने से असहाय है।

हेन्री डीकॉस्ट्री

फ्रेंच सेना का पूर्व कर्नल

ब्रह्माण्ड के चमत्कार

अनपढ़ महुम्मद (जिनका पालन पोषण अज्ञानी सभ्यता में हुआ है) से कैसे संभव हुआ कि वह ब्रह्माण्ड के उन चमत्कारों का परिचय कराये, जिनका ख़ुरआन में वर्णन किया है, और जिन कि आधुनिक ज्ञान आज तक खोज में लगा हुआ है। फ़िर तो आवश्यक यह बात है कि ख़ुरआन देवत्व वाणी है।

डिपोरा पूटर

अमेरिकन पत्रकार

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



नैतिकता का मार्ग

अनुक्रमणिका

नैतिकता का मार्ग

नैतिकता का मार्ग

प्रसन्नता के मार्ग में निश्चित रूप से नैतिकता उमड़ती है। इस मार्ग के अनुयायी के लिये इस मार्ग के वश में प्रेम, न्याय, सत्यता, उदार, सहिष्णुता, क्षमा, शर्म, शांति, विनम्रता, हमदर्दी, करूणा, सलाह और इसके अतिरिक्त अधिकतर उच्च आचार की इस मार्ग में उपलब्धी आवश्यक है। साथ-साथ यह मानवीय महत्व और उच्च चरित्र के आशाओं का मार्ग है। चरित्र कोई विलासित सामाग्री नही है, जिसके बिना जीवन यापन करना संभव हो। बल्कि चरित्र का स्थान उन सारे नियमों में सब से प्रथम है, जिन पर जीवन कि दिशा निर्भर होती है। अगर प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र अच्छे हों तो इसका सकारात्मक परिलक्ष उनके जीवन और समाज पर होता है, चाहे वे सब दुर्भाग्यशाली और अप्रसन्न हो। इसी कारण इस्लाम ने अपने अनुयायियों के मन में उच्च चरित्र के बीज बोने और इनका वास्तविक जीवन में उपयोग करने पर प्रोत्साहित किया। निश्चय ईशवर के रसूल ने स्वयं ईशवर द्वारा प्रवेश होने का पहला लक्ष्य यह वर्णन किया: निस्संदेह मुझे नैतिकता को संपूर्ण करने के लिये भेजा गया। (इस हदीस को इमाम बैहक़ी ने वर्णन किया।) तो मालूम यह हुआ कि मानवता के इतिहास में सबसे बडी सभ्यता कि स्थापना करने के लिये हर समय और स्थान में फैलनावाला इस्लामिक संदेश, जिसको प्रस्तुत करनेवाले ने प्रकाश को पहुँचाने और लोगों को उसके आस-पास इकट्ठा करने में अधिक प्रयत्न किया है, यह संदेश अपने भीतर मानवीय चरित्र को उच्च बनाने, मानवता को पवित्र बनाने और उनके सामने पूर्णता की संभावनायें रोशन करने के अतिरिक्त कोई और लक्ष्य नही रखता है।

रसूल के प्रवेश होने का लक्ष्य उच्च चरित्र और उसका विकास है। इसी प्रकार मानवता को पवित्र बनाना है। निश्चय लोग (आप के प्रवेश होने से पहले) इस चरित्र की अधिकतर चीज़ों से गुमराही में थे। न उसका ज्ञान रखते थे और न इसकी तरफ ध्यान देते थे। ईशवर ने कहा। वही है जिसने उम्मियों में उन्हीं में से एक रसूल उठाया जो उन्हें उसकी आयतें पढकर सुनाता है, उन्हें निखारता है और उन्हें किताब और हिकमत (तत्तवदर्शिता) की शिक्षा देता है, निस्संदेह इससे पहले तो वे खुली हुई गुमराही में पडे हुए थे। (अल-जुमुआ, 2)

ईशवर ने यह भी कहा। जैसा कि हमने तुम्हारे बीच एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हें निखारता है, और तुम्हे किताब और हिकमत (तत्तवदर्शिता) की शिक्षा देता है और तुम्हें वह कुछ सिखाता है जो तुम जानते न थे। (अल-बक़रा, 151)





नैतिकता के नियम

ख़ुरआन में नैतिकता के नियम उच्च हैं ख़ुरआन के आभारी समूहों के चरित्र बदलते समय के साथ बिल्कुल ईसाइ धर्म के अनुयायी समूहों के समान बदल गए। अधिकतर महात्वपूर्ण परिणाम यह है कि ख़ुरआन अपने आदेशों का अनुसरण करने वाले समूहों पर प्रभावित है। इस्लाम के समान दूसरे धर्मों के लोगों के दिलों पर बहुत ही कम प्रभाव है। किन्तु आप कोई ऐसा धर्म नही पायेंगे, जो इस्लाम के प्रकार सदा प्रभावी रहा हो। ख़ुरआन पुरब के जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। जीवन के छोटे से छोटे भाग में इसका प्रभाव दिखता है।

गौस्तव लुबोन

फ्रेंच इतिहासकार

ईमान (विश्वास) का नैतिकता से संबंध ।

ईमान वह शक्ति है, जो मुस्लिम को अच्छी चीज़ों की ओर आकर्शित करती है। बुरी चीज़ों और पाप से दूर रखती है। किन्तु चरित्र की गिरवट ईमान की कमी का प्रमाण है। इसी प्रकार चरित्र की ऊँचाई ईमान की दृढ़ता कि निशानी है। ईश्वर के रसूल ने यह विवरण किया है कि दृढ़ ! ईमान निश्चित रूप से दृढ़ ! चरित्र पैदा करता है। चरित्र की न्यूनता ईमान की कमज़ोरी या बिल्कुल ईमान न होने का कारण है। परन्तु मुस्लिम के अतिरिक्त हर व्यक्ति किसी कि परवाह किये बिना नीच कार्य करता है। किसी के दोशी टहराने का उसको डर नही होता, और न वह अपने बुरे कार्यों का हिसाब-किताब रखता है। ईश्वर के रसूल कहते हैः शर्म और ईमान दोनों आपस में संबंधित है। अगर इनमें से एक समाप्त हो जाये, तो दूसरा भी समाप्त हो जाता है। (इस हदीस को इमाम बैहख़ी ने वर्णन किया।) बल्कि रसूल ने पडोसी के साथ दुर्व्यवहार को ईमान के न होने का प्रमाण माना । रसूल कहते हैः ईश्वर की क़सम कोई मोमिन नही हो सकता। ईश्वर की क़सम कोई मोमिन नही हो सकता। ईश्वर की क़सम कोई मोमिन नही हो सकता। लोगों ने पूछाः यह क्या बात है ईश्वर के रसूल ? आप ने कहा वह व्यक्ति जिसका पड़ोसी उसके दुर्व्यवहार से सुरक्षित न हो। लोगों ने कहाः यह दुर्व्यवहार क्या है ? आप ने कहाः बुरा व्यवहार। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने वर्णन किया।) इसी कारण जब ईश्वर अपने भक्तों को भलाई की ओर बुलाता है, या बुराई से घृणा पैदा करता है, तो इसको उनके मन में स्थिर ईमान का परिणाम मानता है। कितनी बार ईश्वर ने अपनी वाणी में यह कहा। ऐ। ईमान वालों।

फिर इसके बाद ईश्वर ईमान वालों पर लागू होने वाली चीज़ों का विवरण करता है। जैसे उसका यह आदेश ऐ ईमान लानेवालों। अल्लाह का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ। (अल-तौबा, 119)

इसी प्रकार आप रसूल को देखेंगे कि जब वह अपने अनुयायियों को उच्च चरित्र की शिक्षा देते हैं, तो इसको भी ईमान से संबंधित करदेते हैं। जैसे आपकी यह आज्ञाः जो व्यक्ति ईश्वर पर और अंतिम दिन पर विश्वास रखता है, तो उसको अपने अतिथि का सम्मान करना चाहिए। जो व्यक्ति ईश्वर और अंतिम दिन पर विश्वास रखता है, तो उसको पड़ोसी का ख्याल रखना चाहिये। जो व्यक्ति ईश्वर पर और अंतिम दिन पर विश्वास रखता है, तो उसको चाहिये कि अच्छी बात बोले या मौन रहे। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया।) इसी प्रकार इस्लाम मन में उच्च चरित्र के बीज बोने के लिए सच्चे ईमान और उसकी पूर्णता पर निर्भर करता है।

प्रार्थनायें और नैतिकता ।

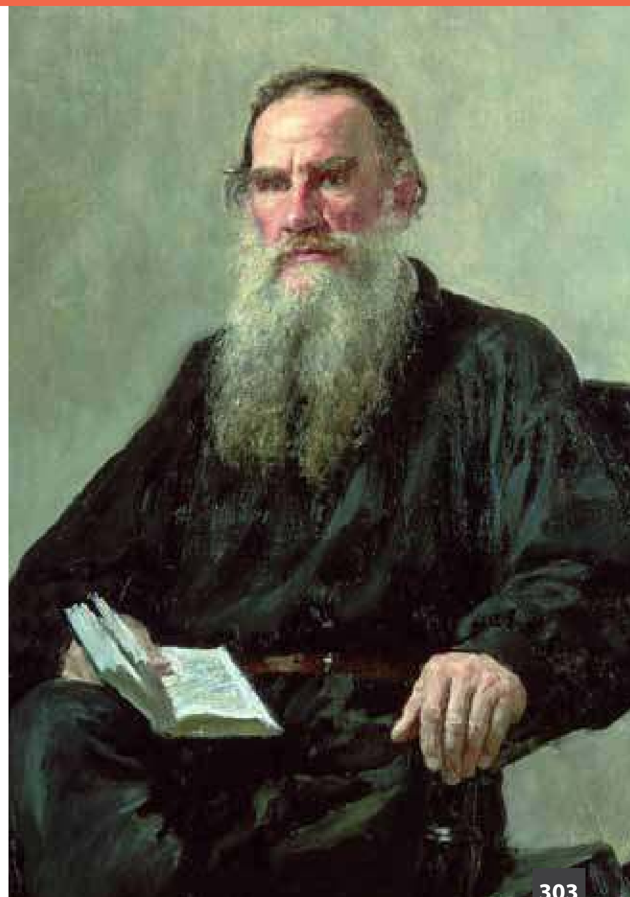
इस्लाम में प्रार्थनायें रहस्यमय बातें और बिना किसी लक्ष्य के संचलित नही है। बल्कि यह वह बातें और संचलन है जो मन को पवित्र और जीवन को सुखी बनाता है। इस्लाम के अध्यादेशों का लक्ष्य यह होता है कि मुस्लिम उच्च चरित्र के साथ जीवन-यापन करें और सदा इन चरित्र को अपनायें, चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही क्यों न बदल जायें। ख़ुरआन और हदीस दोनों इस तथ्य को खोल कर विवरण करते हैं। किन्तु नमाज़ का जब ईश्वर ने आदेश दिया, तो यह विवरण किया कि नमाज़ बुरे और ग़लत आचार से रोकती है। ईश्वर ने कहा। उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गयी है, और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और अल्लाह कि याद करना तो बहुत बडी चीज़ है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो। (अल-अनकबूत, 45)

निम्न आचार

महम्मद के सम्मानित होने के लिए यह बात काफी है कि उन्हों ने नीच अत्याचारिक समूहों को निम्न आचार की पकड़ से मुक्ती दिलाई। उन्के सामने विकास और परिवर्तन के मार्ग खोल दिये। महम्मद का लाया हुआ धर्म बुद्धी और तत्वदर्शता कै अनुसार होने के कारण सारे संसार पर शासन करेगा ।

टोल्सटियो

रशियन लेखक



इस्लाम में ज़कात (दान) केवल कर (टेक्स) नही है, जो धनी से लेकर निर्धन को दी जाती है। बल्कि इसका लक्ष्य दयालुता और कृपा के भावनाओं के बीज बोना, और विभिन्न समूहों के बीच प्रेम और परिचय के संबंधों को दृढ़-बनाना है। साथ-साथ मन को बुराइयों और पाप से पवित्र रखना, और समाज को सदव्यवहार कि ऊँचाइयों तक ले जाना है। ज़कात की यही प्रथम तत्वदर्शिता है। ईशवर ने कहा। तुम उनके माल में से दान लेकर उन्हें शुद्ध करो और उसके द्वारा उन (की आत्मा) को विकसित करो और उनके लिए दुवा करो। निस्संदेह तुम्हारी दुआ उनके लिये सर्वथा परितोष है। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है। (अल-तौबा, 103)

इसी कारण दान केवल धन खर्च करने में सीमित नही है, बल्कि अधिकतर ऐसे आचार भी दान में शुमार है, जिस से समाज और उसके सदस्य सुखी रह सके। रसूल ने तो दान कि परिभाषा में विस्तार करते हुए यह कहा: "आपका अपने डोल का पानी किसी भाई के डोल में डालना दान है" आपका किसी को भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना भी दान है। एक दूसरी रिवायत मे यह आया है: "आपका अपने भाई के सामने मुस्कुराना दान है। लोगों के पथ से हड्डी, पत्थर और कांटा हटाना दान है" भटके हुए व्यक्ति को सीधा मार्ग बताना भी दान है। (इस हदीस को इमाम बैहक़ि ने वर्णन किया) । उपवास कि ओर भी इस्लाम कि दृष्टी यह नही है की उपवास केवल खाने पीने से वंचित रहने का नाम है। बल्कि इस्लाम ने उपवास को ग़रीबों और पीडितों की कठिनाइयाँ से प्रभावित होने कि योजना माना है। साथ-साथ उपवास को मन की मार्गदर्शनी, मान्सिक इच्छाओं और पसंद को नियंत्रित रखने का साधन जाना है। ईशवर ने कहा। ऐ ईमान लानेवालों। तुम पर रोज़े! अनिवार्य किये गये जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर अनिवार्य किये गये थे, ताकि तुम डर रखनेवाले बन जाओ। (अल-बक़रा, 183)

रसूल ने कहा: जो झूठ बोलना और झूठ के अनुसार कर्म करना न छोडें, ईशवर को उसके खाना और पीना छोडने कि कोई अवश्यकता नही। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया) रसूल ने कहा: उपवास खाना पीना छोडने का नाम नही है। बल्कि खेल कूद और बुराई छोडने का नाम है। किन्तु अगर आपको कोई गाली दे या आपके साथ दुर्व्यवहार करे तो आप उसको कहो: मैं उपवास रखा हूँ। (इस हदीस को इमाम इब्ने-ख़ुज़ेमा ने वर्णन किया)

तीर्थयात्रा (हज) के प्रति कभी मनुष्य यह ख़याल कर सकता है कि वह नैतिकता के अर्थ से ख़ाली केवल एक यात्रा है। क्योंकि बहुत से धर्म कभी कभी रहस्यमय प्रश्नाओं पर आधारित होते हैं। लेकिन मनुष्य का यह खयाल ग़लत है। इस लिए कि ईशवर ने इस धार्मिक संस्कार के प्रति विवरण करते हुए यह कहा।



हज के महीने जाने-पहचाने और निश्चित है, तो जो इनमें हज करने का निश्चय करे तो हज में न तो काम-वासना कि बातें हो सकती हैं और न अवज्ञा और न लडाई-झगडे कि कोई बात। और जो भलाई के काम भी तुम करोगे अल्लाह उसे जानता होगा। और (ईश-भय का) पाथेय ले लो, क्योंकि सबसे उत्तम पाथेय ईश-भय ही है। और ऐ बुद्धि और समझवालों । मेरा डर रखो। (अल-बक़रा, 197)

उपरी, लिखित बातों से उन संबंधों की शक्ति का विवरण होता है, जो धर्म को नैतिकता से जोड़ते हैं। किन्तु इस्लाम के महत्वपूर्ण स्थंभ जैसे नमाज़, रोज़ा (उपवास), ज़कात(दान), हज(तीर्थयात्रा) और इस्लाम की दूसरी प्रार्थनायें वह मार्ग है, जो मानवता कि पूर्णता और ऐसे सुख जीवन के विकास की ओर लेजाते हैं, जिससे उच्च चरित्र और नैतिकता के साये में सुख और प्रसन्नता पैदा होती है। यह सारी प्रार्थनायें विभिन्न रूप में तो लगती है, लेकिन यह सब रसूल द्वारा वर्णन किये हुए लक्ष के अनुसार एक हैं। वह लक्ष रसूल की इस हदीस में है: मुझे नैतिकता को संपूर्ण करने के लिए भेजा गया। (इस हदीस को इमाम बैहक़ि ने वर्णन किया) इसी कारण प्रसन्नता का मार्ग नैतिकता पर निर्भर है, उसी के आस-पास घूमता है, और किसी भी स्थिति में इस मार्ग के भीतर नैतिकता प्रसन्नता से अलग नही हो सकती।



मार्शल ब्वाज़र

फ्रेंच आलोचक



नियम और नैतिकता

इस्लामिक सिद्धांत में ख़ानूनी और चारित्रिक ज़िम्मेदारी के बीच कोई अंतर नही है। खानून और चरित्र का यह अनोखा मज़बूत संगम प्रारंभ ही से इस्लामिक विधी के शक्तिमान होने की पुष्टी करता है।



छोटी सी छोटी बात के नियम

ख़ुरआन सारे समस्याओं का समाधान रखता है। धार्मिक और चारित्रिक नियमों के बीच संबन्ध पैदा करता है। समाजी इत्तेहाद और विधी बनाने, कष्ट, कठोरता और मिथक के प्रभाव को कम करने का प्रयास करता है। ख़ुरआन कमज़ोरों कि सहायता, भलाई करने और दयालुता अपनाने का आदेश देता है। दैनिक जीवन में आपसी सहायता की छोटी सी छोटी बात के लिये खानून बनाये हैं। व्यपार और विरासत के प्रति संतुलित नियम बनाए। पारिवारिक भाग में हर व्यक्ति के लिये, बालक, सेवक, जानवर, स्वस्थता और वेश-भुषा के प्रति व्यवहार को नियंत्रित किया ।

जैक यस रेज़्लर

फ्रेंच वैज्ञानिक

इस्लाम में नैतिकता का स्थान ।

प्रसन्नता का मार्ग धर्म, चरित्र और सिद्धांत के नियमों मे नैतिकता के आधार पर निर्भर है। ईश्वर के साथ विनम्रता और विनयशीलता से इसका प्रारंभ होता है। स्वयं, साथी, बन्धु, पड़ोसी, शत्रु, विरोधी, यहाँ तक कि पशु-पक्षियों और प्रकृति के साथ, बल्कि समुदाय और पेड़-पौधों के साथ उच्च व्यवहार पर इसका अंत होता है। यह सब बातें बोल-चाल, क्रम, बल्कि मन और विचार में भी नैतिकता को चाहती है। बोल-चाल में उच्च चरित्र के एक नियम का विवरण करते हुए ईश्वर यह कहता है। और यह कि लोगों से भली बात कहो। (अल-बक़रा, 83)

ईश्वर ने कर्म में उच्च चरित्र के नियम को वर्णन करते हुए यह कहा। बुराई को उस ढ़ंग से दूर करो जो सबसे उत्तम हो। हम भली-भाँती जानते हैं, जो कुछ बातें वे बनाते हैं। (अल-मोमिनून, 96)

जो व्यक्ति ईश्वर कि पवित्र किताब में सोंच-विचार करेगा, तो उसको नैतिकता के आदेशों से पूर्ण पायेगा। आप ईश्वर कि इन वाणियों में सोंच-विचार करो। ईश्वर ने कहा। अच्छाई का बदला अच्छाई के सिवा और क्या हो सकता है ? (अल-रहमान, 60)

ईश्वर ने कहा। और तुम एक-दूसरे को हक़ से बढ़कर देना न भूलो। (अल-बक़रा, 237)

ईश्वर ने कहा। जो बात तुम बता रहे हो उसमें अल्लाह ही सहायक हो सकता है। (यूसुफ़, 18)

ईश्वर ने कहा। और वह क़ियामत की घडी तो अनिवार्यतः आनेवाली है। अतः तुम भली प्रकार दरगुज़र (क्षमा) से काम लो। (अल-हिज़्र, 85)

ईश्वर ने कहा। क्षमा की नीती अपनाओ और भलाई का हुक्म देते रहो और अज्ञानियों से किनारा खींचो। (अल-आराफ, 199)

ईश्वर ने कहा। और जब वे व्यर्थ बात सुनते हैं तो यह कहते हुए उससे किनारा खींच लेते हैं कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म है। तुमको सलाम है। जाहिलों को हम नही चाहते। (अल-क़सस, 55)

ईश्वर ने कहा। न अच्छे आचरण परस्पर समान होते हैं और न बुरे आचरण। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र है। (हा-मीम अस-सजदा, 34)

ईश्वर के रसूल के चरित्र पूर्ण रूप से ख़ुरआन के अनुसार थे। कैसे आपके चरित्र ख़ुरआन के अनुसार न होते, जबकि ईश्वर ने आपके चरित्र की प्रशंसा करते हुए यह कहा। निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो। (अल-क़लम, 4)

इसी कारण आप (मुहम्मद) को ऐसे संदेश के साथ प्रवेश किया गया, जो नैतिकता के अतिरिक्त किसी और विषय को अधिक सम्मान नही देते। ईश्वर के रसूल ने कहाः ईमानवालों में सबसे उत्तम ईमान उस मनुष्य का है जिसके चरित्र अच्छे हो। और इनमें सबसे भला व्यक्ति वह है जो अपनी पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार करता हो। (इस हदीस को इमाम बैहख़ी ने वर्णन किया है) आप ने कहाः उच्च चरित्र भलाई है। बुराई वह है जो तुम्हारे मन में पैदा हो और तुम लोगों को इसका ज्ञान होना न पसन्द करते हो। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन



आरोप

भेद-भाव रखने वालों का यह अनुमान है कि मुहम्मद केवल शासन, उच्च स्थान और व्यक्त की इच्छा रखते थे। कदापी, इश्वर की खसम, जंगलों और खंडरात में रहने वाले इस महान पुर्ष के दिल में सर्वश्रेष्ट आत्मा है। जो दयालुता, प्रेम, भलाई और तत्वदर्शता से भरी हुई है। यह सारे विचार संसारिक लालच के अतिरिक्त है, और ऐसी भावनायें हैं जो शासन और उच्च स्थान कि इच्छा के विपरीत है। क्यों नही, वह एक पवित्र आत्मा है और उस समोह का एख व्यक्ति है, जिसका प्रेरणा और लगातार कोशीशों से ख़ाली होना संभव नही है।

टॉमस कार्लेन

स्काटलैंड का पत्रकार



न्याय और पवित्रता

इस पुर्ष के अंदर अपने सिद्धांतों के लिये अत्याचार और ज़ुल्म को उठाने की क्षमता, और इस पुर्ष को अपना सरदार और मुख्या मानने वाले, उस पर विश्वास करने वाले, अनुयायी लोगों कि उच्च नैतिकता, इसके साथ-साथ इस पुर्ष के महान कर्म उसके व्यक्तित्व में न्याय और पवित्रता होने का खुला प्रमाण है। मुहम्मद को केवल झूटा दावा करनेवाला समझने से समस्याएँ और अधिक हो जायेंगी, जिसका कोई साधन नही होगा। बल्कि प्रचीन इतिहास में कोई ऐसा व्यक्ति नही, जिस को मुहम्मद के समान सही सम्मान मिला हो।

मौंटोगो मेरीवार्ट

ब्रिटीष प्रचये विधी विचारक

किया।) आप ने कहाः निस्संदेह अश्लीलता और बुराई का इस्लाम में कोई स्थान नही है। और लोगों में उत्तम इस्लाम उस व्यक्ति का है जिसका चरित्र अच्छा हो। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया।) आपने यह भी कहाः क़ियामत के दिन मुस्लिम के तराज़ु में सबसे ज्यादा भारी चीज़ उसके उच्च चरित्र है। और ईश्वर दुर्व्यवहारी और पापी को पसन्द नही करता है। (इस हदीस को इमाम बैहक़ी ने वर्णन किया।)

ईश्वर के रसूल कहते हैं तुम में सबसे अधिक मेरा प्रिय और मुझसे निकट वह मनुष्य है जिसके चरित्र उच्च हो। तुममें से सबसे अप्रिय और क़ियामत के दिन मुझसे सबसे ज़्यादा दूर वह मनुष्य है जिसके चरित्र नीच हो। यह वह लोग है, जो असत्य बातें ज्यादा करते हैं। बिना सोंचे समझे अपने बातें कहने वाले, और सदा अपनी ज़बान चलाने वाले है। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया।)

इस्लाम में नैतिकता व्यापक और संपूर्ण है जिसका निम्न लिखित चीज़ों से प्रारंभ होता है।

ईशवर के साथ उच्च व्यवहार

ईशवर के साथ उच्च व्यवहार तीन चीज़ों में व्यापक है।

प्रथमः ईशवर पर विश्वास रखना और उसकी बतायी हुई सूचनाओं को सत्य मानना। ईशवर ने स्वयं अपने आप के प्रति यह कहा। अल्लाह के सिवा कोई इष्ट-पूज्य नही। वह तुम्हें क़ियामत के दिन की ओर ले जाकर इकट्ठा करके रहेगा, जिसके आने में कोई संदेह नही, और अल्लाह से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है। (अल-निसा, 87)

ईशवर की वाणी को सत्य मानना इस बात की आवश्यकता रखती है कि मानव इस वाणी पर विश्वास रखें, उसकी रक्षा करें और उसके मार्ग में प्रयास करता रहे, इस प्रकार कि ईशवर और उसके रसूल की बतायी हुई सूचनाओं के प्रति उसके मन में कोई संदेह पैदा न हो।

द्वितीयः इस बात की आवश्यकता है कि मानव ईशवर के आदेशों को स्वीकार करें। उनका पालन करें। ईशवर के आदेशों में से किसी भी आदेश का तिरस्कार न करें। जब वह ईशवर के किसी आदेश का तिरस्कार करें, तो यही ईशवर के साथ दुर्व्यवहार है। इसी कारण ईशवर ने उसकी वाणी के मुक़ाब्ले में अपनी इच्छा या सलाह प्रदान करने से हमें रोका। ईशवर ने कहा। ऐ ईमानवालों। अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह सुनता, जानता है। (अल-हुजुरात, 1)

तृतीयः ईशवर के बनाये हुए भाग्य को संतुष्टता और धैर्य के साथ स्वीकार करना है। भाग्य के प्रति ईशवर के साथ उच्च व्यवहार का मतलब यह है कि मनुष्य संतुष्ट रहें। अनुसरण करें और ईशवर के निर्णय और उसके बनाये हुए भाग्य से सुखी रहे। इसी कारण ईशवर ने धैर्य से काम लेनेवालों की प्रशंसा की है। ईशवर ने कहा। और धैर्य से काम लेनेवालों को शुभ-सूचना दे दो। जो लोग उस समय, जबकि उनपर कोई मुसीबत आती है, कहते हैं, निस्संदेह हम अल्लाह ही के हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं। (अल-बक़रा, 155, 156)





लोयेस सीडीव

फ्रेंच प्रचये विधी विचारक

नैतिक धर्म

ख़ुरआन कि हर वाक्य (आयत) में आप ईशवर के लिये महा प्रेम का संदेश पायेंगे। ख़ुरआन में नैतिक व्यवहार के विशेष नियमों द्वारा अच्छे कार्य पर उत्साहिक किया गया है। ख़ुरआन में भावनाओं को आपस में बाटने, अच्छे लक्ष रखने और गाली-गलोच देने वाले को माफ़ करने का संदेश है। ख़ुरआन में घमण्ड और गुस्से को दबाया गया है। यह संदेश दिया गया कि कभी-कभी विचार और निगाहों से भी पाप होता है। अपने वादों को काफ़िरों (नान-मुस्लिम) के साथ भी पूरा करने का आदेश है। आत्मसमर्पण का संदेश है। मार्गदर्शन और तत्वदर्शता से भरी हुई यह सारी बातें ख़ुरआन के नैतिक नियमों कि पवित्रता के सबूत के लिये काफ़ी है। ख़ुरआन में हर विषय का समाधान प्रदान किया गया है।



लोगों के साथ अच्छा व्यवहार ।

ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के साथ, विशेष तौर पर माता-पिता, रिश्तेदारों (यह वह लोग है जिनके साथ अच्छा व्यवहार करना फर्ज़ है) और पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है। ईश्वर ने कहा। और याद करो जब इसराईल की संतान से हमने वचन लिया, अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करोगे, और माँ-बाप के साथ और नातेदारों के साथ और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे, और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो। तो तुम फिर गये, बस तुममें बचे थोडे ही और तुम उपेक्षा की नीती ही अपनाए रहे। (अल-बक़रा, 83)

ईश्वर ने कहा। वफ़ादारी और नेकी केवल यह नही है कि तुम अपने मुँह को पूरब और पश्चिम की ओर करलो, बल्कि वफ़ादारी तो उसकी वफ़ादारी है जो अल्लाह, अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसके प्रति प्रेम के बावजूद, नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और माँगनेवालों को दिया, और गर्दनें छुडाने में भी, और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी, और अपने वचन को ऐसे ही लोग पूरा करनेवाले हैं जब वचन दे, और तंगी और विशेष रूप से शारीरिक कष्टों में, और लड़ाई के समय में जमनेवाले हैं, ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और यही लोग डर रखनेवाले हैं । (अल-बक़रा, 177)

ईश्वर ने कहा। वे तुमसे पूछते हैं, कितना ख़र्च करें। कहो, (पहले यह समझलो कि) जो माल भी तुमने ख़र्च किया है, वह तो माँ-बाप, नातेदारों और अनाथों और मुहताजों और मुसाफ़िरों के लिए ख़र्च हुवा है। और जो भलाई भी तुम करो, निस्संदेह अल्लाह उसे भली-भाँति जान लेगा । (अल-बक़रा, 215)

ईश्वर ने कहा। और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया और जिन लोगों ने उन्हें शरण दी और सहायता की वही सच्चे मोमिन है। उनके लिए क्षमा और सम्मानित उत्तम आजीविका है। और जो लोग बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया तो ऐसे लोग भी तुम ही में से हैं। किन्तु अल्लाह की किताब में ख़ून के रिशतेदार एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है। (अल-अनफ़ाल, 74-75)

ईश्वर ने कहा। अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ, और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े! में हों। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नही करता जो इतराता और डींगे मारता हो। (अल-निसा, 36)



ईशवर ने कहा। निश्चय ही अल्लाह न्याय को और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो। (अल-नहल 90)

ईशवर ने कहा। तुम्हारे रब ने फ़ैसला करदिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँचजायें तो उन्हें "उँह" तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टतापूर्वक बात करो। और उनके आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएँ बिछाये रखो और कहो, मेरे रब। जिस प्रकार उन्होंने बचपन में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर। जो कुछ तुम्हारे जी में है उसे तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है। यदि तुम सुयोग्य और अच्छे हुवे तो निश्चय वह भी ऐसे रुजू करनेवालों के लिए बडा क्षमाशील है। और नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी - और फ़ुज़ूल ख़र्चें न करो। निश्चय ही फ़ुज़ूल खर्चे करनेवाले शैतानों के भाई है, और शैतान अपने रब का बडा ही कृतघ्न है। किन्तु यदि तुम्हें अपने रब की दयालुता की खोज में, जिसकी तुम आशा रखते हो, उनसे कतराना भी पडे तो इस दिशा में तुम उनसे नर्म बात करो। (बनी इसराईल, 23-28)

ईशवर ने कहा। अतः नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी। यह अच्छा है उनके लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता के इच्छुक हों, और वही सफल है। (अल-रूम, 38)

ईशवर ने कहा। ऐ लोगों। अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दी। अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपनी माँगें रखते हो। और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। (अल-निसा, 1)

ईशवर ने कहा। यदि तुम उलटे फिर गये तो क्या इससे निकट हो कि धरती में बिगाड़ पैदा करो और अपने नातों-रिश्तों को काट डालो। (मुहम्मद, 22)





ईशवर ने कहा। भला वह व्यक्ति जो जानता है कि जो कुछ तुमपर उतरा है तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, कभी उस जैसा हो सकता है जो अन्धा है। परन्तु समझते तो वही हैं जो बुद्धि और समझ रखते हैं, जो अल्लाह के साथ की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और अहद (अभिवचन) को तोड़ते नही, और जो ऐसे हैं कि अल्लाह ने जिसे जोडने का आदेश दिया है उसे जोड़ते हैं और अपने रब से डरते रहते हैं और बुरे हिसाब का उन्हें डर लगा रहता है। और जिन लोगों ने अपने रब की प्रसन्नता की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ क़ायम की और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छिपे खर्च किया और भले चरित्र के द्वारा दुराचार को दूर करते हैं, वही लोग हैं जिनके लिये आख़िरत के घर का अच्छा परिणाम है, अर्थात, सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी संतानों में से जो नेक होंगे वे भी और हर दरवाज़े से फ़रिशते उनके पास पहुँचेंगे। (वे कहेंगे) तुमपर सलाम है उसके बदले में जो तुमने धैर्य से काम लिया। अतः क्या ही अच्छा परिणाम है आख़िरत के घर का। रहे वे लोग जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को उसे दृढ़ करने के बाद तोड़ डालते हैं और अल्लाह ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है उसे काटते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं। वही हैं जिनके लिये फिटकार है और जिनके लिये आख़िरत का बुरा घर है। (अल-रअद, 19-25)



इस्लाम में नैतिकता का साथी, मित्र, पडोसी और नातेदार से ही केवल संबंध नही है। बल्कि इससे भी आगे शत्रुओं के साथ, चाहे वह विरोधी हो, नैतिकता पर आधारित व्यवहार करने का आदेश है। इस प्रकार से नैतिक व्यवहार सारी मानवता में व्यापक है। ईशवर ने कहा। न अच्छे आचरण परस्पर समान होते हैं और न बुरे आचरण। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पडा हुवा था, जैसे वह कोई धनिष्ट मित्र है । (हा-मीम, अस-सजदा, 34)

ईशवर ने मित्र तो मित्र, शत्रु से भी अन्याय न करने का आदेश दिया। ईशवर ने कहा। और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ें, किन्तु ज्यादती न करो। निस्संदेह अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को पसन्द नही करता। (अल-बक़रा, 190)

विरोधियों के साथ युद्ध करने और ईशवर के मार्ग में लगातार प्रयास करने के लिए निकलने वाली अपनी सेना को ईशवर के रसूल के यह आदेश देखिये। आप ने कहाः धोखा मत दो। विश्वासघात मत करो। युद्ध में सैनिक के आँख, कान, नाक मत काटो। बच्चों की हत्या न करो। और प्रार्थना गृह के साधुओं को न मारो। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया) इस धर्म का मामला बडा आश्चर्यजनक है, जो विरोधी, शत्रु, योद्धा के प्रति भी अच्छे व्यवहार करने का आदेश दे रहा है। जहाँ तक साधारण मनुष्य की बात है, चाहे वह शत्रु ही क्यों न हो, तो इसके प्रति ईशवर ने भलाई करने और न्याय से काम लेने का आदेश दिया। ईशवर ने कहा। अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने और उनके साथ न्याय करने से नही रोकता जिन्होंने तुमसे धर्म के मामले में युद्ध नही किया और न तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला। निस्संदेह अल्लाह को न्याय करनेवाले प्रिय है। (अल-मुम्तहिना, 8)

पशु-पक्षियों के साथ अच्छा व्यवहार ।

इस्लाम ने नैतिकता की परिभाषा को अधिकतर फैलाये रखा। यहाँ तक कि वह पशु-पक्षियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करने को शामिल है। ईशवर के रसूल ने कहाः एक स्त्री को उस बिल्ली के कारण दण्ड दिया गया, जिसको उसने मृत्यु तक बन्दी बना रखा। किन्तु वह स्त्री नरक में डाली गयी, क्योंकि उसने बिल्ली को जब अपने पास बंदी बना रखा, तो उसको न खिलाया, न पिलाया, और न उसको कीटाणु खाने के लिए छोडा। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने वर्णन किया) बल्कि ईशवर ने हर चीज़ यहाँ तक कि जानवर को ज़बह करने के समय भी अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है। रसूल कहते हैः निस्संदेह ईशवर ने हर चीज़ के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया। जब तुम युद्ध में किसी की हत्या करो तो अच्छे से करो। जब तुम जानवर ज़बह करो, तो अच्छे से करो। हर एक को चाहिये कि वह अपनी चाकू पहले तेज़ करलें और अपने जानवर को सुख पहूँचाये। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया)



सारे ईमानवाले भाई-भाई है

इस्लाम में सारे ईमान वालों के भाई-भाई होने का अनोखा नमूना इस धर्म के सिद्धांत की ओर लोगों को उत्साहिक करने का एक कारण है।

थामस आर्नाल्ड

ब्रिटीष प्रचयेविधी विचारक

प्रकृति के साथ अच्छा व्यवहार ।

इसी प्रकार इस्लाम प्रकृति और साधारण दृष्टि के साथ भी अच्छा व्यवहार करने का सन्देश लेकर आया। इस्लाम ने फ़ुज़ूल खर्चे न करने का आदेश दिया है। फिर प्राकृतिक संसाधन को बिगाड़ने और उसको नष्ट देने से रोका। ईशवर ने कहा। खाओ और पियो अल्लाह का दिया और धरती में बिगाड़ फैलाते न फिरो। (अल-बक़रा, 60)

ईशवर ने कहा। और उन हद से गुज़र जानेवालों की आज्ञा का पालन न करो जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं, और सुधार का काम नही करते। (अल-शुअरा, 151, 152)

इसी प्रकार इस्लाम ने अन्य प्राकृतिक संसाधन, जैसे जल वग़ैरह चीज़ों का बडा ध्यान रखा है। ईशवर ने कहा। क्या उन लोगों ने, जिन्होंने इनकार किया, देखा नही कि ये आकाश और धरती बन्द थे। फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई, तो क्या वे मानते नही? (अल-अंबिया, 30)

ईशवर ने कहा। और अल्लाह ही ने आकाश से पानी बरसाया । फिर उसके द्वारा धरती को उसके मृत हो जाने के बाद जीवित किया। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए बडी निशानी है जो सुनते हैं। (अल-नहल, 65)

पवित्र ख़ुरआन के साथ साथ रसूल की वाणी ने भी अपनी भूमिका निभाते हुवे प्रकृति और उसके संसाधन कि सुरक्षा करने पर प्रोत्साहित किया। रसूल की वाणी में प्रकृति को सुरक्षित रखने के प्रति कई आदेश दिये गये हैं। फिर प्राकृतिक घटनाओं के प्रभाव से रोक-थाम करने का भी आदेश दिया गया। जैसे सूखा और रोग वग़ैरह से। इस बारे में ईशवर के रसूल कहते हैः तीन बुरी चीज़ों से बचो, नहरों, आम सडक, और छायावाले स्थान में शौच करने से बचो। (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने वर्णन किया) आप ने कहा जो भी मुस्लिम मनुष्य कोई बीज बोता है या पौधा लगाता है, फिर उससे कोई पक्षी, मनुष्य या जानवर खा लेता है, तो उसकी ओर से यह भी दान होगा। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया।) आप ने कहाः अगर क़ियामत आ जाये, और तुम में से किसी के हाथ में पौधा हो, तो अगर वह उसको बो सकता है, तो ज़रूर बो लें (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया) एक बार ईशवर के रसूल अपने साथी साद के पास से गुज़रे, जबकि वह वज़ू कर रहे थे। आप ने उनसे कहाः यह क्या फ़ुज़ूलखर्चे है। तो उन्होंने कहाः क्या वज़ू में भी फ़ुज़ूल खर्चे हो सकती हैं। आप ने कहाः हाँ । चाहे तुम नहर के किनारे ही क्यों न हो। (इस हदीस को इब्ने माजा ने वर्णन किया) रसूल के साथियों ने प्रकृति के साथ, यहाँ तक कि युद्ध के समय, और शत्रुओं के साथ अच्छा व्यवहार किया। अबू बकर ने अपने सेना के कर्नल को यह आदेश दियाः बालक, स्त्री और कमज़ोर बूढ़े कि हत्या न करो। फलदार पेड़ को न काटो। किसी बकरी या गाय को न ज़ुबह करो। हाँ खाने के

इस्लाम और सभ्यता

ख़ुरआन में मानव और प्रकृति के बीच कोई अंतर नही है। इस्लामिक संसार मानवता के लिये उपयोकता ज्ञान और तत्वदर्शता की भरमार पूँजी रखता है।

प्रिन्स चार्लस

ब्रिटीष राजकुमार



लिए अगर हो तो और बात है। किसी आबाद स्थान को बरबाद न करो, किसी खजूर के पेड़ को न जलाओ और न काटो। (इस हदीस को इमाम मालिक ने वर्णन किया)

नैतिकता के कुछ आदेश ।

हमारे लिए इस जगह ख़ुरआन और रसूल की वाणी में उपस्थित नैतिकता के कुछ आदेशों की समीक्षा करना अच्छा है। इनमें से कुछ निम्न लिखे जा रहे हैं।

पवित्र ख़ुरआन में उपस्थित आदेश।

ईश्वर ने कहा। अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके हक़दारों तक पहुँचा दिया करो। और जब लोगों के बीच फैसला करो तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है। (अल-निसा, 58)

ईश्वर ने कहा। कह दो, आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे ऊपर क्या पाबन्दियाँ लगाई है - यह कि किसी चीज़ को उसका साझीदार न ठहराओ और माँ-बाप के साथ सदव्यवहार करो और निर्धनता के कारण अपनी संतान की हत्या न करो, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और अश्लील बातों में लिप्त न हों, चाहे वे खुली हुई हों या छिपी हुई हों। और किसी जीव की, जिसे अल्लाह ने आदरणीय टहराया है, हत्या न करो। और यह बात है कि हक़ के लिए ऐसा करना पडे। ये बातें हैं जिनकी ताकीद उसने तुम्हें की है, शायद कि तुम बुद्धि से काम लो। और अनाथ के धन को हाथ न लगाओ, किन्तु ऐसे तरीक़े से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवा वस्था को पहुँच जाए। और इन्साफ के साथ पूरा-पूरा नापो और तोलो। हम किसी व्यक्ति पर उसी काम की जिम्मेदारी का बोझ डालते हैं जो उसकी सामर्थ्य में हो। और जब बात कहो तो न्याय की कहो, चाहे मामला अपने नातेदार ही का क्यों न हो, और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो। ये बातें हैं जिनकी उसने तुम्हें ताकीद की है। आशा है तुम ध्यान रखोगे। और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उसके मार्ग से हटाकर इधर-उधर करदेंगे। यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की है ताकि तुम (पथभ्रष्टता से) बचो। (अल-अनआम, 151-153)





ईश्वर ने कहा। और धरती में उसके सुधार के बाद बिगाड न पैदा करो। भय और आशा के साथ उसे पुकारो। निश्चय ही अल्लाह की दयालुता सत्कर्मी लोगों के निकट है। (अल-आराफ, 56)

ईश्वर ने कहा। और धैर्य से काम लो, इसलिए कि अल्लाह सुकर्मियों का बदला अकारथ नही करता। (हूद 115)

ईश्वर ने कहा। और अपना हाथ न तो अपनी गरदन से बाँधे रखो और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि निन्दित और असहाय होकर बैठ जाओ। तुम्हारा रब जिसको चाहता है प्रचुर और फैली हुई रोज़ी प्रदान करता है और इसी प्रकार नपी-तुली भी। निस्संदेह वह अपने बन्दों की खबर और उनपर नज़र रखता है। और निर्धनता के भय से अपनी संतान की हत्या न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हे भी। वास्तव में उनकी हत्या बहुत ही बड़ा अपराध है। और व्यभिचार में लिप्त न हो। वह एक अश्लील कर्म और बुरा मार्ग है। किसी जीव की हत्या न करो जिसे (मारना) अल्लाह ने हराम ठहराया है। यह और बात है कि हक़ (न्याय) का तक़ाज़ा यही हो। और जिसकी अन्यायपूर्वक हत्या की गई हो उसके उत्तराधिकारी को हमने अधिकार दिया है (कि वह हत्यारे से बदला ले सकता है), किन्तु वह हत्या के विषय में सीमा का उल्लंघन न करे। निश्चय ही उसकी सहायता की जायेगी। और अनाथ के माल को हाथ मत लगाओ सिवाय उत्तम रीति के, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाए, और प्रतिज्ञा पूरी करो। प्रतिज्ञा के विषय में अवश्य पूछा जायेगा। और जब नापकर दो तो नाप पूरी रखो। और ठीक तराज़ू से तोलो, यही उत्तम और परिणाम की दृष्टि से भी अधिक अच्छा है। और जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान न हो उसके पीछे न लगो। निस्संदेह कान और आँख और दिल, इनमें से प्रत्येक के विषय में पूछा जायेगा। और धरती में अकड़कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड सकते हो और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो। इनमें से प्रत्येक की बुराई तुम्हारे रब की दृष्टि में अप्रिय ही है। ये तत्वदर्शिता की वे बातें हैं जिनकी प्रकाशना तुम्हारे रब ने तुम्हारी ओर की है। और देखो, अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य-प्रभु न गढना, अन्याथा जहन्नम में डाल दिये जाओगे निन्दित, ठुकराये हुवे। (बनी इसरईल, 29-39)



ईशवर ने कहा। और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढो जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिये तैयार है जो डर रखते है। वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं। और अल्लाह को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे-से-अच्छा कर्म करते हैं। (अले-इमरान, 133-134)

ईशवर ने कहा। ऐ लोगों जो ईमान लाये हो। न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुष की हँसी उडाये, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उडायें, संभव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के बाद अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति इस नीति से न रुके, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

ऐ ईमान लानेवालों। बहुत-से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी कि पीठ पीछे निन्दा करे- क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुवे भाई का माँस खाये? वह तो तुम्हें अप्रिय होगा ही। और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। ऐ लोगों। हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है। (अल-हुजुरात, 11-13)

ईशवर ने कहा। ऐ मेरे बेटे। नमाज़ का आयोजन कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक और जो मुसीबत भी तुझपर पडे उसपर धैर्य से काम ले। निस्संदेह ये बातें उन कामों में से है जो अनिवार्य और दृढ़ संकल्प के काम हैं। और लोगों से अपना रुख़ न फेर और न धरती में इतराकर चल। निश्चय ही अल्लाह किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नही करता। और अपनी चाल में सहजता एवं संतुलन बनाये रख और अपनी आवाज़ धीमी रख। निस्संदेह आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ होती है। (लुक़मान, 17-19)

ईशवर ने कहा। रहमान (करुणामय प्रभु) के (प्रिय) बन्दे हैं जो धरती पर नम्रतापूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आयें तो कह देते हैं, तुमको सलाम। (अल-फ़ुरक़ान, 63)

ईशवर ने कहा। अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ, और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसंद नही करता जो इतराता और डींग मारता हो। (अल-निसा, 36)

ईशवर ने कहा। (तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर से ही बडी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिये नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छँट जाते। अतः उन्हें क्षमा करदो और उनके लिये क्षमा की प्रार्थना करो। और मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मती पर सुदृढ़ हो जायें तो अल्लाह पर भरोसा करो। (अले-इमरान, 159)



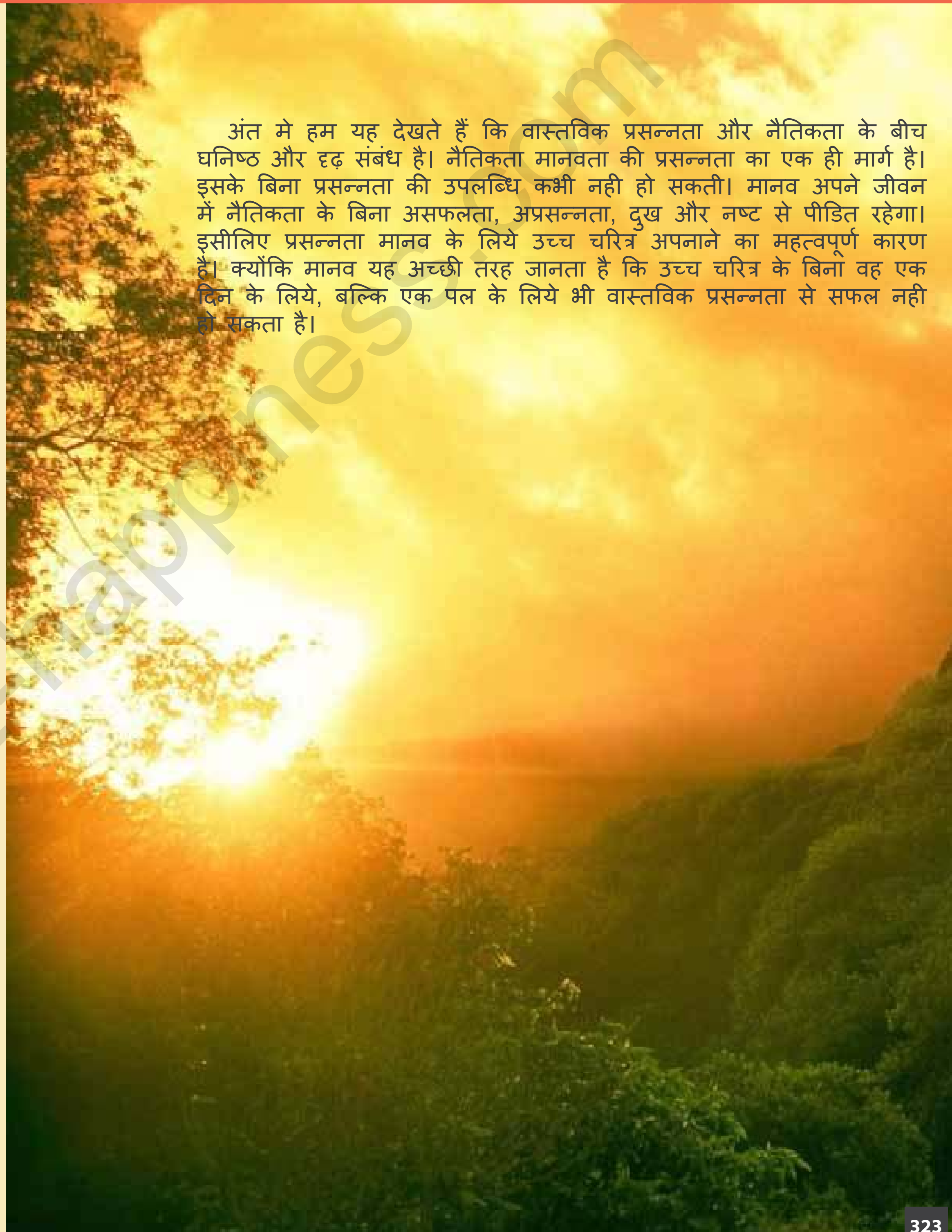
रसूल की वाणी में उपस्थित नैतिक आदेश।

जब हम रसूल की वाणी कि ओर देखते हैं, तो हम उसमें कई ऐसे विश्वास (ईमान) के पेड़ देखते हैं, जिससे हम नैतिकता और उच्च चरित्र के नियम प्राप्त कर सकते हैं। इनमें से कुछ उदाहरण निम्न लिखित है।

- ईश्वर के रसूल ने कहा लोगों के साथ नर्मी करनेवाले, सरलता के साथ रहनेवाले, आसानियाँ पैदा करनेवाले और लोगों से निकट रहने वाले पर नरक की आग हराम (वर्जित) है। (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने वर्णन किया।)
- ईश्वर के रसूल ने अपने एक साथी से यह कहा कि आपके भीतर दो ऐसी आदतें है, जिसके कारण ईश्वर आपको चाहता हैः

1. आप शांत स्वभाव रखते हैं,
2. आप स्वावलंभी है (केवल स्वयं पर आधारित होनेवाला व्यक्ति) (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया।)

- रसूल ने यह भी कहाः मेरे पास जो भी भलाई होगी, मै उसको तुमसे छुपाकर नही रखूँगा। जो मनुष्य स्वयं शुद्ध रहना चाहे, ईश्वर उसको शुद्धता प्रदान करता है। जो मनुष्य स्वयं सांसारिक जीवन की सामाग्री को महत्व नही देता है, ईश्वर उसको धनी बना देता है। जो मनुष्य स्वयं धैर्य से काम लेना चाहे, तो ईश्वर उसको धैर्य से रहने की क्षमता प्रदान करता है। और किसी भी व्यक्ति को धैर्य से अधिकतर भली और व्यापक चीज़ प्राप्त नही हुई है। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया।)
- रसूल ने कहाः धनी होने का मतलब सामाग्री की अधिकता नही है। परन्तु धनी वह है जिसका मन धनी हो (यानी मन में सांसारिक सामाग्री का अधिकतर प्रभाव न हो) (इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने वर्णन किया।)
- - रसूल ने कहाः बलवान वह नही है जो मल्ल युद्ध (कुश्ती) करता हो। बल्कि बलवान वह है जो क्रोध के समय स्वयं पर नियंत्रण रखता हो। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने वर्णन किया।
- रसूल ने कहाः ईश्वर उस मनुष्य को अपनी अनुग्रह प्रदान नही करता है, जो लोगों का आभारी न हो। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया)
- रसूल ने कहाः निस्संदेह ईश्वर ने मेरी ओर यह प्रकाशना की है कि तुम आपस में एक दुसरे के साथ विनम्र बने रहो। कोई किसी के साथ अन्याय न करें। (इर हदीस को इमाम इब्ने माज़ा ने वर्णन किया।)
- रसूल ने कहाः हर भलाई दान है। भलाई में यह भी है कि तुम अपने किसी भाई से मुस्कुराते हुवे मिलो, और यह भी भलाई है कि तुम अपने ढोल का पानी अपने किसी भाई के ढोल में डाल दो। (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने वर्णन किया)



अंत मे हम यह देखते हैं कि वास्तविक प्रसन्नता और नैतिकता के बीच घनिष्ठ और दृढ़ संबंध है। नैतिकता मानवता की प्रसन्नता का एक ही मार्ग है। इसके बिना प्रसन्नता की उपलब्धि कभी नही हो सकती। मानव अपने जीवन में नैतिकता के बिना असफलता, अप्रसन्नता, दुख और नष्ट से पीडित रहेगा। इसीलिए प्रसन्नता मानव के लिये उच्च चरित्र अपनाने का महत्वपूर्ण कारण है। क्योंकि मानव यह अच्छी तरह जानता है कि उच्च चरित्र के बिना वह एक दिन के लिये, बल्कि एक पल के लिये भी वास्तविक प्रसन्नता से सफल नही हो सकता है।

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



दयालुता और सम्मानता का मार्ग

अनुक्रमणिका

दयालुता और सम्मानता का मार्ग

दयालुता का मार्ग

पवित्र ख़ुरआन के हर सुरे (भाग) में ईशवर के दो नामः कृपाशील और अत्यन्त दयावान का विवरण है। ईशवर ने अपने ऊपर दयालुता को अनिवार्य करलिया है। तुम्हारे रब ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य करलिया है। (अल-अनआम, 54)

ईशवर कि दयालुता हर चीज़ को अपने अन्दर ले रखा है। किन्तु मेरी दयालुता से हर चीज़ आच्छादित है। (अल-आराफ़, 156)

ईशवर ने लोगों को अपनी दयालुता कि आशा रखने पर उत्साहित किया। उन्हें दयालुता कि शुभ सूचना दी और निराशा न होने का आदेश दिया । कह दो, ऐ मेरे बन्दों, जिन्होंने अपने आप पर ज़्यादती की है, अल्लाह कि दयालुता से निराश न हों। निस्संदेह अल्लाह सारे ही गुनाहों को क्षमा करदेता है। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील अत्यन्त दयावान है। (अल-ज़ूमर, 53)

ईशवर दयावान है, जो क्षमा करना पसंद करता है। उसने कहाः ईशवर रात के समय अपने हात फ़ैलाता है, ताकि दिन के समय पाप करने वाले की तौबा खुबूल करे। दिन के समय अपने हात फ़ैलाता है, ताकि रात के समय पाप करने वाले को क्षमा करे। (ईशवर इसी प्रकार करता रहेगा) यहाँ तक कि सूर्य पूर्व से निकले। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है) रसूल ने ईशवर कि ओर से यह बात कही किः निश्चय ईशवर ने ब्रहमाण्ड की सृष्टी से पहले यह लिख दिया है कि मेरी दयालुता, मेरे क्रोध से आगे है। (इस हदीस पर इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम सहमत है) रसूल ने ईशवर कि दयालुता के बारे में यह भी कहाः ईशवर ने दयालुता के 100 भाग बनाये। 99 भाग अपने पास रखलिया। 1 भाग धरती पर उतारा। इसी एक भाग के कारण सारे प्राणी एक दूसरे पर दया करते हैं। यहाँ तक कि घोडा अपने बच्चे के ऊपर से पंजा उठा लेता है, इस डर से कहीं बच्चा घायल ना होजाए। (बुख़ारी) ईशवर ने अपने रसूल मुहम्मद को सारे संसार के लिये दयालुता बनाकर भेजा। हमने तुम्हें सारे संसार के लिये सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)

ईशवर ने अपने रसूल को उच्च नैतिकता से सुन्दर बनाया। ईशवर ने कहा। निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो। (अल-क़लम, 4)

इसी कारण रसूल के चरित्र का सबसे प्रमुख भाग दयालुता है। अगर आप दयालु ना होते, तो लोग आप के पास से छँट जाते। ईशवर ने कहा। (तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा करदिया) तो अल्लाह कि ओर से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छँट जाते। (अले-इमरान, 159)



बल्कि वह अत्यन्त करुणामय, दयावान है। अपने अपनी समूह के लिये किसी प्रकार का कष्ट नही चाहा। ईशवर ने कहा। तुम्हारे पास तुम्ही में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल मे पड़ना उसके लिये असहाय है। वह तुम्हारे लिए लालायित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है। (अल-तौबा, 128)

इसी कारण इस्लाम धर्म, जो कृपाशाली ईशवर कि ओर से आया है। इस धर्म को दयावान रसूल द्वारा ज़ुल्म, अन्याय, घृणा कि अप्रसन्नता से, कष्ट, दुख और बेचैनी कि दुविधा से, और अत्याचार, कठोरता के मार्ग से मानवता को दूर रखने के लिए इस्लाम सांसारिक दयालुता बनकर आया । हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)

सारे मुस्लिमों और ग़ैर मुस्लिमों (काफ़िर) के लिए दयालुता। आज्ञाकारी और ज़िददी के लिए दयालुता। बडे और छोटे के लिए दयालुता। पुरुष, स्त्री और बालक के लिए दयालुता। धनी और निर्धनी के लिए दयालुता। सारे संसार के लिए इस्लाम दयालुता बनकर आया है। इसी लिए इस्लाम दया कि इच्छा रखने और आपस में एक दुसरे के साथ दया करने का आदेश लेकर आया है। ईशवर ने कहा।

फिर यह कि इन सबके साथ वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाये और जिन्होंने एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की और एक-दूसरे को दया कि ताकीद की। (अल-बलद, 17)

रसूल ने कहाः ईशवर उस व्यक्ति पर दया नही करता जो लोगों पर दयावान ना हो। (इस हदीस के प्रति इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम सहमत है) आपने कहा दया करने वाले लोगों पर अत्यंत दयावान दया करता है। तुम धरती वालों पर दया करो, आकाश वाला तुम पर दया करेगा। दयालुता, दयावान ईशवर कि डोरी है। जो इसको मिलाए रखें, ईशवर उसको मिलाये रखेगा। और जो इस डोरी को काट दे, ईशवर उसको काट देगा। (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने वर्णन किया है) रसूल ने कहाः दयालुता बुरे व्यक्ति के मन ही से खींच ली जाती है। (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने वर्णन किया है) ईशवर ने दया करने का आदेश दिया। साधारण रूप से जीवन की शैली, मार्ग और चरित्र में दयालुता अपनाने का आदेश दिया। इस्लामिक शरिअत ने दयालुता के कुछ विशेष भागों कि ताकीद की है। जिन में से कुछ भाग यह है।

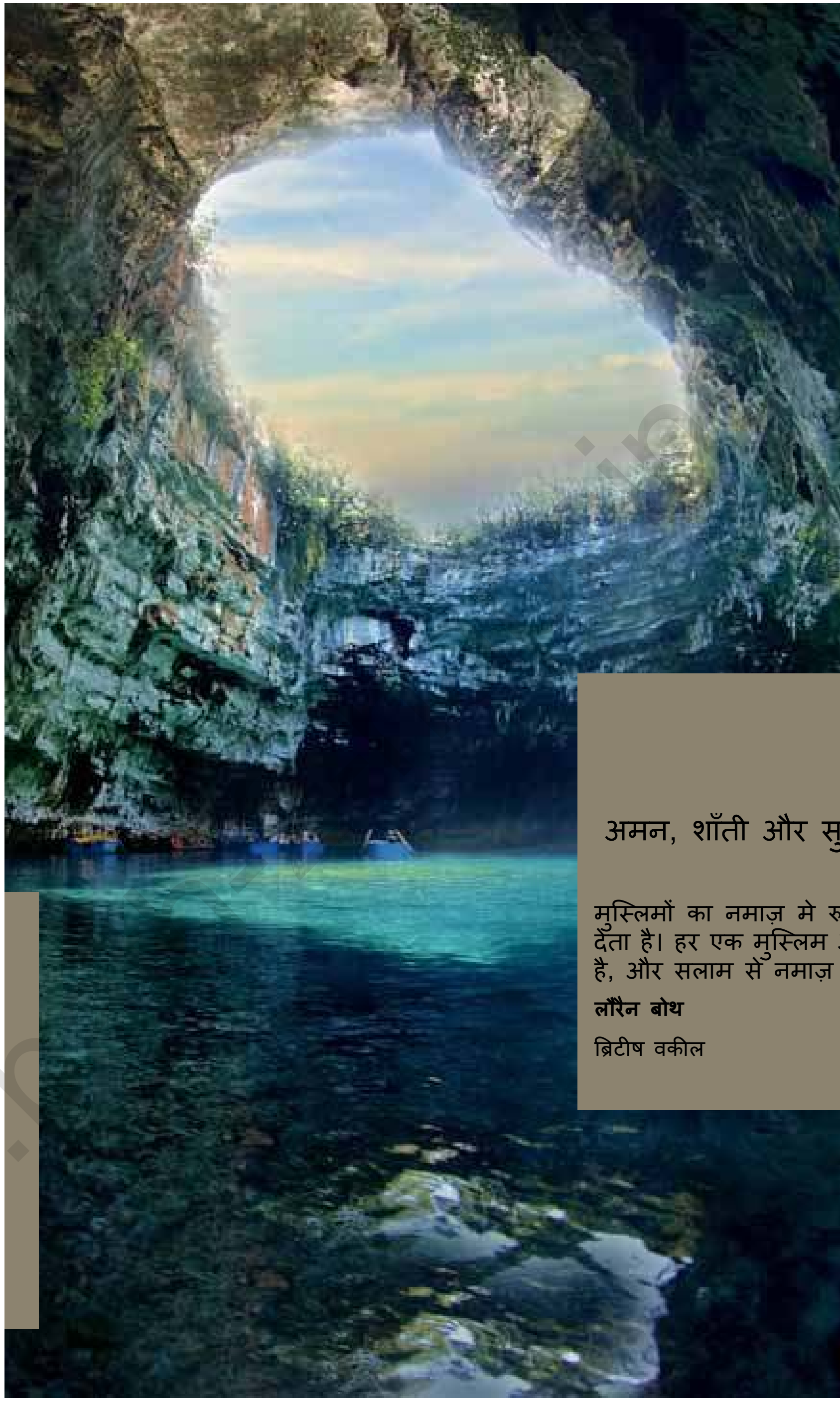
1. सारी मानवता के साथ दयालुताः ईशवर के रसूल अपने सारे समूह के लिये दयालु थे। आप के द्वारा ईशवर ने सारे लोगों को अन्धेरों से प्रकाश कि ओर, अप्रसन्नता से प्रसन्नता कि ओर ले आया। रसूल कि दया इस से भी कई अधिक थी। आपने तो उन काफ़िरों पर भी दया करने का प्रेरित बनाया, जो इस्लाम नही लाये। रसूल ने मक्काः के वासियों में से इस्लाम ना लाने वालों के बारे में यह कहा... बल्कि मेरी आशा है ईशवर उनकी संतान में किसी ऐसे व्यक्ति को पैदा करदे, जो एक ईशवर की प्रार्थना करे। किसी को उसका साझी न बनाये। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है) जब रसूल “उहद” के युद्ध में घायल हो गये, तो आप के साथियों ने आप से यह कहाः काफ़िरों को श्राप दें, तो आपने कहाः ऐ मेरे प्रभु मेरे समूह के लोगों का मार्गदर्शन कर, वे अज्ञानी है। एक दसरी हदीस में आया कि ईशवर के रसूल से यह कहा गयाः काफ़िरों को श्राप दें, तो आपने कहा मुझे लहानत करने वाला नही, बल्कि दयालुता बनाकर भेजा गया। (सही मुस्लिम)
2. छोटों के साथ दयालुताः रसूल के एक सहाबी (साथी) कहते है, हम रसूल के साथ उनके पुत्र इब्राहीम के पास उस समय प्रवेश किया, जबकि इब्राहीम अपने जीवन कि अंतिम सान्स ले रहे थे। तो रसूल कि आँखों से आँसु टपकने लगे। तो अब्दुर-रहमान इब्ने औफ़ ने कहाः आप भी ऐ ईशवर के रसूल ? तो रसूल ने कहाः ए इब्ने औफ़, यह दयालुता है। फिर आपने कहाः निस्संदेह आँसु टपकते हैं, दिल दुखी होता है। फिर भी हम वही कहेंगे जिससे हमारा ईशवर ख़ुश होता है। ए इब्राहीम तेरी जुदाई से हम बहुत दुखी हैं। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है।) बल्कि रसूल अपनी एक जांघ पर उसामा को और दूसरी जांघ पर हसन को बिठाया करते थे। फिर उन दोनों को मिलाते थे और यह कहते थेः ए ईशवर इन दोनों पर दया कर। मैं भी इन पर दया करता हूँ। जब एक व्यक्ति रसूल के पास आया और देखा कि आप हसन या हुसैन को चूम रहे हैं, तो उसने कहा क्या आप लोग अपनी औलाद को चूम्ते हों। मुझे दस लडके हैं, मैंने इन में से कभी किसी को नही



चूमा। तो रसूल ने कहाः जो दया नही करता, उस के साथ दया नही की जायेगी।

3. कम्ज़ोरों के साथ दयालुताः रसूल ने उस काली स्त्री को नही देखा, जो मस्जिद कि सफ़ाई करती थी। आपने उसके बारे में प्रश्न किया तो लोगों ने कहा उसका देहान्त हो गया। आपने कहाः तुम लोगों ने मुझे क्यों नही बताया... मुझे उसकी ख़बर (समाधि) के पास ले जाओ। तो लोगों ने आप को ख़बर का पता बताया। आपने उसके लिए प्रार्थना कि। (इस हदीस को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है) रसूल के सेवक अनस बिन मालिक कहते हैः मैने रसूल कि दस साल सेवा की। आपने कभी मुझे " उफ़ " तक नही कहा। न यह कहा कि मैंने यह काम क्यों किया और वह काम क्यों नही किया। (बुखारी) बल्कि महान सहाबी इब्न-मसूद ने कहाः मैं अपने एक गुलाम (सेवक) को मार रहा था। पीछे से मुझे एक आवाज़ आयी ए इब्ने-मसूद इस सेवक पर तुम्हारी क्षमता से अधिक क्षमता ईशवर तुम पर रखता है। मैंने पीछे मुड़ कर देखा, तो वह रसूल कि आवाज़ थी। मैंने कहाः ए रसूल ईशवर के लिये मैं इस सेवक को मुक्ति देता हूँ। आपने कहा अगर तुम यह काम न करते, तो नर्क कि आग तुम्हें खालेती। (मुस्लिम)

4. पशु-पक्षियों के साथ दयालुताः रसूल का गुज़र ऐसे ऊँट के पास से हुआ, जिसका पेट, पीट से मिल गया था। तो आपने कहाः इन गूंघे पशु-पक्षियों के प्रति ईशवर से डरो। इन के स्वस्थ होने के समय इन पर सवारी करो, और स्वस्थ होने के समय इनको खाओ। (अबु-दाऊद) एक बार ईशवर के रसूल ने अन्सारी सहाबी के बाग़ में प्रवेश किया। एक ऊँट खड़ा था। जब ऊँट रसूल को देखा तो तड़पने लगा। उसकी आँखों से आँसु बहने लगे। रसूल उसके पास पहुँचे, आँसु साफ़ किये, तो वह ख़ामोश हो गया। फिर आपने कहाः इस ऊँठ का मालिक कौन है। यह ऊँठ किसका है। एक अन्सारी युवक आया और कहा ऐ रसूल



यह मेरा है। आपने कहा क्या तुम इस ऊँठ के प्रति ईशवर से डरते नही हो, जिसका तुम्हे ईशवर ने मालिक बनाया है, ऊँठ ने मुझ से शिकायत कि तुम इसको भूखा रखते हो और दण्ड देते हो। (अबु-दाऊद)

यह सारी बातें रसूल के सारे संसार के लिये दयालुता बनकर भेजे जाने का उदाहरण है। इस के अतिरिक्त इस्लाम धर्म में दयालुता के अधिकतर नमूने हैं। जिस से धर्म के इस मार्ग की महान्ता का विवरण होता है। लेकिन दयालुता का मतलब निरआदर और शर्म नही है, बल्कि यह सम्मानजनिक दयालुता है।



अमन, शाँती और सुख

मुस्लिमों का नमाज़ मे रुकु और सज्दा करना आत्मा को अमन, शाँती और सुख से भर देता है। हर एक मुस्लिम अत्यन्त दयावान, कृपाशील अल्लाह के नाम से नमाज़ शुरू करता है, और सलाम से नमाज़ ख़तम करता है।

लौरैन बोथ

ब्रिटीष वकील



सम्मानजनिक मार्ग

जब ईश्वर ने मानव कि सृष्टी की, तो मानव को आदम के सामने झुकने का आदेश दिया। हमने तुम्हें पैदा करने का निश्चय किया, फिर तुम्हें रूप देने का इरादा किया (और तुम्हारे आदि पिता आदम को पैदा किया) फिर हमने फ़रिशतों से कहा, आदम को सजदा करो। तो उन्होंने सजदा किया, सिवाय इब्लीस के वह (इब्लीस) सजदा करनेवालों में से ना हुआ। (अल-आराफ़, 11)

ईश्वर ने मानव कि सृष्टी की, उसको सम्मान दिया और सारे जीव के मुक़ाब्ले में उसको सर्वश्रेष्ट बनाया। ईश्वर ने कहा। हमने आदम की संतान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी और अच्छी पाक चीज़ों से उन्हें रोज़ी दी और पैदा किये हुए बहुत-से प्राणियों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की। (बनी इस्राईल, 70)

मानव प्रारंभ ही से सर्वश्रेष्ट और सम्मान जनिक प्राणी है। ईश्वर ने उसको निमन लिखित चीज़ों से सम्मान दिया है।

1. संरचना का सम्मान। ईश्वर ने कहा। निस्संदेह हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया। (अल-तीन, 4)

ईश्वर ने मानव को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया। इस प्रकार कि शरीर और उसके अंगों में समरूपता रखी। बुद्धी और सोंच की क्षमता दी। बोलने और सुनने कि शक्ती दी, और उसको सर्वश्रेष्ट रूप में पैदा किया।

2. मानव के लिये भूमी और समुद्र को काम में लगाने का सम्मान, हवा भी मानव कि सेवा के लिए बनायी गयी। यह बात भी ऊपरी लिखित सम्मान कि पुष्टी करती है। क्योंकि ईश्वर ने इन सारी चीज़ों को मानव कि सेवा के लिये बनाया है, और सारे जीव में उसको सर्वश्रेष्ट रखा है। जो इस बात का प्रमाण है कि संसार में मानव का स्थान राजा या मुख्य के समान है। मानव के अतिरिक्त हर चीज़ उसकी प्रजा और सेवक। ईश्वर ने कहा। हमने आदम की संतान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी। (बनी इस्राईल, 70)

बल्कि ईश्वर ने सूचना दी कि आकाश और धरती में स्थिर हर चीज़ मानव की सेवा में लगा दी गयी। जो चीज़ें आकाशों मे है और जो धरती मे है, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम मे लगा रखा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो सोंच-विचार से काम लेते हैं। (अल-जासीया, 13)

3. पवित्र रोज़ी-रोटीः ईश्वर ने मानव को आदेश दिया कि वह अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहे खायें (इन भोजनों के लिये लाभ दायक संकेत रखें। ईश्वर ने सारे प्रणीयों के अतिरिक्त मानव के लिये सबसे अधिक भोजन कि सामाग्री रखी है। क्योंकि सारे प्राणी (मानव के अतिरिक्त) वही भोजन खाते हैं जिसके वे रुची रखते हैं। इसी प्रकार ईश्वर ने अपनी कृपा और दया से मानव के लिए सारे प्राणी सेवा में लगा दिया। वही है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को फर्श और आकाश को छत बनाया, और आकाश से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार और फल तुम्हारी रोज़ी के लिये पैदा किया, अतः जब तुम जानते हो तो अल्लाह के समक्ष ना टहराओ। (अल-बक़रा, 22)



4. ईशवर के बनाये हुए सारे जीव पर मानव कि सर्वश्रेष्ठताः मानव दैवत्व समानता के कारण इस मार्ग में स्वयं के लिये सम्मान, महान्ता और स्थान पाता है। परन्तु मानव इस भौतिक संसार में साधारण छोटा सा कण नही रहा। जो भौतिक मापदण्ड कि दृष्टी से एक मामूली कण है। इस मापदण्ड कि दृष्टी से यह धरती भी साधारण कण है, जिसको दो लाख प्रणीयों का एक परामाणु बम विनाश करदेता है। जैसा कि हिरोषिमा में हुआ। इस्लाम कि दृष्टी से मानव का महत्व ईशवर द्वारा उसके लिये विशेष की गयी समान्ता से प्रकट होता है। जब हम ख़ुरआन में आदम के सामने सर झुकाने, फिर शैतान को ईशवर द्वारा स्वर्ग से बाहर निकाले जाने से संभन्धित वाणी देखते हैं। जिस में शैतान ने आदम के सामने झुकने से इन्कार किया। हम यह समझ सकते हैं कि मानवीय विख्यात व्यक्तित्व की स्थापना करने में यह स्थंभ किस हद तक महत्व है। उस समय जबकि मानवता इच्छाओं कि शक्ती के वार कि गतिरोध से निकल नही पारही थी। उसके सामने केवल एक ही मार्ग था। वह ख़ुरआन का मार्ग है, जो मानव को स्वतंत्रता, सम्मान और उसके अनेक विकल्प प्रदान करता है। सम्मान के मार्ग में किसी मानव का अपमान करना, या उसको नीच समझना या उसका मज़ाक उडाना सही नही है। ईशवर ने कहा। ऐ लोगों जो ईमान लाये हो। न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुष की हँसी उडायें, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रिओं की हँसी उडायें, संभव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के बाद अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति इस नीति से रुके, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं। (अल-हुजुरात, 11)

गोरे को काले पर, लाल को पीले पर, अरबवालों को उनके अतिरिक्त लोगों पर, एक जात को दूसरी जात पर, एक शहर को दूसरे शहर पर सम्मान्ता के प्रति कोई विशेषता प्राप्त नही है। मगर उसको जो ईशवर का डर रखता है। ईशवर ने कहा।





ऐ लोगों। हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिराद्रियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है। (अल-हुजुरत, 13)

रसूल ने कहाः निस्संदेह ईशवर तुम्हारे रूप और धन को नहीं देखता, लेकिन तुम्हारी नियतों और कर्मों को देखता है। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया।) इसी कारण मानव को इस मार्ग पर चलने और उसके अनुसरण करने के समान सम्मान और प्रभुत्व प्राप्त होता है। जो कोई प्रभुत्व चाहता हो तो प्रभुत्व तो सारा का सारा अल्लाह के लिये है। (फ़ातिर, 10)

ईशवर का अनुपालन करते हुए सारे जिस मार्ग पर इकट्ठा चलते हैं, इस मार्ग से दूरी के अनुसार मानव को अपमान मिलता है। ईशवर ने कहा। क्या तुमने देखा नही कि अल्लाह ही को सजदा करते हैं वे सब जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं, और सूर्य, चन्द्रमॉ, तारे, पहाड़, वृक्ष, जानवर और बहुतसे मनुष्य। और बहुत-से ऐसे हैं जिनपर यातना का औचित्य सिद्ध हो चुका है, और जिसे अल्लाह अपमानित करे उसे सम्मानित करनेवाला कोई नही। निस्संदेह अल्लाह जो चाहे करता है। (अल-हज, 18)

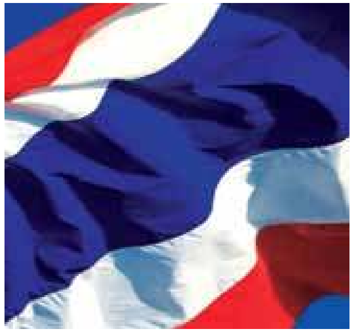
हालांकि ईशवर ने मानवता को सम्मान दिया है, फिर भी अधिकतर लोगों ने अपमान का मार्ग चुन रखा है। और जिसे अल्लाह अपमानित करे उसे सम्मानित करनेवाला कोई नही। (अल-हज, 18)

वे मानव को साधारण जीव, या बेज़बान सामाग्री या वित्तीय आंक्ड़े, या इसके अतिरिक्त अन्य दृष्टी से देखते हैं, जो ईशवर द्वारा अपनी दया और कृपा से मानव को मिले हुए सम्मान के विरुद्ध है।

मानव को सम्मान्ता उसके मानव होने के कारण ही है। इस्लाम दो लिंगों के बीच अंतर नही रखता। यह सम्मान्ता पुरुष को स्त्री के विरुद्ध या स्त्री को पुरुष के विरुद्ध प्रदान नही किया है। क्योंकि सारे लोग एक ही जीव से पैदा किये गये हैं। ईशवर ने कहा।

ऐ लोगों। अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिये जोड़ा पैदा किया, और दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दी। अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपनी माँगें रखते हो। और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। (अल-निसा, 1)

जो मनुष्य प्रभुत्व और सम्मान्ता कि इच्छा रखता है, उसको सम्मान्ता और प्रभुत्व का मार्ग चलना चाहिए। ईशवर ने कहा। सारा प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है। (यूनुस, 65)



कोई भूका नही रहेगा

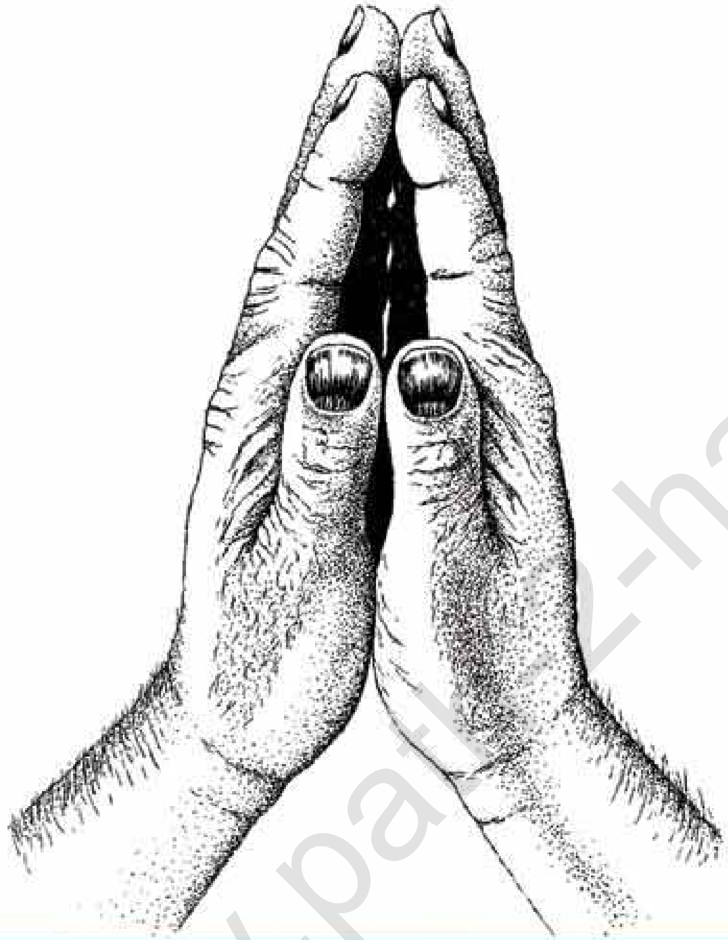
इस्लाम के समान मेरी दृष्टी में कोई दूसरा ऐसा धर्म नही है, जिसने ज़कात को एक संपूर्ण धार्मिक नियम बनाया है। ज़कात निकालने का उत्साह रखने वाला इस्लामिक समूह ग़रीबी और बिगाड़ से पवित्र होता है। मेरा विचार यह है कि अगर सारा संसार इस्लाम कि ओर मार्गदर्शन प्राप्त करले, तो धर्ति पर कोई भूका या ग़रीब नही रहेगा ।

बिरेशा बेनकामर्ट

थाईलाँड का शिक्षक (जो बुधमत छोड कर इस्लाम ले आया)



الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



प्रसन्नता के मार्ग का अंत

अनुक्रमणिका

ऐ वह व्यक्ति जो प्रसन्नता की खोज मे है।

यही वह मार्ग है।

प्रसन्नता के मार्ग का अंत

ऐ वह व्यक्ति जो प्रसन्नता की खोज मे है।

आप इस संसार में आने से पहले कुछ भी नही थे। जैसा कि ईशवर ने कहा । क्या मनुष्य याद नही करता कि हम उसे इससे पहले पैदा करचुके हैं, जबकि वह कुछ भी न था। (मरियम-67)



फिर ईशवर ने मिट्टी से, फिर पानी से पैदा किया। फिर आपको सुनने और देखने वाला बनाया। ईशवर ने कहा । क्या मनुष्य पर ज़माने का ऐसा समय भी बीता है कि वह कोई ऐसी चीज़ न था जिसका उल्लेख किया जाता ? हमने मनुष्य को ऐसा मिश्रण वीर्य से पैदा किया, उसे उलटते-पलटते रहे, फिर हमने उसे सुनने और देखने वाला बना दिया। (अल दहर 1-2)

फिर आप धीरे-धीरे बलहीन से बलवान बन गये। लेकिन अंत में आपका परिणाम बलहीन होना है। ईशवर ने कहा । अल्लाह ही है जिसने तुम्हे निर्बल पैदा किया, फिर निर्बलता के बाद शक्ति प्रदान की, फिर शक्ति के बाद निर्बलता और बुढ़ापा दिया। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है, वह जानने वाला, सामर्थ्यवान है। (अल रूम-54)

फिर निस्संदेह अंत मृत्यु है।

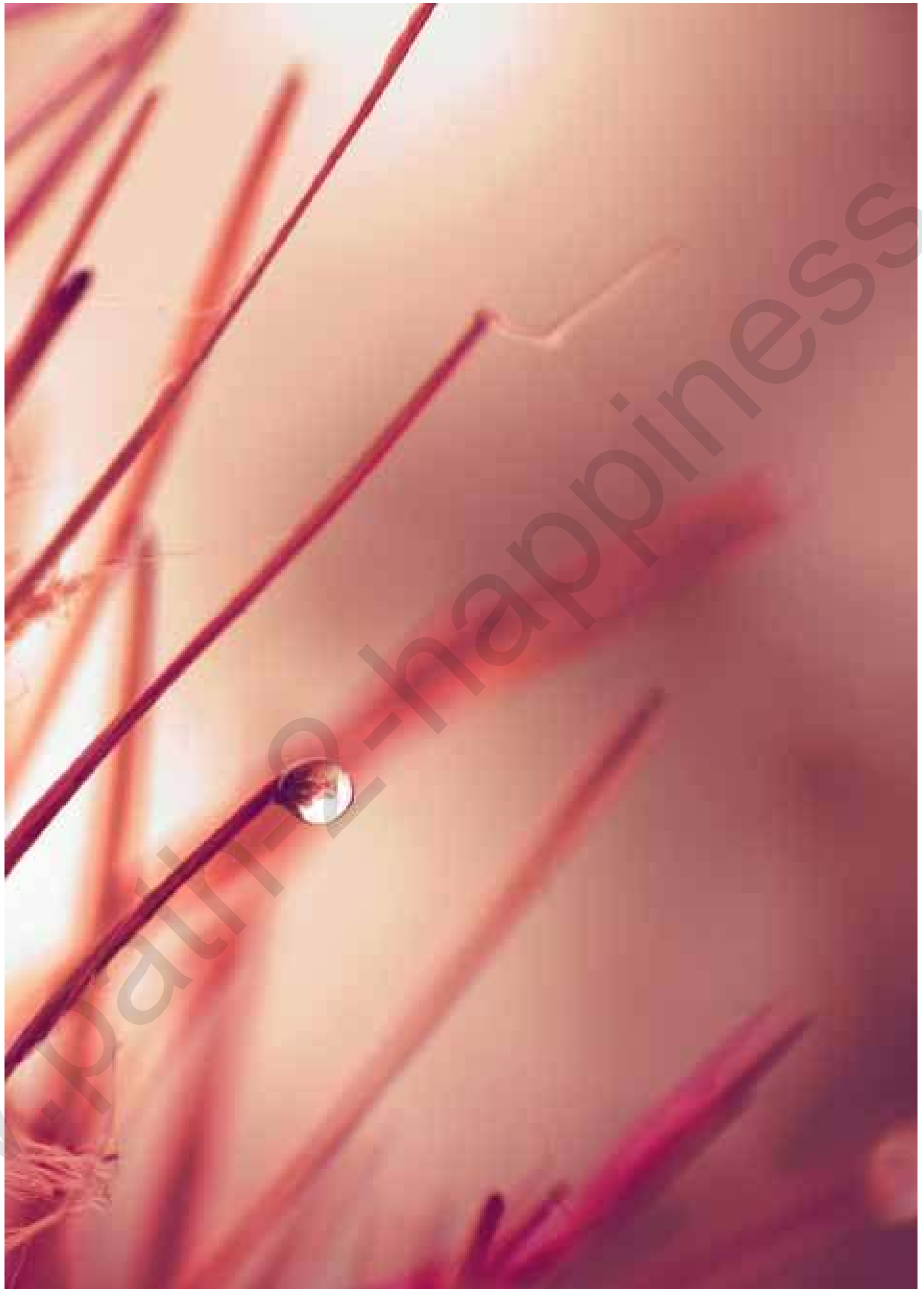
आपका इन स्थिति में एक कमजोरी से दूसरी कमजोही की ओर परिवर्तन होते रहता है। आप स्वयं से कोई नष्ट दूर नही कर सकते। आप ईशवर द्वारा स्वयं पर की गई अनुग्रह कि सहायता के बिना किसी प्रकार का लाभ नही उठा सकते। आप प्रकृति के अनुसार अन्य चीजों पर आधार रहते हैं। आप अपनी जीवन शाश्वत रखने में कई ऐसी चीजों क् ज़रूरत मंद हैं, जो आपके बस के बाहर है। कभी आपको वो चीजें प्राप्त होजाती हैं, कभी आपसे छीन लिये जाते हैं। कितनी ऐसी चीजें हैं जो आपके लिए लाभदायक है, आप उसको प्राप्त करना चाहते हैं। कभी आप उसको पाते हैं और कभी नही। कितनी ऐसी चीजें हैं जो आपके लिये नष्ट दायक है। आपकी इच्छाओं, और प्रयासों को नष्ट करने वाली है। आपके लिए समस्या और मुसीबतों का कारण है, आप इन चीजों को स्वयं से दूर करना चाहते हैं। कभी आप दूर करलेते हैं और कभी नही। क्या आप ईशवर पर आधारित होने की भावना नही पाते हैं। ईशवर यह कहता है - ऐ लोगों। तुम्ही अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह तो निस्पृह, स्वतः प्रशंसित है। (फातिर-15)

आप वैरस से पीडित हो जाते हैं। इस वैरस को आप के आँख देख नही पाती। जो आपको बीमार करदेती है। आप स्वयं की सुरक्षा नही कर पाते। आप अपने जैसे कमज़ोर मानव के पास चिकित्सा के लिए जाते हैं, कभी वह सही औषध देता है और कभी वह असहाय होता है। तो पीडित और चिकित्सक दोनों भ्रम में रह जाते हैं। ऐ मानव तू कितना ही कमज़ोर है, अगर आप से मख्खी कोई चीज़ छीनले, तो आप उसको पुनः प्राप्त नही कर सकते हैं। ईशवर ने सत्य कहा ऐ लोगों। एक मिसाल पेश की जाती है, उसे ध्यान से सुनो। अल्लाह से हटकर तुम जिन्हें पुकारते हो वे एक मख्खी भी पैदा नही कर सकते। यद्यपि इसके लिए वे सब इकट्ठे हो जायें और यदि मख्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले जाये तो उससे वे उसको छुडा भी नही सकते। बेबस और असहाय रहा चाहनेवाला भी (उपासक) और उसका अभीष्ट (उपास्य) भी। (अल-हज, 73)



जब आप स्वयं से मख्खी की खीची हुई चीज़ को बचा नही सकते, तो फिर आप अपनी किस चीज़ के मालिक हैं। आपका माथा ईशवर के हाथ मे है। आपकी जान उसी के हाथ मे है। आपका दिल उसके दो उँगलियों के बीच मे है, आपका जीवन और मृत्यु उसी के वश मे है। आपकी प्रसन्नता और अप्रसन्नता उसी के आदेश से है। आपका चलना, फिरना, बोलना सब कुछ ईशवर के अनुमति से है। आप उसी के आदेश से चलते हैं, और उसी के अनुमति से कर्म करते हैं। अगर वह आपको स्वयं ही को सोंपदे, तो आपको असाहयता, निर्बल, और पाप की ओर सोंपने के समान होगा। अगर वह आपको किसी और को सौंपदे, तो उस व्यक्ति की ओर सौंपने के समान होगा, जो आपके लिए, लाभ, कष्ट, जीवन, मृत्यु और दुबारा उठाये जाने का मालिक नही होता है। इसी कारण ईशवर से आपको पल भर के लिए भी कोई दूसरा साधन नही है। बल्कि आप आंतरीय और बाह्य रूप से जीवन भर ईशवर पर आधारित है। जो आप पर अपनी अनुग्रह निछावर करता है। जबकि आप हर प्रकार से ईशवर के आवश्यकता के बावजूद पाप और बुरे कामों से उसका उल्लंघन करते हैं। निश्चित रूप से आपने उसे भुला दिया, जबकी आपको उसी की ओर लौटना है, और उसी के सामने खडा होना है। ऐ मानव अपने पापों का बोझ उठाने से असहाय और निर्बल होने का कारण अल्लाह चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका करदें, क्योंकि इनसान निर्बल पैदा किया गया है। (अननिसा, 28)

ईशवर ने रसूलों को भेजा, पुस्तकें अवतरित की, नियम लागू किये। आपके सामने सीधा मार्ग बनाया। सबूत, प्रमाण, और निशानियाँ प्रदान की यहाँ तक कि हर विषय में आपके लिए एक निशानी रखी, जो ईशवर की एकीकरण और पूज्य प्रभु होने का खुला सबूत है। इन सब बातों के साथ-साथ आप कुछ लोगों को देखेंगे जो सत्य को असत्य से मुकाब्ला करते हैं। शैतान या किसी और को ईशवर के अतिरिक्त अपना



दोस्त बनाते हैं और असत्य के प्रति झगडते हैं। हमने लोगों के लिए इस ख़ुरआन मे हर प्रकार के उत्तम विषयों को तरह-तरह से बयान किया है, किन्तु मनुष्य सबसे बढ़कर झगडालू हैं। (अल-कहफ-54)

क्या आप ईशवर की सारी वो अनुग्रहें भूल गये जिसमे आप रात-दिन बिताते हैं। क्या आपको याद नही कि आप गंदे पानी से पैदा किये गये हैं। आप का अंतिम स्थान ख़बर (समाधी) है। आपको स्वर्ग या नर्क की ओर लौटना है। क्या (इनकार करनेवाला) मनुष्य ने देखा नही कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया ? फिर क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष विरोधी, झगडालू बन गया। और उसने हम पर फब्ती कसी और अपनी पैदायिश को भूल गया। कहता है, कौन हड्डियों में जान डालेगा जबकि वे जीर्ण-शीर्ण हो चुकी होंगी। कह दो, उनमें वही जान डालेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया। वह तो प्रत्येक सृष्टि (मख़लूक) को भाली-भाँती जानता है। (यासीन, 77-79)

ईशवर ने कहा ऐ मनुष्य। किस चीज़ ने तुझे अपने उदार प्रभु के विषय में धोके मे डाल रखा है। जिसने तेरा प्रारूप बनाया, फिर नख-शिख से तुझे दुरुस्त किया और तुझे संतुलन प्रदान किया। (अल-इनफितार 6-7)

ऐ मनुष्य। तू क्यों स्वयं को ईशवर के एकीकरण और उसकी महानता की रुची से वंचित रखता है। यह रुची ईशवर के सामने खडे होकर विनती करना है, ताकि वह तुम्हे गरीबी से मुक्ति दिलाये। बीमारी से स्वास्थ प्रदान करे, आपके दुख दूर करें आपके पाप क्षमा करें। आपको कष्टों से दूर रखें, अगर आप अन्याय से पीडित हो तो आपकी सहायता करें। अगर आप भ्रम या पथ भ्रष्ट से पीडित हो तो आपका मार्ग निर्देशन करें। अगर आप अज्ञान हो तो आपको ज्ञान प्रदान करें। जब आप डरने लगे तो आपको सुख दे। आप निर्बल हो तो आपके साथ दया करें। आपके शत्रुओं को आपसे दूर रखें और आपको रोज़ी दें। ऐ मनुष्यः धर्म



की अनुग्रह के बाद मानव पर ईश्वर द्वारा होने वाली सबसे महत्वपूर्ण अनुग्रह बुद्धि है। ताके वह लाभदायक और नष्ट दायक चीज़ों के बीच अंतर करे। वह ईश्वर द्वारा मिलने वाले आदेश व निशेध को समझें और वह सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त करें। वह लक्ष्य एक ईश्वर की बंदगी (उपासना) है। जिसका कोई साझी नही । तुम्हारे पास जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ पहुँचती है तो फिर तुम उसी के आगे चिल्लाते और फरियाद करते हो। फिर जब वह उस तकलीफ को तुमसे टाल देता है तो क्या देखते हैं कि तुममें से कुछ लोग अपने रब के साथ साझीदार ठहराने लगते हैं। (अल-नहल, 53-54)

ऐ मनुष्य। निश्चय बुद्धीमान मानव उच्च चरित्र से प्रेम करता है और तुच्छ आचार न पसंद करता है। यह चाहता है कि ईश्वर के रसूलों और धर्मपरायणों में से हर अच्छे व्यक्ति का पालन करे। उसके मन मे यह इच्छा होती है कि वह उनमें मिल जायें, हालांकी वह उन्हे पा नही सकता। इसका मार्ग वही है जिस कि ओर ईश्वर ने अपनी वाणी मे मार्ग दर्शन किया है। कह दो, यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा करदेगा। अल्लाह बडा क्षमाशील, दयावान है। (आले-इमरान, 31)

जब मनुष्य उसका पालन करेगा, तो ईश्वर उसको नबी, रसूल, शहीद और अच्छे लोगों के साथ करदेता है। ईश्वर ने कहा। जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करता है, तो ऐसे ही लोग उन लोगों के साथ हैं जिनपर अल्लाह कि कृपादृष्टि रही है, वे नबी, सिद्दीक़, शहीद और अच्छे लोग हैं। और वे अच्छे साथी हैं। (अल-निसा, 69)



ऐ मनुष्य। मैं तुझे यह सलाह देता हूँ कि तू एकांत मे बैठ जा, फिर जो सत्य तेरे पास आया है उसमे विचार कर। इस सत्य के प्रमाणों में ग़ौर कर। अगर तू इसको वास्तविक रूप से सत्य समझ रहा है, तो इसका अनुपालन प्रारंभ करदे, परमपराओं और समाज का बंदी न बन। यह जानले कि तेरे साथीयों, बन्धुओं और पुर्षों की विरासत से अधिकतर प्रभुत्व स्वयं तेरा व्यक्तित्व है। ईश्वर ने इसी बात कि सलाह काफ़िरों को दी और इस ओर प्रोत्साहित किया। ईश्वर ने कहा। कहो, मैं तुम्हे बस एक बात की नसीहत करता हूँ कि, अल्लाह के लिये दो-दो और एक-एक करके उठ खडे हों, फिर विचार करो, तुम्हारे साथी को कोई उन्माद नही है। वह तो एक कठोर यातना से पहले तुम्हे सचेत करनेवाला है। (सबा, 46)

ऐ मनुष्य। जब तो स्वयं का अनुसरण करदे, तो कदापि तुझे कोई नष्ट नही होगा। ईश्वर ने कहा। उनका क्या बिगड़ जाता यदि वे अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हे दिया है उसमें से ख़र्च करते। अल्लाह उन्हें भली-भाँती जानता है। (अल-निसा, 39)

यानी अगर वह ईश्वर पर विश्वास रखलें, और ईश्वर की अवतरित की हुई बातों को मानलें, तो उसका क्या नष्ट होगा। आगर वह अच्छे कार्य करनेवाले के लिए अन्तिम दिन में पुण्य कि आशा रखते हुए ईश्वर पर यख़ीन रखले तो उसका क्या घाटा होगा। अगर वह ईश्वर कि दी हुई चीज़ों को उसकी इच्छा के अनुसार खर्च करदें तो उसका क्या नष्ट होगा। ईश्वर उनकी अच्छी और बुरी आशा को जानता है। इसका भी ज्ञान उसको प्राप्त है कि कौन इनमें से सुधार के खाबिल है, तो वह

वह मुझे मुझ से अधिक जान्ता है

ख़ुरआन महान पुस्तक ने अपनी शक्ति से मुझे बंधी बनादिया। मेरे दिल का मालिक बन गया। ईश्वर के सामने आत्मसमर्पण करने वाला बना दिया। ख़ुरआन आख़री लम्हे तक अपने पढ़ने वाले के लिए लाभ दायक है। इस प्रकार कि ख़ुरआन को पढ़ने वाला अपने भीतर प्रजापति ईश्वर के सामने तन्हा खड़े होने की भावना पाता है। जब आप ख़ुरआन को गंभीरता से लेंगे, तो आप के लिए साधारण रूप से इसको पढ़ना संभव नही होगा। ख़ुरआन आप पर इस तरह प्रभावित हो जायेगा, जैसे आप पर उसका कोई अधिकार हो। वह आप से बहस करेगा, आपको शरमिन्दा करेगा, आपको चुनौती देगा । मैं एक दूसरे पक्ष पर खड़ा था। फ़िर मुझे यह ज्ञान हुवा कि ख़ुरआन का अवतरित करने वाला मुझे मुझ से ज़्यादा जान्ता है। ख़ुरआन सदा मेरे विचारों से आगे रहता था। वह मेरे प्रश्नों का उत्तर देता है। हर रात मैं अपने प्रशनों को अपने दिमाग़ में रखता था, लेकिन दूसरे दिन मुझे इसके उत्तर मिल जाते थे। मैने ख़ुरआन के पन्नों में साफ़-साफ़ अपने आप को पाया है।

जेवरी लाँग

अमेरिकन गणित अध्यापक



उसको सुधारता है और उसको मार्गदर्शन की ओर लेजाता है, उसको ऐसे अच्छे कार्य करने के ख़ाबिल बनाता है जिससे वह संतुष्ट हो जाता है। ईशवर यह जानता है कि कौन अपमान के ख़ाबिल है, और कौन उसके प्रभुत्व दरबार से धुत्कार दिये जाने के लायख़ है। यह वह दरबार है, जो इस से धुत्कार दिया जाता है, निश्चय वह संसार और परलोक में घाटा उठाने वाला है।

निस्संदेह आप अगर इस्लाम स्वीकार करलें तो, इस्लाम आप के और आपकि इच्छाओं के बीच, या ईशवर द्वारा वैध की हुई चीज़ों के उपयोग करने के बीच आड़ नही बनता। बल्कि ईशवर आप के हर उस कार्य पर आपको पुण्य प्रधान करेगा, जो आप ईशवर कि ख़ुशी प्राप्त करने के कारण करते हो। चाहे वह कार्य आपके संसारिक जीवन के लिए उपयुक्त हो, और आपके धन, स्थिती या सम्मान के अधिक होने का कारण हो। बल्कि वह वैध चीज़ें आप इस ख़याल से अपने उपयोग में लाते हो, कि आप अवैध से दूर रहकर केवल वैध ही का उपयोग करेंगे, तो आपको इस पर भी ईशवर द्वारा पुण्य मिलेगा ।





ऐ मनुष्य। निश्चय ईशवर के रसूल सत्य लेकर आये, और ईशवर के संदेश को पहुँचाए। मनुष्य को ईशवर कि भेजी हुई शरियत (धार्मिक नीयम) का ज्ञान प्राप्त करने कि अवश्यकता है, ताकि वह संसारिक जीवन दूरदर्शिता के साथ यापन करें, और परलोक में सफ़लता प्राप्त करनेवाला बनें। ईशवर ने कहा। ऐ लोगों। रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य लेकर आ गया है। अतः तुम उस भलाई को मानो जो तुम्हारे लिये जुटाई गयी है और यदी तुम इन्कार करते हो तो आकाशों और धरती में जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है। और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्वदर्शी है। (अल-निसा, 170)

ईशवर ने कहा। कह दो, ऐ लोगों। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है। अब जो कोई मार्ग पर आयेगा तो वह अपने ही लिए मार्ग पर आयेगा और जो कोई पथ भ्रष्ट होगा तो वह अपने ही बुरे के लिये पथभ्रष्ट होगा। मै तुम्हारे ऊपर कोई हवालेदार तो हूँ नही। (यूनुस-108)

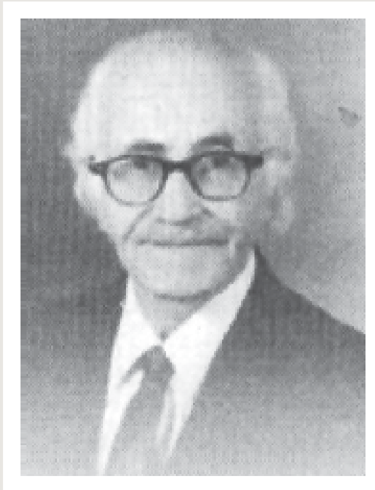
ऐ मनुष्य। अगर तू इस्लाम स्वीकार करलें तो स्वयं आप का लाभ है। अगर आप इस्लाम का तिरसकार करें, तो स्वयं आप का नष्ट है। ईशवर को आप कि प्रार्थना की अवश्यकता नही। क्योंकि पापियों के पाप से कोई नष्ट और आज्ञाकारिताओं कि आज्ञाकारी से कोई लाभ ईशवर को नही है। कदापी ईशवर के ज्ञान के बिना कोई पापी पाप नही कर सकता और उसकी आज्ञा के बिना कोई आज्ञाकार नही बन सकता। ईशवर ने कहा।

तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से आँख खोल देनेवाले प्रमाण आ चुके हैं, तो जिस किसी ने देखा, अपना ही भला किया और जो अन्धा बना रहा तो वह अपने ही को हानि पहुँचायेगा। और मैं तुम पर कोई नियुक्त रखवाला नही हूँ। (अल-अनआम, 104)

निश्चय ईशवर ने कहा, जैसा की उसके रसूल ने हमें सूचना दी हैः ऐ मेरे बन्दों मैने अपने आप पर अन्याय को अवैध समझा है। इसको तुम्हारे बीच भी अवैध टहराया है। तुम आपस में एक-दूसरे के साथ अन्याय मत करो। ऐ मेरे बन्दों तुम सब गुमराह हो, केवल वह व्यक्ति गुमराह नही है जिसका मैने मार्गदर्शन किया हो। परन्तु तुम मुझसे मार्गदर्शिनी कि प्रार्थना करो, तो मैं तुम्हे सीधे पथ की ओर मार्गदर्शन करूँगा । ऐ मेरे बन्दों तुम सब भूके हो। केवल उस व्यक्ति के अतिरिक्त जिसको मैने खिलाया है। परन्तु तुम मुझसे भोजन मांगो, मैं तुम्हे खिलाऊँगा। ऐ मेरे बन्दों तुम निर्वस्त्र हो। केवल उस व्यक्ती के अतिरिक्त जिसको मैने वस्त्र प्रदान किया। परन्तु तुम मुझ से वस्त्र माँगो मैं तुम्हे दूँगा। ऐ मेरे बन्दों तुम रात, दिन पाप करते हो, मैं तुम्हारे सारे पाप क्षमा करता हूँ, परन्तु तुम मुझसे क्षमा चाहो, मैं तुम्हे क्षमा करूँगा। ऐ मेरे बन्दों कदापी तुम्हारे भीतर इतनी क्षमता नही कि तुम नष्ट पहूँचा सको, और न इतनी क्षमता है कि तुम मुझे लाभ पहूँचा सको। ऐ मेरे बन्दों अगर तुममें से प्रथम और अंतिम व्यक्ति, मनुष्य और जिन्न सारे के सारे किसी एक अधिकतर धर्म प्रायणत व्यक्ति के समान हो जायें, तो भी इस से मेरे राज्य में कोई वृद्धि नही होगी। ऐ मेरे बन्दों अगर तुममें से प्रथम और अंतिम व्यक्ति, मनुष्य और जिन्न सारे के सारे किसी एक अधिकतर पापी के समान हो जायें, तो भी मेरे राज्य में कोई कमी नही होगी। ऐ मेरे बन्दों अगर तुममें से प्रथम और अंतिम व्यक्ति, मनुष्य और जिन्न सारे के सारे एक प्लाटफ़ॉम पर इकट्ठा हो जायें, और मुझसे माँगो, तो मैं हर व्यक्ति की इच्छा पूरी करूँगा। इस से मेरे ख़ज़ाने मे बिल्कुल उसी समान कमी होगी, जिस समान कि सूई से समुद्र में होती है। ऐ मेरे बन्दों तुम्हारे इन कार्यों की संख्या मेरे पास है। फिर मै तुम्हे इसका पूरा-पूरा बदला दूँगा। जो अच्छा बदला पाले, वह ईशवर कि प्रशंसा करे, और जो बुरा बदला पाये, वह स्वयं अपने आप को दोशी टहराये। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है)

ऐ मनुष्य यही वह मार्ग है, इसके अतिरिक्त संसार और परलोक में प्रसन्नता के लिये कोई और मार्ग नही। सारे अन्य मार्ग अप्रसन्नता, दुख और विनाश के मार्ग है। ईशवर ने कहा। और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उसके मार्ग से हटाकर इधर-उधर करदेंगे। यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की है ताकि तुम (पथभ्रष्टता से) बचो। (अल-अनआम, 153)

जो व्यक्ति प्रसन्नता का मार्ग चले, वह प्रसन्नता प्राप्त करलेगा। जो व्यक्ति दूसरे अन्य मार्ग चले, वह भटक जायेगा। ईशवर के मार्ग से दूर हो जायेगा, और कभी प्रसन्नता के मार्ग को प्राप्त नही कर सकेगा।



पश्चीमी सभ्यता की गहराई

जिस व्यक्ति ने पश्चीमी सभ्यता की गहराई देखा हो। उसकी सारे विषयों का ज्ञान प्राप्त किया हो। इस सभ्यता को ज्ञानिक और वास्तविक रूप से अच्छी तरह परखा हो। तो वह अन्तरीक आत्मा की शक्ती से इस्लामिक सिद्धांत के सामने समर्पण करता है। ताकि इस सिद्धांत द्वारा अपनी प्यास बुजाये।

नसीम सोसह

ईराख़ का यहूदी लेकचरर

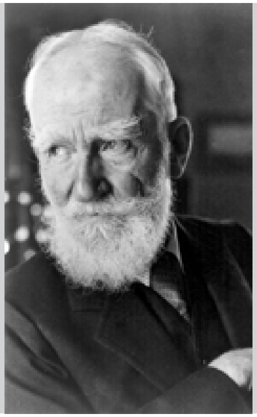


प्रसन्नता और शाँती के स्थंभ

वर्तमान काल में पश्चिम मुहम्मद कि तत्वदर्शता का ज्ञान प्राप्त करने लगा है। उनके धर्म से प्रेम करने लगा है। इसी प्रकार पश्चिम मध्यकाल में अपने कुछ वैज्ञानिकों की ओर से लगाये गये आरोपों से इस्लामी सिद्धांत को आज़ाद किया है। मुहम्मद का धर्म ही वह विधी होगा जिस पर प्रसन्नता और शाँति आधारित होगी। इसी धर्म के दर्शन ही पर सारी समस्याओं और दुविधाओं का समाधान है।

बरनार्ड शाह

ब्रिटीष लेखक



यही वह मार्ग है।

हर न्याय प्रिय बुद्धिमान, चाहे वह ऊपरी इंकार करे, यह जानता है कि यही शाशवत प्रसन्नता का मार्ग है। और वह उस समूह के समान है, जिनके पास चमत्कारों के आजाने के बाद भी उन्होंने मूसा को ईश्वर का नबी मानने से इन्कार किया, इनके बारे में ईश्वर ने यह कहा । उन्होंने ज़ुल्म और सरकशी से उनका इनकार करदिया, हालाँकि उनके जी को उनका विश्वास हो चुका था। अब देखलो इन बिगाड़ पैदा करनेवालों का क्या परिणाम हुआ। (अल-नम्ल, 14)

बहुत से बुद्धिमान न्याय प्रिय (चाहे वे इस्लाम न लाये हो) यह जानते हैं कि इस संसार और परलोक में सारी मानवता की प्रसन्नता का यही एक मार्ग है। यही वह मार्ग है जिसको हर स्वतंत्र व्यक्ति स्वीकार करता है, जो अपने विचारों को प्रकट करने में धैर्यवान हो, चाहे उसका मुँह बंद करने का प्रयास किया जाय। उसको अपने प्राण का, लोगों का, नये विषय को स्वीकार करने का, या अफहायें और पुरानी छवी का डर इस व्यक्ति को इस्लाम धर्म को स्वीकार करलेने से नही रोकता है। कितने ऐसे लोग है जिनको कायर और सामाजिक संबन्धों ने प्रसन्नता के मार्ग पर चलने से रोके रखा। ईश्वर ने कहा। अतः तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो। (आले इमरान, 175)

यही वह मार्ग है। हाँ यही प्रसन्नता, सम्मानता, दयालुता, ज्ञान, सभ्यता और नैतिकता का मार्ग है। चाहे इसमें कुछ कठिनाइयाँ हों। यही जीवन का नियम, और सच्चे की झूठ से संवीक्षा करना है। ईश्वर ने कहा। जिसने बनाया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परिक्षा करें कि तुम में कर्म कि दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बडा क्षमाशील है। (अल-मुल्क, 2)

यही वह मार्ग है, जिस पर पिछले रसूल और नबी चले मुहम्मद के साथी और अन्य जात, भाषा, रंगवालों में से उनके आज्ञाकारी चले। यही वह मार्ग है जो बहुत जल्द संसार का शासक संभालेगा। ईश्वर के रसूल ने कहाः जहाँ तक रात और दिन पहूँचेंगे, वहाँ तक यह संदेश (इस्लाम धर्म) पहूँचेगा। जल और थल के हर गृह में ईश्वर आदरणीय को सम्मान के द्वारा, और अनादर को अपमान के साथ यह धर्म पहूँचायेगा। यह वह सम्मान है जिससे ईश्वर इस्लाम धर्म को सम्मानजनक बनाता है। और वह अपमान है जिससे ईश्वर काफिर (नन मुस्लिम) को अपमानजनक बनाता है। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया है।) तो आप शाश्वत प्रसन्नता के इस मार्ग पर चलनेवाले पवित्र समूह के साथ मिलजाओ।

यही वह मार्ग है। यही सफलता है। यही वह प्रसन्नता है, जिस पर चलनेवाले का मन सुख से भरा होता है। आप स्वयं को वंछित न रखो, और न स्वयं के साथ अन्याय करो। आप स्वयं के साथ अन्याय करने से बचो और प्रसन्नता के मार्ग पर चलो। ईश्वर ने कहा।



दिलों को बन्धी बानाता है

मैने विभिन्न धर्मों की पढ़ाई की, तो यह परिणाम मिला कि इस्लाम ही वह धर्म है, जो इस पर विश्वास रखने वाले और न रखने वाले दोनों पर एक-समान प्रभावी होता है। इस्लाम कि महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह मानवता के दिलों को एक-दम से बन्धी बनालेता है। इसी कारण इस्लाम में अजीब जादू और आकर्शण है, जो मुस्लिमों के अतिरिक्त दूसरों को भी आकर्शित करता है।

मैरी ओलवेर

अमेरिकन कवी



संसार के साथ चलना चाहिए

सारे इतिहास में इस्लाम धर्म का फ़ैलाव उसकी एक विशेशता है। इसलिए की इस्लाम प्रकृति का धर्म है, जो मुस्तफ़ा (मुहम्मद) के मन पर अवतरित हुआ है।

डॉक्टर मोराढ होवमान

जर्मनी राजदूत

सदा रहने वाली प्रयोजना



डॉक्टर मुराद होवमान

जर्मनी राजदूत

इस्लाम सदा रहने वाली परियोजना का वह जीवन है जो न कभी पुराना पडता है, और न उसकी क्षमता समाप्त होती है। जब कुछ लोगों ने इसको प्राचीन काल में देखा हो, तो वही इस्लाम आज भी है और भविष्य काल में रहेगा। समय या स्थान में वह सीमित नही है। वह कोई विचारों की लहर या फ़ैशन नही है कि उसका इंतज़ार संभव हो। आज तक भी यह कहावत रोशनी प्राचीन काल से आयेगी बिल्कुल सही है।

आध्यात्मिकता को सुधारो



जेवरी लांग

अमेरिकन गणित अध्यापक

मेरे जीवन के एक विशेश लम्हे में ईश्वर ने मुझ पर अपने उपकारों और दयालुता कि भरमार की। जबकि मैं कष्ट और बांधा से अंतरिक रूप से पीडित था। मेरे भीतर आध्यात्मिकता को सुधारने की पूरी क्षमता थी। किन्तु मैं मुस्लिम बनगया। इस्लाम से पहले मेरे जीवन में प्रेम का कोई मतलब नही था। लेकिन जब मैने ख़ुरआन पढ़ा, तो मेरे अंदर दयालुता की भावना अधिक हो गई। मैं अपने मन में सदा प्रेम कि भावना से प्रभावित होने लगा। इसी कारण ने मुझे इस्लाम की ओर ले आया। वह कारण ईश्वर का प्रेम है जिसका मुक़ाब्ला नही किया जा सकता।

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन करायेंगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अल-नहल, 97)

यही वह मार्ग है। इसको पकड़े रहो। इससे अपने आपको भाग्यशाली बनाओ। अपने सांसारिक जीवन को सुख और ख़ुशी से यापन करो। यह न भूलो ईश्वर के पास मिलनेवाली चीज़ें मूल्यवान और शाश्वत है। परलोक का सुख ही शाश्वत सुख है। निश्चय हमारे ईश्वर प्रभु ने इसका एक ही मार्ग बनाया है। वह संसार और परलोक की प्रसन्नता है। सारे अन्य मार्गों में संसार का नष्ट और परलोक में दण्ड है। ईश्वर ने कहा। और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोडा तो उसका जीवन तंग (संकीर्ण) होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अन्धा उठायेंगे। वह कहेगा, ऐ मेरे रब। तूने मुझे अन्धा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखोंवाला था। (ता-हा, 124, 125)

ईश्वर ने यह भी कहा। वह कहेगा, इसी प्रकार (तू संसार में अन्धा रहा था) तेरे पास मेरी आयतें आयी थी तो तूने उन्हें भुला दिया था। (ता-हा, 126)

तुम इस मार्ग को भूलने या भुलाने का प्रयास करने से भी बचो। यह प्रसन्नता का मार्ग है।

यही वह मार्ग है जो सरल है। मन में ईश्वर के एकीकरण के सिद्धांत, शारीरिक अंगों से इस सिद्धांत के प्रकट होने से और सारे नबी और रसूलों पर विश्वास रखने से इस मार्ग का प्रारंभ होता है। परलोक में शाश्वत प्रसन्नता से इसका अंत होता है। दो बातों की, यानी ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के पूज्य प्रभु न होने और मुहम्मद के ईश्वर द्वारा रसूल होनेकि गवाही देने से प्रारंभ होता है। स्वर्ग में ईश्वर के दर्शन और रसूलों के साहचर्य होने कि प्रसन्नता पर इसका अंत होता है। अब तुम कहोः मै गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य प्रभु नही है, और मुहम्मद ईश्वर के रसूल है। सुखी जीवन यापन करो। भाग्यशाली बनकर मरो। अपनी समाधि से प्रसन्न उठते हुए शाश्वत बाग़ों की ओर चलो। यही वह मार्ग है। अगर तुम इस पर नही चलते हो, तो रसूल का काम केवल खोल-खोल कर वर्णन करना है। ईश्वर ने कहा। किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो जो कुछ दे कर मुझे तुम्हारे ओर भेजा गया था, वह तो मैं तुम्हे पहुँचा ही चुका। मेरा रब तुम्हारे स्थान पर दूसरी किसी क़ौम को लायेगा। और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। निस्संदेह मेरा रब हर चीज़ की देख-भाल कर रहा है। (हूद, 57)

अल्लाह के अतिरि क्त कोई और पूज्य प्रभु नही है मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं



जब आप अल्लाह को जान लें, उसके वजूद का विश्वास कर लें, तो इस्लाम आप से यह कहेगा कि ईश्वर गले की नस से भी अधिक आप से निकट है। इसीलिए आप के और ईश्वर के बीच किसी दलाल की आवश्यकता नही है। न किसी जोतिशी कि ज़रूरत है, जिस को आप (महान) स्विकार करलें, फ़िर वह आपकि तौबा ख़ुबूल करे। या किसी ऐसे केन्द्र की अवश्यकता नही है कि केवल उसी के अंदर प्रार्थना पूर्ण होती हो ।

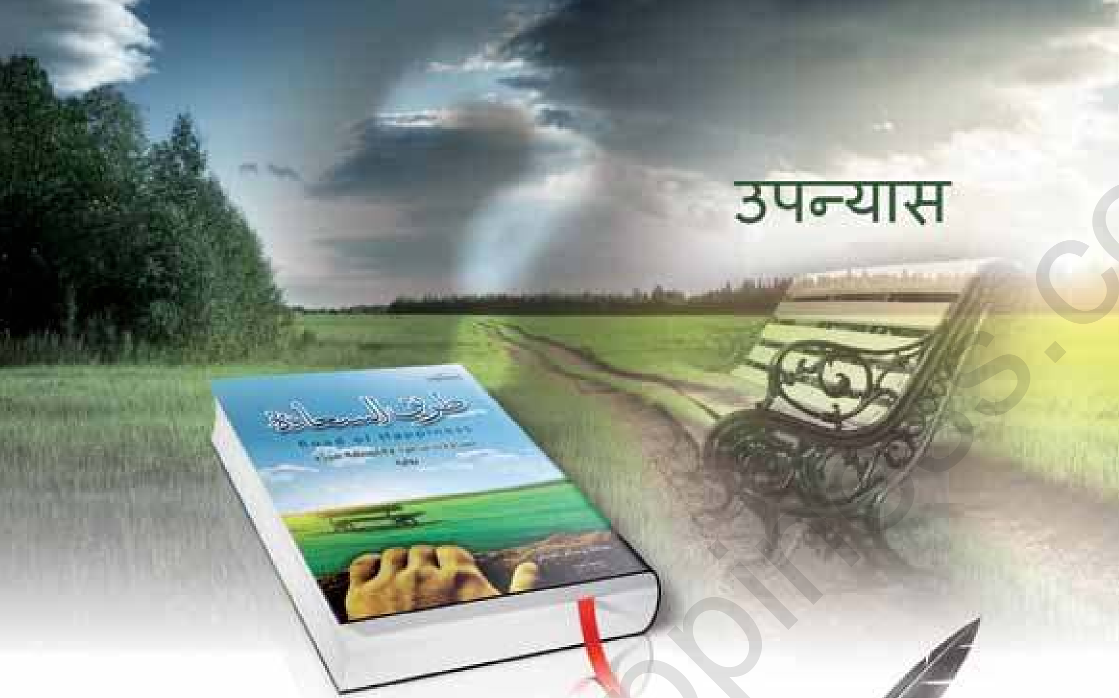
डोनाल्ड रिकवेल

अमेरिकन कवी

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness



अनुक्रमणिका



उपन्यास



उपन्यासः प्रसन्नता

भ्रम में रखनेवाले प्रश्न, जीवन की दर्शनिकता, इच्छाएँ और आशाएँ, आकांक्षाएँ और रुचियाँ, संदेह और शंका, विरोधाभासी और व्याकुलता, यह सब चीज़े जार्ज की यात्रा में थी, जो जीवन कि दार्शिनिकता और स्वयं के स्थिरता की परिभाषा के आस-पास सौन्दर्य शहर लंदन, चमत्कारों का देश भारत, नील नहर और पिरामिड के नगर कयरों, पवित्रता और विभिन्न धर्मों के देश जेरूसलम, और गिरजा घरों के मुल्क इटली(रोम) में घूम रही थी... यह उपन्यास ऐसी घटनाओं से भरी हुई है, जिसमे धर्म के प्रति दर्शनिकता लोगों के जीवन और उनके भीतर स्थिर विरोधाभासी के घुलमिल जाती है। इसमें कठिनाइयाँ प्रसन्नता से, संदेह विश्वास से, आनंद अप्रसन्नता से, वफादारी विश्वासघात से, शारीरिक आनंद आत्मिक आनंद से, आत्मिक भावनाएँ जिह्वा के विचार से घुन मिलती हैं, और सत्यता व सच्चाई का असत्य व झूठ से टकराऊ होता है... जीवन और उसकी परिभाषा के दृष्टि के प्रति, धर्म व उपस्थिती की दार्शनिकता के प्रति विभिन्न विचारों, अनेक घटनाओं और लगातार मिलनेवाली सूचनाओं के द्वारा यह एक पठन है, जिसमें इतिहास व वास्तविकता का हमारे जीवन पर प्रभाव के प्रति विचार किया गया है, और वैज्ञानिक दार्शिनिकता की दृष्टि द्वारा आधुनिक ज्ञान को प्रदान किया गया है... क्या जीवन के विरोधाभीसी विचार छिप जायेंगे ؟ क्या जार्ज अपने प्रश्नों का उतर प्राप्त करलेगा ؟ क्या शरीर के साथ साथ आत्मा का प्रसन्न होना संभव है ؟ और क्या जार्ज को प्रसन्नता का मार्ग मिल सकता है ؟...

अनुकूल वेबसाइटें

[redacted]